आखिरी दाँव

AKIRI Damv

लेखक

भगवतीचरण वर्मा

Bhagawatheecharan Varma

प्रथम परिच्छेद

रामेश्वर को सारा गांव 'काका' कहता था। छरहरे बदन का लम्बा सा आदमी, निःशंक और मस्त, ढलती हुई जवानी! मुख पर एक अजीब तरह की कोमलता थी, आंखों में एक अजीब तरह की चमक थी। खिचड़ी मूछ लेकिन अच्छी तरह से छँटी हुई, घुटी हुई दाढ़ी। चाल में एक लापरवाही से भरी हुई ऐंठ, स्वर में मीठी-सी उपेक्षा की दृढ़ता! रामेश्वर की अवस्था करीब पैंतालीस वर्ष की थी।

रामेश्वर अपने खेत से लौट रहा था। अनाज कट चुका था, और उसी दिन संयोग से शहर के एक व्यौपारी ने आ कर उसके खेत से ही उसका अनाज खरीद लिया था। रामेश्वर प्रसन्न था, उसकी टेंट में पांच सौ रुपये थे। होली का त्यौहार सर पर आ गया था। किस तरह वह अपने मित्रों को दावत देगा, भांग छनेगी, नाच-गाना होगा, रंग-गुलाल खिलेगा—इन्ही विचारों में मग्न उसने खेतों की मेड़ छोड़ कर अपने गांव में प्रवेश किया, और गांव में प्रवेश करते ही उसने अलाप भरी!

"खेल री जी भर फाग, अँगन तोरे आए हैं साजन!"

उसी समय रामेश्वर को सुनाई पड़ा, "बड़ी मस्ती है रमेसुर काका! अभी फाग खेलने की हौंस बाकी है!"

रामेश्वर ने हँस कर उत्तर दिया, "हौंस होगी तुम्हारे ऐसे लौण्डों को! यहां तो जो जी में आया, कर गुज़रते हैं! जिगर चाहिये—कलेजा चाहिये मथुरा!"

जिस व्यक्ति ने रामेश्वर को टोंका था वह करीब तेईस-चौबीस वर्ष का एक युवक था। दुबला -पतला शरीर, छोटी-छोटी चमकीली आंखें जिनमें शरारत कूट-कूट कर भरी थी। मथुरा के पिता गांव के पुरोहित थे। मथुरा अपने पिता को कभी-कभी पुरोहिताई के काम में मदद कर देता था, लेकिन बढ़ते हुए अविश्वास के इस कलियुग में उसका पुरोहिताई में मन न लगता था। दान-दक्षिणा के प्रति लोगों को उपेक्षा थी, धर्म से लोगों की आस्था कम होती जा रही थी। इसी लिए मथुरा ऊपर से, इधर-उधर के कामों के बल पर पैसा पैदा करने लगा था। उसका कोई खास पेशा न था। गांव वालों को एक दूसरे से लड़वा देना, अदालत में झूठी शहादत देना, चोरी करवा देना, जूआ खिलवाना—पैसा पैदा करने के उन सभी साधनों से, जो गांवों में प्रचलित हैं, मथुरा भली भांति परिचित था।

मथुरा ने कहा, "आज बड़ी तरी मालूम होती है रमेसुर काका जो इतनी मस्ती में झूम रहे हो!"

रामेश्वर और मथुरा ने साथ-साथ गांव में प्रवश किया। रामेश्वर ने उत्तर दिया, "यहां तो हरदम तरी रहती है—तुम्हारे ऐसे कुछ थोड़े ही हैं कि हरदम झीखा करें और दूसरों की रकम पर आंखें लगाए रहें!"

मथुरा ने रामेश्वर की बगल में खिसकते हुए धीरे-से कहा, "आज शहर से कुछ लोग आ गए हैं, लम्बा फड़ जमा है! क्या इरादे हैं!"

रामेश्वर ने मथुरा की बात का कोई उत्तर नहीं दिया; उसके मत्थे पर बल पड़ गए, उसकी मुद्रा गम्भीर हो गई। मथुरा ने समझ लिया कि तीर निशाने पर बैठा है। उसने फिर कहा, "अच्छा, मैं तो चलता हूँ। उन लोगों के भोजन-पानी का प्रबन्ध करना है। जलपान करके तुम भी आ जाना।" और बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये हुए मथुरा चला गया।

रामेश्वर अपने घर आया। टेंट से निकाल कर उसने पांच सौ की रकम सन्दूक में रखने का प्रयत्न किया, लेकिन वह असफल रहा।

उसे ऐसा लग रहा था मानो वह रकम सन्दूक में जाना ही नहीं चाहती। मथुरा का आमन्त्रण उसके कानों में गूंज रहा था—मथुरा उसके मन में एक द्वंद्व पैदा कर गया था।

रामेश्वर किसान था, जन्म से नहीं, कर्म से। रामेश्वर ने कुलीन ठाकुर-वंश में जन्म लिया था और उसके पूर्वज ज़मीन्दार थे। जिस गांव में रामेश्वर रहता था वह गांव एक समय उसके पूर्वजों का था।

लेकिन रामेश्वर के पिता चन्दन सिंह अपनी पैतृक सम्पत्ति की रक्षा नहीं कर सके। चन्दन सिंह की मृत्यु के समय रामेश्वर की अवस्था करीब पचीस वर्ष की थी। पिता की मृत्यु के बाद रामेश्वर को पैतृक ज़मीन्दारी के साथ-साथ ज़मीन्दारी और घर-मकान पर अदालतों में दावे भी मिले और जमीन्दारी तथा घर-मकान पर क़र्ज़ और उस क़र्ज़ पर सूद ज़मीन्दारी तथा घर-मकान के मूल्य से अधिक साबित हुए । रामेश्वर युवा था, उसमें स्वाभिमान था, उस में अपने ऊपर विश्वास था। पैतृक-ऋण चुकाना उसका धर्म था और उसने ज़मीन्दारी तथा घर-मकान बेंच कर पैतृक ऋण चुकाया। जो ऋण बचा उसने अपनी पत्नी और माता के गहनों को बेंच कर चुका दिया। अपने लिए उसने करीब पन्द्रह बीघे की खुदकाश्त रख ली। लेकिन रामेश्वर की पत्नी घर-मकान, ज़मीन्दारी तथा अपने जेवरों के निकल जाने से टूट-सी गई। अठारह साल की कोमल लड़की थी, सम्पन्न कुल की। उसके मन में उमंग थी, उत्साह था, आकांक्षा थी, अभिलाषा थी। दो वर्ष तक क्षयी रोग में पीड़ित रह कर वह चल बसी।

रामेश्वर ने सब कुछ खो दिया—कुछ अपनी इच्छा से खोया, कुछ उसने अनिच्छा से खोया। जो उसने इच्छा से खोया उससे उसकी दिन-चर्या बदली, जो उसने अनिच्छा से खोया उससे उसका जीवन बदल गया। जो उसने इच्छा से खोया उसे वह फिर से उपार्जित कर सकता था, जो उसने अपनी अनिच्छा से खोया उसे वह फिर से न पा सकता था। जो वह फिर से न पा सकता था, उसने उसकी पाने वाली

अभिलाषा को ही समाप्त कर दिया। रामेश्वर ने अपने को पूर्णरूप से परिस्थितियों के हाथ में सौंप दिया।

रामेश्वर के पास जो पन्द्रह बीघे की खुदकाश्त बची थी वह एक साधारण हैसियत के आदमी के लिए काफ़ी थी। नाते-रिश्तेदारों ने बहुत प्रयत्न किया कि रामेश्वर अपनी गृहस्थी फिर से जमावे, वह अपनी स्थिति सम्हाले, लेकिन रामेश्वर ने अपने नाते-रिश्तेदारों की बात जो न मानी सो न मानी।

आरम्भ से ही रामेश्वर हँसमुख और नेक था। गांव वालों के सुख-दुख में सम्मिलित, रामेश्वर में दया थी, ममता थी। अपने कुटुम्ब को खो कर रामेश्वर ने समस्त गांव को अपना कुटुम्ब मान लिया था। उसकी आय काफ़ी थी, उस आय को वह दूसरों की सहायता में, और प्रायः गांव के बच्चों को मिठाई खिलाने में खर्च करता था। अपनी उदारता और नेकी के कारण रामेश्वर विशनपुर गांव में रमेसुर काका बन गया था।

लेकिन इतना तो रामेश्वर जानता था कि इस दुनिया में वह अकेला है। दिन भर उसका अकेलापन उसे नहीं अखरता था—यह अकेलापन उसे रात में उस समय अखरता था जब वह अपनी कोठरी में तेल का दिया बुझा कर करवटें बदलता था। कभी-कभी उसके मन में उठता था कि वह क्यों न फिर से अपनी गृहस्थी जमा ले, और गृहस्थी जमाने का खयाल आते ही एक असह पीड़ा उसके प्राणों में भर जाती थी। घर-बार और गहना-बरतन के बिकने पर दुख से प्राण छोड़ देने वाली उसकी पत्नी की वह करुण मुद्रा उसकी आंखों के आगे आ जाती थी। गृहस्थी और गरीबी में बैर है, गृहस्थी अमीरों के लिए बरदान हो सकती है, लेकिन गरीबों के लिए वह अभिशाप है। गृहस्थी तभी जमाई जा सकती है जब पास में सम्पत्ति हो, रुपया-पैसा हो। और रामेश्वर सोचने लगता था कि रुपया-पैसा आवे कहां से? पन्द्रह बीघे की खेती से तो इतना रुपया नहीं आता था कि

वह कुछ बचा सके। खेती के अलावा उसे रुपया पैदा करने के लिए कुछ और उपाय करना आवश्यक था।

दीवाली के त्योहार को छोड़ कर जब रामेश्वर ने जीवन में प्रथम बार अन्य दिन जूआ खेला था, उस समय जूआ खेल कर रुपया पैदा करने की भावना ही उसके अन्दर थी। रामेश्वर धर्म-भीरु था; उसने जूआ खेलना आरम्भ न किया होता यदि उसने पहले कभी जूआ न खेला होता। लेकिन हिन्दुओं में दीवाली का त्योहार जूआ खेलने का त्यौहार है—और जब धर्म ही जुआ खेलने को अनुचित नहीं समझता तब रामेश्वर में किसी भी प्रकार की हिचक का न होना स्वाभाविक था। दीवाली में दो-एक दिन जूआ खेलने में और वर्ष के अन्य दिनों में जूआ खेलने में जो मनोवैज्ञानिक अन्तर होता है, वह रामेश्वर न समझता था; अपने ही मनोविज्ञान का शिकार रामेश्वर धीरे-धीरे एक अच्छा-खासा जुआरी बन गया था।

रामेश्वर शान्त-भाव से घर में न बैठ सका। बाहर से कुछ लोग जूआ खेलने आए थे, और उसकी टेंट में रुपए थे। आखिर उससे न रहा गया, उठ कर वह मथुरा के मकान की ओर चल पड़ा।

रामेश्वर को देखते ही मथुरा उछल पड़ा, "आ गए रमेसुर काका! हम जानते थे तुम्हारे पैर घर में न ठहरेंगे! चलो, बड़ा गरम खेल हो रहा है!"

मथुरा रामेश्वर को भीतर ले गया, मन्नू चौबे उस समय दांव फेंक रहे थे। उनके सामने करीब बीस रुपयों का दांव लगा था। रामेश्वर ने कमरे में प्रवेश करते ही आवाज़ दी, "घबराना नहीं मन्नू चौबे, हम आ गए! आधे-साझे में!"

मन्नू चौबे ने व्यंग के साथ उत्तर दिया, "अरे, घबराने वाले और होंगे, हम कोई निर्बल हैं क्या जो साझा करें! तुम भी सौ-पचास जितना जी चाहे दांव पर लगा दो!"

मन्नू चौबे जीत रहे हैं, रामेश्वर को यह न मालूम था। वैसे मन्नू चौबे और रामेश्वर में कभी न बनती थी, मन्नू जूवे के मामले में हमेशा से भाग्यशाली रहा था। रामेश्वर ने मन्नू से जो बात कही थी वह गांव वाले होने के नाते क्योंकि उसने सुन रक्खा था कि बाहर से खेलने वाले आए हैं। मन्नू की बात रामेश्वर को अच्छी नहीं लगी, उसने कहा, "हां-हां-मन्नू ! हम जानते हैं कि तुम बड़े बारहाँ हो ! अच्छा यह रहा हमारा भी बीस रुपयों का दांव !"

मन्नू ने कौड़ी फेंकी, दांव फँस गया। रामेश्वर ने हँसते हुए कहा, "कहा था घमण्ड न करो ! जिसने घमण्ड किया उसे मुंह की खानी पड़ी। अच्छा कोई दांव खाली है ?"

"हां-हां ! उठ बनवारी, खेलने दे रमेसर को !" मन्नू ने अपने सामने बैठे हुए बनवारी को ललकारा।

रामेश्वर के आते ही खेल ने ज़ोर पकड़ा, सैकड़ों के दांव लगने लगे।

आरम्भ में रामेश्वर जीता, लेकिन एक घण्टे बाद ही कौड़ी ने पलटा खाया। रामेश्वर की हार शुरू हुई। पहले उसकी जीत की रकम निकली, फिर टेंट वाले रुपए निकलने लगे और अन्त में उसकी टेंट खाली हो गई। मन्नू ने आवाज़ लगाई, "खेल लिए जो भर के कि अभी और हौंस बाकी है ?"

रामेश्वर पर जूवे का खार सवार था, उसने कहा, "पास वाली रकम तो निकल गई ? सौ रुपये दे सकते हो ?"

"सौ में क्या होगा ? पांच सौ लो !" और यह कह कर मन्नू ने पांच सौ रुपए रामेश्वर के आगे गिन दिये।

रामेश्वर अब पागल की भांति जूआ खेल रहा था—मालूम होता था कि दुर्दिन उसके सर पर सवार हो कर जम गया है। पांच सौ से बढ़ कर वह रकम एक हजार हुई और एक हज़ार से बढ़ कर दो हज़ार !

सुबह होते ही खेल खत्म हो गया। मन्नू ने उठते हुए रामेश्वर से कहा, "रमेसर-दो हज़ार रुपए हैं, अपनी ज़मीन तुम उन पर रख चुके हो!"

"हां-हां, जब चाहे बैनामा करा लो!"

"जब चाहे की बात क्या? तुम हो, मैं हूँ, कचहरी है। आज ही हो जाय, विलम्ब का कारण ही नहीं है!" मन्नू चौबे झट-पट काम करने के लिए प्रसिद्ध थे।

और उसी दिन ज़मीन, हल, बैल, माल-असबाव सब कुछ रामेश्वर ने मन्नू के हाथ २५००) में वेंच दिये। जब वह कचहरी से वापस लौटा तब उसकी टेंट में पहले दिन की ही भांति पांच सौ रुपए मौजूद थे। लेकिन न उसके पास घर-बार था, न ज़मीन थी, न हल-बैल थे! वह मुक्त था, बन्धन हीन! और उसने उस गांव में, जिससे वह नाता तोड़ चुका था, प्रवेश नहीं किया। दूर से ही उसने उस गांव को देखा, थोड़ी देर तक एक टक, और फिर वह संध्या के बढ़ते हुए अन्धकार में स्टेशन की ओर चल पड़ा।

दूसरा परिच्छेद

चमेली पानी भरने गई थी, होली खेलने नहीं गई थी। पनघट पर उसकी हमजोलियां इकट्ठी थीं और गा रही थीं—उस दिन होली थी न ! चमेली ने भी गाने में अपनी सहेलियों का साथ दिया। तेईस साल की युवती सुडौल, और यौवन के मद से कसा हुआ शरीर। तपे हुए सोने का रंग, हरिणी की सी खोई हुई बड़ी-बड़ी आखें। चमेली को भगवान ने बड़ा सुरीला कण्ठ दिया था।

हमजोलियों ने अपनी-अपनी गागरें रख कर गाना आरम्भ कर दिया, चमेली ने उनके उत्सव में प्राण डाल दिये। और उसी समय गाँव के अल्हड़ छोकरों का समूह रंग-पिचकारी लिए हुए उधर से निकला। दोनों ओर से मोरचा जम गया, डट कर होली खेली गई और होली गाई गई।

उत्सव समाप्त हुआ, और उत्सव समाप्त होते ही जब चेतना जागृत हुई तो चमेली भय से कांप उठी। जल्दी-जल्दी अपनी गागरें ले कर चमेली अपने घर पहुँची। चौखट पर पैर रखते ही एक कर्कश आवाज़ उसके कानों में पड़ी, "क्यों री कुलच्छिनी ! यारों से अब फ़ुरसत मिली !"

जिस स्त्री ने यह शब्द कहे थे वह करीब पचास साल की बुढ़िया थी और चमेली की सास थी। चमेली ने अपनी सास को कोई उत्तर न दिया, चुपचाप घड़े अपने सर से उतार कर उसने रख दिये। सास चमेली के और नजदीक आई, चमेली के रंग से भीगे हुए कपड़ों को देख कर वह चीख उठी, "हां ! रानी जी रंग खेल कर आई हैं कलमुहीं कहीं की—यह ले !" और यह कहते हुए उसने अपने हाथ का बेलन भरपूर चमेली की पीठ पर मारा।

सास से मार खाना चमेली के लिए कोई नई बात नहीं थी और गालियां सुनना तो उसका नित्य का क्रम था। चमेली ने घूम कर कहा, "बस! और कुछ कहना है?"

सास तड़प उठी, "हां, आज जो कुछ कहना है उसे तू जनम भर याद रक्खेगी, बांझ कहीं की!" और यह कह कर उसने बेलन का दूसरा प्रहार किया। इस प्रहार को चमेली ने अपने हाथों पर ले कर बेलन सास से छीन लिया।

बेलन के हाथ से छिनते ही सास ज़ोर से चिल्ला उठी, "अरे दमड़ी बेटा—बचा, नहीं तो यह चुड़ैल मुझे मार डालेगी!"

अपनी माता की पुकार सुन कर दमड़ीलाल हाथ में छड़ी लिए हुए अपने कमरे से निकल आया। दमड़ी करीब २७–२८ साल का दुबला-पतला आदमी था। चमेली ने दमड़ी को जो आते देखा तो बेलन को अपनी सास पर फेंक कर अपनी कोठरी की तरफ भागी। वह अपनी कोठरी में घुसने भी न पाई थी कि दमड़ी की छड़ी उसके सर पर पड़ी।

चमेली रुक गई, दमड़ी ने फिर मारने के लिए छड़ी तानी। इस बीच में सास ने खींच कर बेलन चमेली पर फेंका। दुर्भाग्यवश दमड़ी उसी समय चमेली पर प्रहार करने को आगे बढ़ा और बेलन चमेली के न लग कर दमड़ी की कनपटी पर भर पूर बैठा। दमड़ी चिल्ला उठा, "मार डाला चुड़ैल ने!" और कनपटी पकड़ कर ज़मीन पर बैठ गया।

अपने पति के चोट लगने के कारण चमेली को नित्य की भांति कोठरी में घुस कर भीतर से किवाड़ बन्द कर लेने की नौबत ही नहीं आई, वह पति-देवता को सम्हालने के लिए नीचे झुकी कि उसकी पीठ पर गद्द से एक लाठी पड़ी। यह लाठी दमड़ी लाल के पिता लाला छदम्मी लाल ने अपनी बहू को मारी थी। इस बीच में दमड़ी के छोटे-छोटे भाई चमेली पर टूट पड़े। सब ने चमेली को ज़मीन पर

पटक कर बेतहाशा पीटा। पड़ोस वालों ने जब चमेली पर से खान-दान वालों को हटाया तब यह पता चला कि चमेली की कोहनी फूट गई है, सर पर दो गुलमें पड़ गए हैं, हाथ छिल गया है।

चमेली चुपचाप अपने कमरे में चली गई और मुंह ढँक कर पड़ रही। उस दिन न उससे किसी ने खाने को कहा न उससे किसी ने कोई सहानुभूति ही प्रकट की। दोपहर भर वह रोती रही, शाम के समय उसकी आंखें लग गईं।

शाम बीत चुकने के बाद जब सास ने देखा कि घर का पानी खत्म हो चुका और चमेली अभी तक कुंएँ से पानी नहीं लाई तो वह तड़प कर चमेली की कोठरी में पहुँची। उसने कड़क कर कहा "क्यों री चुड़ैल, बांझ कहीं की! अभी तक सो रही है! पानी-वानी की फ़िक्र है?"

चमेली आंखें मलती हुई उठी। आंगन में पहुँच कर उसने घड़े उठाए और कुएँ की ओर चल दी।

कुंआ चमेली के घर से करीब दो फर्लांग की दूरी पर था, एक घनी अमराई के बीचो-बीच। उस ओर बस्ती नहीं के बराबर थी। चमेली घड़े के मुंह पर डोर लगा रही थी कि उसे सुन पड़ा, "क्यों भौजी! सुना आज बड़ी ठुकाई हुई!"

"तुम्हारी बला से!" चमेली ने बिना पीछे देखे उत्तर दिया। चमेली उस बात को कहने वाले आदमी के कण्ठस्वर को अच्छी तरह पहचानती थी। रतनू सुनार का मकान चमेली के मकान के पास ही था और रतनू दमड़ी का गहरा दोस्त था। लाला छदम्मी लाल लेन-देन का कारबार करते थे, उनका लड़का दमड़ी उस कारबार में उनकी सहायता करने के साथ कुछ थोड़ा सा आवारगी के भी मेरा उठा लेता था। रतनू भी पक्का आवारा था और उसकी नज़र चमेली पर बहुत दिनों से थी। अकसर वह चमेली से अकेले में मिल कर इसी तरह की छेड़खानी किया करता था।

रतनू ने आगे बढ़ कर कहा, "क्यों इतना बर्दाश्त करती हो मेरी रानी ! मैं कहता हूँ....."

चमेली ने घूम कर उत्तर दिया, "जाते हो कि मार खाओगे !" लेकिन आज चमेली के स्वर में वह पहले वाली दृढ़ता नहीं थी।

रतनू ने बढ़ कर चमेली का हाथ पकड़ लिया। इस बार प्रथा के अनुसार चमेली ने रतनू से न अपना हाथ छुड़ाया और न उसने दूसरे हाथ से रतनू को तमाचा मारा। उसने केवल इतना कहा, "तुम्हें शरम नहीं आती जो अपने दोस्त की जोरू को बहका रहे हो !"

"अरे वह निकम्मा और आवारा दमड़ी—वह मेरा दोस्त ? उसे दोस्त कहते तो मुझे शरम आती है। तुम्हारी ऐसी फूल की परी उस लफंगे के हाथ पड़ गई।! मैं होता तो मेरी रानी मैं तुम्हें अपनी पलकों पर विठलाता, दिन-रात तुम्हारी पूजा करता। तुम्हें छन भर को पलंग से न उतरने देता। और वह तुम से पानी भरवाता है ! ये दो-दो घड़े पानी ले कर चलना !" और इस वार रतनू ने चमेली का दूसरा हाथ पकड़ कर उसे अपने हृदय से लगा लिया।

चमेली ने रतनू का विरोध नहीं किया। दिन भर के वाद सहानुभूति के प्रथम शब्द उसके कानों में पड़े थे, रतनू के कंधे पर अपना सर रख कर वह सिसक-सिसक कर रोने लगी।

रतनू ने कहा," चल चमेली ! किस निकम्मे के पाले पड़ी है —चल मेरे साथ ! हम दोनों साथ रहेंगे एक दूसरे के होकर। कितना प्रेम करता हूँ मैं तुझ से !"

चमेली ने रतनू की आंखों से अपनी आंखें मिलाईं, " तुम मुझे छोड़ोगे तो नहीं ?"

"मर कर ही हम दोनों एक दूसरे से छूटेंगे——विश्वास कर मेरा !'

चमेली का विवेक उसका साथ छोड़ चुका था, उसे प्रेम के दो शब्द तो सुनने को मिले थे। वे शब्द सच्चे हैं या झूठे, चमेली में

इस पर सोचने की इच्छा तक न थी। घर में उसे नित्य ही जो अपमान सहना पड़ता था, घृणा और उपेक्षा का वह भयानक वातावरण—आज उस सब ने चमेली की लोक-मर्यादा का बांध तोड़ दिया था। उसने पूछा, "लेकिन चलेंगे कहां ?"

"यहां से बहुत दूर, जहां हमें कोई ढूंढ़ ही न सके। जहां हम लोग सुख से रहेंगे, मौज से ज़िन्दगी बिताएँगे, हँसी-खुशी में फले-फूलेंगे। आज ही चलें हम लोग!" रतनू ने कहा।

चमेली एक तरह से सहम गई। इतनी जल्दी सब कुछ कर डालना होगा! चमेली की समझ में न आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा है। लेकिन जो कुछ हो रहा था वह सब बड़ी तेज़ी के साथ; समय आ गया था! रतनू कहता ही गया, "अब झिझक किस बात की? जो कुछ करना है उसे तुरन्त कर डालना चाहिये। आज रात बारह बजे मैं यहीं, इसी जगह तुम्हारा इन्तज़ार करूँगा! अपना सब-कुछ ले कर आना, गहने, कपड़े; परदेस चलना है—बम्बई। वहां मैं अपना कारबार करूँगा, हम लोग अपना मकान बनवाएँगे।"

चमेली चुप रही। क्या करे, क्या कहे, वह निर्णय न कर पा रही थी।

रतनू ने कहा, "बोलो, चुप क्यों हो? आज रात बारह बजे! तुम्हें आना ही पड़ेगा—बोलो!" यह कह कर रतनू ने चमेली को कस कर आलिंगन-पाश में जकड़ लिया।

रतनू के आलिंगन से चमेली का सारा शरीर पुलक उठा, उसने धीमे से कहा, "अच्छा, आऊँगी!"

रतनू ने चलते हुए कहा, "तो मैं चलूं, मैं भी चलने का इन्तज़ाम करूँ जाकर।"

रतनू के चले जाने पर चमेली न पानी भरा और घर पहुँची। सास ने फिर गालियों से स्वागत किया, "क्यों री बांझ चुड़ैल! कहां

मर गई थी ? अभी दिन की पूजा से खुश नहीं हुई ? मर जाती तो अच्छा था, दमड़ी का दूसरा विवाह तो कर लेती ! कलमुंही, निगोड़ी कहीं की !"

चमेली ने उत्तर दिया, "दूसरा विवाह कर दो न ! तुम्हें रोका किसने है ?"

उस दिन पड़ोस के गांव में होली का स्वांग था। दमड़ी शाम को ही वहां चला गया था। चमेली ने चलते-चलते सास से कहा, "और अब जो तुमने ज्यादा कुछ कहा तो तुम्हारा गला घोट दूंगी—यह याद रखना ! सब्र की भी हद होती है !"

चमेली की यह बात सुन कर और वह मुद्रा देख कर सास सहम गई।

चमेली ने जी भर खाना खाया, इसके बाद वह कोठरी में गई। भीतर से सांकल चढ़ा कर उसने अपने कपड़े-गहने निकाले। लेकिन चमेली के पास गहने ही कितने थे ! जहां तक नकद का सवाल था, वहां भी उसके पास कुल पांच रुपए निकले।

एकाएक उसकी नज़र दीवार पर टँगी हुई दमड़ी की तिजौरी की चाभी पर पड़ी । कांपते हुए हाथों से चाभी उतार कर चमेली ने तिजौरी खोली । तिचौरी में चांदी और सोने के गिरवी रक्खे गहनों का ढेर लगा था । चमेली ने चुन-चुन कर उस ढेर से सोने के गहने निकाले, फिर उसने नकद रुपया देखा । करीब एक हजार रुपए नकद थे । चमेली ने सव के सव रुपए निकाल लिए । तिजौरी बन्द करके चाभी उसने दीवार पर टांग दी।

आधी रात के समय जब सब लोग सो रहे थे, चमेली वह जमा-जथा लेकर घर से निकल पड़ी । अमराई में रतनू मौजूद था और बड़ी व्यग्रता के साथ चमेली की प्रतीक्षा कर रहा था।

"आ गई मेरी रानी ! मेरा तो दिल धड़क रहा था कि तुम आओ या न आओ !" कहते-कहते उसने चमेली की गठरी हाथ में ले ली !

"कितना सामान है ?" रतनू ने पूछा।

"एक हजार रुपया नकद और सोने के बहुत-सारे गहने !"

रतनू की आंखें प्रसन्नता से चमक उठीं, "शाबाश ! अब तो बड़े मौज से जिन्दगी कटेगी। चल अब देर करना ठीक नहीं, घन्टे भर में गाड़ी जाती है !"

और रतनू के साथ चमेली एक अदृश्य में कूद पड़ी।

तीसरा परिच्छेद

मनुष्य तभी तक स्थित है जब तक उसके पैरों के नीचे वाला चरित्र का धरातल स्थित है। एक बार उसके पैरों के नीचे वाला धरातल खिसका, बस उसका पतन आरम्भ हो गया।

पतन का विधान है—निःसीम ! एक बार जो गिरा उसके लिए रुकना असम्भव है !

चमेली घर से निकली थी प्रेम पाने के लिए, और प्रेम की छाया में हँसी-खुशी, राग-रंग का जीवन बिताने के लिए। रतनू घर से निकला था मौज करने के लिए, ऐय्याशी करने के लिए और रुपया पैदा करने के लिए।

न रतनू को रुपया मिला, न चमेली को प्रेम मिला।

आरम्भ के तीन महीने बम्बई में बड़े आराम से बीते। दादर में रतनू को एक कमरा मिल गया था, दोनों प्राणी उस कमरे म रहने लग गए। रोज सिनेमा देखते थे, रोज सैर-सपाटे होते थे। चमेलीने बम्बई क्या, कोई भी बड़ा शहर पहले कभी न देखा था। बम्बई देख कर उसकी आंखें चकाचौंध हो गईं, उसे ऐसा लगा कि वह अनायास ही एक स्वर्ग में आ गई। ऊँचे-ऊँचे महल, मोटरें, ट्राम, बसें ! और इन्हें देखने में वह मग्न हो गई।

लेकिन चमेली ने देखा कि रुपया खत्म हो रहा है—चमेली स्त्री थी न ! तीन महीने के राग-रंग के बाद अनायास ही उसके मन में बात उठी, "बड़ी महँगी जगह है यह ! पानी की तरह रुपया बहता है यहां। हरेक आराम और हरेक सुख की कीमत अदा करनी पड़ती है, और कीमत सुख तथा आराम से कहीं अधिक है !"

चमेली ने रतनू से अपने मन की बात कहीं, रतनू ने हँस कर चमेली की बात टाल दी।

रतनू पूरी तरह से जवानी के रंग में डूबा था, उसके सामने न भूत था, न भविष्य था, उसके सामने राग-रंग से भरा सुन्दर वर्तमान था। एक अनिंद्य सुन्दरी उसे अनायास मिल गई थी, और उस सुन्दरी के साथ एक लम्बी रकम ! तबीअत का आवारा तो वह पहले से ही था, अब उसने खुलकर खेलना आरम्भ कर दिया।

पास का रुपया खत्म हो गया। चमेली ने रतनू से कहा, "अब तो कुछ करो ! कब तक हम लोगों का काम इस तरह चलेगा ?"

रतनू ने उस दिन अपने कुछ मित्रों को शराब पीने को आमन्त्रित किया था। चमेली की बात उसे अच्छी नहीं लगी, लेकिन अपने क्रोध को दबाते हुए उसने कहा, "कुछ दोस्तों को सलाह करने के लिए बुलाया है। काम आरम्भ करने के लिए पूंजी चाहिये न !"

चमेली ने उत्तर दिया, "पास का रुपया तो खत्म हो चुका है, अब पास में गहने हैं। इन्हें बेंच कर पूंजी इकट्ठी कर लो। लेकिन काम-काज जल्दी ही शुरू करो !"

रतनू को मनमानी मुराद मिली। वह किसी तरह चमेली के गहनों को हथियाना चाहता था और अनायास ही उसे अवसर हाथ लग गया। उसने बनते हुए कहा, "इन गहनों पर कैसे हाथ लगाऊँ ?"

"नहीं, नहीं ! जो कुछ मेरा है वह तुम्हारा है !" भावना के आवेश में आकर चमेली ने कहा, और गहनों का बक्स उसने रतनू के हवाले कर दिया।

शाम के समय जब रतनू घर वापस लौटा तो नशे में चूर था। रतनू के साथ एक और आदमी था, अधेड़-सा, और शक्ल-सूरत से काफ़ी पैसे वाला और सम्पन्न। रतनू ने चमेली से उस आदमी का परिचय कराया, "यह हैं सेठ हीरालाल—हमारे बड़े गहरे दोस्त !

लखपती आदमी हैं। इनके साझे में कार-बार शुरू करना है!" और यह कह कर रतनू ज़ोर से हँस पड़ा।

लेकिन रतनू की वह हँसी चमेली को अच्छी नहीं लगी, रतनू की उस हँसी में एक तरह की शैतानियत थी। और उसी समय चमेली ने हीरालाल पर नज़र डाली, और उसने हीरालाल की आंखों में देखी पाशविकता की चमक, कामुकता का उन्माद!

रतनू एक फ़िल्म का गन्दा गाना गा रहा था, गाने की एक पंक्ति को गा कर उसने कहा, "चमेली रानी, ये सेठ हीरालाल हमारे भाई हैं। मैंने इनसे तुम्हारा ज़िक्र किया तो ये तुमसे मिलने चले आए हैं। हमारे भाग्य कि सेठ हीरालाल ऐसे आदमी हमारे घर आवें। आज रात यह हमारे घर पर ही रहेंगे!"

चमेली ने ज़रा कड़े स्वर में पूछा, "क्या इनके घर-बार नहीं है?"

इस बार सेठ हीरालाल ने अपना मुंह खोला, "है क्यों नहीं! मेरी तो एक बहुत बड़ी हवेली है। लेकिन यह रतनू—यह मेरा सब से बड़ा यार है। मुझे लिवा लाया, बोला दुनिया की अनिंद्य सुन्दरी है इसके घर में! तो हम भी चले आए। बड़ी-बड़ी खूबसूरत देखी हैं मैंने, भगवान ने दिल दिया है, सामर्थ्य दी है कि उन्हें देखूं, उन्हें परखूं! लेकिन मान गया रतनू को! बड़ा भाग्यशाली है! कैसे मुलायम हाथ हैं!..." यह कहते-कहते हीरालाल ने चमेली का हाथ पकड़ लिया।

चमेली ने अपना हाथ छुड़ा लिया और नागिन-सी फुफकार कर खड़ी हो गई। अब वह गांव में विवश पिटने वाली चमेली नहीं थी। उसने कड़क कर हीरालाल से कहा, "निकलो यहां से, बदमाश कहीं के! —निकल यहां से!" चमेली ने हीरालाल का हाथ पकड़ कर घसीटना शुरू कर दिया।

रतनू ने हीरालाल का हाथ चमेली से छुड़ाया। हीरालाल अप्रतिभ-सा रतनू के पास बैठ गया। रतनू ने चमेली को बिठलाते हुए

कहा, "अरे इतनी बात पर नाराज़ हो गई! ये हीरालाल कोई पराए थोड़े ही हैं!"

"अपना-पराया मैं कुछ नहीं जानती, इसे मेरा हाथ पकड़ने की हिम्मत कैसे हुई?" चमेली का स्वर प्रखर था।

रतनू ने अब चमेली पर अपना अधिकार दिखाने की और उससे अपनी बात मनवाने की आवश्यकता अनुभव की। उसने कड़ाई के साथ कहा, "देख, इन्हें मैं अपने साथ लाया हूँ। आज तू इनके साथ सोएगी—इसलिए!"

चमेली सन्नाटे में आ गई। रतनू ने कितनी भयानक बात कह डाली उससे। कुछ देर तक वह मौन, मर्माहत, निस्तब्ध और विमूढ़ सी रतनू को देखती रही, "हूँ! तो तुम मुझ से यह काम करवाने के लिए मुझे यहां लाए हो! नरक के कीड़े! भगवान ने मेरे पापों का अच्छा दण्ड दिया है। लेकिन यह सब कुछ नहीं होगा, इतना समझ लो!"

रतनू की त्यौरियां चढ़ गईं, "जो कुछ मैं कहूँगा वह करना पड़ेगा—जानती है? बड़ी सती-साध्वी थी तो अपने खसम को छोड़ कर मेरे साथ क्यों भागी थी?"

चमेली ने हीरालाल से कहा, "तुम जाओ सेठ, नहीं तो भयानक काण्ड हो जायगा।"

रतनू गरज पड़ा, "सेठ हीरालाल यहां से नहीं जाएँगे—यह मकान मेरा है, तेरा नहीं है। जाना हो तो तू जा यहां से!"

"अच्छी बात है, तो मैं ही जाती हूँ। मुझे मेरे गहने दे दो!"

"कैसे गहने, कहां के गहने? निकल यहां से और मर जा कर चुड़ैल कहीं की!"

"नहीं दोगे मेरे गहने, नहीं दोगे! मैं कहती हूँ अच्छा नहीं होगा!"

"नहीं दूंगा ! जा, जो तेरा जी चाहे कर ले !"

"अच्छी बात है, अभी बतलाती हूँ !" चमेली तड़प कर घर के बाहर निकली।

चौराहे पर पुलिस का सिपाही खड़ा था। चमेली ने उससे कहा, "जमादार साहेब ! रतनू ने मेरा गहना छीन कर मुझे घर से निकाल दिया है ! मुझे मेरा गहना दिलवा दीजिये।"

चमेली को यह पता न था कि उसके पीछे-पीछे हीरालाल भी घर से निकला था। हीरालाल शहर का नामी आदमी था, हरेक पुलिस वाले से उसकी अच्छी-खासी दोस्ती थी। हीरालाल ने सिपाही के कान में कहा, "माल अच्छा है, थाने के बहाने मेरे यहां लेते आना।" और वह सिपाही के हाथ में ५) का नोट देकर चला गया।

सिपाही ने चमेली से पूछा, "यह रतनू तेरा कौन है ?"

चमेली बोली, "कोई नहीं, मुझे मेरे घर से भगा लाया है। मेरा गहना दिलवा दीजिये। आपके हाथ जोड़ती हूँ, पांव पड़ती हूँ।"

भीड़ इकट्ठा होने लगी थी। सिपाही ने कहा, "तुझे मेरे साथ थाने चलना पड़ेगा।"

"मैं थाने नहीं जाऊँगी, मेरा गहना दिलवा दीजिये।"

"जाएगी कैसे नहीं ? कहां से तू भाग कर आई है ? गहना-वहना बाद में देखा जायगा, पहले तेरे घर वालों को तेरी इत्तिला देनी होगी !" यह कह कर सिपाही ने चमेली का हाथ पकड़ लिया।

चमेली के अन्दर अब क्रोध का स्थान भय ने ले लिया, "मुझे गहना-वहना नहीं चाहिये। मुझे छोड़िये जमादार साहेब ! मुझे जाने दीजिये।"

लेकिन चमेली अब सिपाही के चंगुल में आ गई थी, वह चमेली को सहज ही छोड़ने वाला न था। हीरालाल उससे कह गया था न !

उसने कहा, "नहीं, तुझे चलना ही पड़ेगा ।"

चमेली की आंखों में आंसू आ गए, "मैं नहीं जाऊँगी, थाने मैं नहीं जाऊँगी ।" चमेली रो पड़ी ।

इसी समय चमेली को एक आवाज़ सुनाई पड़ी, "क्यों री चुड़ैल—फिर भाग आई !" और भीड़ से निकल कर एक आदमी चमेली की बगल में खड़ा हो गया।

सिपाही ने उस अधेड़ आदमी से पूछा, "तुम कौन हो जी ?"

उसने कहा, "यह मेरी जोरू है जमादार साहेब, इसका दिमाग खराब हो गया है। कभी-कभी जब पागलपन का दौरा सवार होता है तब यह इसी तरह भागती ह। छोड़िये इसका हाथ !"

सिपाही ने चमेली की ओर देखा । चमेली ने इस आदमी को पहले कभी न देखा था। सिपाही ने उससे पूछा, "यह कौन हैं तेरा ?"

चमेली कहने ही वाली थी कि वह उस आदमी को नहीं जानती, पर उसी समय उस आदमी ने कहा, "कह दे न कि मैं तेरा कोई नहीं हूँ—चुड़ैल कहीं की ! जा हवालात में, बन्द रह रात भर हराम-ज़ादी । जवानी सवार है—मैं बूढ़ा हो गया हूँ न जमादार साहेब!" और उसकी बात पर सभी दर्शक हँस पड़े।

सिपाही अजीब चक्कर में पड़ गया। उसने चमेली से कहा, "बोलती क्यों नहीं, कौन है यह तेरा ?"

इस समय तक चमेली की समझ में आ गया था कि वह आदमी जो भी हो, सरकारी यमदूत से बचने के लिए उसे अपना पति स्वीकार कर लेने में ही उसका कल्याण है। उसने सिसकते हुए कहा, "जमा-दार साहेब ! इनसे कह दो कि घर ले जा कर मुझे मारे न—नहीं तो मैं नहीं जाऊँगी।"

दो चार आदमियों ने उस अधेड़ आदमी को धिक्कारना शुरू

कर दिया। कुछ ने उसे उपदेश भी दिया कि अगर चमेली का दिमाग खराब है तो उसमें दोष चमेलो का नहीं है वल्कि उसका है। सिपाही ने चमेली का हाथ छोड़ दिया, उस हाथ को पकड़ कर उस अधेड़ आदमी न कहा, "चल !" और उसने दो रुपए सिपाही के हाथ में रख दिये।

चौथा परिच्छेद

थोड़ी दूर तक दोनों प्राणी मौन चलते रहे। उस समय करीब नौ बजे थे और सड़क की भीड़ कम होने लगी थी। दोनों दादर स्टेशन के सामने पहुँचे। उस अधेड़ आदमी ने अब चमेली की ओर देखा, "क्या इरादा है तेरा—कहां जायगी ?"

चमेली एकाएक चौंक पड़ी। उसने उस अधेड़ आदमी को देखा, "तुम कौन हो ?"

"मेरा नाम रामेश्वर है !" अधेड़ आदमी ने कहा, "अभी तीन महीना हुआ देस से यहां आया हूँ। एक मारवाड़ी सेठ के यहां तगादगीर का काम करता हूँ। शहर लौट रहा था कि चौराहे पर भीड़ देखी, और भीड़ से घिरा हुआ देखा तुझे। सिपाही के चंगुल में फँस गई थी न ! सोचा तुझे बचाऊँ, और तुझे बचा ही लिया।" रामेश्वर हँस पड़ा, "कैसा साफ झूठ बोला ! मैं खुद ताज्जुब कर रहा हूँ। सब-के-सब मेरी भड़ी में आ गए। अच्छा—अब कहां जाएगी ?"

"कहां जाऊँगी ?" चमेली का स्वर काँप उठा, "कहां जाऊँगी ? समुद्र तो है। जो पाप किया है। उसका फल तो भोगना ही है।"

"क्या बक रही है ? कायर बन कर मरने से तेरा पाप धुल जायगा—तू क्या यह समझती है ? जो कुछ भी पाप किया है तूने, आत्महत्या का पाप उससे भी भयानक होगा। चल मेरे साथ।" रामेश्वर ने कहा।

चमेली वहां से हिली नहीं, चुपचाप पत्थर की मूर्ति की भांति वह रामेश्वर को देख रही थी।

रामेश्वर ने पूछा, "तुझे मेरे ऊपर विश्वास नहीं? मैं कहता हूँ न—चल मेरे साथ। आज रात तो तू वहीं काट, कल सोचेंगे कि क्या किया जाय। बोल, चुप क्यों है?"

चमेली फूट पड़ी, "मुझ अभागी को क्यों आश्रय दे रहे हो? मुझे मरने दो। मैं इसी काबिल हूँ। क्यों मेरे लिए तकलीफ़ कर रहे हो। मरने दो इस पापिन को।"

रामेश्वर ने चमेली का हाथ पकड़ कर खींचते हुए कहा, "चल, तू आपे में नहीं है। देख—पानी घिर रहा है। अगर तू चाहे तो तुझे जहां तू ठहरी है वहां पहुँचा दूं।"

"नहीं, नहीं, मैं वहां न जाऊँगी।"

"तो फिर मेरे साथ चल।"

उस समय तक बूंदें गिरने लगी थीं। ज़ोर की घटा घिरी थी; रामेश्वर ने चर्नी रोड के दो टिकट लिये। लोकल ट्रेन पर बैठ कर दोनों चर्नी रोड स्टेशन पर उतरे। उस समय तक पानी जोर के साथ गिरने लगा था। भीगते हुए दोनों गिरगांव के एक मकान में पहुँचे जहां रामेश्वर एक कोठरी ले कर रहता था।

रामेश्वर ने कहा, "बिल्कुल भीग गई है, तेरे पास तो कपड़े भी नहीं हैं। अच्छा, ले यह मेरी चादर, इसे पहन ले और अपनी धोती सुखा ले। मेरे पास तो सिर्फ़ एक धोती और है! मैं भी भीग गया हूँ।"

चमेली ने चुपचाप चादर लपेट ली।

रामेश्वर ने पूछा, "खाना खाया है? नहीं, वह तो तेरे चेहरे से साफ देख रहा हूँ। मैं तो सिर्फ़ एक दफ़े रसोई बनाता हूँ, रोटी ढँकी रक्खी है। आज ज्यादा बन गई थीं। मैं ठाकुर हूँ, मेरे हाथ का बनाया खाने में कोई हर्ज तो नहीं है?

चमेली ने कहा, "आज मैं खाना नहीं खाऊँगी, मुझे भूख नहीं है।"

खाना खा कर रामेश्वर ने चमेली से कहा, "तू इसी कमरे में सो जा, मैं बरामदे में सोया जाता हूँ।" और एक तकिया दरी लेकर रामेश्वर बाहर चला गया।

चमेली की आंखों में नींद नहीं थी, वह अपने विगत जीवन पर सोच रही थी। कहां से कहां आ गई थी वह, और अब उसे कहां जाना होगा? उसकी समझ में न आ रहा था कि वह क्या करे। वह अपने घर से अकेले भाग कर ही नहीं आई थी, वह वहां से चोरी करके आई थी। उसके माता-पिता थे, लेकिन उसके माता-पिता उसका मुंह नहीं देखेंगे—वह यह जानती थी। आखिर वह जायगी कहां?

पानी अब मूसलाधार गिरने लगा था, ज़ोर की हवा चल रही थी। एकाएक चमेली के मन में आया कि उस पानी में रामेश्वर कहां होगा। यह रामेश्वर कौन है? कितना भला आदमी है! इस रामेश्वर की आंखों में कितनी ममता है, कितना अपनापन है, कितनी कोमलता है। इतनी ज़ोर का पानी बरस रहा है, और वह रामेश्वर—वह रामेश्वर? वह चाहती थी कि वह रामेश्वर को भीतर बुला ले, एक कोने में वह भी सो जाय। और यही सब सोचते-सोचते उसे नींद आ गई।

सुबह रामेश्वर कमरे में आया। उसकी आंखें लाल थीं, ऐसा मालूम होता था मानो वह रात को सोया न था। उसने मुसकराने का प्रयत्न करते हुए कहा, "अरे बाप रे! कैसी बरसात होती है इस बम्बई में। अच्छा देख, मुझे पेढ़ी पर जाना है, जल्दी से नहा कर दो रोटियां सेंक लूं।"

"मैं सेंके देती हूँ! लेकिन..." चमेली कहते-कहते रुक गई।

"लेकिन क्या? मैं ठाकुर हूँ। तू कौन जात है?" रामेश्वर हँस पड़ा।

"पहले बनिया थी, अग्रवाल। अब कोई जात नहीं।"

"हूँ ! तो तू समझती है कि मैं तेरे हाथ का पकाया खाऊँगा नहीं।" रामेश्वर ने सर हिलाते हुए कहा, "देख, बम्बई में खाने-पीने के मामले में सिर्फ एक जात होती है, वह है आदमी की। यहां मुसलमान के होटल की चाय पीनी पड़ती है। फ़िक्र न कर !"

खाना खाते हुए रामेश्वर ने कहा, "कल रात तेरी बाबत बहुत सोचा। अजीब चक्कर में पड़ गया हूँ। मेरा ऐसा खयाल है कि तू घर वापस नहीं जा सकती—है न ठीक?"

चमेली ने सिर हिला दिया।

"और अपने मायके?"

"वहां भी नहीं !"

"वहां भी नहीं !—मैं जानता था। तुझे कोई घर में वापस न लेगा, तू औरत है न! कुल कलंकित हो जायगा। मर्द सब कुछ कर सकता है और वह कुलीन बना रह सकता है। दुनिया मर्दों की है न ! —हत्तेरे की!" और रामेश्वर हँसने लगा।

चमेली की आंखें तरल हो गईं। रामेश्वर को उसने देखा, उसे ऐसा लगा उसके सामने एक महापुरुष बैठा है। दयावान, त्यागी, न्याय-प्रिय ! वह सोच रही थी कि अगर दुनिया के सभी आदमी रामेश्वर ऐसे हो सकते तो दुनिया कितनी अच्छी जगह बन गई होती।

रामेश्वर खाना खा चुका था। उसने पूछा "अब सवाल यह है कि तू करेगी क्या? मिल में तुझे काम मिल सकता है, लेकिन बड़ा कठिन काम है वह, तुझसे होगा नहीं। और अगर होगा भी तो तू जानवर बन जाएगी, जानवर! ऊँह ! तेरे वास्ते वह काम नहीं है। फिर क्या हो?" कहते-कहते रामेश्वर उठ खड़ा हुआ। उसने घड़ी देखी, नौ बज रहे थे, "देर हो रही है। सोचने-विचारने का समय मेरे पास अभी नहीं है। रात में जब लौटूंगा तब सोचूंगा। और देख, वह है ताला-चाभी। मैं करीब आठ बजे लौटूंगा, उस वक्त तक लौट आना।

दिन भर जहां जी चाहे घूम-फिर।" यह कह कर रामेश्वर ने जल्दी-जल्दी मुंह-हाथ धोया और कपड़े पहन कर अपने काम पर निकल पड़ा।

रामेश्वर के जाने के बाद चमेली घर से बाहर नहीं निकली, दिन भर वह उसी कोठरी में पड़ी रही। वह मर्माहत और विमूढ़ थी। एक भयानक निराशामय अन्धकार उसकी आंखों के आगे था, रह-रह कर उसे अपने ऊपर क्रोध आ रहा था।

आज दुनिया में कोई उसका न था। मां-बाप, भाई-बहन, सास-ससुर—सब जगह से वह छूट गई थी, सब दरवाज़े उसके लिए बन्द हो गए थे। कहीं भी वह न जा सकती थी। भगवान उसके विरुद्ध था। छै वर्ष के विवाहित जीवन में भी उसकी कोख न भरी थी—वह बांझ थी। और अब वह अपराधिनी तथा कुल-कलंकिनी भी हो गई थी। दुनिया में अकेली—नितान्त अकेली। रह-रह कर उसके मन में आ रहा था कि वह आत्महत्या कर ले। उसे अब अपने जीवन के प्रति ज़रा भी मोह न रह गया था, उसके जीवन की उसके लिए कोई सार्थकता नहीं थी। एक-आध बार वह दृढ़ निश्चय करके उठी कि वह समुद्र में डूब मरे, पर कोठरी के बाहर उसके पैर न निकल सके। रामेश्वर जब घर वापस आयेगा तब क्या होगा? अगर वह घर खुला छोड़ कर जाती है तो रामेश्वर की चोरी हो जाएगी, अगर वह ताला लगा कर जाती है तो रामेश्वर को तकलीफ़ होगी, उसे ताला तोड़ना पड़ेगा। और—और—वह जानती थी कि रामेश्वर रात भर चिन्तित उसकी तलाश करेगा।

अन्त में चमेली ने यह निश्चय किया कि रामेश्वर के आने पर वह मौका देख कर घर से निकल जायगी।

रात में जब रामेश्वर घर लौटा, वह बहुत थका हुआ-सा दिख रहा था। रामेश्वर का चेहरा उतर गया था, उसकी आंखें झपी जा रही थीं। चमेली ने पूछा, "अरे! कैसी तबीअत है?"

रामेश्वर ने हँसते हुए कहा, "तबीअत ठीक है, सिर्फ़ सर में हलका-हलका दर्द है। अभी ठीक हो जायगा। अपनी बता, दिन में कहां-कहां गई?"

चमेली ने उत्तर दिया, "कहीं नहीं, यहीं घर में पड़ी रही!"

चमेली उठ कर चूल्हा जलाने लगी, "मैंने सुबह रोटी ज्यादा नहीं बनाई, सोचा जब आओगे ताज़ी-ताज़ी बना दूंगी। मैं तो हूँ ही!"

"नहीं, मुझे भूख नहीं है, अपने लिए बना ले। इस वक्त लंघन कर लूंगा तो तबीअत ठीक हो जायगी।" यह कह कर रामेश्वर लेट गया।

चमेली ने दाल चढ़ा दी। उसने कहा, "मेरी खातिर तुम्हें कुछ खाना पड़ेगा। जब तक दाल पकती है तब तक मैं तुम्हारा सर दाब दूं।" और चमेली रामेश्वर का सर दबाने लगी।

दिन में चमेली ने जो कुछ सोचा था, वह नहीं कर सकी। चमेली की समझ में न आ रहा था कि रामेश्वर के प्रति क्यों उसके मन में एक ममता पैदा हो रही है। क्या वह वास्तव में ममता थी, या वह अपने जीवन को बचाए रखने का कायरता से भरा मोह था? डूबते को तिनके का सहारा काफ़ी, निराशा के समय आशा की एक किरण बहुत होती है।

चमेली ने पूछा, "तुमने मेरी बाबत कुछ सोचा?"

रामेश्वर मुसकराया, "सोचने का वक्त कहां मिला? और फिर अभी जल्दी ही क्या है? कहा है न कि जल्दी का काम शैतान का होता है। फिर तुझे यहां तकलीफ़ क्या है? फ़ुरसत से सोचना होगा, तेरा मामला कोई आसान थोड़ा है। अच्छा, अब रहने दे, दर्द ठीक हो गया!"

खाना खा कर रामेश्वर फिर कमरे के बाहर चला गया और बरामदे में सो गया।

चमेली सोते-सोते एकाएक उठी। उस समय मूसलाधार पानी गिर रहा था और हवा बहुत तेज़ थी। पानी की बौछार कमरे में आ रही थी, चमेली का बिस्तर करीब-करीब भीग गया था। उसने अपना बिस्तर खिसका कर खिड़की बन्द कर ली और फिर लेट गई। उसे नींद आने ही वाली थी कि उसके मन में विचार उठा, "रामेश्वर तो बरामदे में है, उनकी क्या हालत होगी?" और चमेली उठ खड़ी हुई। उसने दरवाज़ा खोल कर देखा, रामेश्वर दरी लपेट कर दीवार से लगा हुआ सिकुड़ा बैठा था। चमेली कह उठी, "अरे!"

रामेश्वर हँस पड़ा, "देख रही है! अजीब बरसात है यह बम्बई की। अभी थोड़ी देर में पानी बन्द हो जायगा तब सो जाऊँगा—सो जा कर।"

चमेली रामेश्वर के पास आ गई, "अपना कमरा रहते हुए भी तुम भीग रहे हो और जाग रहे हो और मैं आराम से पैर फैलाए सो रही हूँ।"

"जा-जा, सो जा कर! हम मर्द बच्चे हैं, अगर थोड़ा-सा भीग भी गए तो क्या हो जायगा।"

चमेली ने रामेश्वर का हाथ पकड़ लिया, "चलो, भीतर सोओ चल कर।"

चमेली के उस स्पर्श से रामेश्वर का सारा शरीर सिहर उठा, हाथ छुड़ाने का एक हलका-सा प्रयत्न करते हुए उसने कहा, "तेरे साथ अकेले कमरे में मैं कैसे सोऊँगा? कहा न, सो जा कर।"

"नहीं, तुम्हें कमरे में चलना ही होगा, मेरी सौगन्द!" चमेली अब अपने को न रोक सकी। रामेश्वर के कन्धे पर सर रख कर वह फूट पड़ी, "तुम आदमी नहीं देवता हो। मुझ अभागिन के पीछे इतनी तकलीफ़ उठा रहे हो—चलो, भीतर सोओ चल कर।"

और चमेली जबर्दस्ती रामेश्वर को कोठरी के अन्दर खींच ले गई।

पांचवां परिच्छेद

रामेश्वर के जीवन में अनायास ही एक बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया। उसने यह कल्पना तक न की थी कि इस उम्र में और परदेस में जा कर उसे गृहस्थी जमानी पड़ेगी। उसके जीवन में रस आ गया, प्राण आ गया। वह अब किसी को अपना कह सकता था, उसे कोई अपना मानने वाला भी दुनिया में था।

और चमेली को ऐसा लगा कि उसे एक नई दुनिया मिली जो वास्तव में स्वर्ग है। जीवन में प्रथम बार उसे वास्तविक प्रेम मिला, ममता मिली। उसकी मुर्झाई हुई आत्मा खिल उठी, उसकी पथराई हुई आंखों में चमक आ गई। उसके पास गहने नहीं थे, उसके पास कपड़े नहीं थे, पर उसे इनका अभाव मालूम ही नहीं होता था, उसके पास इन सब से बढ़ कर एक निधि थी—प्रेम! रामेश्वर की वह पूजा करती थी, उसकी वह पूरी तौर से सेवा करती थी। रामेश्वर की टेढ़ी नज़र के आगे वह सहम उठती थी, उसके उतरे हुए चेहरे को देख कर वह उदास हो जाती थी। उसकी मुसकराहट देख वह पुलक उठती थी उसकी हँसी पर वह न्यौछावर हो जाती थी।

रामेश्वर जिस मकान में रहता था, उस मकान में अधिकतर युक्तप्रान्त के निवासी ही रहते थे, जो बम्बई में भइया कहलाते थे। उनमें कुछ अकेले रहते थे, कुछ अपने बीबी-बच्चों के साथ। चमेली उस मकान में रहने वाली स्त्रियों से कुछ दिनों में ही अच्छी तरह हिल-मिल गई। रामेश्वर ने सब से यही कह दिया कि चमेली उसकी बीबी है और वह बिना रामेश्वर की मर्जी के, जबर्दस्ती अपने आप चली आई है।

उस मकान में एक और स्त्री रहती थी, उसका नाम था राधा। राधा अपने चाल-चलन और अपनी चपलता के लिए बदनाम थी। राधा का पति जगमोहन एक फिल्म-कम्पनी में नौकर था। जगमोहन को लखपती बनने की बड़ी अभिलाषा थी और इसीलिए वह राधा को साथ लेकर बम्बई आया था। वह समझता था कि पति-पत्नी दोनों मिल कर एक्टिंग करेंगे, और लम्बी तनख्वाह मिलेगी। बम्बई आने पर उसे पता चला कि एक्टर बनना कोई आसान काम नहीं है। राधा को दो-एक जगह एक्स्ट्रा का काम मिला भी, लेकिन जगमोहन को किसी ने न पूछा। एक एक्स्ट्रा-सप्लायर की कृपा से जगमोहन को एक फ़िल्म-कम्पनी में चपरासी का काम मिल गया, लेकिन एक्स्ट्रा-सप्लायर ने यह कृपा जगमोहन के ऊपर की न थी बल्कि राधा के ऊपर की थी क्योंकि बेकार जगमोहन राधा के साथ हरदम लगा रहता था, और राधा को खुल कर खेलने का मौका न मिलता था।

राधा काफ़ी शौकीन थी, और वह मकान की अन्य स्त्रियों से अलग रहने में कुछ अपनी शान समझती थी। मकान की अन्य स्त्रियां भी धीरे-धीरे अपने को राधा से अलग रखने लगी थीं। चमेली ने दो-चार दिन यह सब देखा-सुना। उसे ऐसा लगा कि मानो राधा एकदम अकेली है। वह जानती थी कि इसमें गलती राधा ने ही पहले-पहल की थी, जीवन में अकेलेपन की कटुता को न जान कर—और इसलिए उसे राधा के प्रति एक प्रकार की सहानुभूति-सी हो गई थी।

राधा की अवस्था लगभग सत्ताईस-अट्ठाईस साल की थी और उसका शरीर फैलने लगा था। अति से प्रपीड़ित यौवन अब ढलने की अवस्था में आ गया था, राधा का सन्मान रूप के बाज़ार में कम हो गया था। एक्स्ट्रा-सप्लायर की नज़र बाज़ार में आने वाली नई-नई जवान लड़कियों पर थी। अपने फ़िल्म-जीवन में राधा की मित्रता तरह-तरह के आदमियों से हुई, उनमें कुछ बदमाश थे, कुछ शरीफ़ थे; कुछ उचक्के थे, कुछ पैसे वाले थे। और उन आदमियों में एक थे सेठ शिवकुमार।

शिवकुमार लखपती था, लेकिन वह लखपती बना था अपने उचक्केपन से। जाल, फ़रेब, झूठ, बेईमानी—इन सब गुणों में वह पारंगत था। समाज में वह बड़ा शरीफ़ आदमी गिना जाता था, उसके दो मकान थे, कपड़े की एक थोक दूकान थी। सभा-सोसाइटियों में वह सदा आगे रहता था। और रात के समय वह शराब पीता था, वेश्यागमन करता था, जूआ खेलता था। वह बड़े-बड़े बदमाशों का सरदार था। पिछली शाम को राधा से शिवलाल का झगड़ा हो गया था। शिवलाल ने राधा को अधिक रुपया देने से इनकार कर दिया था, राधा की आय का आखरी सहारा भी जाता रहा था। जगमोहन को कुल पचीस रुपए महीने मिलते थे, और इधर राधा पर काफ़ी अधिक कर्ज़ हो गया था। राधा को चिन्ता हो गई थी कि अब भविष्य में क्या होगा।

रात में राधा जब शिवलाल से लड़ कर लौटी, वह वहुत अधिक उदास थी। घर आते ही उसे तीव्र ज्वर आ गया—उसके दिल को गहरा सदमा पहुँचा था। जगमोहन की रात की ड्यूटी थी, वह घर में न था। और राधा का ज्वर इतना तीव्र हो गया था कि वह प्रलाप करने लगी। आस-पास की स्त्रियां सब अपने-अपने कमरों में बैठी रहीं, किसी को राधा के साथ कोई सहानुभूति न थी। चमेली ने रामेश्वर से कहा, "सुना! राधा को बड़ा तेज़ बुखार है, कमरे में अकेली पड़ी कराह रही है और बक रही है। मैं जाती हूँ उसकी देख-भाल करने, तुम किसी डाक्टर को बुला लाओ!"

रामेश्वर डाक्टर को बुला लाया, चमेली राधा के सिरहाने बैठी थी। डाक्टर ने राधा को देखा, उसे निमोनिया हो गया था। डाक्टर ने राधा को दवा दी और चला गया। रात भर राधा के सिरहाने बैठी चमेली जागती रही।

चमेली की सेवा-शुश्रूषा और अथक परिश्रम से राधा एक सप्ताह में अच्छी हो गई। राधा की और चमेली की मित्रता उस दिन से बढ़ने

लगी। रामेश्वर और जगमोहन में पहले से ही एक अच्छा-खासा परिचय था, उस परिचय ने अब घनिष्टता का रूप धारण कर लिया। जगमोहन मस्त, लापरवाह, किसी हद तक बेवकूफ़ और दिल का नेक आदमी था। जगमोहन को नाच-गाने से बड़ा शौक था। जगमोहन को अगर अपने जीवन में कहीं भी कोई विषमता या कुरूपता मिली थी तो वह राधा के रूप में, लेकिन राधा को वह बुरी तरह चाहता था, इस कदर चाहता था कि वह राधा के इशारों पर नाचता था, उससे बेतरह डरता था।

राधा से चमेली की मित्रता रामेश्वर को अच्छी नहीं लगी, लेकिन रामेश्वर इस सम्बन्ध में मौन ही रहा। राधा अब अच्छी हो गई थी, लेकिन कमज़ोर थी। उस दिन राधा ने चमेली से कहा, "आज मैं कम्पनी जा रही हूँ!"

"कम्पनी जा रही हो? इतनी कमज़ोर हो, कम्पनी कैसे जाओगी?" आश्चर्य से चमेली ने पूछा।

"जिस तरह हो, जाना ही पड़ेगा। आखिर मेरे घर में पड़े रहने से तो घर का काम-काज न चलेगा!"

"वह तुम्हारे तो काम करते हैं—तुम्हें ऐसी काम करने की क्या ज़रूरत है?" चमेली ने सरल-भाव से पूछा।

"तुम बड़ी भोली हो! उनको मिलता ही कितना है? पच्चीस रुपए न! तो पचीस रुपयों में कहीं घर का काम चलता है? चमेली, आज की दुनिया, और खास तौर से बम्बई की दुनिया बड़ी अजीब है। इस दुनिया का देवता है रुपया! अगर तुम्हारे पास रुपया है तो तुम्हारे लाखों पाप छिप जाते हैं, अगर तुम्हारे पास रुपया नहीं है तो तुम्हारे हँसने-बोलने तक पर दुनिया को आपत्ति है! रुपया-रुपया! जिस तरह हो, रुपया चाहिये!"

राधा ने उठ कर अपना सिंगार किया, अपने कपड़े बदले। जगमोहन उस दिन घर में ही था, वह उस दिन राधा को कम्पनी ले चलने के लिए रुक गया था। चलते हुए राधा ने चमेली से कहा, "मैं तुम्हें भी सलाह देती हूँ चमेली कि तुम कुछ काम करो! दुनिया में किसी पर निर्भर रहना ठीक नहीं, न जाने कब क्या हो जाय, कब कैसी हालत आ पड़े। अपने हाथ-पैर में अगर ताकत है तो दुनिया का मुकाबिला तो किया जा सकता है।"

चमेली से राधा ने जो कुछ कहा था, चमेली दिन भर उस पर सोचती रही। "आखिर मैं दिन भर क्या करती हूँ? अगर मैं भी कुछ काम कर लूं तो क्या बुरा? रामेश्वर को कितनी तकलीफ़ है। कुल तीस रुपए मिलते हैं, उसमें बारह रुपया तो कोठरी का किराया ही है! हे भगवान—यह कैसे गृहस्थी चलाते होंगे?"

शाम के समय चमेली ने रामेश्वर के सामने अपना प्रस्ताव रक्खा! रामेश्वर ने चमेली का प्रस्ताव सुना और और वह गम्भीर हो गया, "राधा ने तुझे यह सब सुझाया होगा! मुझे राधा से तेरा यह हेल-मेल इसीलिए अच्छा नहीं लगता था।"

"लेकिन इसमें बेजा क्या है?" चमेली ने पूछा।

"बेजा क्या है? हूँ! तो तू काम करना चाहती है—है न! अब सवाल यह है कि तू कौन-सा काम करेगी? नौकरी? जानती है, नौकरी में अपने को दूसरों के हाथों बेंचना पड़ता है। तेरे पास रूप है, जवानी है। तू जहां जायगी वहां लोग तेरी मेहनत का नहीं, तेरी रूप-जवानी का सौदा करेंगे!"

चमेली आश्चर्य से रामेश्वर को देख रही थी और रामेश्वर कहता जा रहा था, "राधा ने तुझे यह सलाह दी—तू राधा की जिन्दगी तो देखती ही है! मुझे राधा से शिकायत नहीं, वह बेचारी तो अपनी मेहनत से रुपया पैदा करने गई थी। लेकिन लोगों ने उसकी मेहनत

के पहले उसकी रूप-जवानी का सौदा किया। पैसे की दुनिया है, पैसा भगवान है, पैसा धर्म है, पैसा ईमान है। पैसा सब कुछ खरीद सकता है। राधा ने अपनी रूप–जवानी बेंच दी, पैसे के आगे वह अपने को रोक न सकी—उसे बेंचनी ही पड़ी।"

चमेली थोड़ी देर तक सोचती रही, फिर उसने कहा, "अच्छा, नौकरी न करूँगी। बिना नौकरी का ही कोई काम करवा दो!"

"अरी छोड़ भी! ऐसी काम-काज की तुझे क्या ज़रूरत आ पड़ी?"

चमेली ज़िद पकड़ गई थी, "देखो, तुम्हारे पास जितने रुपये थे वह भी खर्च हो गए। बीस रुपयों में दो जनों का गुज़ारा कैसे होगा? मुझे कोई दूकान करवा दो, तुम्हारा थोड़ा-सा हाथ बटा लूं!"

"तू दूकान करेगी?" आश्चर्य से रामेश्वर ने पूछा।

"हां, दूकान करूँगी! तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं होता," चमेली मुसकराई, "दूकान में चीज़ें बेंचूगी, अपनी रूप–जवानी नहीं बेंचूगी! मैं कहती हूँ, मुझे कोई दूकान करवा दो!"

रामेश्वर सोचने लगा। दूकान की बात कोई ऐसी बेजा न थी। उसने पूछा, "किस चीज़ की दूकान करेगी?"

"पान की" चमेली ने कहा, "पान की दूकान चलेगी। आसान काम है, इसमें कोई ज्यादा मेहनत भी नहीं करनी पड़ेगी!"

युक्तप्रान्त में स्त्रियां पान की दूकान पर बैठती हैं—रामेश्वर यह जानता था। अपने गांव वाली रानी तमोलिन से वह परिचित था। रानी की दूकान में सभी शौकीन पान खाने वाले आते थे, सबसे वह हँसती-बोलती थी। लेकिन उसका चरित्र निर्दोष था। पर बम्बई में तो पान की दूकान में स्त्रियों के बैठने की प्रथा न थी। रामेश्वर ने कुछ सोच कर कहा, "पान की दूकान तो बेजा न रहेगी, लेकिन बम्बई में पान की दूकान पर स्त्रियों के बैठने की प्रथा नहीं है—लोग क्या कहेंगे?"

"जो जी चाहे कहें, मुझे लोगों की परवाह? प्रथा हो न हो, मैं बैठूंगी। दुनिया की प्रथा के खिलाफ़ शुरू से चलना पड़ा है फिर अब झिझक काहे की ? मैं कहती हूँ तुम मुझे एक पान की दूकान करवा दो !"

एक हफ्ते बाद ही भूलेश्वर में एक पान की दूकान खुल गई और चमेली उस पर बैठने लगी। आरम्भ में उस पान की दूकान के चलने में कुछ कठिनाइयां हुईं, लेकिन धीरे-धीरे उस दूकान में ग्राहक आने लगे। हां, इतना अवश्य था कि सदगृहस्थ खुल्लम-खुल्ला उस पान की दूकान से पान खाने में डरते थे, पर धीरे-धीरे छैल-छबीलों और शौकीनों के पान खाने की वह एक मात्र पान की दूकान हो गई।

उस दूकान से चमेली तीन-चार रुपए रोज पैदा कर लेती थी। रामेश्वर को ऐसा लगा कि उसके घर में लक्ष्मी आ गई है। रामेश्वर की कोठरी में अब सामान भरने लगा था, अच्छे कपड़े अब दोनों पहनने लगे थे, अच्छा खाना खाने लगे थे। और इस सब के साथ उस घर की स्त्रियों की नजर में चमेली भी उसी कोटि में आ गई जिसमें राधा थी। एक प्रकार से चमेली का भी सामाजिक बहिष्कार होने लगा। पर इस सामाजिक बहिष्कार से प्रभावित होने का न चमेली के पास समय था, न उसे कोई आवश्यकता ही थी। राधा से उसकी घनिष्टता बढ़ती गई।

छठा परिच्छेद

सेठ शिवकुमार का मकान भूलेश्वर में था। शिवकुमार की अवस्था करीव तीस वर्ष की थी और उसकी तन्दुरुस्ती अच्छी थी। उसके पास धन था, धन की शक्ति थी और उस शक्ति का गर्व था। वह उ लोगों में था जो दुनिया के लिए नहीं बने हैं बल्कि जो यह समझते हैं कि दुनिया उनके लिए बनी है। सेठ शिवकुमार से उसके पड़ोसी डरते थे। उसके पीठ पीछे वे उसे गालियां देते थे, उसके मुंह के सामने वे उसका आदर करते थे।

शिवकुमार उस दिन घर से पैदल ही निकल पड़ा। उसके पास दो मोटरें थीं, लेकिन एक मरम्मत के लिए कारखाने गई थी और दूसरी एक मिलने वाले के यहां मँगनी गई थी। काम जल्दी का था; यह सोच कर कि टैक्सी मँगाने में देर लगेगी तथा रास्ते से टैक्सी ले लेने में अधिक सुविधा होगी, वह तेज़ी के साथ चला जा रहा था। एकाएक उसे एक आवाज़ सुनाई दी, "अरे सेठ शिवकुमार जी हैं, बड़ी जल्दी में हैं। पान खाते जाइये, बहुत दिनों बाद मिले हैं!"

आवाज़ कन्हैया की थी। कन्हैयालाल शिवकुमार का लड़कपन का दोस्त था, लेकिन वह अपने जीवन में सफल न हो पाया था। कन्हैया भी आवारा था, वह शिवकुमार के यहां अकसर आया जाया करता था। कन्हैयालाल उस समय चमेली की दूकान पर खड़ा पान खा रहा था। शिवकुमार दूकान के सामने खड़ा हो गया, उसने चमेली को देखा। चमेली को देखते ही उसकी आंखें मानो झप गईं। ऐसी सुन्दरी उसने कभी न देखी थी, चमेली के अंग-अंग से यौवन फूटा पड़ रहा था। उसके होठों पर अल्हड़ मुसकान थी, उसकी हरिणी की सी बड़ी-बड़ी आंखों में कौतूहल का भोलापन था। कन्हैया ने कहा, "दो पान हमारे सेठ शिवकुमार के लिए भी लगाना—ये बड़े पारखी हैं!"

चमेली ने एक बार शिवकुमार को देखा फिर वह खिलखिलाकर हँस पड़ी, "पारखियों की परख करने में बैठी हूँ—सेठ सादे या मसालेदार ?"

शिवकुमार के मुंह से आवाज़ नहीं निकली। कन्हैया ने कहा, "सेठ को मसाला बहुत पसन्द है—मसालेदार !"

इतनी देर में शिवकुमार सुव्यवस्थित हो गया था, उसने कहा था, "नहीं सादे बनाना ! आज तो सादगी पर ही न्यौछावर हो रहा हूँ !"

चमेली ने उसी दम कहा, "सेठ, सादगी को ढूंढ़ने वाले बाज़ार में नहीं आते !" और उसने मसाला डाल कर दो पान शिवकुमार के आगे बढ़ा दिये।

शिवकुमार ने गिलौरियां मुंह में दबाते हुए दो रुपए चमेली के आगे बढ़ाए। चमेली ने उन रुपयों को देखा, फिर उसने शिवकुमार को देखा, "सेठ, पान बेच रही हूँ—पान का दाम दो पैसा होता है !"

कन्हैया इस उत्तर से खिलखिला कर हँस पड़ा, शिवकुमार ने खिसिया कर रुपए अपनी जेब में रख लिये। कन्हैयालाल से उसने कहा, "ज़रा मेरे साथ चलो, कुछ बात करनी है !"

दूकान से कुछ आगे बढ़ कर शिवकुमार ने कन्हैयालाल से पूछा "इस पान वाली को जानते हो क्या ?"

"नहीं ! अभी दस-पन्द्रह दिन हुए इसने दूकान खोली है !"

"बला की खूबसूरत है !"

"इसमें भी कोई शक है !" कन्हैया ने कहा, "यहां तो तभी नज़र उठती है जब माल चोखा हो !"

"बात करने में बड़ी तेज़ है !" शिवकुमार ने कहा।

कन्हैया हँस पड़ा, "मिजाज़ की भी बड़ी तेज़ है ! एक दिन

मैंने इसका हाथ पकड़ लिया, बस मार खाते-खाते बचा! इतनी गालियां खाने को मिलीं कि कुछ न पूछो।"

शिवकुमार हँस पड़ा, "तुम्हारे बस की नहीं है कन्हैया, हमी लोगों से ये लोग ठीक रहती हैं। ज़रा पता तो लगाओ कौन है!"

कन्हैया सकपकाया, "भाई इस चक्कर में मुझे मत डालो। तुम लोग अमीर हो, मोटर है, नौकर हैं, पैसा है; जो चाहे कर सकते हो। तुम्हीं इसका पता भी लगा सकते हो। इसका आदमी रोज़ सुबह इसे यहां ले आता है, रोज़ शाम इसे यहां से ले जाता है। और उस आदमी की शकल से मुझे डर लगता है!"

"हूँ!" शिवकुमार ने कहा, "ऐसे-ऐसे बहुतों को देख चुका हूँ अपनी जोरू को बाज़ार में बैठा कर पैसा पैदा करने वालों को मैं अच्छी तरह जानता हूँ! अच्छी बात है, मैं ही पता लगा लूंगा!"

शिवकुमार का नित्य का यह क्रम बन गया कि अपनी मोटर को कुछ दूर पर खड़ी करके चमेली की दूकान पर दो पान अवश्य खाता था और उस समय वह चमेली से हँसी-मज़ाक कर लेता था। शिवकुमार ने यह अनुभव किया कि चमेली एक सीमा तक ही हँसी-मज़ाक करती थी, इसके बाद वह हँसी-मज़ाक में लोगों को गालियां दे सकती थी, उनका अपमान कर सकती थी।

जितना अधिक शिवकुमार चमेली से बात करता था, उतना ही अधिक चमेली के प्रति उसका आकर्षण बढ़ता जाता था। चमेली में एक प्रकार की मोहिनी थी जिसने शिवकुमार को पूरी तौर से अपने वश में कर लिया था। चमेली को पाने की अभिलाषा शिवकुमार के हृदय में नित्य नए वेग के साथ बढ़ने लगी—और वह दिन में कई बार चमेली की दूकान पर आने लगा।

एक दिन शिवकुमार ने चमेली से पूछा, "क्यों जी! तुम तो रानी की तरह रह सकती हो, यह पान की दूकान तुमने क्यों खोली है?"

चमेली ने उत्तर दिया, "रानी वही होती है सेठ, जिसका आदमी राजा हो। अपने आदमी को राजा बनाने के लिए ही मुझे यह दूकान खोलनी पड़ी है !"

"कौन है तुम्हारा आदमी ?" शिवकुमार ने पूछा।

"क्या करोगे जान कर सेठ ?"

"मैं उसे राजा बनने में मदद दूंगा। तुम शायद नहीं जानती कि मेरा बड़ा लम्बा कार-बार है। किसी कार-बार में उसे पत्ती देकर लगा लूंगा !"

चमेली हँस पड़ी, "अपने कार-बार में मेरे आदमी को पत्ती देकर उसकी जोरू में तुम पत्ती लेना चाहते हो सेठ ! बड़े चालाक हो। लेकिन मेरे आदमी को जानते नहीं, वह तुम्हारा मुंह तोड़ देगा।"

शिवकुमार का वह वार खाली गया। एक दिन उसने और साहस किया, "एक नया थियेटर आया है—देखोगी ? बड़ा मशहूर थियेटर है—शहर भर टूटा पड़ रहा है। मैंने दो टिकट खरीदे हैं।"

"मुझे साथ ले कर थियेटर देखोगे सेठ ?" चमेली ने कहा, "तुम्हारे नाते-रिश्तेदार, तुम्हारे घरवाले क्या कहेंगे ?"

"उन्हें पता ही न चलेगा। मेरी मोटर पर बैठ जाना, हम दोनों साथ चलेंगे। बम्बई में कोई किसी को नहीं पूछता, सब अपने-अपने में मस्त रहते हैं।"

"लेकिन मेरा आदमी ? उसे जो पता लग जायगा।"

शिवकुमार को ऐसा लगा कि जैसे उसका काम बनने वाला है। उसने कहा, "एक टिकट और मँगवाए लेता हूँ—अपने आदमी को भी साथ ले लो—मैं उससे मिलना चाहता हूँ !"

"लेकिन मैं अपने आदमी से क्या कहूँगी सेठ ?" चमेली ने कहा, "तुम्हारे ऐसे लुच्चे और लफंगे आदमी के साथ बैठने में मेरे आदमी को शरम जो आवेगी। ना सेठ, मुझे माफ़ करो !"

इस बात से शिवकुमार तिलमिला उठा, उसने पान के बीड़ों को मुंह में रखते हुए कहा, "देखो, मेरा नाम है शिवकुमार! मैं तुम्हें अपनाऊँगा जरूर, जिस तरह भी हो। मैं तुम पर बुरी तरह दीवाना हो चुका हूँ।"

चमेली ने मुसकराते हुए पूछा, "सेठ! अभी तक कितनी औरतों पर दीवाने हो चुके हो?"

शिवकुमार ने गम्भीरतापूर्वक कहा, "जिन्दगी में औरत के पीछे दीवाना होने का यह पहला मौका है। अभी तक मैंने औरतों के साथ खिलवाड़ किया है। और आज मैं तुम्हारे हाथ का खिलौना बन रहा हूँ।" और शिवकुमार बिना चमेली के उत्तर की प्रतीक्षा किये हुए वहां से चला गया।

जो बात शिवकुमार ने कही थी, यद्यपि उसे चमेली ने झूठ समझा था, लेकिन शिवकुमार ने अपने दिल की बात कही थी। हरेक आदमी में कहीं न कहीं एक भयानक कमज़ोरी होती है। आदमी तब तक सफल रहता है जब तक उसकी वह कमज़ोरी दबी रहे, लेकिन जब वह कमज़ोरी एक बार उभर आती है तब आदमी अपने बस में नहीं रहता, वह उस कमज़ोरी का गुलाम बन जाता है।

शिवकुमार की वह मुद्रा चमेली को अच्छी नहीं लगी। यद्यपि उसने शिवकुमार की बात का विश्वास नहीं किया, पर शिवकुमार के शब्दों में उसने छल और फ़रेब का कोई चिह्न नहीं देखा।

चमेली रामेश्वर से प्रेम करती थी और चमेली रामेश्वर की थी। स्त्री का प्रेम आत्म-समर्पण का होता है; प्रथम बार चमेली को प्रेम मिला था और चमेली का सारा अस्तित्व रामेश्वर के अस्तित्व में लय हो चुका था। रामेश्वर और चमेली की उम्र में बहुत अधिक अन्तर था, लोगों को आश्चर्य होता था कि चमेली ऐसी नौजवान और चंचल स्त्री किस प्रकार एक अधेड़ आदमी से प्रेम कर सकती है; आश्चर्य करने वाले लोग यह न जानते थे कि चमेली जीवन के कटु और कठोर

अनुभवों के बीच से गुज़रने के बाद प्रेम की महत्ता को समझ गई है उसने प्रेम के रूप को देख लिया है, वह वासना से बहुत ऊपर उठ चुकी है, वह वासना का मज़ाक उड़ा सकती है।

उस रात जब चमेली घर पहुँची, जगमोहन और राधा उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। नवरात्रि का पर्व दूसरे दिन से आरम्भ होने वाला था और नौरात्रि का पर्व बम्बई में बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है, विशेषतः गुजरातियों में। घर-घर में गरबा-नृत्य होते हैं, उत्सव होते हैं। जिस मकान में रामेश्वर और जगमोहन रहते थे वह चारों ओर से गुजरातियों के मकानों से घिरा हुआ था।

जगमोहन की बहुत दिनों से यह आकांक्षा थी कि वह अपने मकान में भी नवरात्रि का उत्सव धूम-धाम से मनावे। चमेली का कंठ मधुर था, चमेली को नाच-गाने से शौक था। इस समय तक राधा और चमेली में घनिष्टता बहुत अधिक बढ़ चुकी थी। उस मकान के दो चार और आदमियों ने भी नवरात्रि के उत्सव मनाने के प्रस्ताव का समर्थन किया था। चमेली की उस उत्सव में सम्मिलित होने की स्वीकृति वे लेना चाहते थे।

अगर चमेली जगमोहन और राधा के आन्तरिक भावों को जान सकती तो वह उस उत्सव में सहयोग देने से इनकार कर देगी। राधा का बाज़ार अब प्रायः उजड़ चुका था—राधा यह अच्छी तरह समझ गई थी, अब उसे दूसरे ढंग से अपना बाज़ार जमाना था। राधा के पुराने ग्राहक तो मौजूद थे, पर उन ग्राहकों को नए माल की आवश्यकता थी। नए माल को एकत्रित करने के लिए राधा ने जगमोहन की सहायता से यह जाल बुना था। इस उत्सव, इस राग-रंग के भीतर जो भयानक कुरूपता छिपी हुई थी, उसका न चमेली को कोई पता था और न उस उत्सव में भाग लेने वाले किसी अन्य स्त्री-पुरुष को।

चमेली ने अपनी स्वीकृति दे दी। रामेश्वर को चमेली का स्वीकृति देना अच्छा नहीं लगा, लेकिन वह मौन रहा। रामेश्वर चमेली

का जी न दुखाना चाहता था। फिर रामेश्वर को चमेली पर अक्षय और अडिग विश्वास भी था।

उत्सव के चार-पांच दिन तो एक तरह से रिहर्सल में बीते, सातवें दिन राधा ने अपने पुराने ग्राहकों को उस उत्सव में आमन्त्रित किया।

उस दिन शाम से ही बड़ी चहल-पहल थी। आज चमेली का एक ऐसा नृत्य था जिस पर जगमोहन ने बड़ी मेहनत की थी। चार-पांच दिनों तक चमेली ने उस नृत्य पर लगातार अभ्यास किया था। उस नृत्य को देखने के लिए उस मकान के सभी आदमियों ने अपने-अपने मेहमानों को आमन्त्रित किया था।

नृत्य आरम्भ हुआ, और लोगों ने उस दिन एक दूसरी ही चमेली को देखा। उसके उस नृत्य में चमेली की अल्हड़ जवानी, उसकी अनिंद्य सुन्दरता, उसकी प्राकृतिक कला—ये सब पूर्ण-रूप से निखर उठे। मंत्र मुग्ध सब के सब चमेली का नृत्य देख रहे थे, किसी ने उतना सुन्दर नृत्य पहले कभी न देखा था।

चमेली का नृत्य समाप्त हो गया। उसके बाद और भी नाच-गाने थे, लेकिन फिर कुछ न जम सका। चमेली अपने कपड़े बदल कर दर्शकों में सम्मिलित हो गई थी। थोड़ी देर बाद ही राधा ने आ कर चमेली के कान में कहा, "चमेली, ज़रा मेरे साथ आना, ज़रूरी काम है।"

राधा चमेली को अपने कमरे में ले गई, और कमरे में प्रवेश करते ही चमेली चौंक उठी। सामने एक कुरसी पर बैठा शिवकुमार मुसकरा रहा था। राधा ने चमेली से कहा, "चमेली, यह हैं सेठ शिवकुमार—यहां के बहुत बड़े सेठ, लखपती आदमी हैं। इन्हें तुम्हारा नाच-गाना बहुत पसन्द आया। यह एक फ़िल्म कम्पनी खोल रहे हैं, उसमें यह तुम्हें लेना चाहते हैं।"

चमेली ने अपनी झुंझलाहट दबाते हुए मुसकराने का प्रयत्न करते हुए कहा, "सेठ! यहां तक पहुँच गए आखिरकार! राधा से

तो तुम्हारी बहुत पुरानी मुलाकात मालूम होती है ! राधा को क्यों नहीं अपनी कम्पनी में लेते ?"

शिवकुमार को चमेली की मुसकराहट से कुछ उत्साह मिला, "राधा तो रहेगी ही—लेकिन फ़िल्म कम्पनी में बहुत ज्यादा औरतों की आवश्यकता पड़ती है। फिर मुझे एक हीरोइन की आवश्यकता है, ऐसी जो नाच-गाने से सब को मुग्ध कर सके। आज तुम्हारा नाच-गाना देख कर तो मैं दंग रह गया।"

"मने पहले कभी किसी कम्पनी में नौकरी नहीं की है सेठ ! फिर मुझसे नौकरी होगी भी नहीं।"

"अरे नौकरी थोड़े ही होगी वह, तुम वहां रानी बन कर रहना। मेरा सारा रुपया-पैसा, जमा-जथा सब तुम्हारे पैरों पर। तुम्हारा हुक्म चलेगा, तुम्हारी पूजा होगी।" शिवकुमार ने कहा, "शुरू से ही एक हज़ार रुपया महीना की तनख्वाह होगी।"

चमेली कुछ देर तक सोचती रही, "नहीं सेठ, मुझे तुम्हारी नौकरी नहीं करनी !" और वह वहां से चलने लगी।

राधा ने चमेली का हाथ पकड़ लिया, "अरी पागल हो गई है। जिन्दगी में ऐसे मौके बार-बार नहीं आते और जवानी हमेशा कायम नहीं रहती। सेठ, मैं सब कुछ ठीक कर दूंगी—लेकिन आज कुछ पेशगी मिल जाय तो बात पक्की हो जाय।"

शिवकुमार ने सौ-सौ के पांच नोट चमेली की तरफ़ बढ़ाए, "यह है पांच सौ रुपया, पांच सौ रुपया कल भिजवा दूंगा। पहले महीने की तनख्वाह पेशगी हो जायगी। क्यों राधा ठीक है न !"

चमेली चुपचाप यह तमाशा देख रही थी। इन पांच सौ रुपयों को देखते ही वह तड़प उठी, "सेठ ! तुमने मुझे राधा की तरह रन्डी समझ रक्खा है क्या। अब अगर दूसरी बात मुंह से निकाली तो जीभ खींच लूंगी।" और वह राधा को धक्का देकर कमरे के बाहर निकल

गई। चमेली फिर नाच में नहीं गई, वह अपने कमरे में जा कर उदास लेट गई। राधा के उस रूप को देख कर उसकी आत्मा को गहरी ठेस लगी। जिस राधा को उसने इतनी सेवा की थी, जिस राधा को उसने अपने इतना निकट समझा, जिस राधा के लिए उसने रामेश्वर की बातों को टाल दिया, वह राधा इतनी नीच थी। इतनी पतित थी।

और फिर चमेली रामेश्वर पर सोचने लगी---कितना महान है वह! चमेली ने रामेश्वर के प्रति अपराध किया था, उसकी बात न मान कर! और रामेश्वर ने चमेली पर क्रोध नहीं किया, उसने इस अवज्ञा पर बुरा नहीं माना। वह बराबर चमेली से प्रेम करता रहा, उसका मान करता रहा। थोड़ी देर तक चमेली रोती रही और रो कर उसका जी कुछ हलका हो गया। उसी समय रामेश्वर ने कमरे में प्रवेश किया।

रामेश्वर ने मुसकराते हुए कहा, "क्यों, यहां इस कोठरी में क्यों लेटी है? अभी तो वहां नाच-गाना हो रहा है, लोग तुझे ढूंढ़ रहे हैं!

चमेली ने रामेश्वर का हाथ पकड़ कर बिठलाते हुए कहा, "ढूंढ़नें दो उन्हें, मैं नहीं जाऊँगी!"

'क्यों, क्या हो गया तुझे? क्या किसी से लड़ कर आई है?"

"हां!" चमेली ने रामेश्वर के कंधे पर अपना सर रख दिया। "मुझे माफ़ करो। मैंने तुम्हारा बहुत, बड़ा अपराध किया है।"

रामेश्वर चक्कर में था, उसकी समझ में न आ रहा था कि चमेली क्या कह रही है। उसने चमेली के मत्थे पर अपना हाथ फेरते हुए कहा, "तू मेरा कोई अपराध कर ही नहीं सकती! बोल न, क्या पहेली बुझा रही है?"

"तुम्हारी मर्जी के खिलाफ राधा से दोस्ती बढ़ा कर मैंने अच्छा नहीं किया!" यह कह कर चमेली ने राधा के कमरे में जो कुछ हुआ था वह रामेश्वर को सुना दिया।

चमेली से सारी बातें सुनकर रामेश्वर गम्भीर हो गया। वह कुछ देर तक सोचता रहा, फिर उसने कहा, "देखा चमेली, लोकमत गलत बहुत कम होता है। एक-दो आदमी गलती कर सकते हैं, लेकिन जब जन-समुदाय किसी बात को कहने लगता है तब उसमें सत्य की मात्रा अवश्य रहती है। राधा के सम्बन्ध में मैंने जो-जो सुना, वह झूठा नहीं था, उसका तुझे प्रमाण मिल गया! लेकिन मैंने तेरी तबीअत के खिलाफ़ तुझे राधा से मिलने-जुलने को इसलिए नहीं रोका था कि मुझे तेरे ऊपर, तेरी नेकी पर, तेरी पवित्रता पर विश्वास था। मैं समझता था कि राधा पर तेरा असर पड़ने से शायद उसकी ज़िन्दगी सम्हल जाय, लेकिन मेरा खयाल गलत था!" यह कह कर रामेश्वर उठ खड़ा हुआ।

चमेली रामेश्वर की यह दृढ़ मुद्रा देख कर डर-सी गई, "तुम कुछ मत कहो उससे, मैं तुमसे विनती करती हूँ!"

"नहीं, मैं राधा से बात नहीं करूँगा, मैं बात करूँगा जगमोहन से! जो कुछ तूने बतलाया वह बहुत भयानक है। राधा जो कुछ भी हो, उससे हमें मतलब नहीं था, लेकिन अब तो वह समाज के लिए बहुत अधिक खतरनाक बन गई है। उस मकान की बहू-बेटियों पर राधा का असर पड़ सकता है—और वह तो अच्छा नहीं होगा!"

रामेश्वर ने जो कुछ कहा था वह अक्षरशः ठीक था, चमेली इस बात से इनकार न कर सकती थी।

सातवां परिच्छेद

चमेली के इस प्रकार क्रोधित होकर अपने कमरे से चले जाने से राधा डर गई। उसने शिवकुमार से कहा, "यह तो अच्छा नहीं हुआ! अगर इसने अपने आदमी से सब बातें कह दी तो बड़ा गज़ब हो जायगा!"

शिवकुमार ने राधा को ढांढस बँधाते हुए कहा, "कहेगी क्या, मैंने कौन सी ऐसी बेजा बात कही थी उससे? और कौन है इसका आदमी जो तुम उससे इतना डरती हो? आखिर शिवकुमार के पास भी ताकत है! जब तक मैं हूँ, तुम्हारा बाल बांका नहीं हो सकता, इतना इतमीनान रक्खो!"

शिवकुमार की इस बात से राधा को कोई सन्तोष नहीं हुआ। उसने कहा, "तुम नहीं जानते इसके आदमी को! वह पड़ोस के सेठ श्री कृष्ण का तगादगीर है! शायद तुमने उसे देखा हो!"

कुछ देर सोच कर शिवकुमार ने कहा, "अरे वह लम्बा-सा और तगड़ा-सा आदमी तो नहीं—अधेड़ उम्र का! क्या नाम है उसका —शायद रामेश्वर!"

"हां वही!" राधा ने कहा, "अब तुम खुद समझ गए होगे कि अच्छा नहीं हुआ!"

शिवकुमार मुसकराया, "तुमने भी क्या बात कही! अरे वह बूढ़ा तगादगीर—उसको यह स्वर्ग की अप्सरा कहां से मिल गई? मैंने तो समझा था कि चमेली का पाना मेरे लिए बड़ा मुश्किल होगा लेकिन अब मुझे यकीन हो गया कि मुझे इसमें कामयाबी मिल जायगी।"

"तो तुम जानते नहीं उसे! वह ऐसा-वैसा आदमी नहीं है, और फिर चमेली उसे प्राणों से भी अधिक चाहती है!"

शिवकुमार इस बार हँस पड़ा, "बड़ी अच्छी तरह जानता हूँ उसे! न जाने कितने रामेश्वरों से मैं रोज़ मिलता हूँ। उन्हें इशारे पर नचाता हूँ, उनसे अपनी गुलामी करवाता हूँ। तुम ज़रा भी फ़िक्र न करो। हर आदमी की कीमत होती है, रामेश्वर की भी कीमत है, चमेली की भी कीमत है—खरीदार चाहिये, खरीदार! और तुम जानती हो कि मेरा ऐसा खरीदार भी लोगों को मुश्किल से मिलेगा।"

राधा के साथ शिवकुमार फिर नाच देखने चला गया, लेकिन उन्हें चमेली वहां नहीं दिखी। नाच-गाने का मज़ा फीका पड़ रहा था, थोड़ी देर बाद शिवकुमार ने उठते हुए कहा, "अच्छा, अब चलूंगा, लेकिन देखना राधा यह चमेली किसी तरह मेरे हाथ आनी ही चाहिए मुंहमांगा ईनाम दूंगा।"

शिवकुमार को उसकी गाड़ी तक पहुचाने के लिए राधा उसके साथ चली, वे लोग कुछ थोड़ी ही दूर गए होंगे कि रामेश्वर उसके सामने आ गया। उसने राधा से कहा, "क्यों राधा, यही है वह आदमी जो अभी तुम्हारे कमरे में था?"

सकपकाते हुए राधा ने उत्तर दिया, "कौन?...अरे यह हैं सेठ शिवकुमार! इनका नाम तो..."

रामेश्वर ने राधा की बात पूरी कर दी, "हां, इनका नाम मैंने बहुत सुना है, अभी अपने कमरे से इनका नाम सुने चला आ रहा हूँ।" इस बार रामेश्वर ने शिवकुमार से कहा, "इस मकान के इर्द-गिर्द अगर अब तुम्हें देखा तो तुम्हारे हाथ-पैर तोड़ दूंगा! समझ लिया! अब निकलो यहां से!" और रामेश्वर शिवकुमार को दरवाज़े तक पहुँचा आया। राधा चुपचाप अपने कमरे में चली गई।

शिवकुमार को निकाल कर रामेश्वर सीधा जगमोहन के पास पहुँचा। नाच-गाना समाप्त हो चुका था, जगमोहन सब चीज़ें उठा रहा था। रामेश्वर ने आवाज़ दी, "जगमोहन, ज़रा यहां आना। तुमसे कुछ बातें करनी हैं।"

"हां-हां रामेश्वर, ज़रा इन चीजों को कमरे में रख लूं, बस सीधा आया।"

"चीज़ों को बाद में रखना, पहले मेरी बात सुन लो।" रामेश्वर ने तनिक कड़े स्वर में कहा।

जगमोहन चीज़ों को वहीं छोड़ कर रामेश्वर के पास आया, "कहो, पारा बहुत चढ़ा हुआ है। क्या बात है जो इतने नाराज़ हो?"

रामेश्वर ने पूछा, "तुम सेठ शिवकुमार को जानते हो?"

"अरे, बड़ी अच्छी तरह से। मेरे बहुत बड़े दोस्त हैं। बड़े अच्छे आदमी हैं, बड़े मिलनसार, बड़े नेक! आज नाच में आए थे। मैं चाहता था उनसे तुम्हें मिला दूं, लेकिन काम-काज में इस बुरी तरह फँसा था कि बात ध्यान से ही उतर गई।"

"जिसको तुम शिवकुमार से मिलवाना चाहते थे उसको राधा न मिलवा दिया, तुम्हें इसकी फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं है।" रूखे स्वर में रामेश्वर ने कहा, "और साथ ही मैं भी सेठ शिवकुमार से मिल चुका हूँ। अभी-अभी उसे इस मकान के हाते के बाहर निकाल कर चला आ रहा हूँ!"

जगमोहन घबरा गया, "ऐसी क्या बात हो गई जो तुम इतना नाराज़ हो गए?"

"वह सब तुम राधा से पूछ लेना, मुझे तुमसे सिर्फ़ इतना कहना है कि अगर मैंने कभी यह सुना कि इस मकान की कोई बहू-बेटी शिवकुमार या किसी और ऐसे लम्पट के चंगुल में फँस गई है तो मैं तुम्हारी हड्डी-पसली तोड़ दूंगा!"

जगमोहन रामेश्वर के आगे हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया, "रामेश्वर भइया! मैं तुमसे हाथ जोड़ कर कहता हूँ कि इसमें मेरा कोई कसूर नहीं है। मैं क्या करूँ, उस रधिया से आजिज़ आ गया हूँ। उसने मुझे कहीं का नहीं रक्खा। इज्ज़त-आबरू सभी कुछ ले ली,

अब इस सब की नौबत आ गई है।"

"मुझे तुम्हारी इज्ज़त-आबरू से कोई मतलब नहीं। अगर तुममें इज्ज़त-आबरू होती तो तुमने अपनी बीबी से फ़िल्म में काम ही न करवाया होता। तुम्हारी बीबी तुम्हारे ही इशारे पर बिगड़ी है। अब तुम जाओ यहां से! लेकिन मेरी बात अच्छी तरह गांठ में बांध रखना।"

जगमोहन ने रामेश्वर का हाथ पकड़ कर कहा, "मेरी पूरी बात सुन लो रामेश्वर भइया! फिर जो जी में आवे वह समझना। मैं इतना मंजूर करता हूँ कि मैं कायर रहा हूँ, कमज़ोर रहा हूँ, अपनी जोरू पर शासन नहीं कर सका हूँ। लेकिन इसके बाद मेरा कोई कसूर नहीं है। मेरी सारी ज़िन्दगी इस औरत ने गारत कर दी है। जो जी चाहती है करती है, और मैं 'ना' नहीं कर सकता!"

रामेश्वर ने गौर से जगमोहन को देखा और जगमोहन के मुख पर जिस विवशता और जिस करुणा की छाप उसने देखी उससे उसका क्रोध दया और सहानुभूति में बदल गया। उसने कहा, "मुझे अफ़सोस है जगमोहन, जो मैं तुमसे इतनी कड़ी बातें कह गया, लेकिन यह सवाल कोई ऐसा-वैसा तो नहीं है जिसे मैं ऐसे ही छोड़ देता! आज तुम्हारी औरत ने चमेली को बहकाने की कोशिश की, कल वह दूसरी औरतों को बहकाने की कोशिश करेगी। रुपए का लोभ हरेक तो नहीं दबा सकता। तुम ज़रा राधा को डाँट देना—खैर तुम उसे डाँट तो क्या सकोगे—तुम उसे ऊँच-नीच समझा देना, और यह भी बतला देना कि अब मेरी कड़ी निगाह उसकी हरकतों पर रहेगी।"

उस दिन से राधा और चमेली में बातचीत बन्द हो गई। मुहल्ले-पड़ोसवालियों और वालों को राधा और चमेली के इस मनमुटाव पर आश्चर्य अवश्य हुआ, लेकिन कारण कोई भी न जान सका। एक आध बार किसी ने जो कारण जानने का प्रयत्न भी किया तो राधा

और चमेली दोनों ही इस प्रश्न पर मौन हो गईं। जहां तक रामेश्वर और जगमोहन का सवाल था। दोनों अब एक दूसरे के और निकट-से आ गए थे। जगमोहन को रामेश्वर का एक प्रकार से बल मिला था। उसने राधा पर नियन्त्रण रखने का एक हलका सा विफल प्रयत्न भी किया। पर वह यह जानता था कि राधा का सम्हलना असम्भव है। और राधा को छोड़ देना भी जगमोहन के लिए असम्भव था। फिर रुपए-पैसे का मामला भी तो था, राधा ने रुपए-पैसे से बराबर जगमोहन की मदद की थी।

दूसरे दिन चमेली की दूकान पर शिवकुमार पान खाने नहीं आया। चमेली शिवकुमार को और अधिक सुनाना चाहती थी, भरे बाजार वह शिवकुमार का अपमान करना चाहती थी। चमेली को शायद पता नहीं था कि रामेश्वर ने शिवकुमार से बदला ले लिया है। और अगर उसे पता भी होता तो भी वह शिवकुमार का अपमान करती। चमेली जीवन के कटु अनुभवों से लगातार कठोर बनती जा रही थी।

चमेली कभी-कभी अपने जीवन पर स्वयम् आश्चर्य करने लगती थी। "क्या से क्या हो गया?"—चमेली मन ही मन कह उठती थी। अब वह गांव की अल्हड़, निर्बोध, मौन-भाव से ज्यादतियां बर्दाश्त करने वाली; अपमान और अत्याचार को पी जाने वाली चमेली नहीं रह गई थी। चमेली ने दुनिया देखी थी, देखी ही नहीं, लगातार देख रही थी; एक के बाद एक, कड़ुए और मीठे दोनों ही अनुभव उसे हो रहे थे; और उन अनुभवों की आंच में तपकर वह खरी हो रही थी। उसकी पाप-पुण्य की परिभाषा बदल गई थी, उसका विश्वास परिपक्व हो चुका था, उसकी भावना गम्भीर हो चुकी थी। लेकिन जीवन की कटुताओं और कुरूपताओं ने उसे कठोर बना दिया था, प्रखर बना दिया था। और इन सब के साथ चमेली के अन्दर वाले नव-विकसित प्रेम ने उसकी उदारता को सीमित तथा संकुचित कर दिया था। चमेली की दुनिया सिमट कर उसके और रामेश्वर

के दायरे में आ गई थी। उस दायरे के बाहर जो कुछ भी था वह पराया था, चमेली को उसमें रुचि न थी, सहानुभूति न थी।

एक हफ्ते बाद शिवकुमार फिर चमेली की दूकान पर पान खाने पहुँचा। उस समय तक चमेली के अन्दर वाला क्रोध बहुत कुछ कम हो गया था, लेकिन चमेली वार करने से चूकने वाली नहीं थी। उसने मुसकराते हुए पूछा, "क्यों सेठ, कई दिन से इधर आए नहीं। मालूम होता है फ़िल्म कम्पनी के लिए हीरोइन मिल गई।"

शिवकुमार ने कहा, "अभी तो नहीं मिली, तलाश कर रहा हूँ। लेकिन तुम उस दिन बेकार ही मुझे गलत समझ बैठीं—अगर उस दिन मुझ से कुछ गलती हो गई हो तो मैं माफ़ी मांगे लेता हूँ!"

शिवकुमार के माफ़ी मांगने से चमेली के अन्दर जो रहा-सहा क्रोध था वह जाता रहा। उसने कहा, "सेठ, तुम्हारे बीबी बच्चे हैं कि नहीं?"

"हां, हैं तो, लेकिन मैं सुखी नहीं हूँ!"

"क्यों, क्या बीबी लड़ाकी है?"

"नहीं....लेकिन—अगर तुम उसे देखो तो डर जाओ। बदशकल मोटी और कुरूप। घर मुझ काटने को दौड़ता है!

चमेली ने शिवकुमार को पान देते हुए कहा, "सेठ, मेरी बात मानो तो तुम अपनी घर वाली की आत्मा के रूप को देखो—वह सुन्दर होगा!"

शिवकुमार हँस पड़ा, "तुम नहीं समझोगी! मेरी घर वाली में आत्मा है भी—इस पर मुझे शकहोने लगता है। उसने कभी मेरी परवाह नहीं की, कभी मेरी सेवा नहीं की। लगातार गहनों और कपड़ों के पीछे वह दीवानी रहती है। खाना बनाने को रसोइयां है, चौका-बरतन मलने के लिए नौकर—हर काम के लिए एक खिदमत-गार हाजिर रहता है। एक काम उसने अपने हाथों नहीं किया। मैं कब खाता हूँ, क्या खाता हूँ—इसकी उसे चिन्ता नहीं। और इस सब

से उसने मेरी ज़िन्दगी को तो कुरूप बना ही दिया है, उसने अपने शरीर को भी कुरूप बना दिया है।" और यह कह कर शिवकुमार चला गया।

शिवकुमार के शब्दों म सत्य की जलन थी, यह चमेली ने अनुभव किया। बम्बई नगर इन शिवकुमारों से भरा पड़ा है, बम्बई ही नहीं, सारी दुनिया इन शिवकुमारों से भरी पड़ी है जो बुरे नहीं हैं, पर अभावों के कारण बुरे बन गए हैं। चमेली का अन्तर तो इस सत्य को स्वीकार करता था, पर उसके अनुभवों की कठोरता की प्रतिक्रिया ने उसके अन्दर वाली सहानुभूति को दबा दिया था। वह हँस पड़ी, "कैसी मज़ेदार बात कह गया है यह सेठ—पाजी कहीं का! समझता है कि उसके इस झूठ से मैं उसके बहकावे में आ जाऊँगी!" उसने अपने मन ही मन कहा, और इसके बाद वह दूसरे ग्राहक की ओर घूम पड़ी, "कहो सेठ—कैसा पान?"

शाम के समय राधा शिवकुमार के यहां पहुँची। शिवकुमार की फ़िल्म कम्पनी वाली बात ज़ोर पकड़ रही थी। राधा ने शिवकुमार को बतलाया कि उसकी आज कल चमेली से बोल-चाल बन्द है। "यही नहीं, मेरा वह भी आज कल मुझ से फिर-फिरा रहता है सेठ! तुम्हारी वजह से तो मैं बड़ी मुसीबत में पड़ गई!"

"कोई बात नहीं, तुम चिन्ता मत करो! अभी वह तुम्हारी पूजा करेगा। चांदी का जूता बड़ा जबर्दस्त होता है!"

राधा हँस पड़ी, "वाह सेठ, क्या लाख रुपए की बात कही है तुमने लेकिन मेरी मुसीबत तो देखो। पास में पैसा नहीं है, जेवर बेंचना पड़ा है तब कहीं कम्पनी में टैक्सी पर आने का किराया निकला है।"

"तुम से टैक्सी में आने को कौन कहता है—रेल में क्यों नहीं आती?" शिवकुमार ने चिढ़ कर कहा।

"तो फिर चल चुकी तुम्हारी कम्पनी और ले सके तुम एक्टरों

और एक्ट्रेसों से काम ! जो कुछ तुम मुझ से करने को कहते हो वह मैं अपनी हैसियत अच्छी दिखला कर ही कर सकती हूँ । और हां सेठ ! मैंने एक मकान देखा है, चौपाटी पर है ! किराया भी वैसा कुछ ज्यादा नहीं है—सत्तर रुपया महीना !"

शिवकुमार चुपचाप कुछ सोचता रहा, "आखिर तुम्हारा मतलब क्या है ?"

"ऐसे बड़े भोले हो जो मतलब पूछ रहे हो सेठ ! लेकिन तुम तो साफ़-साफ़ सुनना चाहते हो, तो सुनो ! तुमने इतनी बड़ी कम्पनी खोली है। मैं कोई ऐसी बूढ़ी तो हो नहीं गई हूँ। फिर तुम्हारे लिए रोज़ नया-नया माल जुटाने का काम भी मुझे मिला है। उसकी कीमत तो चाहिये ही ! इसलिए मेरी तनख्वाह ठीक कर दो ! मैं हैसियत से रहना चाहती हूँ !"

"कितनी तनख्वाह तुम अपने लिए ठीक समझती हो ?"

"पांच सौ रुपए महीने, और एक महीने की तनख्वाह पेशगी !"

शिवकुमार ने बिना मोल-तोल किये पांच सौ रुपए राधा को दे दिये ।

दूसरे दिन जगमोहन ने रामेश्वर से कहा, "रामेश्वर भइया-चौपाटी पर एक मकान ले लिया है। राधा को पांच सौ रुपए महीने की नौकरी मिल गई है। हमारा तो दलिद्दर कट गया !" और जगमोहन निर्लज्ज की भांति हँसने लगा !"

रामेश्वर कह उठा, "नीच कहीं का ! हट मेरे सामने से !"

उसी दिन शाम के समय राधा और जगमोहन अपने चौपाटी वाले नए मकान में चले गए।

आठवाँ परिच्छेद

उस मकान से राधा के चले जाने से चमेली को अच्छा भी लगा बुरा भी लगा; अच्छा इसलिए लगा कि एक बला टली, और बुरा इसलिए लगा कि राधा वहां से उठ कर एक अच्छे मकान में गई थी, सुख और चैन की जिन्दगी बिताने गई थी। चमेली ने अपने अन्दर राधा के प्रति एक प्रकार की इर्ष्या अनुभव की, और अपने अन्दर राधा के प्रति ईर्ष्या चमेली को अच्छी नहीं लगी। राधा ने जो कुछ पाया था, उसकी कितनी बड़ी कीमत उसने चुकाई थी, चमेली को इसका पता था, और उतनी बड़ी कीमत चुकाने वाली को वह घृणास्पद समझती थी। लेकिन फिर भी सत्य यह था कि राधा को पांच सौ रुपए महीने मिलते ह, एक आलीशान फ्लैट में वह रहती है, टैक्सी पर वह घूमती है, उसकी जिन्दगी हँसी-खुशी की है।

दूसरे दिन जब चमेली की दूकान पर शिवकुमार पान खाने पहुँचा, चमेली ने उससे कहा, "सेठ, सुना है राधा को तुमने अपनी कम्पनी में पांच सौ रुपए महीने पर नौकर रख लिया है। कल शाम वह चौपाटी के एक फ्लैट में उठ गई है!"

शिवकुमार ने उत्तर दिया, "हां, आखिर वह मेरी शरण में थी—उसका कुछ प्रबन्ध तो करना ही था। मेरे पास इतना रुपया-पैसा है, अगर मैंने मुझे अपना समझने वाले को उसमें से कुछ दे ही दिया तो कौन सी बड़ी बात हो गई?"

इस उत्तर से चमेली सोच में पड़ गई। उसने शिवकुमार से बात नहीं बढ़ाई। शिवकुमार ने चलते-चलते कहा, "तुम तो जानती ही हो कि तुम्हारे प्रति मुझ में कितनी ममता पैदा हो गई है। अगर तुम चाहो तो तुम रानी की तरह रह सकती हो!"

चमेली को शिवकुमार का अन्तिम वाक्य बहुत बुरा लगा, लेकिन उसने केवल इतना ही कहा, "सेठ ! एक दफ़े यह सब कह करके तुम्हें सन्तोष नहीं हुआ है ! अगर अपनी भलमनसाहत कायम रखना है तो फिर ऐसी बात मुंह से न निकालना !"

उस दिन शाम के समय जब चमेली घर पहुँची, वह बहुत अधिक थकी हुई थी। उसने चून्हे पर खाना चढ़ा दिया और फिर वह बिस्तर पर लेट गई। उसने अपनी उस छोटी-सी कोठरी को देखा जो शायद कई साल से नहीं पुती थी, और जिसकी छत तथा दीवारें धुंवे से काली हो रही थीं। उसने अपने फटे बिस्तर को देखा, उसने रामेश्वर के टूटे हुए टीन के ट्रंक को देखा, और उसके प्राणों में एक अजीब तरह की पीड़ा भर गई। वह सोचने लगी, "क्या यही ज़िन्दगी है ? दुनिया में इतनी चीजें हैं लेकिन वे सब मेरे किस काम की? ऊँचे-ऊँचे आलीशान मकान, अच्छे-अच्छे रेशमी और ज़री के कपड़े, बेशकीमती सोने, हीरे, मोती के गहने ! लेकिन यह सब चीज़ें मेरे लिए नहीं हैं। आख़िर कौन सा पाप किया है मैंने ? जो पाप करता है वह फलता-फूलता है, उसके पास महल हैं, उसके पास सुख है। शिवकुमार—इतनी दौलत कि खुले हाथ लुटा रहा है। राधा —मौज से रहती है, अच्छा खाती है, अच्छा पहनती है !"

चमेली की विचार-धारा टूट गई, सामने खड़ा हुआ रामेश्वर कह रहा था, "क्यों री, क्या सोच रही है ? अरी, तेरा मुंह कितना उतरा हुआ है ! तेरी तबीअत तो ठीक है !" रामेश्वर ने चमेली के मत्थे पर हाथ फेरते हुए कहा।

चमेली के मन की सारी ग्लानि दूर हो गई, उसकी सारी थकान जाती रही। रामेश्वर के उस स्पर्श से उसका सारा शरीर पुलक उठा। रामेश्वर के घुटनों पर अपना सर रख कर और उसके मुख को तृषित नयनों से देखते हुए उसने कहा, "कुछ नहीं ! यों ही सोच रही थी कि

हम दोनों को कितनी मेहनत करनी पड़ती है तब भी सुख की जिन्दगी नहीं नसीब होती।"

रामेश्वर खिलखिला कर हँस पड़ा, "दिन भर कड़ी मेहनत करके चार रोटी खाने में और आपस में दो मीठी बातें करने में जो सुख है वह बम्बई के किसी लखपती-करोड़पती को नहीं नसीब होता। उठ भी, बड़ी भूख लगी है।"

चमेली ने उठ कर रोटियां सेंकीं और फिर दोनों ने बैठ कर बड़े प्रेम से खाना खाया।

लेकिन चमेली के मन की जलन दूर नहीं हुई, उसका मन नहीं मान रहा था उस बात को जो रामेश्वर ने उससे कही थी। पग-पग पर चमेली धन की महत्ता को देखती थी, धन की शक्ति का अनुभव करती थी। वह जानती थी कि आज की दुनिया का देवता धन है, उसी पैसे को पाने के लिए मनुष्य ने अपने को अर्थ के पिशाच के हाथ बेच डाला है। सोने से पहले चमेली ने रामेश्वर से फिर बातें छेड़ीं, "देखो, मैं पूछती हूँ कि तुम दिन भर इतनी मेहनत करते हो, बिना खाए हुए दिन भर मारे-मारे घूमते हो! लेकिन इस सब के बदले में तुम्हें मिलता क्या है? यह छोटी-सी गन्दी कोठरी जिसमें कई साल से पुताई भी नहीं हुई है, यह रूखा-सूखा बिना स्वाद का खाना, ये फटे-पुराने कपड़े, यह मैला-सा फटा हुआ बिस्तर जिस पर हम लोग लेटे हुए हैं!"

रामेश्वर सोने का प्रयत्न कर रहा था, उसके सेठ ने उसे आज्ञा दी थी कि सुबह छै बजे उसे मलाड जा कर एक आसामी से मिलना है। आंखें बन्द करते हुए रामेश्वर ने कहा, "तो तेरा मतलब क्या है? साफ़-साफ़ क्यों नहीं कहती?"

चमेली स्वयम् यह न जानती थी कि वह क्या कहना चाहती है। एक सवाल उसके सामने था, एक शंका उसके मन में थी, लेकिन न उस

सवाल का कोई जवाब उसके पास था, न उस शंका का कोई समाधान था। वह बोली, "साफ़-साफ़ तुम से क्या कहूँ? जो देखती हूँ, अनुभव करती हूँ—वह तुमसे कह दिया। यह भी कोई ज़िन्दगी है कि खुली हवा में सांस तक नहीं ले सकती हूँ। एक कोठरी में पूरी घर-गृहस्थी, वहीं खाना-पकाना, वहीं नहाना। हे भगवान ! मैं कहती हूँ क्या कोई बड़ा मकान हमें नहीं मिल सकता? अब मैं भी तो कुछ पैदा करने लग गई हूँ। दस-पांच रुपया ज्यादा देना पड़ें तो कोई बात नहीं, कम से कम दो कमरों का एक मकान ढूंढ़ो। बोलते क्यों नहीं?" और चमेली ने देखा कि रामेश्वर सो गया है। उसने जो बात कही वह एक बेखबर आदमी से कही। चमेली ने उठ कर लाइट बुझाई और फिर वह बेखबर रामेश्वर की बगल में लेट गई। उसकी आंखों में आंसू भरे थे, और एकाएक वह रामेश्वर के गले में हाथ डाल कर फूट पड़ी।

सुबह जब चमेली की आंख खुली, रामेश्वर घर में नहीं था। चमेली को बिना जगाए ही वह चला गया था। सुबह उसने चा भी नहीं पी। चमेली उठ कर बड़बड़ाने लगी, "आग लगे मेरी नींद को—खाली पेट बिना खाए-पिये चले गए ! मुझे जगा ही लेते तो उनका क्या बिगड़ जाता? भगवान जाने कब लौटेंगे?" और बड़बड़ाते हुए ही उसने चूल्हा जलाया। उस दिन चमेली ने भी चा नहीं पी। खाना बनाकर उसने रामेश्वर के लिए रख दिया और स्वयं बिना खाना खाए वह अपनी दूकान पर चली गई।

उस दिन वह न अपने ग्राहकों से हँसी-बोली, न उसने उनकी परवाह की! और उस दूकान पर बैठकर उसने अनुभव किया कि रामेश्वर उसका सब-कुछ है, उसकी ज़िन्दगी रामेश्वर पर न्यौछावर है, रामेश्वर उसका अस्तित्व है। रामेश्वर के बिना चा पिये, भूखे चले जाने से जैसे उसकी आत्मा रो-सी रही थी। दोपहर में प्रथा के प्रतिकूल

वह अपने घर गई, केवल यह देखने कि रामेश्वर लौटा या नहीं और यदि लौटा है तो उसने भोजन किया कि नहीं। और चमेली ने देखा कि रामेश्वर भोजन करके पांव पसारे लेटा सो रहा है। थोड़ी देर तक वह खड़ी रामेश्वर को देखती रही, और उसका मन जैसे उस दर्शन से खिल उठा। उस समय उसकी सारी ग्लानि दूर हो गई, उसके मन का बोझ एकाएक हलका हो गया। उसे उस वक्त तक ज़ोर की भूख लग आई थी। बिना आहट किये हुए उसने रसोई देखी, चार रोटियां और थोड़ी-सी दाल रक्खी हुई थी। चमेली ने खाना खाया और बिना रामेश्वर को जगाए वह दूकान चली गई।

उस दिन के बाद चमेली ने रामेश्वर से मकान बदलने की कोई बात नहीं कही। स्वयं इच्छा-विहीन, कामना-विहीन, व्यक्तित्व-विहीन होकर रामेश्वर के सुख के लिए, उसके सन्तोष और आराम के लिए वह जीवित रहने लगी।

ऊपर से तो ऐसा दिखता था जैसे रामेश्वर ने उस रात चमेली के मकान बदलने के प्रस्ताव को टाल दिया, लेकिन उस दिन से रामेश्वर के अन्दर भी एक प्रकार की हलचल पैदा हो गई। चमेली ने ठीक ही कहा था कि वह ज़िन्दगी भी कोई ज़िन्दगी है। रामेश्वर अपने जीवन पर सोचता था और उसे क्रोध आता था। अभी तक उसे सन्तोष था क्योंकि वह अकेला था, उसे केवल अपने सुख का खयाल था, और पुरुष होने के नाते कठोर जीवन में उसे आनन्द मिलता था। लेकिन अब तो स्थिति बदल गई थी, वह अकेला न था, उस पर अवलम्बित और उसका आश्रित एक और भी कोई था। और वह कोई फूल का सा कोमल था। उसको सुखी बनाना, हर तरह से उसकी तकलीफ़ों को दूर करना रामेश्वर का कर्तव्य था।

रामेश्वर जानता था कि बम्बई में सुखी बनने के लिए पैसे की आवश्यकता होती है, और पैसा पैदा करने की उसमें योग्यता न

थी। वह पढ़ा-लिखा न था जो किसी दफ्तर में बाबू बन कर बैठता, उसमें कोई हुनर न था जो वह किसी कल-कारखाने में अच्छी तनख्वाह पर नौकर हो जाता। उसे छल-फ़रेब से घृणा थी जिसके बल पर वह दूकान खोल कर रुपए पैदा करता, या गाएँ-भैंसे पाल कर और दूध में आधा पानी मिला कर बेंचता। उसके भाग्य में वही तगादगीर की नौकरी थी। अगर चमेली ने दूकान न खोल ली होती तो उस तनख्वाह में, जो उसे सेठ श्रीकृष्ण के यहां से मिलती थी, उसके लिए गृहस्थी चलाना भी असम्भव था।

दीवाली का त्योहार सर पर आ गया था, लेकिन बम्बई की दीवाली युक्त-प्रान्त की दीवाली से भिन्न होती हैं। युक्त-प्रान्त में दीवाली जूआ खेलने का त्यौहार है, बम्बई में दीवाली केवल लक्ष्मी पूजन का त्यौहार है। दीवाली की रात को जब रामेश्वर लक्ष्मी पूजन करके उठा, उसके युक्त-प्रान्त के निवासी चार-छै मित्र उसके यहां आए। एक ने कहा, "रामेश्वर भइया, सो चलो अपना त्यौहार तो मनावें! आज हम लोग परमेश्वरी के यहां जम रहे हैं। तुम्हें साथ लेने आए हैं। चलते हो!"

रामेश्वर चक्कर में पड़ गया। अपने गांव में अपना सब कुछ हारने के बाद से उस दिन तक उसने जूआ न खेला था। उसने ज़रा ठिठकते हुए कहा, "नहीं भइया! मैं जूआ खेलना छोड़ चुका हूँ। जूआ नाश कर देता है, इससे दूर रहना ही अच्छा है!"

परमेश्वरी हँस पड़ा, "वाह रामेश्वर भइया, कैसी बात कर रहे हो? हम लोग कोई जुआरी थोड़े ही हैं, यहां तो त्यौहार मनाने को खेल रहे हैं। अपनी ज्यादा औकात ही कहां है, दस-पांच रुपए का खेल होगा!"

रामेश्वर निरुत्तर हो गया। उसने चमेली से कहा, "देख री! यह लोग नहीं मानते, मैं जा रहा हूँ इनके साथ। कल सुबह तक मैं लौटूंगा, मेरी चिन्ता मत करना!" और रामेश्वर दस रुपया अपनी

टेंट में खोंस कर उन लोगों के साथ चला गया।

चमेली को रामेश्वर का त्यौहार के दिन घर से जाना अच्छा नहीं लगा, खास तौर से जूआ खेलने। जो लोग रामेश्वर को साथ लेने आए थे क्या वे रामेश्वर की नजर में इतने महत्त्व के थे कि वह बिना चमेली से पूछे त्यौहार की रात में चमेली को घर में अकेली छोड़ कर चला गया? चमेली का मन क्षुब्ध हो गया। उसके सारे उल्लास पर, उसकी सारी उमंग पर जैसे तुषार गिर पड़ा। वह चुपचाप बिस्तर पर लेट गई, मुहल्ले-पड़ोस की रोशनी देखने भी वह नहीं गई। बिस्तर पर पड़ी-पड़ी वह बहुत देर तक रोती रही, उसके बाद वह सो गई।

सुबह जब रामेश्वर घर लौटा, वह बड़ा प्रसन्न था। उसने चमेली के हाथ मे सौ रुपए देते हुए कहा, "देखरी! अब मेरा भाग्य पलटा। रात में सौ रुपए जीता हूँ!"

चमेली ने करुण-स्वर में कहा, "मुझे ये रुपए नहीं चाहिए, मैं तुम्हें चाहती हूँ, सिर्फ तुम्हें! जिनसे यह रुपए जीते हो उन्हें यह दे आओ जा कर!"

"आई हुई लच्छमी वापस नहीं की जाती है, रख इन्हें। तेरे ही लिए तो यह सब कुछ है!" रामेश्वर ने बैठते हुए कहा। उसने चमेली का हाथ अपने हाथ में ले लिया, "देख चमेली, मैं चाहता हूँ तेरे लिए महल बनवा दूं, तुझे गहनों से लाद दूं; अच्छी-अच्छी सवारी तेरे लिए हो, अच्छे-अच्छे कपड़े तू पहने!"

रामेश्वर के उत्साह ने चमेली की उदासी को कुछ कम कर दिया, रामेश्वर के वक्ष में अपना मुंह छिपाते हुए उसने कहा, "मेरे ऐसे भाग्य कहां? और यह सब मैं चाहती भी नहीं हूँ। मेरे लिए तुम सब कुछ हो, मुझे सिर्फ़ तुम्हारी जरूरत है—तुम्हें छोड़ कर मुझे और कुछ न चाहिये!"

चमेली खड़ी हो गई, "रात भर जागे हो, मुंह-हाथ धो डालो, मैं

चाय बनाती हूँ। इसके बाद कुछ थोड़ा-सा सो लो, नहीं तो तबीअत खराब हो जायगी !"

रामेश्वर उठ खड़ा हुआ। वह हँस रहा था लेकिन उसकी उस हँसी में एक अजीब तरह का दीवानापन था जो चमेली को अच्छा नहीं लग रहा था। रामेश्वर ने कहा "चमेली सब कुछ खोया है और अब सब कुछ पाऊँगा भी। तू मेरी लच्छमी है—लच्छमी !"

चाय पीकर रामेश्वर सो गया।

आज चमेली ने रामेश्वर का एक नया रूप देखा। अभी तक वह जिस रामेश्वर को जानती थी वह था कोमल, दयावान, ममता से भरा हुआ। लेकिन आज उसने रामेश्वर में एक कठोरता देखी, एक साहस देखा जो दुःसाहस कहा जा सकता था ज़िन्दगी की बाज़ी खेलने की एक कुरूप प्रवृत्ति देखी। वैसे रामेश्वर के उस जीवन में जो उसने चमेली के साथ बिताया था, वह सब कुछ था। जिस तरह उसने चमेली को पुलिस के चंगुल से बचाया था, जिस तरह उसने चमेली को अपने यहां आश्रय दिया था बिना इस बात की परवाह किये कि चमेली अपने आदमी को छोड़ कर भागी है और वह भी चोरी करके; इस सब से चमेली को बहुत पहले रामेश्वर की ज़िन्दगी को एक बाज़ी समझने की प्रवृत्ति का पता लग जाना चाहिये था। पर यह सब घटनाएँ चमेली के जीवन से इस बुरी तरह सम्बद्ध थीं कि चमेली उनके वास्तविक महत्व को नहीं देख पाती थी। चमेली के लिए उसके साहस के आगे रामेश्वर का साहस कुछ भी न था !

चमेली बड़ी देर तक रामेश्वर के सिरहाने बैठी सोचती रही फिर उसने हाथ जोड़ कर आसमान की ओर देखा "हे भगवान ! इन्हें सुबुद्धि दो, हे भगवान इनकी रक्षा करो, हे भगवान इन पर जो संकट आने वाले हों वे मेरे ऊपर आ जाँय !"

नौवाँ परिच्छेद

रामेश्वर के जीवन का क्रम अब एक तरह से बदल ही गया। रात में वह प्रायः देर से वापस लौटता था और जिस समय वह लौटता था वह एक असाधारण मानसिक अवस्था में होता था। कभी बहुत अधिक प्रसन्न, कभी बहुत अधिक उद्विग्न और झुंझलाया हुआ। चमेली उसकी प्रतीक्षा करती रहती थी और धीरे-धीरे रात में बिना खाए हुए रामेश्वर की प्रतीक्षा करना चमेली के जीवन का क्रम हो गया था। एक दिन चमेली ने हिम्मत करके पूछा "क्यों जी—इतनी देर तक कहां रहते हो ? अपनी तन्दुरुस्ती की तो जरा फ़िक्र करो ! चेहरा कैसा सूख गया है !"

रामेश्वर ने कहा "क्या बताऊँ ! धीरे-धीरे मालिक ने मेरे ऊपर बड़ा कड़ा काम डाल दिया है। तनख्वाह भी बढ़ा दी है। अगर इस काम में ढील करूँ तो अच्छा न होगा !"

• चमेली बोली "मैं कहती हूँ, तुम यह नौकरी छोड़ दो ! न मिलेगी तनख्वाह तो न मिले। अपनी पान की दूकान सम्हालो, उसमें बड़ा फ़ायदा हो सकता है। अगर तुम वहां बैठने लगो, मुझे भी फ़ुरसत मिले। किसी के गुलाम तो न रहोगे !"

रामेश्वर हँसने लगा "अरी पान की दूकान में आमदनी ही क्या होगी—पान की दूकान करके कभी कोई लखपती बन सका है ?"

चमेली ने उत्तर दिया "और नौकरी करके ही कब कौन लख-पती बन पाया है ? फिर लखपती बनके हमें करना ही क्या है ?'

"तू न समझेगी—औरत-जात है न !" रामेश्वर ने चमेली की पीठ पर हाथ रखते हुए कहा "देख रात में मुझे जब देर हो जाय तो

तू खाना खा लिया कर। मैं तो बाज़ार में खा ही लेता हूँ, तू क्यों भूखी हैरान होती है ?"

"मुझ से बिना तुम्हें अपने हाथ खाना खिलाए नहीं खाया जाता। कम से कम मेरी खातिर इतना करो कि रात में वखत निकाल कर घर में खाना खा लिया करो, फिर रात भर जहां जी चाहे घूमो ! मैं तुम से एक बात कहूँ तो कहना !"

"अच्छी बात है ! अब तुझे शिकायत करने का मौका न मिलेगा !"

रामेश्वर अब रोज़ शाम के समय खाना खा कर घर से चला जाता था और करीब दो बजे घर लौटता था।

चमेली को आश्चर्य था कि रामेश्वर रात में कहां जाता है और क्या करता है। एक-आध बार उसने रामेश्वर से पूछा भी पर रामेश्वर ने उसे कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं दिया। चमेली को ऐसा लगा कि मानो रामेश्वर उससे कुछ छिपा रहा है। रामेश्वर का उससे कुछ छिपाना चमेली को अच्छा नहीं लगा। जो कुछ छिपाया जाता है वह निश्चय ही कुरूप होता है। चमेली के मन में अनायास ही यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ "क्या इन्होंने कोई पाप का मार्ग तो नहीं अपना लिया है ?" और मन में यह विचार आते ही वह दुखी हो गई।

चमेली ने निश्चय कर लिया कि वह पता लगाएगी कि रामेश्वर रात के समय कहां जाता है और क्या करता है। उस दिन रात के सनय खाना खा कर जब रामेश्वर चला, चमेली उसके पीछे लग गई। रामेश्वर अपनी मस्त चाल से भूलेश्वर पार करता हुआ कालबादेवी की ओर बढ़ा, करीब बीस कदम पीछे चमेली भी थी। रामेश्वर कालबा देवी के काटन-एक्सचेंज के पास आ कर रुक गया। चमेली ने देखा कि वहां एक बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी है और चिल्ला रही है। चमेली दूर खड़ी देखने लगी किरामेश्वर क्या करता है और कहां

जाता है। चमेली को यह देख कर ताज्जुब हुआ कि रामेश्वर वहां से गया नहीं, चार छै आदमियों के बीच में खड़ा हो कर वह बातें करने लगा।

करीब बारह बजे रात तक चमेली वहां खड़ी रही—और उसने देखा कि रामेश्वर वहां से कहीं गया नहीं। चमेली खड़े-खड़े थक गई। वहां क्या हो रहा है यह भीड़ क्यों इकट्ठा है, यह भीड़ क्या कर रही है ?—चमेली की समझ में कुछ न आ रहा था। रामेश्वर क्यों इस भीड़ में शामिल होता है, रामेश्वर इस भीड़ में शामिल होकर क्या करता है ? चमेली इस सब पर सोच रही थी। एक बात स्पष्ट थी—रामेश्वर कोई पाप नहीं करता, किसी बुरी जगह वह नहीं जाता। चमेली का मन हलका हो गया। जिस समय बारह का घण्टा बजा चमेली ने देखा कि भीड़ घटने के स्थान पर और भी बढ़ गई है। चमेली खड़ी-खड़ी ऊब गई थी, वह वहां से लौट आई और सो गई।

सुबह उसने रामेश्वर से कहा "अगर बुरा न मानो तो एक बात पूछूं!"

रामेश्वर ने कहा "पूछ !"

"तुम जो रोज रात कालबादेवी जाते हो और वहां रात में जो भीड़ इकट्ठा होती है—वह क्या है ?"

"तुझे कैसे मालूम हुआ कि मैं रात में कालबादेवी जाता हूँ ?" रामेश्वर ने पूछा, "किसी ने तुझ से कुछ कहा ?"

"कहेगा कौन मुझसे ? कल रात मेरे मन में पाप उठा कि तुम रात में कहां जाते हो—सो मैंने तुम्हारे पीछे जा कर सब कुछ देखा। आखिर तुम मुझसे सब बातें छिपाते क्यों हो ? क्या मैं पराई हूँ ? क्या तुम्हें मेरे ऊपर विश्वास नहीं है ?"

चमेली के अन्तिम वाक्य में रामेश्वर के प्रति इतनी अथाह ममता थी इतना गहरा विश्वास था कि रामेश्वर का चढ़ता हुआ क्रोध

ठंढा पड़ गया। "देखरी! बहुत-सी बातें ऐसी होती हैं जिन्हें औरत नहीं समझ सकती! और न समझ सकने के कारन उसका गलत मतलब निकाल सकती है। इसीलिए मैंने तुझ से वह बात नहीं बतलाई। अब तू ने देख लिया तो बतलाए देता हूँ। वहां सट्टा होता है।"

"यह सट्टा क्या चीज़ है?" चमेली ने पूछा।

"एक तरह का व्यापार है! तूने देखा नहीं कि बड़े-वड़े लखपती वहां इकट्ठा होते हैं, लाखों करोड़ों का माल बेंचते हैं खरीदते हैं!"

"सच!" चमेली प्रसन्न हो गई "तो तुम भी व्यापार करते हो! लेकिन वहां मैंने कोई माल तो देखा ही नहीं! आखिर बेंचते क्या हैं और खरीदते क्या हैं? फिर तुम्हारे पास रकम ही कहां है जो तुम हज़ारों का माल खरीदो या बेंचो?"

"इसीलिए तो मैं तुझसे नहीं बतलाता था कि तेरी समझ में यह सब नहीं आएगा। अरी यह बेंच और खरीद मुंहजबानी बिना माल के होती है। भाव गिरता है भाव चढ़ता है। इसी में किसी को मुनाफ़ा होता है किसी को घाटा होता है। समझ गई न।"

"हूँ!" चमेली ने इस प्रकार कहा मानो वह रामेश्वर की बात समझ गई। लेकिन चमेली की समझ में वह बात ज़रा भी नहीं आई। वह व्यापार ही क्या जिसमें लोगों को घाटा हो और घाटा उठाने के लिए लोग व्यापार ही क्यों करते हैं। पर जो बात रामेश्वर ने कही थी वह गलत तो नहीं लगती थी क्योंकि कालबादेवी में बहुत बड़ा व्यापार होता है। और पिछली रात जो लोग वहां उपस्थित थे वे सब के सब हैसियत वाले ही दिखते थे। लेकिन चमेली की समझ में यह नहीं आ रहा था कि यह व्यापार लोग रात में क्यों करते हैं दिन में क्यों नहीं करते। चमेली ने पूछा "क्यों जी क्या यह व्यापार दिन में नहीं हो सकता है जो लोग रात भर जागते हैं? आखिर भगवान ने

रात सोने के लिए बनाई है दिन काम-काज करने को बनाया है। फिर यह उलटी प्रथा क्यों?"

रामेश्वर बोला "अरी कह तो दिया कि यह सब तेरी अकल के बाहर है। तू यह नहीं जानती कि जब यहां रात होती है तब अमरीका में दिन होता है। सो कपास का भाव अमरीका में बँधता ह। जब अमरीका के भाव की खबर आती है तब यहां घाटे और मुनाफ़े का लेखा-डचौढ़ा होता है। सो वह खबर एक दफ़ा रात को ग्यारह बजे आती है फिर रात को दो बजे आती है।"

चमेली ने एक प्रश्न और किया "अभी तक कितना मुनाफ़ा हुआ है तुम्हें?"

"अभी तक तो मुनाफ़ा नहीं हुआ है, कुछ थोड़ा-सा घाटा ही हुआ है। मेरे पास पूंजी की कमी है न! लेकिन कोई चिन्ता की बात नहीं। अभी तो काम शुरू ही किया है, अनुभव की कमी है। कब सौदा किया जाता है, कब सौदा काटा जाता है—इसे समझने में देर लगती है। कुछ थोड़े दिनों में मैं मालामाल हो जाऊँगा।"

रामेश्वर ने चमेली को समझा दिया और चमेली समझ गई। लेकिन रामेश्वर तो इस बात को जानता था कि यह सारा व्यापार—यह अच्छा-खासा जूआ है। सिर्फ़ इस जूए का रूप कुछ दूसरा है, और इस जूए को बारहो मास खुल कर खेला जा सकता है। इस जूए को खेलने वाला जुआरी नहीं कहलाता, उसका समाज में आदर होता है, मान होता है। उसने लोगों को यह जूआ खेल कर लखपती बनते देखा और उसमें लखपती बनने की कामना प्रबल हो उठी। कौन जाने, उसका सौभाग्य उसे लखपती बनाने के लिए ही उसे बम्बई में खीच लाया हो।

साथ ही रामेश्वर ने यह भी अनुभव किया कि इस जूए में लोग हारते अधिक हैं, जीतते कम हैं। उसने जब इसका कारण जानने का

प्रयत्न किया तब उसे ऐसा लगा कि जीतता वही है जिसके पास पैसा है, जो अधिक से अधिक समय तक खड़ा रह सके, रुपए की कमी से मजबूर हो कर जिसे घाटे में सौदा न बेंचना पड़े। उस सीधी-सादी बुद्धि वाले आदमी की समझ में सिर्फ़ इतनी सी बात आई।

दिसम्बर का महीना था और उस दिन शुक्रवार था। रामेश्वर तगादा वसूल करके लौटा, चार हज़ार की रकम उसके पास थी। जब वह दूकान पर पहुँचा तो देर हो गई थी। मुनीम जी के सर में दर्द था, वह उस दिन जल्दी ही घर चले गए थे, रोकड़िया किसी काम से बाज़ार में चक्कर लगा रहा था। रामेश्वर रुपया दूकान में नहीं जमा कर सका, वह रुपए के साथ घर चला आया।

रात के समय खाना खाकर वह कालबादेवी काटन-एक्सचेंज की तरफ़ चला। पता नहीं जान-बूझ कर या अनजाने में जो चार हज़ार के नोट उसकी भीतर की बण्डी में थे, वे वहीं रहे और चार हज़ार की बड़ी रकम के साथ वह कालबादेवी के जूए के मैदान में पहुँचा। उस दिन बाज़ार में बड़ी सरगर्मी थी। पिछली रात अमेरिका ने खरीदना शुरू किया था और बाज़ार काफ़ी चढ़ चुका था। लोगों की धारणा थी कि बाज़ार तेज़ी की तरफ़ है और लोग धड़ाधड़ खरीद रहे थे। बाज़ार की सरगर्मी ने रामेश्वर पर असर किया, वह अपने लोभ को न रोक सका। आज उसके पास रुपया था, काफ़ी बड़ा सौदा वह कर सकता था। और उसने एक हज़ार रुपए जमा करके सौदा कर लिया।

रामेश्वर ने सौदा तो कर लिया, लेकिन उसका दिल धड़क रहा था। आज पहली बार उसने दूसरे की रकम पर हाथ लगाया था, रामेश्वर का मन कह रहा था कि वह अपने मालिक के साथ दगा-बाज़ी कर रहा है, विश्वासघात कर रहा है। रामेश्वर ने अपने मन की भर्त्सना को दबाते हुए अपने से ही कहा, "यह रकम तो मैं कर्ज़ के रूप में इस्तेमाल कर रहा हूँ। आज जीतना निश्चित है, कल मालिक की पूरी रकम दूकान में जमा कर दूंगा।"

लेकिन उसी समय उसके मन ने पूछा, "और मान लो कि तुम हार गए तो इतनी बड़ी रकम तुम कहां से अदा करोगे ?"

रामेश्वर को और अधिक सोचने का मौका ही नहीं मिला, उस दिन अमेरिका का बाज़ार पांच रुपए नीचे खुला। रामेश्वर की एक हज़ार की रकम बाज़ार खुलते ही गायब हो गई। दलाल ने रामेश्वर का सौदा काट दिया।

रामेश्वर के मुंह पर हवाइयां उड़ने लगीं। एक बार ही रामेश्वर का एक हज़ार रुपया गायब हो गया, और वह रुपया रामेश्वर का भी तो नहीं था। हत-चेत और हत-बुद्धि वह खड़ा रहा, उसकी आंखों के आगे एक अन्धकार-सा था। पर धीरे-धीरे उसकी आंखों के आगे वाला अन्धकार दूर हुआ, उसकी खोई हुई चेतना वापस लौटी। उसके कानों ने पल-पल में बढ़ता हुआ बाज़ार का शोर सुना, भाव नीचे गिर कर ऊँचा-चढ़ रहा था। रामेश्वर पछता रहा था कि उसने जितने का सौदा किया था उससे कम का क्यों नहीं किया, उस हालत में सौदा तो नहीं कटता। और यह सोचते-सोचते उसे याद हो आया कि अभी तीन हज़ार रुपए उसकी बण्डी में हैं। मन ने धिक्कारा कि एक दफ़ा धोखा खा चुके हो, अब इन रुपयों पर हाथ मत लगाओ, पर उसी समय तर्क ने उत्तर दिया, "लेकिन जो एक हज़ार रुपया हार चुके हो, उन्हें कहां से पूरा करोगे ?"

और भाव चढ़ता जा रहा था। रामेश्वर दौड़ कर दलाल के पास गया, उसने एक हज़ार रुपया जमा करके सौदा किया। दलाल को रामेश्वर के दो हज़ार रुपए निकालने पर आश्चर्य हुआ, लेकिन वह बहुत अधिक व्यस्त था। सौदे पर सौदे हो रहे थे। रामेश्वर चुपचाप एक पट्टी पर खड़ा हो गया और इधर-उधर जाने वालों से भाव पूछने लगा। जितने पर रामेश्वर ने सौदा किया था उससे एक रुपया और चढ़ कर भाव रुक गया था। रामेश्वर प्रतीक्षा कर रहा था कि दो-तीन रुपया भाव और चढ़े तो वह सौदा काट दे, एक हज़ार

में छै-सात सौ रुपए तो निकल ही आवेंगे। और उस समय दो बजे। लोग सतर्क हो गए अमेरिका की बन्दी का भाव सुनने को। बन्दी का भाव सुनते ही रामेश्वर का दिल बैठ गया। जितने पर रामेश्वर ने सौदा किया था, भाव उससे दो रुपए नीचे बन्द हुआ।

थका, हारा और निराश रामेश्वर घर लौटा। चमेली सो रही थी, रामेश्वर उसकी बगल में लेट गया। पर उस दिन रात भर रामेश्वर को नींद नहीं आई, करवटें बदलते उसे सबेरा हुआ। सबेरे कहीं उसकी आंख लगी जाकर !

दसवाँ परिच्छेद

रामेश्वर अधिक देर नहीं सो सका, एक घण्टे बाद उसकी आंख खुल गई। चमेली उस समय बैठी चा बना रही थी। रामेश्वर की शक्ल देख कर वह डर-सी गई, "अरे! क्या हो गया है तुम्हें? चेहरा बिल्कुल काला पड़ गया है, आंखें कितनी लाल हैं! तबीअत तो ठीक है—बोलते क्यों नहीं?"

रामेश्वर थोड़ी देर तक गुम-शुम रहा, फिर उसने सम्हलते हुए कहा, "कुछ नहीं। रात अच्छी तरह नींद नहीं आई—भोर में जाकर कहीं आँख लग पाई!" और रामेश्वर उठ खड़ा हुआ।

"मैं कहती हूँ तुम यह व्यापार करना छोड़ दो। यह व्यापार हम लोगों के लिए नहीं बना है; जिनके लिए यह व्यापार बना है, वह करें।" चमेली ने बिगड़ते हुए कहा, "मैं बताए देती हूँ। आज रात मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगी। अगर तुम जाओगे तो मैं अपना सर पटक दूंगी।"

चमेली की इस बात पर रामेश्वर चुप ही रहा, वह उस समय अपने में बुरी तरह खोया हुआ था। दो हज़ार रुपए! दो हज़ार रुपए की रकम कहां से आवेगी? रामेश्वर की समझ में न आ रहा था कि वह क्या करे। खाना खा कर जब वह पेढ़ी पर जाने के लिए घर से निकला तब उसके पैर ही नहीं उठते थे। किस मुंह को ले कर वह वहां जाय? फिर भी रामेश्वर को पेढ़ी पर जाना तो था ही।

मुनीम जी दूकान पर नहीं आए थे, उन्हें पिछले दिन बुखार आ गया था। और सेठ श्रीकृष्ण चार-पांच दिन पहले कलकत्ता चले गए थे। दूकान पर छोटे मुनीम थे और छोटे मुनीम को उस तगादे का पता न

था जिस पर रामेश्वर भेज़ा गया था। बड़े मुनीम की बीमारी पर रामेश्वर ने भगवान को धन्यवाद दिया।

छोटे मुनीम ने रामेश्वर को कोई काम नहीं बतलाया, वे जल्दी-जल्दी दूकान का काम खत्म कर रहे थे। रामेश्वर ने दरबान से छोटे मुनीम की इस जल्दी का कारण पूछा तो दरवान ने कहा, "रेस है न आज ! छोटे मुनीम जी तो रेस के कीड़े हैं। सेठ जी के रिश्तेदार हैं नहीं तो बड़े मुनीम ने इन्हें कब का निकाल बाहर किया होता !"

रेस का नाम सुनते ही रामेश्वर के कान खड़े हुए। बम्बई में आए हुए उसे काफ़ी समय हो गया था, लेकिन वह इतने दिनों में केवल एक बार रेस में गया था, वह भी घुड़दौड़ खेलने के लिए नहीं बल्कि घुड़दौड़ देखने के लिए। देखने के सिलसिले में उसने दस-पांच रुपए का दांव भी लगाया था और वह जीता था।

उसकी बण्डी में दो हज़ार रुपए थे—उन दो हज़ार में और दो हज़ार मिला कर उस मालिक की चार हज़ार की रकम पूरी करनी थी। दो हज़ार की रकम अगर वापस आ सकती थी तो उसी रास्ते से जिससे वह गई थी। जुए का भूत रामेश्वर के सर पर सवार था, वह इतना डूब चुका था कि बचकर निकल सकना उसके लिए असम्भव था। रामेश्वर उस दिन रेस-कोर्स पर गया।

और रामेश्वर पागल की भांति रेस खेला—जीतने के लिए। लेकिन उसका हरेक दांव हारा, दुर्भाग्य उसके पीछे हाथ धो कर पड़ा था। शाम तक उसके पास से डेढ़ हज़ार रुपए निकल गए थे। अब रामेश्वर के पास सिर्फ़ पांच सौ रुपए बाकी थे। रामेश्वर पैदल ही महालक्ष्मी से अपने घर की ओर चला। उसके पैरों पर मानो मनों का बोझ था। उसके पैर घर की ओर उठने से इनकार कर रहे थे। रामेश्वर को स्पष्ट दिख रहा था कि उसकी दुनिया उजड़ गई है। वह अपने को कोस रहा था—यह सब उसने क्यों किया। लेकिन अपने को कोसने

से होता क्या है? साढ़े तीन हज़ार की रकम जो निकल गई थी वह तो न लौटेगी। रामेश्वर ने देखा कि उसका पाप उसे नष्ट कर देने पर तुला हुआ है! उसके बचने की कोई सम्भावना नहीं।

घर आकर रामेश्वर लेट गया। चमेली रामेश्वर की यह हालत देख कर बहुत घबराई। उसने रामेश्वर के सर पर हाथ लगाया, पर रामेश्वर को बुखार न था। चमेली रामेश्वर की आन्तरिक बीमारी को न समझ पा रही थी।

रामेश्वर के प्राण एक नारकीय ज्वाला म जल रहे थे, वह छटपटा रहा था। उसका मस्तिष्क दुश्चिन्ता से फटा जा रहा था। चमेली ने पूछा, "क्या बात है? मुझ से कहते क्यों नहीं? आओ मैं तुम्हारे पैर दाब दूं। इतनी मेहनत करते हो।"

"नहीं, मेरे पैर में दर्द नहीं है, न मेरी तबीअत ही खराब है।" रामेश्वर ने चमेली को रोकते हुए कहा।

"तो फिर क्या बात है? मुझ से क्यों यह सब छिपा रहे हो?"

"तू नहीं समझेगी। एक बड़ी मुसीबत मेरे सर पर आ गई है। लेकिन तू इसकी चिन्ता मत कर। मुसीबत आती है, मुसीबत टलती भी है।" रामेश्वर ने मुसकराने का प्रयत्न करते हुए कहा।

"कौन-सी मुसीबत है? ज़रा मैं भी सुनूं। मुमकिन है मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूं।"

"जब मदद की ज़रूरत होगी तब कहूँगा, अभी तू उसे जानने की ज़िद न कर।" रामेश्वर ने आग्रह के साथ कहा।

चमेली चुप हो गई, रामेश्वर से ज़िद करने का उसमें साहस न था। फिर भी चमेली के मन में शान्ति नहीं थी, एक भयानक आशंका उसके मन में भर गई थी। कोई बहुत बड़ा अनिष्ट होने वाला है, चमेली को ऐसा लग रहा था। और चमेली इस बात का भी अनुभव कर रही थी कि रामेश्वर को उस अनिष्ट और अमंगल से बचाना

उसका परम कर्त्तव्य होगा। रामेश्वर क्या उससे छिपा रहा है, क्यों उससे छिपा रहा है, यह चमेली की समझ में नहीं आ रहा था। जब से रामेश्वर ने वह रात वाला व्यापार आरम्भ किया तब से उसकी यह हालत हुई। रात में जब रामेश्वर कालबादेवी जाने लगा, चमेली ने उसका हाथ पकड़ लिया, "आज मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगी। इतनी तबीअत ख़राब है। मैं तुमसे कह चुकी हूँ।"

बड़े करुण स्वर में रामेश्वर ने कहा, "आज रात मेरी आख़री रात होगी जाने की, मैं तुझे बचन देता हूँ। अब मुझे जाने दे।"

चमेली ने रामेश्वर का हाथ छोड़ दिया। रामेश्वर के जाने के बाद चमेली ने भगवान से प्रार्थना की, "हे भगवान—आज इन्हें सुबुद्धि मिले, इन्हें सफलता मिले। इन पर जो भी संकट हो वह कट जाय।"

रामेश्वर बाज़ार पहुँचा, लेकिन रामेश्वर के मन में न कोई उमंग थी, न कोई उत्साह था। निराशा का एक भयानक बोझ वह अपने प्राणों पर अनुभव कर रहा था। बाज़ार की चहल-पहल के प्रति वह सर्वथा उदासीन था। आज वह या तो बचने या फिर सदा के लिए नष्ट होने आया था। उसके अन्दर कोई कह रहा था कि उसे नष्ट होना है, वह बच नहीं सकेगा। रामेश्वर के मन में न जाने कितनी तरह की दुःशंकाएँ उठ रही थीं, न जाने कितने कुतर्क आ रहे थे। एक अदृश्य शक्ति उसे पतन के गर्त में ढकेल रही थी।

और हुआ भी वही। रामेश्वर के पास जो कुछ था वह सब स्वाहा हो गया। सब कुछ समाप्त करके खाली हाथ वापस लौटना रामेश्वर के लिए कोई नई बात नहीं थी, ज़िन्दगी में न जाने कितनी बार यह उसके साथ हो चुका था। लेकिन उस दिन रामेश्वर खाली हाथ अपने घर वापस नहीं लौटा, उस दिन पाप और अपराध का बोझ उसके मस्तक पर था, उसका विनाश उसके सामने था।

रामेश्वर घर आ कर सो गया, उस रात उसे बड़ी गहरी नींद आई। चमेली जब सबेरे उठी तो उसने देखा कि रामेश्वर उसकी बगल में लेटा बेखबर सो रहा है। उस समय रामेश्वर के चेहरे पर थकावट का कोई चिह्न न था, निर्बोध, निष्कपट, भोले चेहरे पर शान्ति थी। चमेली का मन प्रसन्न हो उठा। उसने रामेश्वर को जगाया नहीं, रविवार था न!

जब रामेश्वर सो कर उठा, दस बज चुके थे। आंख खोल कर वह चुपचाप थोड़ी देर अपने बिस्तर पर लेटा रहा। उस समय उसका मन हलका था और उसके शरीर में स्फूर्ति थी। अपनी इस मनोवस्था पर वह स्वयम् ही आश्चर्य कर रहा था। वह जानता था कि आज रविवार है, एक दिन तो और संकट का कटा। आगे क्या होगा, इसकी चिन्ता उसने छोड़ दी। आखिर चिन्ता करने से होता ही क्या है। आज उसमें निराशा का उदासीनता से मिश्रित आत्म-समर्पण था। थोड़ी देर तक वह चमेली की ओर देखता रहा, चमेली रामेश्वर के फटे हुए कुरते को सी रही थी। फिर वह जोर से हँस पड़ा, "क्योंरी! इतनी देर हो गई, तूने मुझे जगाया क्यों नहीं?"

चमेली ने कहा, "जगाती मेरी बला! आज इतवार है तो मैंने कहा, "सोने दो बेचारे को! इतनी मेहनत करते हैं। अरे राम! मुझे दूकान खोलने में इतनी देर हो गई। खाना बना दिया है, खा लेना। अब मैं जाती हूँ।"

रामेश्वर ने कहा, "चमेली! एक बात कहूँ। मानेगी?"

मैंने तुम्हारी बात कब नहीं मानी कहो न।" चमेली ने उत्तर दिया।

"मेरी तबीअत है कि आज तू दूकान न जा। चल, हम दोनों आज कहीं साथ-साथ घूमने चलें!"

चमेली खिल गई। अपनी दूकान के नित्य के जीवन से वह अब ऊब गई थी। इन दिनों वह दूकान पर बैठती थी अपनी इच्छा के

विरुद्ध। वह चाहती थी कि रामेश्वर उससे एक बार कहे और वह दूकान छोड़ दे। वह घर में रह कर रामेश्वर की सेवा करना चाहती थी, रामेश्वर के साथ बात करना चाहती थी, रामेश्वर के दिल में समा जाना चाहती थी। उसने पुलकित होकर कहा, "मेरे भाग्य कि तुम्हारे मुंह से आज यह बात तो निकली ! कभी-कभी तो मेरा जी चाहता है कि दूकान बन्द कर दूं—मुझ से यह काम नहीं होता।"

"नहीं, नहीं, इतना मत सोच। कौन जाने तुझे इस दूकान से ही काम चलाना पड़े।"

"क्या मतलब तुम्हारा ?" चमेली के मन में रामेश्वर की बात से कुछ खटका हुआ, "क्या तुम्हारी नौकरी छूट गई ?"

"अरी नहीं, ऐसे ही कह दिया। अच्छा तैयार हो जा। आज जरा जोगेश्वरी चलेंगे। वहां गुफाए हैं—कभी देखी हैं ?"

"तुम दिखलाते तो देखती ! मैंने यहां बम्बई में देखा ही क्या है। सुना है अलीफन्टा, बज्रेश्वरी और न जाने कितनी-कितनी जगहें हैं। लेकिन मेरे भाग्य में कहां !" चमेली यह कह कर घूमने चलने की तैयारी में लग गई।

उस दिन मौसम बड़ा सुहावना था और सर्दी कुछ तेज हो गई थी। बम्बई में सर्दी नाममात्र की पड़ती है और चमेली जाड़े के लिए तरस रही थी। चारो तरफ़ हरियाली थी और धूप की गरमी उस दिन विशेष रूप से सुहावनी हो गई थी। जोगेश्वरी स्टेशन पर दोनों उतर पड़े। स्टेशन से गुफ़ाएँ करीब एक मील की दूरी पर पड़ती हैं, और रास्ता पगडंडी का था, पैदल। चमेली और रामेश्वर गुफ़ाओं की ओर चल पड़े। चमेली ने चलते हुए कहा, "सुनते हो ! मुझे प्यास लगी है। यहां कहीं पास में पानी होगा ?"

"स्टेशन पर ही क्यों नहीं पी लिया, अब तो गुफ़ा के पास ही पानी मिलेगा। और कौन जाने वहां भी पानी मिले या न मिले !,

यह कह कर उसने अपने चारों ओर निगाह दौड़ाई। और उसे दिखाई दिया कि दाहिनी ओर पगडंडी से करीव एक फर्लांग की दूरी पर एक मड़ैया है जिसमें चार-छै आदमी इकट्ठा हैं।

"वहां शायद पानी मिल जाय।" रामेश्वर ने कहा और दोनों उस ओर बढ़े।

मड़ैया से एक आदमी निकल कर रामेश्वर के पास आया—वह मराठा था। उसने कहा, "कहो भइया जी!"

रामेश्वर ने कहा, "जरा पानी चाहिये।"

वह आदमी हँस पड़ा, "कोई बांधा नहीं भइया—हमारे दादा का कोई कुछ नहीं कर सकता। डरोमत—कितनी चाहिये, एक बोतल, एक रुपया होगा।"

बम्बई में युक्तप्रान्त के निवासियों को भइया कहा जाता है। रामेश्वर ने उस आदमी को कड़ी दृष्टि से देखते हुए कहा, "बको मत! प्यास लगी है। अगर पानी हो तो दो।"

इसी समय उन झोपड़ों से दो आदमी और निकले। वह दोनों बेतरह पिये हुए थे। एक ने चमेली को देखकर रामेश्वर से कहा, "क्यों भइया, यह माल कहां से उड़ा लाए?" और उसकी इस बात पर उसके साथ के दोनों आदमी खिलखिला कर हँस पड़े।

उसके सामने ही चमेली का यह अपमान रामेश्वर को अखर गया—क्रोध से वह तिलमिला गया। उसने बढ़ कर उस आदमी के मुख पर जिसने चमेली का अपमान किया था, एक चांटा मारा। रामेश्वर का चांटा इतनी ज़ोर का पड़ा कि वह आदमी चिल्ला उठा, "मार डाला रे!" और वह ज़मीन पर बैठ गया। दूसरे आदमी ने उसी समय जेब से एक छूरा निकाला: इसके पहले कि वह आदमी छूरे का वार करे, रामेश्वर ने बढ़ कर उसके हाथ से छूरा छीन लिया। उसी समय वह पहला आदमी जो शराब बेचने आया था तेज़ी के साथ मड़ैया

के अन्दर भागा। रामेश्वर ने चमेली का हाथ पकड़ कर घसीटते हुए कहा, "चल री जल्दी, अब कुछ अनर्थ होने वाला है।"

जोगेश्वरी की गुफाओं की ओर जाने के स्थान पर चमेली को साथ लिए हुए रामेश्वर जोगेश्वरी स्टेशन की ओर लौटा। वह अभी स्टेशन से करीब दो सौ कदम की दूरी पर था कि चार पांच आदमी उस शराब बेचने वाले के साथ दौड़ते हुए रामेश्वर के सामने आ गए। शराब बेचने वाले ने कहा, "यही है वह भइया!"

इन लोगों का मुखिया एक अधेड़ उम्र का हट्टा-कट्टा आदमी था। उसने आगे बढ़ कर कहा, "काहे रे भइया, तेरे को यहां आने का क्या काम था?"

रामेश्वर ने उत्तर दिया, "यह जगह तेरे बाप की है जो तू पूछ रहा है।"

"मेरे बाप को देखेगा।" यह कह कर उस आदमी ने अपने साथियों से कहा, "मारो साले को। देखते क्या हो?"

रामेश्वर के हाथ में जो लाठी थी वह तन गई। दो कदम पीछे हट कर रामेश्वर खड़ा हो गया, "जो आगे बढ़ा उसका सर फोड़ दूंगा।"

विपक्षियों में से एक युवक बड़ी फ़ुर्ती के साथ झपटा। रामेश्वर की लाठी चलने के पहले ही उसने झुक कर रामेश्वर का पैर पकड़ कर घसीट लिया—रामेश्वर गिर पड़ा। रामेश्वर को गिरा कर उसने छूरा निकाल कर रामेश्वर पर वार किया।

रामेश्वर गिरने के साथ ही सम्हल गया था। छूरे का वार उसने उस नवयुवक की कलाई पकड़ कर बचाया, साथ ही रामेश्वर ने उस नवयुवक को भी ज़मीन पर गिरा दिया। रामेश्वर और वह नवयुवक दोनों एक दूसरे से गुंथ गए। उस युवक के दो साथी अब छूरा निकाल कर रामेश्वर पर झपटे, लेकिन उनके सरदार ने उन्हें रोक कर कहा, "अलग रहो, आज देखें विट्ठल कितना जवाँमर्द है!"

करीब पांच मिनट तक बिट्ठल और रामेश्वर में धर पटक होती रही, अन्त में रामेश्वर ने बिट्ठल को नीचे दबा कर उसका छूरा छीन लिया। उस दल के मुखिया ने आगे बढ़ कर कहा, "क्योंरे बिट्ठल— देख लिया तेरा दम-खम। इस बूढ़े ने तुझे खत्म कर दिया।" और यह कह कर उसने रामेश्वर की पीठ पर हाथ फेरा, "क्यों रे भइया—तेरा नाम क्या है ? हम यहां के दादा हैं—रघुनाथ !"

रामेश्वर हाँफ रहा था। कुछ दम लेकर उसने उठते हुए कहा, "नाम जान कर क्या करोगे ? तुम्हें मुझसे क्या काम है ?"

"तू काम का आदमी है भइया—और मैं भी काम का आदमी हूँ। मेरे को न सही, तेरे ही को मुझसे कुछ काम पड़ सकता है। गोरेगाँव में मैं रहता हूँ, किसी से रघुनाथ दादा का नाम ले लेना वह मेरा मकान तुझे बता देगा। अच्छा, अब जा तुझसे कोई नहीं बोलेगा। और—अरे हाँ, अपना नाम क्यों नहीं बताता ?"

"मेरा नाम है रामेश्वर ! अब तो खुश।" रामेश्वर ने मुसकराते हुए कहा।

उन लोगों के चले जाने के बाद रामेश्वर ने चमेली से कहा "देखा तूने ?"

इस सब में चमेली कितनी चीखी थी, कितनी चिल्लाई थी— रामेश्वर न कुछ देख सका था, न कुछ सुन सका। उसने कहा, "अब घर चलो, मैं सब कुछ देख चुकी।"

"अरी बिना जोगेश्वरी की गुफा देखे कैसे लौटेंगे ?" और रामेश्वर जोगेश्वरी की गुफ़ाओं की ओर चल पड़ा।

ग्यारहवां परिच्छेद

रात के समय चमेली बड़ी प्रसन्न थी। अगर उसकी ज़िन्दगी इसी तरह रामेश्वर के साथ बीत सके तो उसके लिए इससे बढ़ कर सुख क्या हो सकता था। बड़े मन से उसने खाना बनाया, बड़े उत्साह से उसने घर का सब काम-काज किया। उस दिन रामेश्वर का जी भी हलका था। कल क्या होगा?—इसकी उसे चिन्ता न थी। 'कल' उसके हाथ में न था, 'कल' कभी भी मनुष्य के हाथ में नहीं रहा है; रामेश्वर का समस्त जीवन रामेश्वर के सामने प्रमाण के रूप में था। और जब 'कल' उसके हाथ में नहीं है तब सारी चिन्ता, सारा क्लेश व्यर्थ ही था!

खाना खाकर रामेश्वर बाहर बरामदे में बैठ गया, और उसी समय उसके मकान के सामने एक टैक्सी रुकी। टैक्सी से जगमोहन और राधा उतरे। जगमोहन ने रामेश्वर से कहा, "रामेश्वर भइया राम-राम! सोच रहे थे कि घर में मिलो या न मिलो।"

रामेश्वर ने उठ कर जगमोहन का स्वागत किया, राधा कोठरी के अन्दर चमेली के पास चली गई।

जगमोहन रामेश्वर के सामने बैठ गया। रामेश्वर उस समय दोहरा बना रहा था। दोहरा जगमोहन के आगे बढ़ाते हुए उसने कहा, "आज बहुत दिनों बाद दिखे। अच्छी तरह तो रहे। बड़े आदमी हो गए हो न।"

जगमोहन ने ज़रा मुसकराते हुए उत्तर दिया, "क्या बताऊं भइया—इन दिनों इतना काम सर पर आ पड़ा है कि फुर्सत ही नहीं मिलती। नई कम्पनी खुली—सारा इन्तज़ाम मुझ पर ही छोड़ दिया गया है। दिन रात बैल की तरह जुट कर मेहनत करनी पड़ती है।

देखो न—इस वखत कम्पनी से लौट रहे हैं—यहां न इतवार न कोई छुट्टी। तो लौटते हुए सोचा कि चलो रामेश्वर भइया के दर्शन करते चलें। काम-काज तो रोज ही लगा रहता है।"

"बड़ा अच्छा किया जो चले आए!" रामेश्वर ने कहा, "मुझे भी इन दिनों बड़ी चिन्ता रही, कार-बार किया था तो घाटा आ गया। नहीं तो तुम्हारा मकान तो देख लेते। सुना है बड़ा आलीशान मकान है!"

"क्या कहें भइया, बड़ा काम करने के लिए बड़ी हैसियत भी तो बनानी पड़ती है। फिर तुम तो जानते ही हो कि हम लोग खान्दानी आदमी ठहरे। समय के फेर से यहां बम्बई में आ पड़े और जिन्दगी चौपट कर दी। अब जा कर कहीं भगवान ने सुनी जो हमारी हैसियत का काम मिला।"

जगमोहन की हैसियत रामेश्वर जानता था और उसके खान्दान की वह कल्पना कर सकता था। लेकिन इस समय जगमोहन रामेश्वर का अतिथि था। रामेश्वर ने हँसते हुए कहा, "हां, हां! मुझे बड़ी खुशी है जगमोहन!"

थोड़ी देर तक दोनों मौन बैठे रहे। उस मौन को जगमोहन ने तोड़ा, "एक बात कहें रामेश्वर भइया अगर बुरा न मानो!"

"हां, हां कह डालो! तुम्हारी बात का मैंने बुरा कब माना है!"

"चमेली की बाबत कहना था। इतना अच्छा नाचती-गाती है, इतनी सुन्दर है, इतनी चपल है। हमारी कम्पनी को हिरोइन की ज़रूरत है, अगर तुम कहो तो हम चमेली को हीरोइन का काम दे सकते हैं। ऐसा मौका बार-बार नहीं आता है भइया!"

रामेश्वर ने कठोर दृष्टि से जगमोहन को देखा, लेकिन उसने जगमोहन से कोई कड़ी बात नहीं कही। चुपचाप थोड़ी देर तक वह सोचता रहा। जगमोहन ने देखा कि रामेश्वर सोच-विचार

में अड़ गया। वह बोला, "तुम सोचते होगे रामेश्वर भइया कि चमेली से नौकरी कैसे करवावें, सो भइया यह हमारे जिम्मे कि हम चमेली की अच्छी तरह देख-भाल करेंगे। हम लोग तो तुम्हारे ही आदमी हैं। फिर चमेली भी तो कोई अबोध नहीं है। और भइया, आखिर चमेली काम तो करती ही है। कितनी मेहनत करनी पड़ती है बेचारी को! पान की दूकान पर दिन भर बैठना पड़ता है—हर तरह के आदमी वहां आते हैं, हर तरह की बात करते हैं। फ़िल्म कम्पनी में तो वह रानी की तरह रहेगी। हीरोइन की कितनी कदर होती है!"

जो कुछ जगमोहन ने कहा और जिस ढंग से उसने कहा उसका असर रामेश्वर पर पड़ा। उसने पूछा, "कितनी तनख्वाह मिलेगी उसे?"

"अरे भइया, घर का मामला है। देखो न, राधा को पांच सौ रुपया महीना मिलता है, कितने दिनों से फ़िल्म में काम करती है। चमेली को आठ सौ रुपए से शुरू करेंगे, भगवान ने चाहा तो पहली तसवीर बनने के बाद ही दूनी तनख्वाह हो जाएगी। इतनी तनख्वाह कलक्टर और डिपटी कलक्टर को नहीं मिलती रामेश्वर भइया! ऐसा नायाब मौका जिन्दगी में बेर-बेर नहीं मिलता!"

"आठ सौ रुपया महीना!" रामेश्वर चौंक उठा, "क्या कहा—आठ सौ रुपया महीना तनख्वाह! ठीक कह रहे हो—गलती तो नहीं करते?"

"हां भइया—आठ सौ रुपया महीना!"

"और पहली तसवीर बनने के बाद पन्द्रह सोलह सौ!" रामेश्वर खुद न जानता था कि वह क्या कह रहा है, "यह तो बहुत अच्छा है—बहुत ही अच्छा!" यह कह कर रामेश्वर ने चमेली को आवाज दी, "अरी सुन! जरा यहां बाहर तो आ!"

राधा के साथ चमेली बाहर आई। रामेश्वर ने कहा, "अरी

सुना! जगमोहन मेरे पास तेरी नौकरी का प्रस्ताव लेकर आए हैं—कहते हैं कि अभी तुझे आठ सौ रुपया महीना तनख्वाह मिलेगी, एक तसवीर बन जाने के बाद डेढ़ हज़ार रुपया महीना मिलने लगेगा।"

चमेली ने उत्तर दिया, "हां, राधा भी मुझ से अभी यही बात कह रही थी—सब कुछ सुन चुकी हूँ।"

"तो तुझे क्या कहना है?" रामेश्वर ने कहा, "बड़ी अच्छी नौकरी है! मैं तो समझता हूँ..."

रामेश्वर अपनी बात नहीं पूरी कर पाया, चमेली ने उसकी बात काटते हुए कहा, "तुम कुछ नहीं समझते। इस नौकरी का प्रस्ताव आज के कई दिन पहले मेरे पास आ चुका है—तुम्हें शायद वह बात याद होगी!"

रामेश्वर को उस रात की बात याद आ गई जिस रात उसने शिवकुमार को उस घर के बाहर निकाला था। उसने जगमोहन से पूछा "क्यों जगमोहन तुम्हारी इस कम्पनी के मालिक क्या सेठ शिवकुमार हैं?"

जगमोहन सकपकाया, "मालिक—हां, नहीं, वह तो लिमिटेड कम्पनी है। सेठ शिवकुमार भी उसके एक डाइरेक्टर हैं!"

इस बार राधा बोली, "उस रात की बात कह रहे हो भइया! उस रात सेठ शिवकुमार ने चमेली से नौकरी की बात ज़रूर की थी—पूछ न लो चमेली से, और आज भी मैं उन्हीं की तरफ से नौकरी की बात चला रही हूँ! इसमें बुरा मानने की कौन सी बात है? आखिर इतनी फ़िल्म कम्पनियां चल रही हैं, उनमें औरतें काम करती हैं, हज़ारों रुपये की तनख्वाह पाती हैं। उन औरतों की तसवीरें अखबारों में छपती हैं, बड़े-बड़े रईस और इज्ज़तदार आदमी उनको दावतें देते हैं, बड़े-बड़े नेता उनसे मिलते हैं। इसमें हर्ज ही क्या है?

'आप भले तो जग भला !' वाली कहावत सुनी है न भइया। इस बम्बई में कोई किसी के साथ जोर-जवरदस्ती नहीं कर सकता!

राधा के तर्क में बल था, रामेश्वर ने यह अनुभव किया। उसने जगमोहन से कहा, "अच्छा, हम जरा सोच लें इस पर! चमेली से पूरी-पूरी सलाह करके जवाब देंगे।"

लेकिन चमेली ने उत्तर दिया, "इसमें सलाह-वलाह की कोई बात नहीं। मुझे नौकरी नहीं करनी, बस इतना समझ लो!"

"जैसी तुम्हारी मर्जी!" राधा ने जगमोहन के साथ उठते हुए कहा। जगमोहन ने चलते-चलते रामेश्वर के कान में कहा, "तुम समझदार हो रामेश्वर भइया, तुमने दुनिया देखी है। रुपया आज की ताकत है—रुपया सब कुछ है। जरा इस बात पर सोच-समझ लेना, घर आती हुई लक्ष्मी को ठुकराया नहीं जाता। मकान तो हमारा जानते ही हो!"

सुबह जब रामेश्वर सो कर उठा, वह फिर एकाएक बहुत अधिक चिन्तित हो उठा। वास्तविकता कुरूप थी, कठोर थी, और उस वास्तविकता से बच कर वह भाग नहीं सकता था। उस वास्तविकता का उसे सामना करना था, उसी दिन। आज उसे चार हज़ार रुपए जमा करने थे, और चार हज़ार रुपए उसके पास से खत्म हो चुके थे। दूकान में वह क्या कहेगा? किस प्रकार उसके सर से यह बला टलेगी? रामेश्वर यही सोच रहा था। सुबह से ही वह कुछ अपने में खोया-हुआ कुछ भूला-सा था। चमेली को रामेश्वर की यह मुद्रा अच्छी नहीं लगी, उसने पूछा, "क्या बात है? तबीअत तो ठीक है? इतने चिन्तित क्यों हो?" रामेश्वर ने इधर-उधर के जवाब देकर चमेली को टाला, वह चमेली से सच बात नहीं कह सका।

रामेश्वर अपनी पेढ़ी पर पहुँचा—उसका हृदय धड़क रहा था।

उसने बहाना तो अपने मन ही मन बना लिया था कि उसके रुपए कहीं रख दिये—घर में। और अब मिल नहीं रहे हैं। शायद कोई चुरा के गया है—आदि-आदि !

बड़े मुनीम की तबीअत अच्छी हो गई थी और वह पेढ़ी पर आ गए थे। बड़े मुनीम मानो रामेश्वर की प्रतीक्षा ही कर रहे थे, उन्होंने रामेश्वर को देखते ही कहा, "अरे रामेश्वर! शुक्रवार को जरा तबीअत खराब हो गई थी तो हम जल्दी ही चले गए। तो उस दिन तुम चार हजार रुपए ले आए थे न!"

"हां मुनीम जी!" रामेश्वर ने हिचकिचाते हुए कहा, "रुपया तो हम ले आए थे, लेकिन...।" रामेश्वर कहते-कहते रुक गया। झूठ बोलने की उसे हिम्मत न हो रही थी—उसकी ज़बान जैसे उसके तालू से चिपक रही थी।

"लेकिन क्या?" मुनीम जी के मत्थे पर बल पड़ गए, "साफ़-साफ़ कहो न—क्या बात है?"

"बात यह है मुनीम जी कि आप उस दिन मिले नहीं सो रुपया हम घर लेते गए। घर में बण्डी उतार कर खूंटी पर टांग दी थी। उसके बाद हम रुपए की बात ही भूल गए। सुबह जब बण्डी देखी तो रकम गायब पाई।"

"हूं! तो चार हजार की रकम तुम्हारी कोठरी से गायब हो गई!" मुनीम जी कुछ देर तक सोचते रहे, "तो फिर तुमने पुलिस में रिपोर्ट लिखवाई होगी—यह तो बड़ा संगीन मामला था!"

रामेश्वर ने यह न सोचा था कि उसके इस झूठ पर यह प्रश्न खड़ा हो सकता है। उसने कहा, "रिपोर्ट! नहीं मुनीम जी—मेरी कोठरी से वह रकम गायब हुई थी। परसों और कल हम औरत-मर्द दोनों कोठरी का कोना-कोना खोजते रहे! आखिर रकम गई तो कहां!"

मुनीम जी ने गम्भीरतापूर्वक कहा, "रामेश्वर यह तुम्हारा भाग्य है कि सेठ जी यहां नहीं हैं नहीं तो वह इसी वक्त तुम्हें पुलिस के हवाले कर देते। इन मामलों में वह बड़े कड़े आदमी हैं। वह बृहस्पतिवार को लौटेंगे। इतना समय मैं तुम्हें देता हूँ। वह चार हज़ार की रकम जहां से हो वहां से लाकर दूकान में जमा कर दो! नहीं तो फिर भगवान ही तुम्हारा मालिक है!"

रामेश्वर ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, "मुनीम जी कहां से चार हज़ार रुपया पाऊँगा? घर का कोना-कोना तो ढूंढ़ डाला!"

मुनीम जी मुसकराए, "रामेश्वर! जो रक़म सट्टा-बाज़ार और रेस के मैदान में जाती है वह घर के कोने में भला कैसे मिलेगी? इतना मैं भी जानता हूँ कि वह रकम तुम्हारे घर में नहीं है—सब खबर मुझे मिल चुकी है। लेकिन रामेश्वर पाप का दण्ड तो तुम्हें भरना ही पड़ेगा। पुलिस के हाथों तुम्हारा बच सकना असम्भव है। लेकिन यह कारवाई मैं नहीं करना चाहता हूँ, वह सेठ जी करें तो ज्यादा अच्छा होगा। इसीलिए मैं तुम्हें समय दे रहा हूँ!"

रामेश्वर निरुत्तर हो गया। शास्त्रों में जो लिखा है कि पाप छिपाए नहीं छिपता, रामेश्वर उस सत्य का अनुभव कर रहा था।

मुनीम जी ने फिर कहा, "दूकान का काम-काज तुम्हें अब नहीं करना है, जाओ रुपए का इन्तज़ाम करो जा कर। लेकिन इतना याद रखना—यहां से भाग कर बच न सकोगे, कानून का हाथ बहुत लम्बा होता है। बृहस्पति को सुबह आ जरूर जाना!"

रामेश्वर वहां से घर वापस लौटा। सब कुछ समाप्त हो गया था। उसे निर्णय करना था—ऐसा निर्णय जो उसके हाथ में नहीं था। चार हज़ार रुपए आना उसके लिए असम्भव था। और—बम्बई से भागना? लेकिन बम्बई से भाग कर जाना कहां? फिर

बम्बई से भागना ही क्यों? मुनीम जी कह चुके थे कि कानून का हाथ बहुत लम्बा होता है। फिर वह बचे कैसे?

एकाएक रामेश्वर के अन्दर से किसी ने पूछा, "आखिर तुम बचना ही क्यों चाहते हो? जो पाप तुमने किया है उसका दण्ड भुगतने से ही तुम्हारा पाप धुल सकता है। जेल से बचने के प्रयत्न में तुम्हें और अधिक पाप करना पड़ेगा, और इस तरह धीरे-धीरे तुम्हारे पापों की संख्या लगातार बढ़ती ही जाएगी!"

रामेश्वर मन ही मन मुसकराया, "ठीक है—जैसा विधि का विधान! जहां तक गिरा हूँ उतना ही बहुत है, अब आगे नहीं!"

पर रामेश्वर का संकल्प रामेश्वर के हाथ में न था, परिस्थितियां तेजी के साथ अपना ताना-बाना बुन रही थीं। उसी समय चमेली खाना खाने घर आई। रामेश्वर को घर में लेटा हुआ देख कर उसे आश्चर्य हुआ, "आज काम से बड़ी जल्दी फ़ुरसत मिल गई? तबीअत तो ठीक है?"

रामेश्वर झूठ बोला, "हां, जरा थकावट आ गई। बेकार के काम पर मुनीम जी ने भेज दिया, सोचा ज़रा थोड़ी देर घर पर आराम ही कर लूं! मेरी तबीअत की तू फ़िक्र मत कर!"

चमेली ने रामेश्वर का मत्था छूकर कहा, "कुछ थोड़ी सी हरारत भी तो मालूम होती है। सो जाओ न—मैं सर दाबे देती हूँ!"

"अरी इतनी गई-बीती हालत नहीं है कि तुझ से सर दबवाऊँ। तू खाना खा कर दूकान जा, मेरी चिन्ता मत कर!"

चमेली की तबीअत दूकान जाने की नहीं थी, वह रामेश्वर की ओर से बहुत अधिक चिन्तित हो उठी थी। लेकिन रामेश्वर ने उसे जबर्दस्ती दूकान भेजा। चमेली के जाने के बाद रामेश्वर फिर सोचने लगा, "कितनी भोली है, कितनी अनजान है यह! इस बेचारी को

क्या पता कि मेरा इसका साथ छूट रहा है। और मेरे जेल जाने से इस चमेली को कितना दुःख पहुँचेगा। अकेली रह जायगी, बिल्कुल अकेली। इस बड़े शहर में जहां का हरेक आदमी पिशाच है, यह औरत नितान्त अकेली रह जायगी! कौन इसकी देख-भाल करेगा, कौन इसकी रक्षा करेगा, किसके सहारे यह रहेगी?" रामेश्वर यह सोचते-सोचते उद्विग्न हो उठा।

एक गिलास ठंढा पानी पीकर रामेश्वर ने फिर सोचना आरम्भ किया, "लेकिन....क्या यह खुद अपनी रक्षा नहीं कर सकती? एक दूकान चला रही है—इसके खाने-पीने भर को तो इसकी दूकान से निकल ही आता है! मैं आखिर इसके लिए करता ही क्या हूँ? एक तरह से तो वह मुझ से ज्यादा पैदा करती है—और भी ज्यादा पैदा कर सकती है!" रामेश्वर को एकाएक जगमोहन की याद हो आई, "आठ सौ रुपया महीना—पांच महीने में चार हज़ार! इतना पैदा कर सकती है! जिस चार हज़ार के लिए मुझे जेल जाना पड़ेगा, मेरी ज़िन्दगी बरबाद हो जायगी वह चार हज़ार रुपया यह पांच महीने में पैदा कर सकती है! लेकिन क्या जगमोहन ठीक कहता है? क्या वाकई चमेली को आठ सौ रुपया महीने की नौकरी मिल सकती है?" रामेश्वर की आंखें यह सब सोचते-सोचते चमक उठीं, उसके अन्दर आशा की एक हलकी-सी लहर आ गई।

रामेश्वर उठ खड़ा हुआ—आज वह जगमोहन से बात करेगा। उसे एकाएक प्रकाश दिख गया, वह अभी बच सकता है!

जगमोहन का मकान ढूंढने में उसे कष्ट नहीं उठाना पड़ा, उस समय जगमोहन और राधा दोनों ही घर पर मौजूद थे। घर के बाहर एक दरबान बैठा था, उसने रामेश्वर को देख कर कहा, "किससे मिलना है? सेठ अभी खाली नहीं हैं!"

"खाली हों या न हों, उनसे कह दो रामेश्वर आए हैं!"

नौकर रामेश्वर के अधिकार-भरे स्वर से थोड़ा-सा चकराया। रामेश्वर के वस्त्रों से तो ऐसा लगता था कि वह किसी नौकरी की तलाश में आया है, लेकिन रामेश्वर के स्वर में जो कठोरता थी उससे नौकर को और कुछ अधिक कहने का साहस न हुआ। उसने कहा "अच्छा ठहरो—हम कहे आते हैं। लेकिन हम फिर कहे देते हैं कि किसी दूसरे मौके पर आना!"

थोड़ी देर में नौकर ने बाहर आकर कहा, "जाइये, आपको बुलाया है!"

बारहवां परिच्छेद

जगमोहन ने उठ कर रामेश्वर का स्वागत किया। उस कमरे में जगमोहन अकेला न था, वह करीब ५-६ लड़कियों से घिरा बैठा था। ये सब लड़कियां फ़िल्म में काम करना चाहती थीं। जगमोहन ने रामेश्वर से कहा, "बड़े मौके से आए! आज के बाद तो फिर महीनों मुलाकात न होगी, मुझे बस काम ही क़ाम समझो! आज-कल में हीरोइन का चुनाव भर हो जाय—और बस अपना छकड़ा चल निकला।" रामेश्वर को अपने साथ सोफ़ा पर बिठाल कर जग-मोहन कहता ही गया, "ये लड़कियां देख रहे हो न! यह सब की सब बड़े अच्छे-अच्छे खान्दान की हैं। यह सब हीरोइन का काम करना चाहती हैं, लेकिन मुसीबत यह है कि इनमें से एक भी इस क़ाबिल नहीं है कि हीरोइन बन सके। जो बोल सकती है वह खूबसूरत नहीं, जो खूबसूरत है उसकी शक्ल कैमरा में ठीक नहीं आती, जिसकी शक्ल कैमरा में ठीक-ठीक आ जाती है वह बोल नहीं पाती। अरे बड़ा मुश्किल काम है यह हीरोइन का चुनना!" यह कह कर वह उन लड़कियों की ओर घूमा!" "कल स्टूडियो में दस बजे सुबह आ जाना, टेस्ट वहीं लिया जायगा।"

उन लड़कियों के चले जाने के बाद जगमोहन रामेश्वर की ओर मुखातिब हुआ, "बड़े उदास हो! तबीअत तो ठीक है ?"

"हां, ठीक ही समझो! कुछ पूछताछ करनी थी, इसलिए चला आया।"

जगमोहन हँस पड़ा, "हम जानते हैं क्या पूछताछ करनी है! सो यह तो देख ही चुके हो कि अभी तक कोई हीरोइन नहीं ली गई है—

जगह खाली है। लेकिन अब ज्यादा दिन तक यह नहीं टलेगा, आज, कल, परसों में सब कुछ ठीक कर लेना है!"

रामेश्वर कुछ थोड़ी देर तक चुप बैठा रहा; वह न कुछ सोच रहा था, न कुछ समझ रहा था; जैसे उसके अन्दर सब कुछ सूना पड़ गया था। रामेश्वर को जगमोहन नें जब इस तरह खोया-खोया देखा तो उसने कहा, "कहो, कहते क्यों नहीं कि क्या पूछ-ताछ करनी है; यह गुम-शुम क्यों बैठे हो?"

रामेश्वर ने बल लगा कर अपनी चेतना को जगाया, "किस काम से आया हूँ?—अरे मैं तो भूल ही गया था!" और रामेश्वर मुसकरा पड़ा, "हां, तो पूछना यह है कि क्या चमेली हीरोइन का काम कर सकती है?"

जगमोहन हँस पड़ा, "तुम भी कैसी बात करते हो रामेश्वर भइया! चमेली—चमेली ऐसी औरत इस फ़िल्म की दुनिया में ढूंढे से न मिलेगी—हम यह शर्त बद कर कह सकते हैं। चमेली अगर हमारी फ़िल्म में काम करने लगे, तो समझो कि हमारे भाग खुल गए। हम कहते हैं रामेश्वर भइया—सुनहला मौका है! इसे हाथ से न जाने दो!"

रामेश्वर ने जगमोहन की बात तो सुनी, लेकिन उसने समझा एक शब्द भी नहीं। उसने कहा, "तो क्या चमेली को वाकई आठ सौ रुपये महीने मिल सकते हैं? तुम बहला तो नहीं रहे हो? चमेली को इतनी बड़ी नौकरी मिल सकती है?"

जगमोहन को रामेश्वर की बातचीत पर आश्चर्य हो रहा था। उसने रामेश्वर को गौर से देखा, और उसने देखा कि रामेश्वर छत की ओर देख रहा है, अन्यमनस्क-सा और भूला-भूला! जगमोहन ने रामेश्वर का हाथ हिला कर कहा, "तुम्हें क्या हो गया है रामेश्वर भइया? अरे चमेली को आज ही से नौकरी मिल सकती है! आठ सौ रुपया

महीना पगार—मोटर की सवारी, स्टूडियो में खाना-पीना, यह सब अलग से!"

रामेश्वर ने एक ठंढी सांस ली, "जगमोहन! चमेली को वह नौकरी दिला दो। उसको वह नौकरी दिला कर तुम मेरे साथ बहुत बड़ा उपकार करोगे!"

राधा ने अभी तक इस बातचीत में कोई भाग नहीं लिया था। लड़कियों को बाहर भेज कर वह चुपचाप सामने कुरसी पर बैठ गई थी और इन दोनों की बातें सुनने लगी थी। अब राधा रामेश्वर की ओर घूमी, "लेकिन चमेली से पूछ लिया है कि नहीं? क्या वह नौकरी करने को राज़ी है?"

राधा के इस प्रश्न से रामेश्वर चौंक उठा। वास्तव में उसने चमेली से इस सम्बन्ध में कुछ न पूछा था। उसने कहा, "नहीं, चमेली से तो अभी तक कुछ नहीं पूछा, लेकिन उससे पूछने की कोई खास ज़रूरत भी नहीं है। मैं अगर चाहता हूँ कि वह फ़िल्म कम्पनी में काम करे तो उसे इसमें कोई एतराज़ नहीं हो सकता।"

राधा हँस पड़ी, लेकिन राधा की उस हँसी में भयानक कटुता थी, "हां, मर्द जो चाहे उसे करने में भला औरत को क्या एतराज़ हो सकता है। लेकिन इस सब में भुगतना पड़ता है मर्द को नहीं, निर-पराध और बेबस औरत को!"

रामेश्वर ने कठोरता के साथ राधा को देखते हुए कहा, "क्या मतलब है तेरा? क्या तू नहीं चाहती कि चमेली वहां काम करे?"

"नहीं रामेश्वर भइया!" राधा ने सम्हलते हुए कहा, "मैंने ही तो चमेली से पहले-पहल काम करने को कहा था। वह चमेली ने ही इनकार कर दिया था, और उस पर तुमने मुझे इतना भला-बुरा कहा था। लेकिन मैंने तो उस सब का बुरा नहीं माना था। जहां तक हो

सके दूसरों का भला करो !—मैं तो हमेशा अपने से यही कहती हूं !"

रामेश्वर ने राधा की इस बात का कोई ध्यान नहीं दिया—वह चुपचाप बैठा उस कमरे को और उसकी सजावट को देख रहा था। राधा कितने सुख से रहती है—मन ही मन वह सोच रहा था। कुछ देर चुप रह कर उसने कहा, "चमेली की तरफ़ से मैं कहने आया हूं जगमोहन—वह तुम्हारी फ़िल्म कम्पनी में काम करेगी! लेकिन तनख्वाह एक हज़ार रुपया होनी चाहिये।"

जगमोहन अपनी जगह से उछल पड़ा, "हां रामेश्वर भइया, चमेली की तनख्वाह एक हज़ार रुपया महीना हो जाएगी—हम इसका जिम्मा लेते हैं। और इसी मकान में एक और फ़्लैट खाली है—ऊपर, उसे देख लो। किराया इससे कुछ ज्यादा है भइया, लेकिन बड़े काम के लिए बड़ी हैसियत होनी चाहिये। अगर पसन्द आवे तो आज ही उसकी बात कर लो—हम पेशगी किराया दे देंगे।"

रामेश्वर उठ खड़ा हुआ, न जाने क्यों, उसे ऐसा लगा कि उसका दम घुट रहा है। वह वहां से, जगमोहन और राधा के सामने से जल्दी से जल्दी भागना चाहता था। उसने कहा, "हम सब कुछ तुम्हारे ऊपर छोड़ रहे हैं जगमोहन—तुम मकान ठीक कर दो। मेरे देखने की ज़रूरत नहीं है। और कल मेरे यहां आ कर तुम्हीं चमेली को अपने साथ ले आना!" यह कह कर और बिना जगमोहन के उत्तर की प्रतीक्षा किये हुए रामेश्वर वहां से चल पड़ा। वह घर की ओर नहीं गया—शाम तक वह लक्ष्यहीन इधर-उधर घूमता रहा।

शाम के समय रामेश्वर वापस लौटा, चमेली उस समय दूकान से वापस आ गई थी और खाना बनाने की तैयारी कर रही थी। रामेश्वर को देख कर उसने पूछा, "अब तो तबीअत ठीक है?"

"ठीक ही है!" रामेश्वर ने कहा और वह ज़मीन पर पड़े हुए

बिस्तर पर लेट गया। रामेश्वर की इस मुद्रा से चमेली चौंक पड़ी, वह रामेश्वर के पास आ कर बैठ गई, "क्या कोई खास बात है—बताते क्यों नहीं?"

रामेश्वर ने चमेली के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया, कुछ चुप रह कर उसने कहा, "चमेली, एक बात कहनी है तुझ से! इधर कई दिनों से तुझ से कहना चाहता था, लेकिन हिम्मत न हो रही थी। लेकिन अब उसे ज्यादा नहीं टाल सकता—तुझ से बतानी ही होगी!"

रामेश्वर के उस स्वर से और उसकी भूमिका से चमेली सहम उठी, "क्या बात है?" धड़कते हुए हृदय को सम्हालने का प्रयत्न करते हुए उसने पूछा।

"वही कह रहा हूँ। देख—तुझे अब अकेले रहना होगा, हम दोनों का साथ छूट रहा है—भगवान की यही इच्छा थी। तू समझदार है, समर्थ है, यह मकान तेरे पास है, अपने खाने-भर को तू पैदा कर लेगी ही—इतना मुझे सन्तोष है। मैं दो-चार रोज़ यहां और हूँ—बस!"

"इसके बाद कहां जाओगे?" चमेली ने पूछा।

"शायद जेल! वैसे इस बहुत बड़ी दुनिया के किसी भी कोने में भाग कर मैं छिप सकता हूँ—लेकिन वह सब बेकार! भागने के माने हैं मौत—शारीरिक मौत न सही, पर अन्य सब बातों में मौत! एक सहमी हुई और डरी हुई, अपने को प्रकट न कर सकने वाली जिन्दगी मौत से भी भयानक है चमेली—उसे न अपनाऊँगा! जेल जाना है मुझे!"

"जेल जाना है—हे भगवान क्या कह रहे हो? तुमने किसका क्या बिगाड़ा है जो जेल जाना है? बताओ न क्या बात है?"

रामेश्वर ने एक करुण मुसकराहट के साथ कहा, "मैं बड़ा पापी हूँ चमेली, तुम्हें नहीं मालूम! दूकान का चार हजार रुपया मैं

सट्टे में हार गया हूं! अपनी जूआ खेलने की आदत मैं नहीं छोड़ सका, ज़िन्दगी मेरी इसी आदत से तबाह हो गई—और आखीर में जेल जाने की भी नौबत आई। वह जो मैं रात को देर तक बाहर जाता था चमेली, मैं जूआ खेलने जाता था!"

चमेली की समझ में कुछ भी न आ रहा था, "जूआ खेलने जाते थे—वहां तो रोजगार करते थे जाकर!"

"वह रोजगार जूआ है—सीधा-सादा जूआ। वह ऐसा जूआ है जिसे भले आदमी खेलते हैं, जिस पर सरकार की तरफ़ से कोई रोक नहीं है, जिसमें बेईमानी होती है, जालसाज़ी होती है। वह जूआ मेरे ऐसे आदमियों के लिए नहीं है—यह मैं लुट कर ही जान पाया हूं। तो चमेली दूकान की चार हज़ार की रकम वहां हार आया हूं। आज सबेरे मुनीम जी ने कहा है कि अगर बृहस्पति तक वह रकम वापस न हुई तो वह मुझे पुलिस के हवाले कर देंगे।"

चमेली को जैसे काठ मार गया—उसकी समझ में न आ रहा था कि वह क्या कहे। थोड़ी देर तक दोनों एक दूसरे को देखते रहे, फिर रामेश्वर ने कहा, "लेकिन चमेली—पान की दूकान से तो तेरा काम न चलेगा। मैं समझता हूं कि तू भी फ़िल्म कम्पनी में काम कर ले—एक हज़ार रुपया महीना तनख्वाह मिलेगी। मैं आज जग-मोहन से मिल आया हूं—कल राधा तुझे आ कर अपने साथ ले जायगी। मैं अपने पापों का प्रायश्चित्त करने जा रहा हूं, उस बीच तेरी व्यवस्था तो मैं कर दूं!"

चमेली की भौंहे सिकुड़ गईं, कुछ देर तक सोचने के बाद उसने कहा, "अच्छी बात है—कल मैं नौकरी कर लूंगी—और बृहस्पति तक अगर भगवान चाहेगा तो तुम्हारे चार हज़ार रुपयों का भी प्रबंध हो जायगा।"

तेरहवां परिच्छेद

राधा के साथ चमेली जिस समय स्टूडियो पहुँची, सेठ शिवकुमार वहीं मौजूद थे। उस समय वहां गाने का रिहर्सल चल रहा था। शिवकुमार चमेली और राधा को देखते ही उठ खड़ा हुआ। उसने चमेली से मुसकराते हुए कहा, "नमस्ते !"

चमेली के दोनों हाथ उस नमस्ते के उत्तर में आप ही आप उठ गए, यद्यपि उसकी वाणी ने कुछ कहने से इनकार कर दिया। शिवकुमार की वह मुसकराहट चमेली को अच्छी नहीं लगी, उसने उस मुसकराहट में निहित विजय के उल्लास को यद्यपि साफ़-साफ़ नहीं देखा, पर उसका कुछ आभास उसे मिल ही गया। शिवकुमार ने म्यूज़िक डाइरेक्टर की ओर घूमते हुए कहा, "मिस्टर लहरी—ये हैं हमारी नई हीरोइन चमेली देवी। देखिये इन्हें—और बताइये कि इनके मुकाबिले की हीरोइन आपको किसी फ़िल्म-कम्पनी में दिखेगी।"

लहरी ने हारमोनियम अपने सामने से हटाते हुए कहा, "क्या कहना है सेठ ! पारखी हो तो आप-सा ! कहां से रतन निकाल कर लाए हैं आप, मैं तो मान गया !" इस बार वह चमेली से बोला, "मैं यहां का म्यूज़िक डाइरेक्टर हूँ राजीव लोचन लहरी ! मैं आपका स्वागत करता हूँ !"

चमेली इस बार भी मौन ही रही, वह कुछ अपने में खोई हुई सी सब कुछ देख रही थी लेकिन समझ न पाती थी। राजीव ने शिवकुमार से कहा, "सेठ यह तो बोलती ही नहीं, क्या बात है ?"

राधा ने उत्तर दिया, "तुम लोग बेचारी को बेकार तंग कर रहे हो। आज पहली दफ़ा स्टूडियो आई है—दो चार रोज़ बाद अगर यह तुम्हें बोलने का मौका दे तो कहना !"

राधा के इस उत्तर पर सब हँस पड़े। चमेली भी मुसकराई—उसने धीमे से राधा से कहा, "तुम बड़ी शैतान हो!"

शिवकुमार चमेली और राधा को साथ लेकर आफ़िस चला गया। आफ़िस में रामेश्वर बैठा हुआ इन लोगों की प्रतीक्षा कर रहा था। शिवकुमार ने इन लोगों को बिठलाते हुए चमेली से कहा, "आपने हमारी बात मान कर हमारे ऊपर बड़ी कृपा की। पिक्चर का काम-काज करीब-करीब पूरा हो गया है, गुरुवार को मुहूरत है। मुहूरत मैं अपनी नई हीरोइन के साथ ही करना चाहता हूँ। इसलिए आज कांट्रैक्ट हो जाना चाहिये। यह कांट्रैक्ट मैंने बनवा लिया है, आपको दस्तखत भर कर देने हैं। शुरू में आठ सौ रुपए महीने तनख्वाह मिलेगी, पिक्चर पूरी होने पर एक हजार रुपया महीना तनख्वाह हो जायगी। उसके बाद हर साल सौ रुपए की तरक्की होगी। यह कांट्रैक्ट पांच साल का है!"

चमेली ने रामेश्वर की ओर देखा और रामेश्वर ने उतावली के साथ उत्तर दिया, "ठीक तो है—दस्तखत कर दे।"

चमेली ने दस्तखत कर दिये। शिवकुमार ने रामेश्वर से कहा, "तुम्हें भी दस्तखत करने होंगे रामेश्वर!—तुम चमेली के आदमी हो। कहीं फिर यह न कहो कि मैंने चमेली देवी को बहकाया है!" और यह कह कर शिवकुमार हँस पड़ा।

रामेश्वर ने भी अपने दस्तखत कर दिये।

जिस समय रामेश्वर दस्तखत कर रहा था, चमेली अपनी आंखों में उमड़ते हुए आंसुओं को रोक रही थी। शिवकुमार की वह हँसी उसे विष के समान लगी, पर वह विवश थी। रामेश्वर के लिए वह सब कुछ कर रही थी—उस रामेश्वर के लिए जिसे वह अपना देवता मानती थी, जिसके लिए वह स्थित थी। रामेस्वर दस्तखत करके

उठ खड़ा हुआ; उसने चमेली से कहा, "अब मैं जा रहा हूँ—तुम राधा के साथ चली आना।"

चमेली के कुछ कहने के पहले ही शिवकुमार बोल उठा, "रामेश्वर—कम्पनी की कार इन्हें घर पहुँचाएगी—हीरोइन को कार की सवारी मिलने की प्रथा है। और हां—राधा जिस मकान में रहती है उसमें एक और फ्लैट है—हमारी कम्पनी के नाम। अगर आज ही तुम लोग उस फ्लैट में चले जाओ तो अच्छा हो, हमारी कम्पनी की हीरोइन को चाली में रहना तो शोभा नहीं देता!"

"हां, हां सेठ! मैं जा कर उस फ्लैट में प्रबन्ध करता हूँ—चमेली को उसी फ्लैट में भेजना—उसके वहां पहुँचने तक मैं अच्छी तरह से फ्लैट को साफ़ करवा लूंगा। उसकी चाभी मुझे दे दो!"

अपने चारों ओर लगातार बुने जाने वाले जाल में वह बुरी तरह फँसती जा रही है—चमेली यह अनुभव कर रही थी; पर वह विवश थी। फ्लैट की चाभी लेकर रामेश्वर चला गया और चमेली को लगा जैसे रामेश्वर उसे असहायावस्था में अकेली छोड़ गया। यही नहीं, रामेश्वर मानो चमेली पर अपना अधिकार चमेली के हाथों में वापस सौंप गया है। रामेश्वर के जाने के बाद शिवकुमार ने राधा से कहा, "राधा, तुम रिहर्सल में चलो, अपनी कम्पनी की नई हीरोइन से मुझे कुछ बातें करनी हैं, उसे कुछ बातें बतलानी हैं।" और यह कहते-कहते शिवकुमार खिलखिला कर हँस पड़ा।

राधा ने चमेली की ओर देखा, चमेली के मुख पर एक अजीब तरह का सूनापन था; किसी भी प्रकार की भावना उसे चमेली के चेहरे पर न मिली; न हर्ष, न क्रोध, न विषाद! राधा यह आशा करती थी कि चमेली या तो उसे जाने से रोकेगी या फिर उसके साथ ही रिहर्सल में चलने का आग्रह करेगी। चमेली ने कहा, "चलो, जरा सेठ से बातें कर लूं फिर आती हूँ।"

राधा के जाने के बाद थोड़ी देर तक शिवकुमार और चमेली दोनों ही मौन बैठे रहे। शिवकुमार चुपचाप बैठा चमेली को देख रहा था और सोच रहा था कि चमेली से किस प्रकार वह बात आरम्भ करे और क्या बात करे। काफ़ी प्रतीक्षा करने के बाद चमेली ने स्वयं उस मौन को तोड़ा, "हां सेठ! तो तुम मुझ से बात करना चाहते थे न! यहां तक ले आए हो, और मैं चली आई हूँ। बड़े प्रसन्न हो रहे होगे अपनी सफलता पर!" और यह कहते-कहते चमेली के मुख पर एक व्यंगात्मक रूखी मुसकराहट आ गई।

शिवकुमार भी मुसकराया और उसकी मुसकराहट में भी व्यंग था, पर रूखापन न था, "चमेली रानी! मैंने तुमसे बहुत पहले कहा था कि मैं तुम्हें पाने की साधना कर रहा हूँ। जहां साधना है वहां उसका फल भी मिलता है—साधना विफल तो नहीं होती!"

चमेली के मन में आया कि वह शिवकुमार से कह दे कि दुनिया में जो कुछ है वह रुपिया है, और अभाव की विवशता है। पर वह मौन ही रही। थोड़ी देर तक उसने आंख गड़ा कर शिवकुमार को देखा फिर उसने कहा, "तो सेठ! तुम समझते हो कि तुम मुझे पा गए?"

शिवकुमार उठ खड़ा हुआ, "चमेली रानी, पा तो मैं तुम्हें उसी दिन गया था जिस दिन मैंने तुम्हें देखा था! अभी जो कुछ मैंने किया उसका मतलब केवल इतना है कि मैं तुम्हें कहीं खो न दूं! अब जाओ गाने के रिहर्सल में—देर हो रही है। यहां रोज़ ही मिलना होगा, रोज ही बातचीत होगी!"

शिवकुमार बिना चमेली के उत्तर की प्रतीक्षा किये ही चला गया, चमेली को मर्माहत और पराजित छोड़ कर!

चौदहवाँ परिच्छेद

चमेली को अनुभव हो रहा था कि वह अपनी इच्छा के प्रतिकूल विनाश के गर्त में खिच रही है; उसके चारो ओर विनाश है, लेकिन वह कहीं भाग नहीं सकती—भागने के सब रास्ते बन्द हैं। उस स्टूडियो में वह रुपयों के लिए आई है; उसे चार हज़ार रुपए लेने ही होंगे। अब उसके पास केवल दो दिन का समय है!

दूसरे दिन शाम को रिहर्सल समाप्त करके वह शिवकुमार से मिलने गई। चमेली को स्वतः अपने कमरे में आते देख कर शिवकुमार को कोई आश्चर्य नहीं हुआ, सरल भाव से मुसकराते हुए उसने चमेली का स्वागत किया। चमेली के बैठ जाने के बाद उसने कहा, "कोई खास काम है?"

चमेली के मुख से जैसे शब्द न निकल रहे थे। उसने प्रयत्न करते हुए कहा, "हां सेठ! बहुत ज़रूरी काम है!" और यह कहते-कहते वह रुक गई।

"कहो! कहो! संकोच की क्या बात है?" शिवकुमार ने कहा और उसी समय मानो शिवकुमार की अनुभवी आंखों ने चमेली के मुख के भावों को पढ़ लिया, "रुपयों की ज़रूरत होगी! परसों मैं पेशगी देना भूल गया था, और न तुमने कोई पेशगी की बात चलाई थी, न रामेश्वर ने!" यह कह कर शिवकुमार ने अपनी जेब से सौ-सौ के पांच नोट निकाल कर चमेली की ओर बढ़ा दिये, "यह पांच सौ रुपए हैं! काम चल जायगा न!"

चमेली ने उन नोटों से अपनी आंखें हटा लीं, "नहीं सेठ! मुझे ज्यादा चाहिये! इतने से काम न चलेगा!"

"कितना चाहिये, एक हज़ार ! लेकिन यह तो एक महीने की पूरी तनख्वाह हुई, और पूरी तनख्वाह पेशगी देने का कोई कायदा नहीं।"

चमेली ने अब साहस किया; शिवकुमार की आंखों से अपनी आंखें मिलाते हुए उसने कहा, "कायदा-कानून तो मैं जानती नहीं सेठ, मैं तो सिर्फ इतना जानती हूं कि मुझे चार हज़ार रुपयों की ज़रूरत है, और वह भी आज ही इसी वक्त ! इसी रुपए की ज़रूरत से मजबूर हो कर मैं तुम्हारे यहां आई हूं सेठ !"

शिवकुमार ने हिचकिचाते हुए कहा, "चमेली रानी, चार हज़ार बड़ी रकम होती है।"

चमेली हँस पड़ी, "सेठ ! जो सौदा करता है वह जिस चीज़ का सौदा करता है उसकी कीमत भी आंक लेता है ! अगर चार हज़ार रुपए तुम मुझे देते हो तो मैं तुम्हारे यहां हूं नहीं तो कल से मैं स्टूडियो न आऊँगी !"

शिवकुमार ने चमेली की ओर कुछ कौतूहल से देखते हुए कहा, "और अगर मैंने तुम्हें चार हज़ार रुपए दे दिये तो इसका क्या भरोसा कि तुम मेरे यहां काम करोगी ही, कल मुझे छोड़ के न चल दोगी !"

चमेली ने उसी प्रकार दृढ़ता से कहा, "सेठ अगर तुम मेरा भरोसा कर सकते हो तो ठीक, अगर नहीं कर सकते हो तो मुझे कुछ नहीं कहना।"

शिवकुमार ने चमेली का हाथ पकड़ लिया, "चमेली रानी, मैं तुम्हारा भरोसा कर नहीं सकता बल्कि करता हूं—मैं तुम्हारी बात का भरोसा करता हूं !" और शिवकुमार ने उसी समय चेक-बुक निकाल कर चार हज़ार का चेक चमेली के हाथ में दे दिया। चमेली ने चेक अपने हैन्डबैग में रख लिया, उस समय उसकी आंखों में आंसू आ गए थे। उसने कहा, "सेठ ! तुम इतने भले हो, मैंने यह न

सोचा था ! आज मेरे साथ तुमने जो उपकार किया, मैं उसे जनम भर न भूलूंगी ! तुमने मुझे हमेशा के लिए अपना बना लिया !"

अनजाने में चमेली एक भयानक सत्य कह गई, शिवकुमार इस पर केवल मुसकरा दिया। शायद इससे अधिक बात करने का वह उचित अवसर न था।

चमेली के हृदय से एक भार हट गया, वह अब प्रसन्न थी ! शिवकुमार के कमरे से निकल कर वह राधा को ढूंढ़ती हुई म्यूज़िक हाल में पहुँची। म्यूज़िक हाल में एक भीड़-सी लगी थी। राधा, प्रेमकिशन डाइरेक्टर और राजीव लहरी म्यूज़िक डाइरेक्टर के अलावा नगर की एक अच्छी गायिका वहां मौजूद थी। प्रेमकिशन और लहरी ने उठ कर चमेली का स्वागत किया। उस समय वह गायिका गा रही थी—प्ले-बैक की आवाज़ का टेस्ट लिया जा रहा था। जब वह गा चुकी तो म्यूज़िक-डाइरेक्टर लहरी ने चमेली से कहा, "आप की आवाज़ से इनकी आवाज काफ़ी मिलती-जुलती है। आपके गानों का प्ले-बैक देने को मैंने इन्हें चुना है !"

चमेली हँस पड़ी, "आपको कैसे मालूम कि मेरी आवाज़ से इनकी आवाज़ मिलती है ? आपने मेरा गाना सुना है ?"

लहरी सकपकाया, "जी ! आपका गाना ? क्या आप गाना भी गा लेती हैं ?"

प्रेमकिशन हँस पड़ा, "मिस्टर लहरी, सेठ तो इनके गाने की बड़ी तारीफ़ करते थे, लेकिन मैंने समझा कि शायद इनका गाना आपको पसन्द न आया हो ! चमेली देवी एक गाना गाइये न आप !"

चमेली ने उठ कर हारमोनियम ले लिया और उसन मीरा का एक पद गाया ! चमेली का गाना सुन कर सब स्तब्ध रह गए। गाना समाप्त हुआ और डाइरेक्टर प्रेमकिशन ने चमेली के कंधे पर थपकी दे कर कहा, "शाबाश ! देखा लहरी, सेठ ने गलत नहीं कहा

था ! मैं बड़ा भाग्यशाली हूँ कि हमें अपनी हीरोइन में कानन और खुरशीद को भी मात करने वाली गायिका मिली ।"

प्रेमकिशन की थपकी पर चमेली को और किसी दिन बुरा लगता, लेकिन उस दिन वह हँस पड़ी। उसने प्रेमकिशन से कहा, "डाइरेक्टर साहेब! आप अपनी पिक्चर शुरू कीजिये, मुझे आप बहुत पीछे न पाइयेगा।

लहरी निर्निमेष दृष्टि से चमेली को देख रहा था, उसने राधा से कहा, "राधा देवी ! आज तो चमेली देवी का गाना सुन कर तबीअत इतनी खुश हुई कि सिनेमा देखने का मन हो आया। 'सुकुमार' पिक्चर लगा है। कहते हैं कि उसके गाने लाजवाब हैं! सोचता हूँ कि क्या सुकुमार की हीरोइन चमेली से अच्छा गाती होगी !"

"गैर मुमकिन !" प्रेमकिशन बोल नहीं बल्कि चिल्ला उठा, "हज़ार रुपए की बाज़ी लगा सकता हूँ कि वह चमेली देवी के पैर की धूल भी न होगी ! लेकिन पिक्चर देखनी ज़रूर चाहिये, बड़ा शोर है उसका! क्यों चमेली देवी, आप भी चलिये न! हम सब लोग साथ चलेंगे !"

'सुकुमार' फ़िल्म देखने की इच्छा चमेली में जाग उठी, लेकिन उसे घर जा कर रामेश्वर को चार हज़ार देने थे। उसने कहा, "आज नहीं, कल की रखिये ! यहीं से हम लोग चलेंगे ।"

प्रेमकिशन ने उसी समय अपने असिस्टेण्ट को चार सीटों का एक बाक्स रिज़र्व कराने के लिए रुपए दे दिये ।

आज वाला चमेली का रूप देख कर राधा को बहुत अधिक आश्चर्य हुआ । क्या यह वही चमेली है जिसे उसने इतने दिनों तक घनिष्ठता पूर्वक जानने का दम भरा ? इस चमेली को वह पहचान भी न सकती थी। चमेली में उसने एक नया जीवन देखा, नया उल्लास देखा !

रात में जब चमेली घर पहुँची, रामेश्वर ड्राइंग रूम में चिन्तित और उदास बैठा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। कल उसके भाग्य का फ़ैसला होने वाला था न! और चमेली ने जिस समय ड्राइंग रूम में प्रवेश किया, वह प्रसन्न थी, हँस रही थी। उसने कमरे में प्रवेश करते ही कहा, "तुम्हारा काम हो गया—और तुम्हारे इस काम की वजह से कम्पनी वालों के लाख आग्रह पर भी आज सिनेमा नहीं गई, कल का वादा कर दिया।" और यह कह कर उसने चार हज़ार का चेक रामेश्वर के हाथ में दे दिया।

रामेश्वर ने जिस समय चेक अपने हाथ में लिया, उसके हाथ कांप रहे थे। उसने एक बार चेक को गौर से देखा, वह रामेश्वर के नाम 'बेयरर' चेक था—पूरे चार हज़ार रुपये का! लड़खड़ाते स्वर में उसने चमेली से सिर्फ़ इतना पूछा, "यह चेक भुन तो जायगा?"

चमेली हँस पड़ी, "भुनेगा क्यों नहीं? और जब यह चेक भुन जायगा तथा बंक से रुपया आजायगा तब मैं स्टूडियो जाऊँगी, उसके पहले नहीं।"

रामेश्वर ने उस चेक के सम्बन्ध में और कोई बात नहीं की। न उसने यह पूछा कि आया चार हज़ार रुपए पाने में चमेली को कोई कठिनाई तो नहीं हुई और न उसने यह पूछा कि यह चार हज़ार रुपया चमेली की तनख्वाह से कितना-कितना करके कटेगा। जिस ड्राइंग रूम में वह बैठा था वह काफी सजा था, कीमती सोफ़ा-सेट की फ़र्श पर कीमती कालीन, दरवाज़ों और खिड़कियों पर कीमती परदे! और रामेश्वर ने यही कब पूछा कि इस सब का दाम किसने दिया? रामेश्वर के सामने उसका 'कल' था, उसके फ़ार्म का मुनीम था और मुनीम के हाथ में चार हज़ार सौंप कर जेल जाने से बचने की बात थी!

उस समय रात हो गई थी। रामेश्वर ने चेक ड्रार में रख कर ताला लगा दिया, और सन्तोष की एक सांस लेकर चमेली से कहा, "दिन भर घर में बैठे-बैठे जी ऊब गया; जरा थोड़ा-सा घूम आऊं जाकर!"

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

चेक भुना कर रामेश्वर करीब ग्यारह बजे बैंक से लौट आया। चमेली ने उस समय तक खाना तैयार कर लिया था। खाना बनाने के लिए रसोइयां होते हुए भी सबेरे का खाना चमेली ही बनाती थी। चमेली ने रामेश्वर से कहा, "पहले खाना खा लो फिर पेढ़ी पर जाना; मैंने स्टूडियो में फ़ोन कर दिया है, गाड़ी तीन बजे आवेगी —उस वक्त तक आ जाना ! आज मेरे साथ स्टूडियो चलना होगा !"

रामेश्वर ने कहा, "कोशिश करूंगा आने की, लेकिन अगर न आ सकूं तो इन्तज़ार न करना—अकेली चली जाना !"

खाना खाकर रामेश्वर दूकान पहुँचा, मुनीम जी खाता लिख रहे थे। रामेश्वर को देखते ही मुनीम जी ने कहा, "अरे तुम आ गए ! सेठ जी को लेने के लिए कार स्टेशन गई हुई है, बस आते ही होंगे।"

रामेश्वर ने चार हज़ार के नोट मुनीम जी के सामने रख दिये, "मुनीम जी ! आप का रुपया मिल गया। एक दूसरी बण्डी में था, वह मैं अपने एक दोस्त के यहां उतार आया था। खैरियत यह हुई कि बण्डी को किसी ने देखा नहीं, वहीं की वहीं टँगी रही जहां मैंने उसे टांग दिया था !"

मुनीम जी ने नोट गिने, फिर उन्होंने रामेश्वर को देखा, "रामेश्वर ! पता नहीं यह रुपया तुम कहां से लाए और कैसे लाए ! रुपया तुम चारो हज़ार जुए में हार चुके हो, मैंने इसका पूरा पता लगा लिया है; और मैं समझता था कि अब तुम वापस न लौटोगे, तुम्हारे नाम सेठ जी को वारंट निकलवाना पड़ेगा ! लेकिन तुम आ गए और

मेरे ऊपर से एक बला टली ! म भगवान से यही मनाता हूँ कि किसी पाप कर्म से तुमने यह रुपया न पाया हो !"

इसके बाद मुनीम जी ने दस-दस रुपए के तीन नोट रामेश्वर को देते हुए कहा, "यह लो तुम्हारी बीस दिन की तनख्वाह, अब तुम्हारे लिए हमारे यहां जगह नहीं है।"

रामेश्वर ने तीस रुपए ले लिए और वह उठ खड़ा हुआ। वहां से चलने के पहले उसने मुनीम जी से कहा, "मुनीम जी ! आप ठीक कहते हैं कि रुपए मैं जुए में हार चुका था। आपने मुझे बचा कर मेरे ऊपर जो दया की है उसका मैं बहुत आभारी हूँ ! लेकिन मैं यह भी बतला दूं कि ये रुपए मैंने किसी पाप-कर्म से नहीं पैदा किये, ये चार हज़ार रुपए मैंने कर्ज़ लिये हैं। रही आपके यहां काम करने की बात, उसकी न मैंने आपसे बात की न उस पर मैंने सोचा ही। इतने लम्बे हिसाब-किताब के बाद—मैं पैंतालीस रुपए महीने की नौकरी करूँगा—यह बात खुद ही असम्भव है !"

वहां से रामेश्वर अपने फ्लैट नहीं लौटा, वह चमेली की पान की दूकान की ओर गया जो चार दिन से बन्द पड़ी थी। रामेश्वर ने दूकान खोली। तीस रुपए का वह दूकान का सामान लाया और उसने दूकान पर अपना आसन जमा दिया।

चमेली फ्लैट में रामेश्वर की प्रतीक्षा कर रही थी। वह रामेश्वर को अपने साथ लेकर सिनेमा जाना चाहती थी। स्टूडियो से तीन बजे कार आ गई, लेकिन रामेश्वर वापस नहीं आया। आधा घंटा और उसने रामेश्वर की प्रतीक्षा की, फिर एक ठंढी सांस लेकर वह अकेली ही स्टूडियो चली गई।

स्टूडियो में उसकी प्रतीक्षा हो रही थी—राजीव लहरी और प्रेमकिशन दोनों ही उत्सुकतापूर्वक उसकी राह देख रहे थे। फ़िल्म की कहानी तै हो चुकी थी और प्रेमकिशन ने उस कहानी का सिनेरियो

भी तैयार कर लिया था। चमेली के पहुँचते ही चपरासी ने कहा, "बीबी जी ! डाइरेक्टर साहेब ने आप को सलाम कहा है, अपने कमरे में ही हैं !"

चमेली कार से उतर कर प्रेमकिशन के कमरे में गई। प्रेम किशन ने उठ कर चमेली का स्वागत किया, "आइये, मैं बड़ी देर से आपका इन्तज़ार कर रहा था। कहानी पूरी हो गई, मंगल को मुहूर्त करना है ! मैं मुहूर्त आपसे ही कराऊँगा !"

चमेली फ़िल्म लाइन में पहली बार ही आई थी, उसने पूछा, "मुहूर्त ? यह मुहूर्त क्या होता है ?"

प्रेमकिशन हँस पड़ा, "अरे ! आप इतना भी नहीं जानतीं ? पिक्चर की शूटिंग शुरू की जाती है, ज्योतिषी से एक अच्छी साइत निकलवा कर—उसी को हम लोग मुहूरत कहते हैं। उस दिन पूजा होती है, नारियल तोड़ा जाता है, पेड़े बँटते हैं। और उसके बाद पिक्चर की शूटिंग शुरू होती है। कल मैं आपको डाइलाग दे दूंगा, और आपको डाइलाग के कुछ रिहर्सल भी करने होंगे ! बैठिये न !"

चमेली सोफा पर बैठ गई । प्रेमकिशन भी अपनी मेज़ से हट कर सोफ़ा पर चमेली की बगल में आ बैठा, "चमेली देवी ! यह आपका सौभाग्य है कि आपकी पहली पिक्चर मैं बना रहा हूँ । न जाने कितनी हीरोइनों को मैंने बना दिया है ! शीरीं, मधुबाला, गुणवती—ये सब की सब मशहूर हीरोइनें आज जिनकी चारो तरफ़ धूम है, इन सब को मैंने बनाया है, मैंने ! और अब आप आई हैं ! वे लोग आपके मुकाबिले कुछ भी नहीं थीं। आपको मैं देविका रानी, कानन बाला, खुरशीद—इन सब से ऊपर न उठा दूं तो मेरा नाम प्रेमकिशन नहीं।" और यह कहते-कहते प्रेमकिशन एक विचित्र नाटकीय भाव से खड़ा हो गया।

"चमेली देवी ! आप मुझे जानती नहीं , मेरा नाम प्रेमकिशन

है!" चमेली की आंखों में अपनी आंखें गड़ाते हुए प्रेमकिशन ने कहा, "और मैं एक ऐसी पिक्चर बनाने जा रहा हूँ जो दुनिया में तहलका मचा देगी। इस पिक्चर से यह कम्पनी बन जायगी, सेठ बन जाएँगे, आप बन जायँगी। कल मैंने आप का एक नया रूप देखा, और मुझे लगा कि मानो एक अप्सरा भूलोक पर उतर आई है और कल से मेरे मन में एक नई उमंग पैदा हो गई। अभी तक मेरी कला को प्रदर्शित करने वाला कोई योग्य कलाकार न मिला था, कल मैंने आपको पाकर अपनी कला की साधना पा ली।...." और यह कहते-कहते प्रेमकिशन ने चमेली का हाथ पकड़ कर उसे खड़ा कर दिया, "ज़रा एक बार मैं तुम्हें फिर कला की दृष्टि से देखूं", और प्रेमकिशन चमेली से हट कर प्रायः पांच कदम की दूरी पर खड़ा हो गया, "मेरी ओर देखो! ठीक! मुंह कुछ ऊपर उठाओ!....थोड़ा-सा ऊपर" प्रेमकिशन ने चमेली की ठोड़ी पकड़ कर ज़रा सी उठा दी इसके बाद वह फिर पीछे हट गया, "हां, अब जरा दाहिनी ओर देखो—इस तरह जैसे मेरी बात से तुम शर्मा गई हो!—अब बांई ओर देखो, मुंह मोड़ कर, जैसे तुम्हें मेरे प्यार पर गुस्सा आ रहा हो! हुर्रे! बेदाग शक्ल! चमेली देवी, मेरी आंखों में केमरा है, मेरी नजरों में कला की परख है!"

चमेली को प्रेमकिशन की बातों में मजा आ रहा था।। प्रेमकिशन इकहरे बदन का लम्बा सा आदमी था। उसकी उम्र कोई पचास साल की रही होगी और उसके बाल आधे से ज्यादा सफ़ेद हो गए थे और उसके मुख पर झुर्रियां पड़ने लगी थीं। उसकी मुखाकृति सुन्दर कही जा सकती थी और वह सिल्क का सूट पहने था।

प्रेमकिशन कहता जा रहा था, "चमेली देवी! आप आर्टिस्ट हैं, बहुत ऊँचे दर्जे की आर्टिस्ट हैं! लेकिन आपको आर्ट के विकास का कभी मौका नहीं मिला! आप किसी पारखी के हाथ में अभी तक नहीं पड़ीं! नहीं तो वह आपको न जाने क्या का क्या बना

देता ! अब मौका आया है चमेली देवी....” और यह कहते-कहते प्रेमकिशन ने बढ़ कर चमेली के दोनों हाथ पकड़ लिये।

चमेली ने अपने हाथों को झटका देकर छुड़ाते हुए कहा, “डाइरेक्टर साहेब! आप बड़े मज़ेदार आदमी मालूम होते हैं, लेकिन आप में अनुभवों की कुछ थोड़ी सी कमी है! चलिये म्यूज़िक रूम में, म्यूज़िक डाइरेक्टर साहेब इन्तज़ार कर रहे होंगे। आज सिनेमा चलना है न!” और यह कह कर चमेली प्रेमकिशन के कमरे के बाहर आ गई। चमेली कमरे के बाहर निकली ही थी कि सेठ शिवकुमार का चपरासी उसे मिला, “बीबी जी! सेठ जी ने आपको सलाम भेजा है!”

“अभी आती हूँ!” घूम कर चमेली ने प्रेमकिशन से कहा, “आप म्यूज़िक रूम में चलिये, मैं सेठ जी से मिल कर वहां आ रही हूँ!” और वह शिवकुमार के चपरासी के साथ चल दी।

सेठ शिवकुमार अपने कमरे में बैठे प्रोडक्शन मैनेजर से बातें कर रहे थे। उनके सामने कागज़ों का ढेर था और वे बातें करने के साथ-साथ उन कागज़ों को पढ़ते तथा उन पर दस्तखत करते जाते थे। चमेली के कमरे में आते ही शिवकुमार उठ खड़े हुए, “आइये! अच्छी तरह तो हैं! बैठिये!”

चमेली को बिठला कर शिवकुमार ने प्रोडक्शन मैनेजर से कहा, “मिस्टर श्याम, बाकी कागज़ों को आप कल मेरे पास लाइयेगा!” और यह कह कर शिवकुमार ने कागज़ों का गड अपने सामने से खिसका दिया।

श्याम के जाने के बाद शिवकुमार ने कहा, “उफ़! कितना थक गया हूँ! सारा दिन काम-काम-काम ! सेट बनवाना है, रुपयों का इन्तज़ाम करना है, फ़िल्म मँगवाना है, हिसाब देखना है! सिर्फ़ काम—और इसके सिवा कुछ नहीं!”

चमेली ने सरल भाव से पूछा, "तो इतना काम क्यों करते हैं सेठ ?"

शिवकुमार ने उत्तर दिया, "अगर इतना काम न करूँ तो यह सब जो तुम अपने चारों तरफ़ देखती हो, यह सब कैसे चले? अगर मैं पूरी तरह से मेहनत न करूँ तो यह सब बैठ न जाय?"

चमेली हँस पड़ी, "तो फिर आप परोपकार कर रहे हैं सेठ?"

शिवकुमार भी हँस पड़ा, "नहीं, यह परोपकार नहीं है, इसमें मेरा निजी उपकार सब से पहले है! इस कारबार में मेरा लाखों रुपया लगा है, उससे मैं करोड़ों पैदा करना चाहता हूँ।" और शिवकुमार कहते-कहते गम्भीर हो गया "लेकिन कभी-कभी सोचने लगता हूँ कि यह सब क्यों कर रहा हूँ? आखिर जो लाखों, करोड़ों रुपया पैदा कर रहा हूँ उससे मुझे कौन-सा सुख मिला या मिल रहा है? दिन भर मेहनत करता हूँ, सैकड़ों चिन्ताएँ सर पर हैं। और इस समय थका और टूटा-सा बैठा हूँ!"

शिवकुमार की बातों में सत्य है और उस सत्य से भी अधिक भावना है, चमेली ने यह अनुभव किया। थोड़ी देर तक वह शिव-कुमार की ओर कौतूहल के साथ देखती रही; उसके सामने जो आदमी बैठा था वह न उतना घृणित धन-पिशाच था जितना उसने समझ रक्खा था, और न उतना बड़ा नर-पशु था। मझोले कद और दोहरे बदन का अधेड़-सा आदमी जो दुनिया में धन और सुख दोनों ही साथ-साथ पाना चाहता था। उस आदमी के अन्दर भी भावना थी, इच्छा थी, अभिलाषा थी! उस आदमी के प्रति चमेली के हृदय में जो विद्रोह था और विरोध था वह धीरे-धीरे आप ही आप दूर होता जा रहा था। चमेली ने पूछा, "सेठ आपने मुझे बुलवाया था! कोई खास काम है?"

"नहीं कोई खास काम तो नहीं है क्योंकि तुम से इधर-उधर

की बात करना, तुम्हारी उपस्थिति से अपने अन्दर वाली थकावट को दूर करना, तुम्हारे साथ बैठ कर एक प्याला चा पीना तो कोई खास काम नहीं कहा जा सकता", शिवकुमार ने अपने सामने रक्खी हुई उस चा की ट्रे की ओर देखते हुए कहा, जिसे चपरासी उसी समय रख गया था, "लेकिन अगर देखा जाय तो यह वास्तव में एक खास काम ही है क्योंकि इसमें एक मनस्तुष्टि है, इसमें एक आन्तरिक तृप्ति है, इसमें एक मादकता से भरा सुख है! खैर जाने भी दो, हम कारबारियों के लिए कविता नहीं है। अब तुम्हारे रहते हुए मुझे चा का प्याला तैयार करना तो शोभा नहीं देगा!"

चमेली ने दो प्याले चा के बनाए, एक प्याला उसने शिवकुमार को दिया, दूसरा अपने सामने रक्खा। शिवकुमार ने चा पीते हुए कहा "हां, एक बात और कहनी थी। एक बड़ी अच्छी अंग्रेजी पिक्चर आई है मेट्रो में। मैंने दो टिकट मँगवा लिए है। लेकिन अकेले पिक्चर जाने की तबीअत नहीं होती। तो मैंने सोचा कि तुमसे पूछ लूं। मेरे साथ पिक्चर देखने में तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं?"

चमेली ने थोड़ी देर चुप रह कर कहा, "सेठ, मुझे आपके साथ पिक्चर देखने में क्या आपत्ति हो सकती है, लेकिन प्रेमकिशन, राजीव लहरी और राधा के साथ एक पिक्चर में जाने का प्रोग्राम बन चुका है। वे लोग म्यूज़िक रूम में मेरा इन्तज़ार कर रहे हैं!'

"वे लोग मुझसे अधिक भाग्यशाली हैं!" शिवकुमार ने ठंढी सांस ले कर कहा, "अच्छा जाओ, तुम्हें देर हो जाएगी! बस इसी लिए बुलाया था।

चमेली अपनी इच्छा के विपरीत ही पूछ बैठी, "और आप क्या करेंगे सेठ?"

"मैं क्या करूँगा? मैं खुद ही नहीं जानता! इतना तै है कि मैं पिक्चर नहीं जाऊँगा। अकेला जाने का मैं आदी नहीं, और

मनचाहा साथ मिलता नहीं। शायद अभी श्याम को बुला कर उन कागज़ों के ढेर पर फिर से जुट जाऊँ, शायद अपनी कालबा देवी की दूकान पर जा कर वहां का हिसाब-किताब देखूं ! सुख नहीं है तो काम तो है !"

शिवकुमार के स्वर में जो करुणा थी वह चमेली के हृदय में पैठ गई। उसने कहा, "सेठ मुझे बड़ा अफ़सोस है कि मैंने उन लोगों से वादा कर लिया—उन लोगों के साथ पिक्चर जाने का मुझे कोई मोह नहीं है !"

"वादा तोड़ा भी जा सकता है !" शिवकुमार ने हिचकिचाते हुए कहा, "जिन लोगों से तुमने वादा किया है उनके साथ वादा करने या तोड़ने का कोई महत्व नहीं !"

चमेली थोड़ी देर तक कुछ सोचती रही, "अच्छी बात है सेठ, मैं उनसे कहे देती हूँ कि मैं न जा सकूंगी। मैं आपके साथ चलूंगी !"

म्यूज़िक-रूम में प्रेमकिशन, राजीव, लहरी और राधा मौजूद थे। इनके अलावा एक और व्यक्ति वहां था जिसे चमेली ने पहले कभी न देखा था। राजीव ने कहा, "चमेली देवी, आइये. हम आपका अपने परम मित्र किशोर जी से परिचय करा दें ! आप हमारे गीत लेखक हैं, हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि हैं। अभी एक कवि सम्मेलन से लौटे हैं। यह भी हम लोगों के साथ पिक्चर चलने को उलझ गए हैं।"

इस पर राधा ने कहा, "और टिकट दुर्भाग्यवश चार ही खरीदे गए हैं !"

चमेली के हृदय पर से मानो एक भार-सा उतर गया। उसन कहा, "यह बड़ा अच्छा हुआ जो किशोर जी आ गए ! मैं आज आप लोगों के साथ न जा सकूंगी !"

"आप न जा सकेंगी ?" निराश भाव से प्रेमकिशन और राजीव लहरी दोनों एक साथ कह उठे।

"जी हां! मेरे सिर में बहुत ज़ोरों का दर्द एकाएक उठ पड़ा। मैं आपको धन्यवाद देती हूँ किशोरजी कि आपने मेरी मुसीबत हल कर दी, नहीं तो शायद मुझे इस सिर दर्द में मजबूरन जाना पड़ता!"

किशोर ने कहा, "नहीं देवीजी, मैं जो चलना चाहता था, वह आपके साथ के कारण; जब आप नहीं जाएँगी, तब मुझे पिक्चर में क्या दिलचस्पी! आप आज देख लीजिए, मैं कल चला जाऊँगा!"

इस बार राधा के बोलने की बारी थी, "आप लोग बेकार चमेली के साथ जबर्दस्ती कर रहे हैं! अगर उनके सिर में दर्द है, तो उन्हें पिक्चर में क्या मज़ा आएगा, उलटे उनकी तबीअत और भी खराब हो जायगी! आप चलिए किशोरजी!" और इस बार उसने चमेली से कहा, "चलो, हम लोग तुम्हें घर पर उतार कर चले जाएँगे!"

चमेली के सामने एक समस्या और खड़ी हो गई। वह उन लोगों से कहना नहीं चाहती थी कि वह सेठ शिवकुमार के साथ पिक्चर जा रही है। एकाएक उसने मन ही मन स्थिर कर लिया, "अच्छी बात है! मैं अभी पांच मिनट में आती हूँ!" चमेली शिवकुमार के कमरे में पहुँची। शिवकुमार चलने के लिए तैयार बैठा था। चमेली ने कहा, "सेठ! मैंने इन लोगों से सर दर्द का बहाना कर दिया है। मैं इन लोगों के साथ जा रही हूँ, ये मुझे घर पर उतार कर चले जाएँगे। इनके जाते ही तुम आ जाना, मैं बाहर खड़ी तुम्हारा इन्तज़ार करूँगी!"

सोलहवाँ परिच्छेद

चमेली घर की ओर जा रही थी और सोच रही थी, "आखिर मैं इन लोगों से छिपा क्यों रही हूँ कि आज शाम को मैं सेठ के साथ सिनेमा जा रही हूँ? मैं सेठ के साथ सिनेमा जा रही हूँ तो उसमें हर्ज क्या है? कौन-सा पाप कर रही हूँ मैं? फिर इन लोगों से डर किस बात का? अगर डर हो सकता है, तो सिर्फ उनका, वह क्या कहेंगे? और कहेंगे क्या? मैं घर जा रही हूँ। उनसे पूछ कर जाऊँगी, उनसे कह कर जाऊँगी, उनसे बतला कर जाऊँगी। अगर वह रोकेंगे तो न जाऊँगी! लेकिन वह रोकेंगे नहीं—चमेली मन ही मन इस बात को अच्छी तरह जानती थी।

चमेली के मन में यह इच्छा प्रबल हो रही थी कि वह कम से कम राधा को बतला दे कि वह सेठ शिवकुमार के साथ सिनेमा जा रही है और इस प्रकार वह जो झूठ बोली है, उसका प्रायश्चित्त कर ले। पर इतने आदमियों के सामने उसे अपनी बात कहने की हिम्मत न पड़ी!

कार उसके मकान के सामने रुकी; वह कार से उतर पड़ी। दौड़ती हुई वह अन्दर गई, पर दरवाज़े पर ताला लगा था। इसके माने यह कि रामेश्वर अभी तक नहीं लौटा, या फिर आ कर चला गया। चमेली ने दरवाज़ा खोला, मुंह हाथ धो कर उसने अपनी साड़ी बदली। उसके पास जो सब से कीमती साड़ी थी, जार्जेट की छपी हुई, उसने वह पहनी और ड्रेसिंग टेबिल के आइने के समने खड़ी होकर उसने अपने सारे शरीर को देखा। इसी समय उसे हार्न की आवाज़ सुनाई दी। पोर्टिको पर निकल कर उसने देखा कि सेठ शिवकुमार की कार सड़क पर खड़ी थी।

चमेली जल्दी-जल्दी घर के बाहर निकली। शिवकुमार उसे सिर से पैर तक देख कर मुसकराया। कार पर अपनी बगल में चमेली को बिठलाते हुए उसने कहा, "घर में फर्नीचर वगैरह तो मैंने भिजवा दिया था, और किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो मुझे बतलाना!" और उसने ड्राइवर से कहा, "मेट्रो!"

चमेली ने उत्तर दिया, "सेठ, सब तरह का आराम है मुझे! आपने मेरे लिए बहुत किया!"

"यह सब करना तो मेरा कर्तव्य था चमेली रानी! तुम मेरी कम्पनी की हीरोइन हो न!" इस बार शिवकुमार ने चमेली की साड़ी के आंचल को हाथ में लेते हुए कहा, "क्या तुम्हारे पास यही सब से अच्छी साड़ी है?"

चमेली ने शिवकुमार के इस प्रश्न का कोई उत्तर न दिया। गाड़ी इस समय मैरीन ड्राइव पर चली जा रही थी। समुद्र के किनारे घूमने वालों की अपार भीड़ लगी थी—स्त्री और पुरुष दोनों ही! एक अजीब प्रकार का हर्ष और उल्लास चमेली अपने अन्दर अनुभव कर रही थी। शिवकुमार ने ड्राइवर से कहा, "आनन्द स्टोर्स पर गाड़ी रोकना चल कर!"

चर्चगेट स्ट्रीट के आनन्द स्टोर्स के सामने ड्राइवर ने गाड़ी रोक दी। वह कपड़ों की बहुत बड़ी दूकान थी। शिवकुमार चमेली को साथ लेकर गाड़ी से उतरा। स्टोर्स के सेल्समैन से उसने अच्छी बनारसी साड़ियां निकलवाईं। ज़रतारी की एक कीमती साड़ी शिवकुमार ने पसन्द कर चमेली से कहा, "यह साड़ी मैं आज तुम्हें भेंट करना चाहता हूँ!"

चमेली ने शर्म से अपनी आंखें नीची कर लीं—वह 'न' न कह सकी। वह ढाई सौ रुपए की साड़ी थी और वैसी साड़ी पहनने की कभी चमेली ने कल्पना तक न की थी।

आनन्द स्टोर्स से निकल कर दोनो मेट्रो सिनेमा गए। शो आरम्भ

होने वाला था, अभी तक टापीकल वगैरह दिखलाए जा रहे थे। शिवकुमार ने पहले से एक बाक्स रिज़र्व करा लिया था ; चमेली और शिवकुमार बाक्स में बैठ गए।

चमेली जीवन में प्रथम बार अँग्रेजी तस्वीर देख रही थी। भाषा वह समझ न पाती थी, शिवकुमार लगातार चमेली को समझाता जाता था।

पिक्चर समाप्त होने पर शिवकुमार ने चमेली से कहा, "चलो तुम्हें घर पहुँचा दूं !" और एक ठंढी सांस ले कर मानो उसने स्वयं से ही कहा, "कितने सुख के ये तीन घण्टे बीते !"

जिस समय चमेली घर पहुँची, उस समय तक रामेश्वर न आया था। चमेली का नौकर बरामदे में बैठा चमेली और रामेश्वर की प्रतीक्षा कर रहा था। चमेली ने घर का दरवाज़ा खोला और इसके बाद नौकर ने खाना बनाना आरम्भ किया। घर आकर चमेली ने अपनी नई बनारसी साड़ी को फिर से देखा, उसकी इच्छा हो रही थी कि वह एक बार उस साड़ी को पहन कर अपने को आईने में देखे; पर उसी समय एकाएक उसे ख्याल हो आया कि रामेश्वर अभी तक नहीं लौटा ! उदास भाव से उसने साड़ी को बक्स ड्रार में रख कर कपड़े बदले। उस समय घड़ी ने नौ बजाए ! और उसी समय चमेली को राधा की आवाज़ सुनाई दी, "कैसा है तुम्हारे सिर का दर्द ?"

चमेली ने देखा कि राधा उसके कमरे के दरवाज़े पर खड़ी है और राधा अकेली नहीं है, उसके साथ किशोर भी है। चमेली ने कहा, "अब तो ठीक है ! चलो ड्राइंग रूम में बैठो ; मैं आती हूँ !"

ड्राइंग रूम में पहुँच कर राधा ने कहा, "कितनी अच्छी तसवीर थी वह चमेली, उसे ज़रूर देखना ! और उसके गाने कितने अच्छे थे—क्यों किशोर ?"

किशोर हंस पड़ा, "गाने तो कोई खास अच्छे नहीं थे, हां उनकी तर्जें ला जवाब थीं!"

राधा ने मुंह बिचकाते हुए किशोर से कहा, "गाने तुम्हें क्यों अच्छे लगेंगे—अपनी खुदी में भूले हुए, अपने रंग में मस्त! दूसरे की कविता भला तुम्हें क्यों अच्छी लगेगी!" और इस बार वह चमेली की ओर मुड़ी, "सुना! यह किशोर जी! इनका नाम क्या हो गया है ये अपने सामने किसी को समझते ही नहीं! चमेली तुम्हें मालूम है—ये बड़े मशहूर कवि हैं और कवि होने के नाते फक्कड़ और फ़ाके-मस्त! पूछो, रहने तक का ठिकाना नहीं। मैंने जो आज पूछा कि कहाँ ठहरे हो, तो बोले कि जिस होटल में रहते थे, कवि-सम्मेलन जाने के पहले उसे छोड़ दिया, अब कोई दूसरा होटल ढूंढ़ेंगे। मैंने पूछा कि इतनी रात में मान लो कोई होटल न मिला तो? इस पर बोले कि फिर किसी पार्क में सो रहेंगे। अब ऐसी हालत में भला मैं क्या करती। तो मैं इन्हें अपने साथ लेती आई हूँ!"

"और आपका सामान वग़ैरह?" चमेली ने पूछा।

इस बार किशोर ने उत्तर दिया, "जब यहां से गया था, सामान राधाजी के यहां रख गया था! पता नहीं कि वह सामान सही-सलामत मौजूद है या कहीं गायब हो गया।"

"आपका सामान ही क्या था जनाब? जैसा का तैसा बन्द है उस कमरे में!" राधा ने इठलाते हुए कहा, "आपको गरज थी तो सामान मेरे यहां रख गए थे! एक कमरा मैंने इनके लिए खाली कर दिया है चमेली! इतने बड़े कवि—और एक सड़ियल होटल में पड़े थे, अल्लम गल्लम खाते थे। न इन्हें कोई खाने को पूछने वाला, न कोई इनकी देखभाल करने वाला! क्या बुरा किया मैंने कि इन्हें अपने साथ लेती आई? ये जगमोहन के दूर के रिश्तेदार भी तो होते हैं!"

इस बार चमेली ने ध्यान से किशोर को देखा ! करीब चौबीस-पचीस वर्ष का नवयुवक, हँसमुख और सुन्दर एवं स्वस्थ ! और उसी समय उसने राधा को देखा—मुटापे की तरफ़ तेज़ी के साथ बढ़ती हुई अधेड़ स्त्री ! चमेली मन ही मन राधा और किशोर के सम्बन्ध में कल्पना करने लगी। उसके सामने राधा बैठी थी, किशोर बैठा था—एक ही सोफ़े पर, और राधा किशोर से सटी बैठी किशोर के लम्बे और घुंघराले बालों को सुलझा रही थी। राधा ने चमेली से कहा, "चमेली ! मैंने बहुत कह-सुन कर किशोर को गीत लिखने के लिए अपनी कम्पनी में रखवाया है। यह अभी फ़िल्म-लाइन में नए हैं, पर इनमें प्रतिभा है। कवि की हैसियत से तो इनका नाम हो गया है, लेकिन फ़िल्म के गानों की बात दूसरी है। इन के गाने कैसे हैं, इस पर तुम भी इन्हें राय दे दिया करना !"

इसी समय जगमोहन के साथ रामेश्वर ने कमरे में प्रवेश किया। इन लोगों के पैरों की आहट पाते ही राधा किशोर के पास से हट कर अलग कुरसी पर बैठ गई थी। चमेली ने रामेश्वर के आते ही कहा, "बड़ी देर लगा दी तुमने ! मैं तो बुरी तरह चिन्तित हो उठी थीं तुम्हारे लिए !"

रामेश्वर ज़ोर से हँस पड़ा, "अरी मेरी चिन्ता मत करना ! चिन्ता करना तो मेरा काम है ! आज मैंने नौकरी छोड़ दी ! नौकरी छोड़ कर जो मैं चला तो सोचने लगा कि क्या करूँ, आखिर कुछ न कुछ तो करना ही चाहिए। एकाएक मुझे तेरी दूकान की याद हो आई। तो उसी वक्त मैंने दूकान खोली जा कर ! सब सामान लाया और जम कर बैठ गया ! अब दूकान बन्द करके वापस आ रहा हूँ ! रास्ते में मिल गए जगमोहन !

"कैसी दूकान ?" किशोर ने सरल भाव से पूछा।

"अरे वही पान की दूकान !" रामेश्वर ने कहा। उत्तर देकर

रामेश्वर को ख्याल आया कि उस कमरे में कोई नया आदमी बैठा है। उसने चमेली से पूछा "यह कौन हैं? इन्हें पहले कभी नहीं देखा!"

जगमोहन ने उत्तर दिया, "अरे हां, यह तो यहां से बाहर गए हुए थे! यह हैं किशोर जी, हमारी कम्पनी के गीत लेखक! राधा के दूर के रिश्तेदार लगते हैं। हमारे यहां ही ठहरे होंगे, क्योंकि बाहर जाने के पहले अपना सामान मेरे यहां रख गए थे!" फिर जगमोहन ने किशोर से कहा, "और ये हैं रामेश्वर, चमेली देवी के पति!"

किशोर ने हाथ जोड़ कर रामेश्वर को नमस्ते करते हुए कहा, "मेरा बड़ा सौभाग्य कि आपके दर्शन हुए!"

रामेश्वर ने उत्तर दिया, "सौभाग्य तुम्हारा क्या, वह तो हमारा है, जो आप ऐसे महानुभावों से मिलना हो रहा है! हम लोग तो देहाती आदमी ठहरे, मजबूरन शहर में आ फँसे हैं, और वह भी बम्बई ऐसे शहर में! न हम में कोई गुन, न करतूत! हां चमेली गाती है, नाचती है, और क्या कहते हैं उसे—अरे वही, याद आ गया, कलाकार है! तो चमेली के दर्शन तुम्हारे सौभाग्य की बात भले हो, रामेश्वर के दर्शन तो जैसे हुए वैसे न हुए!" और रामेश्वर अपनी ही बात पर खिलखिला कर हँस पड़ा।

रामेश्वर के मुख पर, उसकी बातचीत में आज पांच-छै दिन बाद पहली बार चमेली को प्रसन्नता की झलक मिली, और रामेश्वर की इस प्रसन्नता से चमेली की आत्मा पुलकित हो उठी! वह उठ कर रामेश्वर के बगल में बैठ गई, "दिन में कुछ खाया-वाया भी है?"

"कहां खाया! सोचा था घर चल कर चाय पियूंगा, लेकिन चाय पीने की बात भी भूल गया। किशोर जी, चाय पीजिएगा आप? अरे मन्नू ज़रा जल्दी से चाय तो बना ला बेटा! क्यों जगमोहन खाने के पहले एक-एक प्याला चा हो जाय!" रामेश्वर प्रसन्न था। उसने किशोर से कहा, "मेरे कपड़े-लत्तों की आप परवाह मत कीजियेगा,

कह चुका हूँ न कि मैं बज्र देहाती हूँ, गो कि शहर में आके बस गया हूँ और शहर भी क्या, बम्बई! और भाग्य ने जो साथ दिया तो यहां चौपाटी पर रह रहा हूँ, आप लोगों के साथ बराबरी से बैठा हूँ और आप लोगों से चाय पीने को कह रहा हूँ। लेकिन कहा है न कि बूढ़ा तोता बड़ी मुश्किल से राम-राम पढ़ता है। अच्छा किशोर जी! ये लोग कहते हैं कि आप कवि हैं, यानी कविता लिखते हैं! अगर आप मेरी प्रार्थना को गुस्ताखी न समझें तो मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप एक कविता सुनावें!"

चमेली भी कह उठी, "हां किशोरजी, आप एक कविता ज़रूर सुनाइए!"

किशोर ने ज़रा शरमाते हुए, ज़रा अनखाते हुए, ज़रा हिचकते हुए कहा, "कविता! इस वक्त तो मेरा गला ठीक नहीं है, और यहां फ़िल्म लाइन में आकर तो कविता एक तरह से भूल गया हूँ! लेकिन आप लोग बहुत आग्रह करते हैं तो सुनाता हूँ!" और किशोर ने अपना गला साफ़ कर के कविता सुनाई :

"सजनी तेरा अभिसार करूँ!
जी में आता है मधुबाला हाला बन तुझको प्यार करूँ!
है आज हृदय में कुछ कम्पन, है आज प्राण में कुछ क्रन्दन
इस यौवन का मैं चुम्बन से, आलिंगन से शृंगार करूँ!"

कविता समाप्त होते ही राधा कह उठी, "वाह किशोर! कितनी सुन्दर कविता लिखी है! क्यों चमेली, यह कविता क्या एक फड़कता हुआ सुन्दर-सा गीत है!" और राधा ने जगमोहन के कान में कहा, "क्यों, किशोर को पिक्चर के हीरो के काम के लिए क्यों न चुन लिया जाय? शक्ल-सूरत में ये किसी हीरो से क्या कम है?"

और इसी समय रामेश्वर ने कहा, "किशोर जी, विलक्षण प्रतिभा

पाई है आपने ! लेकिन इस कविता को सुन कर मुझे आपके इन बड़े-बड़े घुंघराले बालों का रहस्य समझ में आ गया !"

रामेश्वर की बात सुनकर किशोर को कौतूहल हुआ, "कैसा रहस्य ? ज़रा मैं भी सुनूं !"

रामेश्वर ने कहा, "यही कि ऐसी कविता लिखने के बाद यह सम्भावना है कि कहीं आप के सिर पर फूलों की वर्षा हो, कहीं जूतों की वर्षा हो ! लेकिन आपको चोट नहीं लग सकती, चाहे जितने पड़ें !"

रामेश्वर की इस बात से किशोर को छोड़ कर बाकी सब लोग हँस पड़े, एक अजीब-सी बात कह दी थी उसने ! राधा ने कहा, "क्यों किशोर, एकाएक गम्भीर क्यों हो गए ? रामेश्वर भइया ने बात-तो बड़े पते की कही ! अभी उस दिन जो बशीरन ने तुम्हें स्टूडियो में चुन-चुन कर गालियां सुनाई थीं, तो शायद तुमने उसे अपनी यही कविता सुनाई होगी !"

और जगमोहन ने कहा, "कोई बात नहीं किशोर ! फ़िल्म लाइन में यह सब तो होता ही रहता है !"

रामेश्वर की बात से किशोर हत-प्रभ हो गया था। चमेली ने किशोर के मुख के भाव पढ़ लिये, "अरे, आप इनकी बात का बुरा मान गए किशोर जी ! क्यों जी, घर में आए हुए मेहमान के साथ कहीं इस तरह का हँसी-मज़ाक किया जाता है ?"

रामेश्वर हँस पड़ा, "क्यों किशोर जी ! आप किसी की बात का बुरा मान सकते हैं, यह तो मैंने सोचा ही न था ! क्या करूँ, मैं तो अपनी इस हँसने-हँसाने की आदत से लाचार हूँ ! कह चुका हूँ पहले ही कि मैं बज्र देहाती हूँ ! अच्छा, जैसी आप लोगों में प्रथा है, मैं अपने शब्द वापस लेता हूँ, गोकि हमारे देहातों में एक कहावत है कि धनुष से छूटा बान और मुंह से निकला बचन--ये फिर वापस नहीं आते ! पर आप शहर वालों की महिमा अपरम्पार है ! अच्छा

लीजिए चाय आ गई। अब जो कुछ हो गया वह हो गया, उसे भूल जाइए !"

लेकिन किशोर के मुख पर जो धुंधलापन आया था वह नहीं गया। चाय पीकर किशोर, राधा और जगमोहन चले गए। उनके जाने के बाद चमेली ने रामेश्वर से कहा, "बड़ी कड़ी बात कह दी तुमने ! किशोर जी बुरा मान गए !"

रामेश्वर ने उत्तर दिया, "मैंने किशोर के बुरा मानने को ही यह बात कही थी। उस लौण्डे में बदतमीज़ी है, जाल-फरेब है, बदमाशी है। ऐसे आदमी समाज के लिए बुरी तरह खतरनाक होते हैं!"

रामेश्वर की यह बात चमेली को रुची नहीं। उसने कहा, "लेकिन तुमने मुझे जहां काम करने को भेजा है, वहां अधिकतर इसी तरह के आदमी हैं। अगर इस तरह के आदमियों को तुम बर्दाश्त नहीं कर सकते तो तुमने मुझे वहां भेजा ही क्यों? आखिर तुमने मुझे उस खतरे की जगह अकेली क्यों छोड़ दिया ?" चमेली ने रामेश्वर के कंधे पर अपना सिर रखते हुए बड़े करुण स्वर में कहा।

चमेली की ममता और इसी करुणा से रामेश्वर के मुख वाली कठोरता गायब हो गई। रामेश्वर ने चमेली के सिर पर अपना हाथ फेरते हुए कहा, "देख ! इस तरह के लोग उन्हीं लोगों के लिए खतरनाक होते हैं जिनके पास अपना कोई व्यक्तित्व नहीं है, अनुभव नहीं है, जो फुसलाए और बहकाए जा सकते हैं! परिस्थितियों से लड़ी हुई और अनुभवों में तपी हुई, तुझे कौन फुसला सकता है, कौन बहका सकता है ?"

रामेश्वर की बात सुन कर चमेली पुलक उठी। उसने रामेश्वर से कहा, "मैं शाम को घर आई थी, तुम से पूछने कि सेठ के साथ सिनेमा देखने जाऊँ या नहीं। मेट्रो में बड़ी अच्छी पिक्चर आई है, उसकी हीरोइन का काम लाजवाब है। एक हफ्ते के बाद मेरी पिक्चर की

शूटिंग शुरू होने वाली है। पहले तो डाइरेक्टर और म्यूज़िक डाइरेक्टर के साथ हिन्दी पिक्चर में आने की बात तै की थी, लेकिन सेठ ने कहा कि अंग्रेज़ी पिक्चर अच्छी है, उससे कुछ सीखा जा सकता है। तुम मिले नहीं और मैं तुमसे बिना पूछे चली गई!"

रामेश्वर ने कहा, "जो कुछ तूने किया वह ठीक ही किया, जो कुछ तू करेगी वह ठीक ही करेगी! इन सब बातों में मुझ से कुछ पूछने की ज़रूरत नहीं है। मेरी तरफ से तुझे पूरा अधिकार है, और तुझ पर मेरा पूरा विश्वास है!"

चमेली का मन हलका हो गया। पर रात में सोने के पहले वह बहुत देर तक सोचती रही कि उसने साड़ी वाली बात रामेश्वर से छिपा क्यों दी!

सत्रहवाँ परिच्छेद

हरेक फिल्म-स्टूडियो में तस्वीर का मुहूर्त एक उत्सव के रूप में किया जाता है। मुहूर्त के अर्थ होते हैं तसवीर बनाने के काम का प्रारम्भ! ज्योतिषी से अच्छा दिन विचरवाया जाता है, और उस दिन विशेष अतिथि आमंत्रित किये जाते हैं!

दूसरे दिन जब चमेली स्टूडियो में पहुंची, डाइरेक्टर प्रेमकिशन, म्यूजिक डाइरेक्टर राजीव लहरी, सेठ शिवकुमार और प्रोडक्शन मैनेजर श्याम बैठे हुए मुहूर्त के संबंध में बातें कर रहे थे। चपरासी ने राधा और चमेली से कहा, "सेठ ने आप लोगों को याद किया है, डाइरेक्टर साहेब और म्यूजक डाइरेक्टर भी वहीं हैं!"

किशोर को म्यूजिक-रूम में छोड़ कर राधा और चमेली शिवकुमार के कमरे में पहुंचीं। शिवकुमार ने कहा, "आइये! चमेली देवी, हम लोगों में कुछ जरूरी बातें हो रही हैं, आपकी सलाह बड़े काम की रहेगी, और खास तौर से राधा की।" और शिवकुमार ने प्रेमकिशन से कहा, "हां, तो सीन नौ में हीरो और हीरोइन दोनों ही हैं। और हीरो का अभी तक चुनाव नहीं किया!"

"चुना तो नहीं, लेकिन चुन-सा जरूर लिया है! सारा मामला रुपयों पर अटका हुआ है। वह पूरी पिक्चर के बीस हजार मांगता है, एक पैसा कम करने को तैयार नहीं!"

"बीस हजार!" शिवकुमार ने कहा,"आप रंजन की बात कर रहे हैं न!"

"जी हां! फर्स्ट प्रिफरेंस देने को राजी है; लेकिन बीस हजार से नीचे उतरने को तैयार नहीं!"

शिवकुमार ने कहा,, "प्रेमकिशनजी मुझे रंजन पसन्द नहीं, मैं तो कहता हूं आप कोई नया हीरो क्यों नहीं लेते! हमारी पिक्चर में हीरो और हीरोइन दोनों ही इस बार नये हों।"

"लेकिन नया हीरो मिलता कहां है?" प्रेमकिशन ने कहा, "मैं तो खुद चाहता हूं कि कोई नया हीरो मिल जाय। मुझे खुद रंजन के काम में कुछ कसर नजर आती है, लेकिन इससे अच्छा हीरो दीख नहीं रहा है!"

थोड़ी देर तक सब चुप बैठे रहे। इस मौन को राधा ने तोड़ा! "सेठ आज चमेली देवी ने मुझसे पते की बात कही। किशोर जी को देखकर वह बोल उठीं कि क्या ये इस कम्पनी के हीरो हैं! तब से मैं बराबर इस बात पर सोचती रही कि अगर किशोर को हीरो का चांस दिया जाय तो कैसा रहे!"

और इसी समय राजीव लहरी कह उठा,"वाह कैसी बात सूझी चमेलीदेवी को, मैं तो मान गया। आज मुझे चिराग तले अंधेरा वाली कहावत के माने समझ में आए! मुझे ताज्जुब हो रहा है कि हम लोगों को किशोर की बाबत यह बात अभी तक सूझी क्यों नहीं! अच्छी शक्ल, अच्छा गला—हीरो के सब गुण तो उसमें मौजूद हैं! क्यों प्रेम-किशनजी?"

चमेली राधा के झूठ पर आश्चर्य कर रही थी, पर वह चुप ही रही। प्रेमकिशन ने जरा सकपकाते हुए कहा, "किशोर? किशोर की बाबत मैं ठीक तौर से नहीं कह सकता कि उससे हीरो का काम चल जायगा या नहीं। फिर किशोर को कोई अनुभव भी नहीं है, पहली तसवीर में ज्यादा से ज्यादा साइड हीरो का वह काम कर सकता है!"

शिवकुमार ने प्रेमकिशन से कहां, "हां बात ठीक है, लेकिन किशोर लड़का तो बुरा नहीं मालूम होता! शक्ल-सूरत अच्छी है, गले की आवाज अच्छी है। सिर्फ एक कमी है, अनुभव की; और शायद

किशोर रंजन की तरह स्मार्ट नहीं है। देखिए, किशोर का टेस्ट ले लीजिए, इसमें हर्ज ही क्या है। फिर अपनी हीरोइन की बात भी तो आपको रखनी चाहिए!"

प्रेमकिशन निरुत्तर हो गया। वह जानता था कि राधा और राजीव दोनों किशोर को हीरो बनाना चाहते हैं, और घुमा-फिरा कर इस प्रकार का प्रस्ताव भी उससे किया जा चुका था। पर प्रत्येक बार प्रेमकिशन ने इस प्रस्ताव को टाल दिया था। आज चमेली को भी इन दोनों ने अपने साथ कर लिया। उसने कहा, "जैसी आप लोगों की इच्छा! यद्यपि मुझे किशोर से बहुत आशा नहीं है। तो फिर मैं चमेली देवी को और किशोर को सीन नम्बर नौ के डाइलाग दिये देता हूं। मुहूर्त मंगलवार को रक्खा है न!"

"हां! मंगलवार को एक बजे दोपहर के समय! मैंने लोगों के पास आज सुबह को ही निमंत्रण-पत्र भिजवा दिये हैं। आप आर्ट डाइरेक्टर को सेट बनाने को कह दें। और कास्ट्यूम्स—मैं अपने साथ चमेली देवी को ले जाकर साड़ियां दिलवा दूंगा, आप किशोर की नाप टेलर को दिलवा दीजिए!"

मीटिंग समाप्त हो गई। शिवकुमार ने चमेली से कहा, "अपने डाइलाग्स लेकर आप आध घंटे में आ जाइयेगा। मुझे अभी सिटी आफिस में जाना है। रास्ते में मैं आपके कास्ट्यूम्स ले लूंगा।"

जिस समय शिवकुमार चमेली को अपनी कार पर बिठला कर चला, उसकी आंखों में उल्लास की एक चमक थी, उसकी वाणी में एक प्रकार की उमंग थी। आनन्द स्टोर्स के सामने शिवकुमार ने कार रोकी। उस दिन चमेली के लिए साड़ियां खरीदी गईं, ब्लाउज खरीदे गए, इमीटेशन जिवेलरी खरीदी गई, जूते खरीदे गए। सब सामान खरीद कर शिवकुमार ने कहा, "तुमने मेरा सिटी आफिस नहीं देखा है चमेली रानी, बड़ी अच्छी जगह है, शान्त और एकान्त। मुझे वहां

एक घंटे का काम है, तब तक तुम वहां आराम करना!" और उसने ड्राइवर से कहा, "आफिस चलो!"

शिवकुमार का सिटी आफिस कोलाबा में था, तीन कमरों का एक फ्लैट! पहले कमरे में एक क्लर्क और एक चपरासी था, दूसरा कमरा शिवकुमार का आफिस था और तीसरा शिवकुमार के विश्राम का कमरा था। शिवकुमार चमेली को लेकर अपने विश्राम के कमरे में पहुंचा। उस कमरे में एक अच्छा सोफा सेट था, एक कोच था, एक ड्रेसिंग टेबिल था। नौकर चमेली का सामान उतार कर रख गया था। शिवकुमार ने चमेली से कहा, "तुम यहां आराम करो, मुझे जरा कागजों पर दस्तखत करने हैं।"

कागजों पर दस्तखत करके जब शिवकुमार अपने विश्राम के कमरे में वापस लौटा, उसने देखा कि चमेली एक सुन्दर साड़ी को लिए ड्रेसिंग टेबिल के सामने खड़ी है। शिवकुमार हंस पड़ा, "बड़ी अच्छी साड़ी है, पहन कर देखो न! और यह ब्लाउज उस साड़ी से एक दम मैच करता है। लाओ मैं तुम्हें साड़ी ब्लाउज पहना दूं!"

चमेली ने मुसकराते हुए कहा, "नहीं, मैं खुद पहन लूंगी, आप अपने आफिस में थोड़ी देर के लिए चले जाइये।"

शिवकुमार ने ब्लाउज अपने हाथ में लेते हुए कहा, "चमेली रानी, फिल्म कम्पनी में हीरोइन को कपड़े पहनाने के लिए, उसका शृंगार करने के लिए ड्रेसिंग मैन और मेकअप मैन हुआ करते हैं, हीरोइन यह सब काम अपने हाथों नहीं किया करती! और यह कह कर शिवकुमार ने चमेली के पीछे खड़े होकर अपने हाथ चमेली के कंधों पर रख दिये!

चमेली आइने के सामने खड़ी अपने को देख रही थी और पीछे खड़े शिवकुमार को देख रही थी। चमेली वैसी ही खड़ी रही उसने केवल इतना कहा, "सेठ! तुम्हें यह शोभा नहीं देता।"

और चमेली ने अनुभव किया कि मौत की तरह शिवकुमार का हाथ रेंगता हुआ चमेली के कंधों के नीचे आगे की तरफ उतर रहा है और शिवकुमार कह रहा है, "चमेली देवी, तुम मेरी कम्पनी की ही नहीं, मेरी हीरोइन हो, आज मैं तुम्हारा शृंगार अपने ही हाथों करूंगा!"

चमेली चाहती थी कि वह घूम कर शिवकुमार को तमाचा मारे, पर उसका शरीर शिथिल पड़ता जा रहा था। उसकी आंखें मानो इस कुरूपता के सामने आप ही आप बन्द हो गईं। उसने अपना हाथ उठा कर शिवकुमार का हाथ अपने शरीर से हटाने का एक कमजोर प्रयत्न अवश्य किया, पर उसने अनुभव किया कि वह बहुत दूर चली आई है, अपनी इच्छा से चली आई है, और इस बहाव में उसका बह जाना अनिवार्य है!

जिस समय चमेली शिवकुमार के साथ उस आफिस के बाहर निकली, उस समय उसे ऐसा लग रहा था, मानो उस आफिस के क्लर्क और चपरासी उसकी ओर घृणा और तिरस्कार से देख रहे हैं। जल्दी जल्दी एक अपराधिनी की भांति वह कार में बैठ गई, नौकर ने उसका सामान रख दिया। शिवकुमार ने उसकी बगल में बैठते हुए ड्राइवर से कहा "स्टूडियो!"

रास्ते भर शिवकुमार और चमेली में कोई बात नहीं हुई। रास्ते भर चमेली सोचती रही कि उसने क्या कर डाला! उसे परिस्थितियों पर क्रोध आ रहा था, रामेश्वर पर क्रोध आ रहा था, अपने ऊपर क्रोध आ रहा था। पर अपनी बगल में बैठे शिवकुमार के प्रति न उसे क्रोध था, न उसे ग्लानि थी। शिवकुमार ने जो कुछ किया वह उसने छल-कपट से नहीं किया, चमेली को विवश करके नहीं किया। उसका खेल सीधा-सादा और साफ था, कहीं भी उस खेल में धोखा नहीं था, प्रपंच नहीं था। कार स्टूडियो के पास पहुंच रही थी। शिवकुमार ने चमेली का हाथ पकड़ कर धीरे से कहा, "क्या तुम मुझसे नाराज हो?"

चमेली ने शिवकुमार के हाथ से अपना हाथ छुड़ाया नहीं, "नहीं सेठ! मैं अपने से नाराज हूं लेकिन तुमसे नहीं! मुझे अपने ऊपर ग्लानि हो रही है। तुमने जो कुछ किया वह तुमने बहुत पहले कह दिया था। और सेठ तुमने मुझे मजबूर भी तो नहीं किया। जो कुछ दोष है वह मेरा है, जो कुछ पाप किया है वह मैंने!" और शिवकुमार ने देखा कि यह बात कहते-कहते चमेली की आंखों में आंसू उमड़ आए हैं।

शिवकुमार ने अपने रूमाल से चमेली के आंसू पोछते हुए कहा, "चमेली रानी! न इसमें किसी का दोष है और न किसी ने पाप किया है। जो कुछ हुआ है वह विधि का विधान था। भगवान को वही करना था, और वह वच कैसे सकता था? जिन्दगी सोचने-विचारने के लिए नहीं बनी है, वह हँसने-खेलने के लिए वनी है! जो हो गया वह हो गया, उस पर सोचना बेकार! अब स्वस्थ हो, स्टूडियो आ गया!"

चमेली कार से उतर कर सीधे अपने कमरे में चली गई। शिवकुमार ने जो कुछ कहा था, उसमें सार है, वह यह अनुभव कर रही थी, पर फिर भी न वह एकाएक शान्त हो सकती थी, न स्वस्थ हो सकती थी! अपने कमरे में जाकर वह आराम कुर्सी पर लेट गई। कितनी देर तक वह इस हालत में रही, उसे इसका पता न था! वह चौंक उठी राधा के झकझोरने से जो उसके सामने खड़ी हँस रही थी, "अरे! कब तक सोती रहोगी? मुझे पता नहीं तुम कब लौटीं, वह तो अभी सेठ को देखा तो पता चला कि तुम्हें आए एक घंटा के ऊपर हो गया। देखूं तुम्हारी साड़ियों को!" और इस वार उसने बाहर दरवाजे की तरफ देखा! "किशोर बाहर खड़े हैं, तुम्हें धन्यवाद देने आए हैं। कहो तो उन्हें यहां बुला लूं!"

"बुला लो!" चमेली ने अन्यमनस्क भाव से कह दिया।

मानो किशोर दरवाजे पर कान लगाए खड़ा था, चमेली के कहने के साथ ही उसने कमरे में प्रवेश किया, "नमस्ते चमेली देवी जी! क्या आपकी तबीअत कुछ खराब है?"

"नहीं, ऐसे ही थक गई थी तो जरा सुस्ती आ गई, अब बिल्कुल ठीक हूँ! बैठिये!"

किशोर बोला, "आपने मेरे ऊपर बड़ी कृपा की, मैं आपको हृदय से धन्यवाद देता हूं! जहां तक काम का सवाल है, मैं चाहता था कि एक बार हम दोनों हीरो-हीरोइन बन कर फिल्म में उतरें, हम दोनों दुनिया में तहलका मचा देंगे, तहलका। मैं फिर आपको अनेक-अनेक धन्यवाद देता हूं चमेली देवी, बिना आपकी कृपा के मैं कभी भी इस पिक्चर का हीरो न बन पाता! यह डाइरेक्टर प्रेम-किशन। बड़ा पाजी आदमी है चमेली देवी, छटा हुआ बदमाश और अवारा। मैं आपको आगाह किये देता हूं पहले से ही न इसमें योग्यता है, न इसमें प्रतिभा है। मुझे ताज्जुब हो रहा है राधा जी कि इस आदमी को आप लोगों ने डाइरेक्टर कैसे बना दिया!"

राधा बोल उठी, "मैं क्या करूं! सेठ ने बिना मुझसे पूछे इस आदमी को ले लिया था। सेठ के फैसले के खिलाफ भला मैं क्या कहती? अब तो इसने पहली पिक्चर शुरू कर दी है, इसके बाद फिर देखूंगी कि इस कम्पनी में कैसे रहता है!"

किशोर और राधा की बातें चमेली को अच्छी नहीं लगीं। चमेली न डाइरेक्टर प्रेमकिशन को अच्छी तरह जानती थी और न किशोर को। पर उसने इन दोनों का जो रूप देखा था उससे वह अवश्य कह सकती थी कि प्रेमकिशन का व्यक्तित्व किशोर के व्यक्तित्व से कहीं ऊंचा है, कहीं अधिक उदार है, कहीं अधिक भला है। चमेली ने कहा, "किशोर जी, जहां तक मुझे याद है, डाइरेक्टर साहेब ने आपके हीरो बनाए जाने पर कोई आपत्ति नहीं की थी!"

किशोर कह उठा, "आप नहीं जानतीं चमेली देवी इस प्रेमकिशन को! यह आदमी फिल्म लाइन में बुरी तरह बदनाम है! हद दरजे का घमंडी और अकड़बाज! सीधे मुंह यह किसी से बात नहीं करता!"

"ऐसी बात है!" चमेली के अन्दर किशोर के प्रति तिरस्कार और उपेक्षा की भावना बढ़ती जा रही थी, "लेकिन घमंडी और अकड़-बाज होना तो कोई ऐसा खास अवगुण नहीं है। और फिर मेरे साथ तो उसने बड़ी अच्छी तरह बातचीत की!"

"ओह! आपकी बात दूसरी है। वह काफी चालाक भी है! वह जानता है कि कौन कहां है, और किससे किस तरह पेश आना चाहिए! अगर आपने मेरी सिफारिश न की होती तो वह मेरे नाम का बहुत अधिक विरोध करता! मुझसे वह बेतरह नाराज है क्योंकि मैं उससे दबता नहीं। और मैं उससे दबूं भी क्यों? मैं उससे कहीं ऊचा कलाकार हूं, दुर्भाग्य की बात यह है कि अभी दुनिया ने मुझे देखा नहीं है।"

चमेली एकाएक हँस पड़ी, "इतने बड़े कलाकार को ढूंढ़ निकालने पर मैं राधा को बधाई देती हूं! किशोर जी, आपको राधा का आभारी होना चाहिए! छल-कपट-झूठ, इस सब का सहारा लेकर बेचारी ने आपको हीरो बनवाया है, इसे आप धोखा न दीजियेगा, मुझे आपसे यही कहना है!"

राधा ने बड़ी कृतज्ञता के साथ चमेली को देखा। चमेली की बात सुनकर किशोर गम्भीर हो गया, उसने कहा, "चमेली देवी! राधा मेरी सब कुछ हैं, इनके उपकारों को मैं मृत्यु-पर्यन्त नहीं भूल सकता। आप मुझे इतना नीच न समझें कि मैं कभी राधा को धोखा दूं।" और इस बातचीत को वहीं समाप्त कर देने के लिए उसने राधा से कहा, "म्यूजिक हाल में राजीव हम लोगों का इन्तजार कर रहे होंगे, अब चलना चाहिए!"

राधा उठ खड़ी हुई। उसने चमेली से कहा, "अरे हां! मैं तो भूल ही गई थी। आई थी तुम्हें बुलाने और उलझ गई तुमसे बातें करने में। चलो, देखो किशोर ने जो गाना लिखा है, राजीव ने उसकी अच्छी ट्यून बनाई है!"

चमेली भी अपने कमरे के एकान्त वातावरण से थक गई थी। उठते हुए उसने कहा, "चलो!"

अठारहवाँ परिच्छेद

उस दिन जब शाम के समय रामेश्वर दूकान बन्द करके घर आने की बात सोच रहा था, उसने देखा कि एक आदमी उसकी ओर बड़े गौर से देख रहा है। रामेश्वर ने मुसकराते हुए उस आदमी से कहा, "कहो सेठ! क्या बात है?"

वह आदमी अब रामेश्वर की दूकान के सामने आ गया! "अरे तू है भइया! तेरा नाम रामेश्वर है न!"

रामेश्वर ने उस आदमी को पहचाना नहीं, पर उसे ऐसा लगता था मानो उसने उसे कहीं देखा है। वह कसरती बदन का अधेड़ आदमी था, नाटा और सुडौल। उसने कहा, "मुझे पहचाना नहीं तूने! मैं हूं रघुनाथ दादा, जोगेश्वरी का!"

रामेश्वर को याद हो आया, "अरे रघुनाथ दादा! तुम यहां कैसे भूल पड़े?"

उसने कहा, "जोगेश्वरी का एक भइया कल रात मर गया। उसके सगे-संबंधी यहीं भूलेश्वर में रहते थे, उन्हें खबर करने आया हूं। बड़ा अच्छा आदमी था, मेरी ही जमीन पर उसका तबेला था। चार भैंसें, दो गाएं! कल रात उसे हैजा हुआ और वह चल बसा। उसके नौकर-चाकर कल शाम को ही भाग गए थे। और यहां भूलेश्वर में भी उसके सगे-संबंधियों का पता नहीं चलता। उसके तबेले को कौन देखेगा?"

रामेश्वर ने कहां, "हां दादा, है तो मुसीबत की बात। फिर क्या करोगे?"

रघुनाथ बोला, "यही तो समझ में नहीं आ रहा!" फिर वह एका-

एक कह उठा "भइया, तुम उस तबेले को क्यों नहीं ले लेते? वह तबेला मैंने ही उस भइया को ले दिया था, अभी मेरा उस पर एक हजार रुपया बाकी है। उन जानवरों की कीमत भी करीब-करीब उतनी ही होगी!"

"लेकिन मेरे पास एक हजार रुपया कहां?" रामेश्वर ने कहा।

"अरे, तुमसे रुपया देने को कौन कहता है? वह तबेला तो मेरे मत्थे आ पड़ा है! लेकिन मेरा काम तो तबेला चलाना नहीं है। तुम भइया हो, तुम उसे चला सकते हो! जब तक तुम रुपया न दो तब तक फायदे पर आधा आधा रहेगा, जब तुम रुपया दे दो तो वह तबेला तुम्हारा हो जायगा!"

रामेश्वर ने कहा, "अच्छी बात है दादा! सोचूंगा इस बात पर!"

"हां, हां! सोच-समझ लो, जल्दी नहीं है! महीना-पन्द्रह रोज तो मैं अपने आदमियों से काम ले लूंगा। यह पान की दूकान, इसमें तुम्हें क्या मिलेगा? एक तबेला अगर अच्छी तरह चला सको तो लखपती हो जाओगे! और भइया तुम अच्छी तरह चला सकोगे, तुम जीवट के आदमी हो!"

रघुनाथ के जाने के बाद रामेश्वर ने अपनी दूकान बन्द की और वह घर की ओर चल दिया। तबेला वाला प्रस्ताव उसे पसन्द आया। वह किसान था, उसके पास भी एक समय गाएं थीं, भैंसें थीं, बैल थे। लेकिन अब वह स्वतंत्र न था। तबेला चलाने के लिए उसे जोगेश्वरी में रहना पड़ेगा। और जोगेश्वरी में रहने के अर्थ होंगे, उसका और चमेली का साथ छूटना क्योंकि कम्पनी से चार हजार लेने के बाद चमेली के लिए अपना काम छोड़ना असंभव था। और फिल्म-कम्पनी की हीरोइन का काम करने के लिए उस फ्लैट में और उस शान से रहना आवश्यक था!

रामेश्वर जिस समय घर पहुंचा, चमेली स्टूडियो से वापस आ

चुकी थी। उसने देखा कि चमेली चुपचाप अपने पलंग पर लेटी हुई है, उदास और हत-प्रभ! रामेश्वर ने कहा, "क्यों री, क्या तबीअत खराब है? तेरा मुंह क्यों उतरा हुआ है?"

चमेली ने रामेश्वर के प्रश्न का कोई उत्तर न दिया, वह अपनी आंखें तक ऊपर न उठा सकी। वैसी ही वह लेटी रही। रामेश्वर ने उसे हिलाते हुए कहा, "क्यों री, चुप क्यों है? क्या किसी ने तुझसे कुछ कह दिया? बतलाती क्यों नहीं?"

चमेली ने धीमे स्वर में कहा, "आज बुरी तरह थक गई हूं!" और वह बल लगा कर उठ बैठी। उसने रामेश्वर का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा, "मैं नहीं चाहती थी कि मैं वहां नौकरी करूं, लेकिन भाग्य से मजबूर हो गई!" और चमेली एक ठंढी सांस लेकर पलंग से उतर कर खड़ी हो गई, "कपड़े बदल डालो, तुम भी तो थक गए होगे! आज दूकान में कितना मिला?"

"करीब दो रुपए!" रामेश्वर ने कहा, "अच्छी तरह जम जाऊं तो तीन-चार रुपए रोज की पैदा है उस दूकान में !"

"इसके माने हैं साठ रुपए महीने! साल भर में साढ़े सात सौ रुपए होंगे, दो साल में पन्द्रह सौ! छै साल में चार हजार!" और चमेली एक रूखी हँसी हँस पड़ी, "इस पान की दूकान से काम न चलेगा, जीवन की धारा बदल चुकी है, हम लोगों को धन का पिशाच न जाने कहां का कहां ले आया! उसकी भयानक पकड़ में आ चुके हैं हम दोनों, उस पकड़ से बच सकना गैरमुमकिन है।

चमेली की बातों की कटुता में एक भयानक और कठोर सत्य है, रामेश्वर ने यह अनुभव किया, पर न तो चमेली की मनो-दशा पर उसका ध्यान गया, न उसकी बुद्धि में यह आया कि यह सब बातें चमेली क्यों कह रही है! चमेली के साथ उस दिन जो कुछ बीता था, चमेली की प्रबल इच्छा हो रही थी कि वह सब रामेश्वर

से कह दें, अपने आप को वह प्रकट कर दे। लेकिन उसकी हिम्मत न पड़ रही थी कि वह स्वयम् अपनी तरफ से यह बात कहे। वह चाहती थी कि रामेश्वर उससे पूछ-ताछ करे, प्रश्नों की झड़ी लगा कर वह चमेली से उसकी बात निकलवा ले! पर यह सब न हो सका तो न हो सका! रामेश्वर ने हँसते हुए कहा, "अरी छोड़ भी इस बात को, यह तो जिन्दगी का रोना है। जो कुछ भाग्य में बदा है वह होकर ही रहेगा। चल, तू भी मुंह हाथ धो ले!" रामेश्वर नें चमेली का हाथ पकड़ लिया, "आज मुझ से एक काम करने को कहा गया है, वड़े फायदे का काम है वह, लेकिन बस एक मुसीबत है उसमें!

चमेली ने कौतूहल से पूछा, "क्या काम है और कैसी मुसीबत है?"

"एक गाय-भैंस का तवेला मुझे विना दाम मिल रहा है, गोरे गांव में। एक भी पैसा पास से न लगाना पड़ेगा। अगर ठीक तरह से चल जाय तो चार-पांच सौ रुपए महीने की आमदनी है। पान की दूकान से तो वह काम अच्छा ही रहेगा!"

चमेली कह उठी, "गोरे गांव में गाय-भैंस का तबेला! यही करने के लिए तुमने मुझसे फिल्म-कम्पनी की नौकरी करवाई है? यही करने के लिए चौपाटी के इस शानदार फ्लैट में आकर रहे हैं हम लोग?" चमेली एक रूखी हंसी हंस पड़ी, "भैंस का तबेला, पान की दुकान—फिर वहीं लौटना पड़ेगा क्या? नहीं! तुम वह पान की दूकान को छोड़ दो, तुम्हें भैंस का तबेला करने की जरूरत नहीं। करना है तो कोई और काम करो जिसमें मान और प्रतिष्ठा दोनों ही हो! छँ महीने बाद जब यह चार हजार का कर्ज अदा हो जायगा, मैं और चार-छै हजार रूपया ले लूंगी!"

रामेश्वर ने उस कमरे के चारो ओर देखा जिसमें वह खड़ा था, उस कमरे की सजावट, उस कमरे का सामान, उस कमरे का आराम!

और वह पास में रक्खी एक आराम कुर्सी पर बैठ गया; उसे ऐसा लगा मानो वह थक गया है, उसे अब आराम करने की जरूरत है। उसने चमेली की ओर बड़े प्रेम से देखते हुए कहा, "अरी तेरी कमाई पर रामेश्वर रहे—धिक्कार है उसके जीवन पर! रामेश्वर बूढ़ा हो रहा है, रामेश्वर थक रहा है—ठीक है; लेकिन रामेश्वर को कुछ काम तो करना ही चाहिए! रामेश्वर मर्द है!" और यह कहते कहते रामेश्वर का स्वर कठोर हो गया, उसकी आंखों में एक अजीव चमक आ गई! "रामेश्वर मर्द है, वह काम कर सकता है, वह काम करेगा! पान की दूकान, भैंस का तबेला—इनमें रामेश्वर को शर्म क्यों हो?"

चमेली रामेश्वर का यह रूप देख कर सहम गई। यह बात नहीं कि चमेली ने रामेश्वर के उस रूप को पहले कभी देखा न हो, पर तब वाली चमेली आज वाली चमेली न थी। आज वाली चमेली के जीवन में पाप घुस आया था और पाप-जनित अज्ञात भय से कायर हो गई थी। उसने रामेश्वर को शान्त करने को कहा, "अच्छी बात है! जो जी चाहो वह करो; मैं तुमसे कब कहती हूं कि तुम कोई काम मत करो। मुझे तो इसमें सुख होगा कि तुम काम करो और मैं रानी की तरह घर पर बैठूं, घर का काम दखूं और तुम्हारी सेवा करूं!"

उन्नीसवाँ परिच्छेद

रामेश्वर नै पान की दूकान पर बैठना छोड़ दिया। चमेली ने ठीक ही कहा था कि दो या तीन रुपए रोज पैदा करने से काम न चलेगा, इतनी आय से वह अपने मकान का किराया भी तो अदा नहीं कर सकता था! पर रामेश्वर के सामने प्रश्न यह था कि वह क्या करे! चिन्तित और उदास पांच छै दिन वह लगातार शहर में चक्कर काटता रहा। उसके हृदय की शांति खो गई थी। वह चमेली से इस संबंध में बात करना चाहता था लेकिन चमेली से बात करने का उसे अवसर न मिलता था। चमेली की पिक्चर की शूटिंग आरम्भ हो रही थी, चमेली को अधिकांश समय स्टूडियो में बिताना पड़ता था। जब चमेली घर लौटती थी तो बेतरह थकी हुई!

एक दिन स्टूडियो से लौट कर चमेली ने रामेश्वर से कहा, "देखो! मेरी शूटिंग हो रही है, लेकिन तुम एक दिन भी शूटिंग देखने नहीं आए। तुम्हें कल मेरे साथ चलना होगा।"

रामेश्वर ने पूछा, "वहां चल कर मुझे क्या करना होगा?"

चमेली रामेश्वर के इस व्यंग से मर्माहत हो गई, । "करना क्या होगा? शूटिंग देखने में क्या करना होगा? आखिर तुम मुझे पराई क्यों समझने लगे? तुमने ही तो मुझसे यह काम करने को कहा था। मैं तो फिल्म लाइन में जाना भी नहीं चाहती थी, तुम्हीं ने मुझे मजबूर किया। और जब मैं इस लाइन में आ गई तब तुम मुझे छोड़े दे रहे हो! क्या यह तुम्हें शोभा देता है?"

चमेली के स्वर में असीम करुणा और वेदना थी—रामेश्वर ने यह

अनुभव किया। चमेली की बात में सत्य था रामेश्वर इस बात को मन ही मन स्वीकार करने पर विवश हो गया। उसने कहा, "मैं कल चलूंगा तेरे साथ! लेकिन चमेली, बिना काम-काज के मुझे वहां जाना अच्छा नहीं लगता। आखिर मैं भी तो कोई मर्द हूं, मुझे खुद कोई काम करना चाहिए! तुझे काम करते देख कर मेरी आत्मा मुझे धिक्कारेगी, इसीलिए मैं तेरे साथ जाने में हिचकता था। पर तेरा मन रखने के लिए मैं कल तेरे साथ चलूंगा। अब तो तुझे मुझसे कोई शिकायत नहीं!"

रामेश्वर की बात से चमेली का मन हलका हो गया और रामेश्वर का मन भी हलका हो गया। वह खिचाव जो रामेश्वर अपने जीवन में गत चार पांच दिनों से अनुभव कर रहा था, ढीला पड़ गया था। चमेली ने कहा, "अच्छा अब अपनी उदासी दूर करो, जरा साफ कपड़े पहन लो! एक सीन का रिहर्सल करना है, राधा और किशोर आते होंगे! और तुमने सुना? हमारी पिक्चर में हीरो का काम किशोर जी कर रहे हैं। बड़ा नेक लड़का है वह, सीधा और मेहनती। सिर्फ थोड़ा सा बोदा जरूर है। वैसे तो बात करने में बड़ा तेज है, लेकिन केमरा के सामने आते ही होश-हवास गायब हो जाते हैं!" और यह कहते कहते चमेली हँस पड़ी।

चमेली फिर बोली, "और हीरो बना तो भी बड़े घुमाव-फिराव के साथ! राधा चाहती थी कि किशोर हीरो बने, राधा के साथ इसी मकान में रहता है, तुम तो उससे मिल चुके हो उस दिन! बिल्कुल बच्चा है अभी! भगवान जाने राधा के फेर में न जाने कैसे पड़ गया।"

रामेश्वर ने मुसकराते हुए कहा, "और अगर मैं कहूं कि राधा उसके फेर में न जाने कैसे पड़ गई तो?"

चमेली ने दांतों तले जीभ दबाते हुए कहा, "राम! राम! कैसी

बातें कर रहे हो? राधा किशोर के फेर में पड़े? राधा को पूछता ही कौन है? स्टूडियो में कोई भी तो राधा की तरफ मुखातिव नहीं होता? राधा को लोग इसीलिए मानते हैं कि सेठ पर उसका कुछ थोड़ा सा प्रभाव है और सेठ से अपनी बात मनवा लेने की उसके पास बुद्धि है। लेकिन किशोर!—उसके पास प्रतिभा है!"

और इस पर रामेश्वर ने कहा, "नहीं, तू गलती करती है! किशोर के पास कुछ भी नहीं है, और बिना कुछ होते हुए भी वह आगे बढ़ना चाहता है, सब कुछ पाना चाहता है! कौन उसे सब कुछ दे सकता था? कौन उसे आगे बढ़ा सकता था? और उसने देखा राधा को! राधा के साथ उसने सौदा किया, और मैं कहता हूं कि उसने घाटे का सौदा नहीं किया। यहां राधा के साथ मुफ्त रहता है, मुफ्त खाता है और उसे जो तनख्वाह मिलती है उससे........." रामेश्वर अपनी वात पूरी भी न करने पाया था कि फ्लैट की घंटी जोर से बोल उठी। रामेश्वर ने खुद फ्लैट का दरवाजा खोला, द्वार पर किशोर खड़ा घंटी दवा रहा था। और राधा उसे पीछे खींच रही थी और कह रही थी, "पागल मत वनो किशोर! इस हालत में वहां मत जाओ।"

किशोर और राधा को इस अवस्था में खड़े देखकर रामेश्वर को हँसी आ गई, "कोई वात नहीं है राधा! क्यों किशोर जी को आने से मना कर रही हो? इन्हें रिहर्सल करना है न? आइये किशोर जी, आओ, चमेली तुम दोनों की प्रतीक्षा कर रही है!"

किशोर ने अन्दर प्रवेश करते हुए कहा, "यही, यही मैं भी कह रहा था कि चमेली देवी प्रतीक्षा कर रही होंगी! लेकिन समझ हो तव न! रामेश्वर भइया, दुनिया में समझदार की कमी—वहुत बड़ी कमी! दुनिया में समझदार की मौत! रामेश्वर भइया—मौत! मौत! क्य समझे? मौत और जिन्दगी! जिन्दगी हजार न्यामत है। बड़ी प्यार

चीज है जिन्दगी! प्यार—मुहब्बत! चमेली देवी, प्यार—मुहब्बत तो मैं तो प्यार का बन्दा हूं, मुहब्बत का पुतला हूं क्यों राधा! हा! हा! हा! रामेश्वर भइया, पूछो, पूछो इस राधा से कि प्यार किसे कहते हैं, मुहब्बत किस तरह की जाती है।"

राधा ने फिर किशोर को पकड़कर घसीटा, "पीकर अनाप-शनाप बकना हो तो अपने कमरे में जाओ!"

लेकिन रामेश्वर जोर से हँस पड़ा। उसने राधा से किशोर को छुड़ाते हुए कहा, "कोई बात नहीं, कहने दो इन्हें! आदमी जब पी लेता है जब वह अपनी जिन्दगी के हरेक परदे को दूर फेंक देता है, तब वह, अपने असली रूप में प्रकट हो जाता है!"

"क्या बात कही रामेश्वर भइया, तब वह जिन्दगी के हरेक परदे को दूर फेंक देता है! असली रूप में! क्या बात कही, अपने असली रूप में! मेरा असली रूप क्या है? कोई नहीं जानता, मैं भी नहीं जानता! मेरा असली रूप? किशोर की असलियत कोई नहीं जानता! किशोर एक महान व्यक्ति बनना चाहता है, अमर कलाकार बनना चाहता है। और वह महान बनने के लिए सब कुछ कर सकता है। कहां से कहां आ गया हूं सुन के ताज्जुब होगा रामेश्वर भइया! घर में था, नवें दर्जे में पढ़ता था। लेकिन पढ़ने में जी न लगता था, गाने का शौक था, फिल्म का शौक था! नवें दर्जे में तीन साल फेल हुआ, लगातार तीन साल! तो तीसरी बार जब फेल हुआ तो पिता जी ने बुरी तरह पीटा! उसी दिन उनकी तिजौरी से पांच सौ रुपए निकाल कर कलकत्ते की राह पकड़ी। हर जगह घूमा कि किसी फिल्म स्टूडियो में काम मिल जाय! बड़ी मुश्किल से एक स्टूडियो में चालीस रुपए महीने की नौकरी मिली। कैसे मिली—बड़ी लम्बी कहानी है। वह प्रांजला नाम की हीरोइन—वह मुझसे खुश हो गई थी, मैं उसे हिन्दी पढ़ाता था। और रामेश्वर भइया, उसने मुझे प्रेम का पाठ

पढ़ाना शुरू कर दिया! भला, इसमें मेरा क्या कसूर? बस इसी बात पर मैं स्टूडियो से निकाल बाहर किया गया! लेकिन प्रेम का पाठ पढ़ते-पढ़ते मैं बन गया कवि! कलकत्ता से बम्बई आया। गीत लिखने लगा। एक आध बिक गया तो बिक गया, पास के रुपए खत्म हो गए! भूखों मरने की नौबत आ गई! इतने में मुझे मिल गई राधा! प्यारी राधा—दुलारी राधा! सारी भव-बाधा इन्होंने हर ली, भूखों मरने से बचा लिया! और अब हीरो बन गया हूं रामेश्वर भइया—हीरो!"

राधा की उस समय बुरी हालत थी। उसने कहा, "तुम रिहर्सल करने आए थे कि यह सब खुराफात बकने?"

"ओह! भूल गया था, बिल्कुल भूल गया था! रिहर्सल—चमेली रानी के साथ रिहर्सल करने आया था। सुना रामेश्वर भइया! हम लोग तो इन्हें चमेली देवी कहते हैं लेकिन सेठ इन्हें कहते हैं चमेली रानी! नाम चमेली देवी से चमेली रानी ज्यादा अच्छा है; मैं मान गया उस सेठ को! बड़ा भला आदमी है, बड़ा समझदार, बड़ा पारखी; लेकिन साथ ही बड़ा कांइया है, बड़ा घुटा हुआ! है न ऐसी बात चमेली रानी!"

चमेली ने उठकर किशोर के मुख पर एक तमाचा मारा, "तुम्हारी बदतमीजी का पहला ईनाम!" और चमेली ने राधा से कहा, "इसे यहां से ले जाओ राधा! अब से जब कभी यह पी जाय तब इसे मेरे यहां मत लाना!"

तमाचा खाकर किशोर को कुछ होश आ गया, "अरे! आप नाराज हो गईं! गलती हो गई मुझसे! पीकर गलती हो ही जाती है! माफी मांगता हूं!" किशोर ने दरवाजे की ओर बढ़ते हुए कहा।

किशोर को लेकर राधा चली गई; चमेली के साथ रामेश्वर अकेला रह गया। रामेश्वर इस समय तक थोड़ा सा गम्भीर हो गया था, "क्यों

री! मुझे तेरे ऊपर तेरा भरोसा है, लेकिन क्या यह लौण्डा ठीक कहता था कि सेठ तुझे चमेली रानी कह कर पुकारता है?"

चमेली इस प्रश्न से सकपका गई, पर उसकी बुद्धि ने उसी समय उसकी सहायता की, "मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूंगी, सेठ मुझे चमेली रानी कहता है। लेकिन इसमें हर्ज क्या है, मैं स्टूडियो की हीरोइन हूं और हरेक स्टूडियो की हीरोइन अपने स्टूडियो की रानी हुआ करती है। इसमें मैंने बुरा मानने की कोई ऐसी बात नहीं समझी!"

चमेली के इस उत्तर से रामेश्वर कुछ संतुष्ट हुआ, कुछ नहीं हुआ। उसने कहा, "हां, यह तो ठीक है, लेकिन इतनी जरा सी बात पर तुमने किशोर को मारा क्यों?"

और चमेली ने उत्तर दिया, "मारा इसलिए कि वह जो कुछ कह रहा था उसमें वह चीजों के असली रूप को बिगाड़ रहा था। राधा के संबंध में वह जो कुछ कह गया उसमें वह बदतमीजी की सीमा को पार कर चुका था—उसकी पतित और घृणित मानसिक प्रवृत्ति पर मुझे अनायास ही क्रोध आ गया। उस समय मुझे यह अनुभव हुआ कि तुमने उसके संबंध में जो कुछ कहा था वह सर्वथा ठीक था, मैंने उसको अच्छा समझने में, उसके साथ सहानुभूति प्रदर्शित करने में गलती की थी।"

अपनी प्रशंसा सुनकर रामेश्वर की छाती गर्व से तन गई, "मैं तो जो कुछ कहता हूं री वह ठीक ही कहता हूं। यह किशोर! यह निहायत ही पाजी आदमी है! मैंने इसे शुरू से नापसन्द किया!" और रामेश्वर के मुख पर चमेली के प्रति अविश्वास का जो हलका सा धुंधलापन आया था वह लोप हो गया!

बीसवाँ परिच्छेद

चमेली, राधा और किशोर के साथ रामेश्वर भी स्टूडियो पहुँचा। कार से उतरते ही चमेली मेकअप-रूम में चली गई और रामेश्वर स्टूडियो में इधर-उधर टहलने लगा।

रामेश्वर ने इसके पहले स्टूडियो न देखा था। इतने में उसे जगमोहन की आवाज सुनाई दी, "अरे रामेश्वर भइया। तुम ! आओ, चलो, हमारे आफिस में बैठो चलकर !"

रामेश्वर ने मन-ही-मन जगमोहन को एक सहारे के रूप में पाकर मन में भगवान को धन्यवाद दिया। अभी तक वह उस स्टूडियो में खोया-सा और अनजाना-सा अनुभव कर रहा था। उसे एक तरह से स्टूडियो आने पर अफसोस सा हो रहा था ! उसने जगमोहन से कहा, "अरे जगमोहन ! वहुत दिनों बाद मिले ! आज कल तो तुम घर में दिखाई नहीं देते ; मुझे ताज्जुब हो रहा था कि जगमोहन कहां गए ! खूब मिले भाई ! यहां तो अकेले-अकेले मन ऊब रहा था।"

जगमोहन ने उत्तर दिया, "दिखलाई दें खाक ! स्टूडियो का काम भी बड़े झंझट का होता है रामेश्वर भइया ! दिन-रात की ड्यूटी समझो। तो आज एक हफ्ते से यहीं रह रहा हूं ; जरा देर के लिए हटूं तो सारा काम-काज चौपट हो जाय ! यह जो सारा खेल देख रहे हो—यह सब का सब जगमोहन के वल पर चल रहा है रामेश्वर भइया, इस तुम्हारे जगमोहन के बल पर !" जगमोहन हँस पड़ा, "मेरी तनख्वाह भी अब दो सौ रुपया महीना हो गई। साठ आदमी मेरे नीचे काम करते हैं ! यहां का राजा हूं—राजा !"

जगमोहन के कमरे में पहुंचकर दोनों बैठ गए। जगमोहन ने

एक घंटी बजाई और एक चपरासी वहां हाजिर हो गया। जगमोहन ने कहा, "एक ट्रे चाय की!"

रामेश्वर बोला, "अरे चाय की ऐसी क्या जरूरत?"

जगमोहन बोला, "कौन मुझे अपने पास से दाम देने पड़ते हैं, यह सब चाय-वाय का खर्च स्टूडियो के जिम्मे है! दिन-रात हम लोग जुट कर काम करते हैं तो अगर दस-पांच प्याले पी लिए तो क्या हो गया! अच्छा रामेश्वर भइया! तो आज तुम शूटिंग देखने आए हो!"

"देखने क्या आए हैं, चमेली मुझे जबर्दस्ती खींच लाई है!"

"हां! हां! आ जाया करो! हमने सुना था कि तुम पान की दूकान पर बैठने लगे हो, तो हमें बड़ा बुरा लगा। सेठ भी कह रहे थे कि तुम्हें पान की दूकान पर न बैठना चाहिए! इससे हमारी कम्पनी की हीरोइन की बदनामी होती है!"

"लेकिन मुझे भी तो कुछ काम करना चाहिए जगमोहन! मैं उसकी कमाई पर जिन्दा रहूं, यह तो बड़ी बेजा बात है!"

"यह तो तुमने लाख रुपए की बात कही रामेश्वर भइया! अपनी कमाई अपनी ही कमाई है, उसी में सुख है, उसी में संतोष है। जब से स्टूडियो मैनेजर हो गया हूं तब से आत्मा में शांति है रामेश्वर भइया!" कुछ सोच कर जगमोहन ने फिर कहा, "कहो तो मैं सेठ से तुम्हारी बाबत कुछ बातचीत करूं! सेठ शायद तुम्हें कोई अच्छा सा काम दिलवा सकें!"

रामेश्वर हँस पड़ा, "नहीं जगमोहन! सेठ से मेरी बाबत कुछ कहने की जरूरत नहीं है; मैं ही अपने लिए कोई काम-काज ढूंढ़ लूंगा!"

जिस समय जगमोहन और रामेश्वर चाय पी रहे थे, एक जोर का घंटा बजा। रामेश्वर ने पूछा, "यह घंटा कैसा बजा?"

"शूटिंग शुरू हो रही है। चलो, चाय पीकर हम लोग भी स्टूडियो में चलते हैं। आज एक लव-सीन है! बड़ा अच्छा सीन है रामेश्वर भइया! चमेली लाजबाब काम करती है, मैं ने तो कभी सोचा तक न था! मैं मान गया हूं सेठ को! क्या नजर पाई है उन्होंने! फिल्म के काम को वह डाइरेक्टर से कहीं अच्छा समझते हैं! अरे वह डाइरेक्टर प्रेमकिशन! वह तो बिल्कुल बेकार आदमी है, एक दम दो कौड़ी का! मैं कहता हूं कि मैं उससे अच्छी पिक्चर डाइ-रेक्ट कर दूं! लेकिन भला मुझे कोई क्यों पूछेगा? कहते हैं मेरा कोई नाम नहीं, कहीं कुछ काम नहीं किया। अरे अपनी सारी जिन्दगी इसी फिल्म के काम में बिताई है, वह-वह डाइरेक्टर मैंने देखे हैं। वह-वह सलाहें दी हैं मैंने उन्हें! अपने-अपने भाग्य की बात है रामेश्वर भइया! कभी मेरे भी भाग्य खुलेंगे! भगवान ने चाहा तो अगली पिक्चर में ही डाइरेक्ट करूंगा!"

चाय खत्म हो गई थी। रामेश्वर का हाथ पकड़ कर जगमोहन उठ खड़ा हुआ, "चलो रामेश्वर भइया! अब लाइटिंग वगैरह हो चुकी होगी। देखना क्या लाजवाब सेट वनवाया है मैंने!"

जगमोहन और रामेश्वर स्टूडियो के अन्दर पहुंचे। हाल में एक तरफ सेट लगा था जिसमें कैमरामैन नलिन लाइट्स ठीक कर रहा था। दूसरी ओर डाइरेक्टर प्रेमकिशन चमेली और किशोर के पार्टों का रिहर्सल ले रहा था। चमेली उस समय शलवार और कुरता पहिने थी, गले में एक ओढ़नी पड़ी थी। उसका सर खुला था। वह उस समय सोलह-सत्रह वर्ष की एक अल्हड़ युवती दीख रही थी। किशोर एक कीमती रेशमी सूट पहने थे। रामेश्वर ने कहा, "अच्छा! बड़े ठाट के कपड़े पहन रक्खे हैं किशोर ने! और वह दूसरी पंजावी लड़की कौन है?"

जगमोहन हँस पड़ा, "अरे! अपनी चमेली को भी तुम नहीं पह-चान सके?" और रामेश्वर का हाथ पकड़ कर प्रेमकिशन की ओर

बढ़ते हुए जगमोहन ने कहा, "ये हैं डाइरेक्टर प्रेमकिशन! और डाइ-रेक्टर साहेब! यह हैं श्री रामेश्वर! हमारी हीरोइन के पति!"

प्रेमकिशन ने झुककर रामेश्वर को नमस्कार किया, "आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई! जगमोहन! आपको बिठलाओ! मेरी ओर से एक ट्रे चा मंगवा कर पियो!" और यह कह कर वह चमेली और किशोर की ओर घूम पड़ा, मानो इसके बाद उसके लिए रामेश्वर का कोई अस्तित्व ही न रह गया।

रामेश्वर एक कोने में बैठ गया क्योंकि जगमोहन उसे वहां छोड़कर अपने काम पर चला गया था। रिहर्सल चल ही रहा था कि शिवकुमार ने स्टूडियो में प्रवेश किया। सेठ शिवकुमार के आते ही स्टूडियो के सब लोग उठकर खड़े हो गए। प्रेमकिशन ने बढ़कर कहा, "बड़ा अच्छा सीन बन गया है सेठ!"

पर शिवकुमार ने प्रेमकिशन की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने मुसकराते हुए चमेली की ओर देखा "बड़ी सुन्दर दीख रही हो चमेली रानी—हमारी पिक्चर बहुत अच्छी बन जायगी—! इसका मुझे विश्वास है!" और इसी समय शिवकुमार की नजर कोने में बैठे रामेश्वर पर पड़ी, "अरे रामेश्वर जी हैं। आज इतने दिनों बाद आप आए हैं। स्टूडियो के बड़े भाग्य! आपने अपनी चमेली को देखा?" और यह कहते-कहते वह रामेश्वर के बगलवाली कुर्सी पर बैठ गया।

शिवकुमार जब तक बैठा रहा तब तक वह रामेश्वर से बातचीत करता रहा। पर रामेश्वर को शिवकुमार की कोई भी बात समझ में नहीं आई। रामेश्वर को स्टूडियो का वातावरण जरा भी अच्छा न लग रहा था; एक तरह से वह उसे अरुचिकर था। पर उसे समझ में न आ रहा था कि खराबी क्या है और कहां है। दोपहर को लंच की छुट्टी के समय रामेश्वर ने चमेली से कहा, "शूटिंग मैं देख चुका,

अब मैं जरा घूमने-फिरने जा रहा हूं। यहां तो बैठे-बैठे मेरा दम घुट रहा है।"

चमेली को यह तो पता लग ही गया था कि रामेश्वर को स्टूडियो का वातावरण पसन्द नहीं आया। उसने रामेश्वर से कहा, "तुम्हें यहां का रंग-ढंग पसन्द न आया होगा; यह दुनिया ही एक अलग है और पहले-पहल लोगों को कुछ अजीब-सी दीखती है। लेकिन इस दुनिया में कुछ दिन रहने के बाद आदमी आदी हो जाता है। अच्छा, तुम यहां से कहां जाओगे।"

"घर ही जाऊंगा।" रामेश्वर ने कहा।

पर रामेश्वर घर नहीं गया। उसका स्टूडियो अंधेरी में था, स्टेशन आकर उसने गोरे गांव का टिकट लिया।

गोरे गांव में रघुनाथ दादा का पता लगा कर रामेश्वर उसके स्थान पर पहुंचा। रघुनाथ उस समय अपने घर में ही था। रामेश्वर को देखते ही उसने बड़े तपाक के साथ कहा, "बड़े बखत से आए भइया! हम तो तुम्हारी आशा ही छोड़ चुके थे! तुमने अपनी पान की दूकान छोड़ दी। वहां मैंने तुम्हारी खोज-खबर के लिए आदमी भेजा था।"

रामेश्वर ने कहा, "क्या बताएं दादा! पान की दूकान तो ऐसे ही कर ली थी। तो उसे बन्द कर दिया!"

"तो फिर अब क्या कर रहे हो?" रघुनाथ ने पूछा।

"अभी तो कुछ भी नहीं। अच्छा काम ढूंढ़ रहे हैं जिसमें अच्छी रकम मिले।"

रघुनाथ ने आंख मारते हुए कहा, "भइया, जितनी बड़ी रकम होती है उतनी ही बड़ी जोखिम भी होती है! रघुनाथ दादा लाखों का आदमी है लेकिन रघुनाथ दादा जोखिम भी उठाता है!"

"किस तरह की जोखिम उठानी पड़ती है?" रामेश्वर ने कौतूहल के साथ पूछा।

"हमारे साथ चलो तो हम बतावें।" रघुनाथ ने कहा।

रामेश्वर को साथ लेकर रघुनाथ एक तबेले में पहुंचा। उस तबेले में दो भैंसें और दो गाएं थीं। कुछ दूर हट कर एक मोटर-ट्रक खड़ी थी। दो आदमी चारपाइयों पर लेटे थे। रघुनाथ के आते ही वे दोनों आदमी उठ कर खड़े हो गए। रघुनाथ ने रामेश्वर से कहा "यह तबेला है। दो भैंसें मैंने बेंच दी, कौन सम्हाले इनको। ये मेरे दो आदमी! ये दूध का काम जानते ही नहीं। तो तुम यह तबेला ले लो। चार भैंसें और दो गाएं मैं और खरीद दूंगा तुम्हें।"

"लेकिन यह तबेला चलाना तो कोई जोखिम का काम नहीं।" रामेश्वर ने कहा।

"जोखिम की बात पर मैं अब आता हूं। यहां से शहर दूध ले जाने के लिए एक मोटर है—वह खड़ी है, देख रहे हो न। तो उस मोटर में अकेले दूध नहीं जाता, उसमें बेवड़ा (देशी शराब) भी जाता है।"

"बेवड़ा जाता है? तो क्या बेवड़ा भी यहां से ले जाना पड़ेगा?"

रघुनाथ हँस पड़ा, "भइया, फायदा दूध में अधिक नहीं है, फायदा है बेवड़े में। यही तो जोखिम है। लेकिन इसम घबराने की कोई बात नहीं। पुलिस वाले सब अपने ही आदमी हैं; सब लोग मिल-बांट कर खाते हैं। दूध का जितना मुनाफा वह तेरा, बेवड़े का मुनाफा मेरा! समझ गया न!"

रामेश्वर कुछ देर तक सोचता रहा; मन ही मन वह संकल्प-विकल्प करता रहा। अन्त में उसने कहा, "समझ तो गए हम! लेकिन दादा, यह काम हम न कर सकेंगे।"

"भइया! ऐसे मौके बेर-बेर नहीं आते! साल भर में लखपती

बन जायगा तू। बेवड़े के मुनाफे पर मैं तेरा हिस्सा लगा दूंगा। और तेरे को कुछ करना भी नहीं ।"

रामेश्वर ने सर हिलाते हुए कहा, "दादा! रामेश्वर भइया गरीबी पसन्द करेगा, लेकिन ऐसे काम में हाथ नहीं डालेगा ।"

रघुनाथ ने कहा, "जैसी तेरी मरजी भइया ।" और एकाएक उसने बढ़ कर रामेश्वर का हाथ पकड़ लिया, "लेकिन तू मेरे काम को जान गया है भइया ।"

रामेश्वर ने शांत भाव से उत्तर दिया, "उस तरफ से निश्चिन्त रहो दादा । दगाबाजी करने के बजाय मैं मर जाना ज्यादा पसन्द करूंगा । तुम समझ लो कि रामेश्वर भइया ने कभी तुम्हारा तबेला देखा ही नहीं। अच्छा, अब इजाजत दो!"

रघुनाथ ने रामेश्वर का हाथ छोड़ दिया, "अच्छी बात है भइया! आज तेरी समझ में मेरी बात नहीं आई, लेकिन मेरा मन बोलता है कि कभी न कभी तेरी समझ में मेरी बात आवेगी जरूर । रघुनाथ दादा को याद रखना । जब कभी मुसीबत पड़े, मेरे पास चले आना ।"

रामेश्वर गोरे गांव से सीधे अपने घर पहुंचा। उसका मन उस समय भारी था। आज दिन में उसने जो कुछ भी देखा था, वह सब का सब कुरूप था । वह सोच रहा था कि विधि ने इतनी कुरूपता का निर्माण क्यों किया । उसे एक तरह से ईश्वर पर ही क्रोध आ रहा था ।

और इस प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ते-ढूंढ़ते उसकी दृष्टि उसके ही विगत जीवन पर जा पड़ी । अभी तक उसने जो कुछ किया क्या वह उचित था? कम से कम अपनी दूकान के तगादे का चार हजार रुपया जो वह जूए में हार गया था—क्या वह नैतिक काम था? क्या वह

अपराध न था ? और वह अपने से ही पूछ बैठा, "क्या बिना अपराधी बने ऊपर उठ सकना, लखपती या करोड़पती बन सकना संभव है ? क्या यह आगा-पीछा सोचना, क्या यह न्याय का भय कायरता नहीं है ?"

इक्कीसवाँ परिच्छेद

डाइरेक्टर प्रेमकिशन में और हीरो किशोर में जो झगड़ा हुआ था उसमें दोष किसका था यह कहना कठिन है। जिस समय झगड़ा शुरू हुआ था उस समय स्टूडियो के प्रायः सभी लोग वहां मौजूद थे, एक सेठ शिवकुमार को छोड़कर। लेकिन कोई भी स्पष्ट-रूप से यह नहीं कह सकता था कि यह झगड़ा किसने शुरू किया। राधा, राजीव लहरी तथा अन्य दो एक लोगों का कहना था कि इसमें दोष प्रेम-किशन का था। प्रेमकिशन के पक्षपातियों का कहना था कि दोष किशोर का था! लेकिन कोई भी किसी का दोष साबित न कर सकता था।

बात उस समय आरंभ हुई जब शूटिंग हो रही थी। किशोर केमरा के सामने खड़ा था और अपना डाइलाग बोल रहा था। लेकिन उस दिन उसे न जाने क्या हो गया था कि वह बेर-बेर अपना पार्ट भूल जाता था। करीब तीन रिटेक्स के बाद प्रेमकिशन ने झल्ला कर कहा "किशोर! इसी बिरते पर हीरो का काम करने चले हो। अगर इस तरह काम करोगे तो हो चुकी पिक्चर पूरी! अच्छा मैं फिर से शाट लेता हूं। अब की दफे अपना डायलाग अच्छी तरह याद कर लो।"

प्रेमकिशन ने शाट लिया। किशोर इस बार बिना रुके हुए पूरा डायलाग बोल गया, लेकिन डायलाग के शब्दों में कुछ परिवर्तन हो गए थे। प्रेमकिशन ने कहा, "किशोर तुमने अपना डाइलाग बदल दिया है, मुझे फिर से यह शाट लेना पड़ेगा।"

किशोर ने उत्तर दिया, "डाइलाग जो मैंने बदल दिया वह सोच

समझ कर बदला है। मैंने पहले जो लिखा था वह ठीक नहीं था इस दफे मैंने उसे ठीक कर दिया है।"

प्रेमकिशन ने कहा, "जो पहला डाइलाग था वही ठीक था, यह शाट मुझे फिर से लेना पड़ेगा।

किशोर अकड़ गया, "डाइलाग्स मैंने लिखे हैं! क्या ठीक है और क्या गलत है यह तो मैं समझ ही सकता हूं।"

प्रेमकिशन चिढ़ गया, "हां मेरे डाइलागों का तर्जुमा तुमने जरूर अंग्रेजी से हिन्दी में किया है। लेकिन सही मतलब क्या है और क्या चीज सुनने में अच्छी लगती है क्या बुरी लगती है इसका तजुर्बा तुम्हें नहीं है। मुझे यह शाट फिर से लेना ही पड़ेगा।"

किशोर चुप हो गया इस लिए कि चुप हो जाने के सिवा उसके पास कोई चारा न था। शाट फिर से लिया गया। इस घटना के बाद प्रेमकिशन और किशोर में एक हलकी सी तनातनी हो गई। दोपहर में लंच के बाद किशोर का एक भी शाट ठीक नहीं उतरा। प्रेमकिशन ने चार बजे ही शूटिंग बन्द कर दी। उसने चलते हुए किशोर से कहा, "किशोर जब स्टूडियो में आया करो तो अपना मिजाज ठीक करके आया करो।"

और किशोर ने उलट कर उत्तर दिया, "मिजाज आप अपना ठीक करके आइये प्रेमकिशन जी! डाइरेक्शन की तमीज नहीं और दूसरों को दोष देने लगे।"

प्रेमकिशन चलते-चलते रुक गया, "क्या कहा, मुझे डाइरेक्शन की तमीज नहीं। तो अब आपको एक्टिंग सिखाने के बजाय मुझे आपसे डाइरेक्शन सीखना पड़ेगा।" और प्रेमकिशन हँसता हुआ चला गया।

लेकिन प्रेमकिशन की वह हँसी मीठी न थी। एक अजीब तरह का रूखापन उस हँसी में था, एक अजीब तरह की कटुता उसमें थी।

वह बात हँसी में नहीं कही गई थी, हँसी करने का वह मौका भी नहीं था। किशोर ने जो बात कही थी उसमें जितनी कटुता थी उसकी कई गुनी कटुता उस हँसी में भर गई थी। इस बात को वहाँ मौजूद हरेक व्यक्ति ने अनुभव किया। प्रेमकिशन अपने स्टूडियो से निकल कर अपने कमरे में चला गया। एसिस्टेण्ट डाइरेक्टर से शूटिंग-स्क्रिप्ट निकलवा कर उसने पूछा, "किशोर की कितनी शूटिंग हुई है, जरा हिसाब लगा कर तो बतलाओ।"

असिस्टेण्ट डाइरेक्टर ने हिसाब लगा कर बतलाया, "कोई चार सौ फीट। अभी यह पहला ही सेट तो चल रहा है।"

कुछ सोचते हुए प्रेमकिशन ने कहा, "हाँ, यह पहला ही सेट तो है, और यह हीरोइन का सेट है, लिहाजा इसमें सबसे अधिक काम है हीरोइन का। हीरोइन के पिता, हीरोइन की माता, विलेन सभी इस सेट में आते हैं। इस सेट पर बिना किशोर के अभी चार दिन तक शूटिंग हो सकती है। अच्छा जरा रंजन को फोन करो।"

असिस्टेण्ट ने फोन रंजन से मिला दिया। प्रेमकिशन ने रिसीवर हाथ में लेते हुए कहा, "हलो रंजन। मैं हूँ प्रेमकिशन। हाँ, कल स्टूडियो आ जाओ।.......लेकिन.... यह लेकिन क्या? क्या कहा? पचीस हजार? एब्सर्ड! बड़ी मुश्किल से सेठ को पन्द्रह हजार पर राजी किया है; बाधाएं अब भी मेरे सामने हैं। अच्छा-अच्छा। वादा नहीं कर सकता लेकिन कोशिश करूँगा, बीस हजार पर सेठ जहाँ तक मेरा ख्याल है राजी न होंगे......हाँ......हाँ तुम्हीं बात कर लेना! तो कल ग्यारह बजे आ जाना।" और प्रेमकिशन ने रिसीवर रख दिया।

कहाँ क्या हो रहा है, इसकी खबर स्टूडियो में न जाने कैसे लोगों को बड़ी जल्दी लग जाया करती है। जिस समय प्रेमकिशन रंजन को फोन कर के बैठा उसी समय राधा किशोर से कह रही थी, "रंजन को प्रेमकिशन ने फोन किया है। तुमने प्रेमकिशन से

इतनी बड़ी बात कहके अच्छा नहीं किया किशोर! प्रेमकिशन बड़ा जिद्दी है, यह तो तुम जानते ही हो।"

किशोर का पारा इस समय काफी अधिक चढ़ा था, "लेकिन मैंने गलत क्या कहा? प्रेमकिशन को डाइरेक्शन की तमीज ही क्या? मैं कहता हूँ कि उससे अच्छा डाइरेक्शन तो जगमोहन कर सकते हैं, मैं कर सकता हूँ। राधा, प्रेमकिशन के रहते तो यह पिक्चर अच्छी नहीं बन सकती। क्यों जगमोहन जी, आप का क्या ख्याल है? क्या आप डाइरेक्शन का काम सम्हाल सकते हैं?"

इस झगड़े की बात सुनकर जगमोहन वहां आ गया था। जगमोहन बोला, "काम सम्हाल सकता हूँ? यह तुमने एक हो कही। अरे डाइ-रेक्शन के मामले में मैं प्रेमकिशन को पढ़ा सकता हूँ। लेकिन भला जगमोहन की बात कौन सुनता है। प्रेमकिशन के पास लम्बी-लम्बी बातें हैं, जाल-फरेब हैं। राधा, सेठ से कहो न मेरी बाबत।"

सर हिलाते हुए राधा ने कहा, "बेकार। सेठ तुम्हें इस पिक्चर में डाइरेक्शन का काम किसी हालत में न देंगे। किशोर! मैं कहती हूँ कि इस पिक्चर में प्रेमकिशन से बिगाड़ मत करो, इसे किसी तरह पूरी हो जाने दो। अगले पिक्चर में मैं उसे समझ लूंगी—इतना वादा करती हूं।"

"लेकिन इस पिक्चर में वह मुझे समझ लेगा।" निराश भाव से किशोर ने कहा, "तुम्हीं कह रही हो कि उसने रंजन को फोन किया है। इसके माने हैं कि वह मुझे हटाकर मेरी जगह रंजन को लाने पर तुल गया है। और वह मुझे बड़ी आसानी से बदल सकता है, अभी मेरा काम ही कितना हुआ है। यह तो चमेली के मकान का सेट है, इसमें सिर्फ दो सीन मेरे हैं, कुल दो-तीन दिन का काम। फिर यह सेट लगा हुआ है, रंजन इस सेट पर कल से ही काम शुरू कर सकता है।"

किशोर ने जो कुछ कहा उसमें तथ्य था। राधा सोचती रही, फिर वह उठ खड़ी हुई। उसने कहा, "प्रेमकिशन तुम्हें बदलेंगे कैसे? ऐसे हंसी-खेल हो गया तुम्हें बदल देना, जैसे कम्पनी सेठ की न हुई बल्कि प्रेमकिशन की हुई। देखती हूं चल कर, सेठ के आने का वक्त हो गया है। इसके पहले कि प्रेमकिशन सेठ से मिल कर बातचीत करे, मैं सेठ से मिल लेना चाहती हूं।"

राधा जिस समय शिवकुमार के कमरे में पहुंची, शिवकुमार आ चुके थे। राधा ने देखा कि शिवकुमार के सोफा पर चमेली प्रायः लेटी सी है और सोफा की बगल में कुरसी डाले शिवकुमार चमेली का हाथ पकड़े हुए बैठा बात कर रहा है। राधा के प्रवेश करते ही चमेली ने अपना हाथ छुड़ा लिया और सम्हल कर बैठ गई। शिवकुमार ने राधा से मुसकराते हुए कहा, "अभी अभी चमेली से स्टूडियो की सब बात चीत सुन चुका हूं।" फिर थोड़ा-सा गम्भीर होकर उसने कहा, "लेकिन जो कुछ हुआ वह बुरा हुआ।"

राधा एक कुर्सी खिसका कर शिवकुमार के पास बैठ गई। "अभी क्या बुरा हुआ है, बुरा तो अब होने वाला है। सेठ, तुमने प्रेमकिशन की मर्जी के खिलाफ किशोर को हीरो बना कर अच्छा नहीं किया। अभी थोड़ी देर पहले प्रेमकिशन ने रंजन को फोन किया है, शायद वह किशोर को हटा कर उसकी जगह रंजन को लाना चाहते हैं।' पहले से ही वह रंजन पर जोर दे रहे थे, और उसी रंजन को लाने के लिए उन्हें किशोर का काम अच्छा नहीं लगता था।"

शिवकुमार ने सर हिलाते हुए कहा, "शायद तुम ठीक कह रही हो राधा, लेकिन जहां तक मैं समझता हूं प्रेमकिशन की किशोर से कोई दुश्मनी नहीं और न रंजन से प्रेमकिशन की कोई रिश्तेदारी है। किशोर को चाहिए था कि वह प्रेमकिशन को खुश रखता। आखिर प्रेमकिशन ही तो पिक्चर के डाइरेक्टर हैं। क्यों चमेली रानी? क्या खयाल है तुम्हारा?"

चमेली इस मामले में तटस्थ रहना चाहती थी, लेकिन उसे उत्तर देना ही पड़ा, "हां, गलती इसमें किशोर की जरूर है, लेकिन शायद वह इतनी बड़ी गलती नहीं थी कि डाइरेक्टर साहेब किशोर को निकाल बाहर करने का कदम उठा लें।"

इसी समय प्रेमकिशन ने कमरे में प्रवेश किया। प्रेमकिशन की मुद्रा इस समय काफी गम्भीर थी। उसने आते ही कहा, "सेठ! आपसे कुछ बहुत जरूरी बातें करनी हैं।"

"बैठिये डाइरेक्टर साहेब। मुझे मालूम है कि आपको मुझसे क्या बातें करनी हैं।" और यह कहकर शिवकुमार ने घंटी बजाकर नौकर को बुलाया, "एक ट्रे में चार प्याले चाय के लाओ।"

थोड़ी देर तक सब लोग चुप बैठे रहे, फिर शिवकुमार ने कहा, "जो कुछ हुआ वह अच्छा नहीं हुआ। प्रेमकिशन जी। जो कुछ तै करना था वह तस्वीर शुरू करने के पहले तै कर लिया जाना चाहिए था। बीच तस्वीर में तो इस प्रकार की बाधाएं ठीक नहीं।"

प्रेमकिशन ने उत्तर दिया। "सेठ! आप सब लोग अच्छी तरह जानते हैं कि मैं शुरू में ही किशोर को लेने के पक्ष में न था। मुझे तो मजबूर होकर किशोर को लेना पड़ा है। किशोर ने न अभी तक ठीक तरह से काम किया है, न वह आगे ठीक तरह से काम करेगा, क्योंकि वह ठीक तरह काम कर ही नहीं सकता। और इसलिए इस पिक्चर के रिटेक्स में इतना अधिक नुकसान हो जायगा कि जिससे आप एक अच्छा हीरो आसानी से ले सकते हैं।"

और एक व्यंग की हँसी हँसते हुए राधा ने कहा, "जी हां! रंजन को बीस हजार रुपए दिलवाने हैं न आपको! फिर भला बेचारे किशोर की क्या मजाल कि वह आपकी पिक्चर में काम कर सके!"

राधा के व्यंग से झल्ला कर प्रेमकिशन ने कहा, "जो काम करेगा वह रुपए भी लेगा, और जो जितना अच्छा काम करेगा, वह उतना

ही अधिक रुपया लेगा राधा देवी। अगर आपको रंजन नापसन्द है तो अमिताभ को बुलाइये। वह तीस हजार से एक पैसा कम पर राजी नहीं है।"

"लेकिन आपने तो रंजन को तै कर रक्खा है। स्टूडियो से निकलते ही बिना सेठ से बात किये आपने रंजन को फोन किया है। कल आपने उसे बुलाया भी है। इसके माने यह हैं कि जो कुछ प्रेमकिशन साहेब चाहेंगे वह होगा!

और होना भी चाहिए। प्रेमकिशन साहेब डाइरेक्टर हैं, वह कम्पनी को बना सकते हैं, बिगाड़ सकते हैं।" राधा अपना ताना-बाना बुन रही थी, और प्रेमकिशन उस ताने बाने में फंसता जा रहा था। चमेली ने आश्चर्य से राधा को देखा। वह यह नहीं जानती थी कि समय पड़ने पर राधा इतनी वाचाल हो सकती है, इतनी चतुरता से भरी बात कर सकती है!

और न जाने क्यों चमेली ने राधा के प्रति अपने में एक प्रकार की प्रतिद्वंद्विता अनुभव की। वह अनायास ही कह उठी, "यह बात कहने की जरूरत क्या है राधा? जिस आदमी के हाथ में कम्पनी की तस्वीर बनाने का काम है उसी के हाथ में कम्पनी को बनाना और बिगाड़ना भी है। और मेरा खयाल यह है कि प्रेमकिशन जी ने रंजन को जो फोन किया, उसमें एक तो उनका क्षणिक आवेश रहा होगा और उसके साथ ही वह शायद रंजन को उस पार्ट के लिए अच्छा भी समझते हों।"

राधा ने चमेली से यह बात सुनने की कल्पना तक न की थी; उसे आश्चर्य हुआ। चमेली को क्या पड़ी थी कि वह राधा की बात में कूद पड़ी। राधा ने चमेली की ओर एक दृष्टि डाली, उस दृष्टि में उलाहना था, विवशता की करुणा थी। और राधा की उस दृष्टि से चमेली पसीज गई। उसने अनुभव किया कि वह बेकार ही यह

सब कह गई। अपनी बात के प्रभाव को मिटाने के लिए उसने कुछ रुक कर कहा, "लेकिन प्रेमकिशन जी! स्टूडियो में जो कुछ हुआ वह इतनी अधिक गम्भीर बात नहीं थी कि आप इतना अधिक आवेश में आ जाते! आप किशोर को डांट सकते थे।"

"मैं किशोर को डांट सकता हूं—मैं, जिसे डाइरेक्शन करने तक की तमीज नहीं! मैं आप लोगों से कहता हूं कि किशोर यह पार्ट नहीं कर सकता, इस पार्ट के लिए किसी दूसरे आदमी को चुनना पड़ेगा।"

अब शिवकुमार के वोलने की बारी थी, "आप ठीक कहते हैं प्रेम-किशन जी। मुझे ऐसा दिखता है कि आप में और किशोर में इतना अधिक संघर्ष हो गया है, इतनी अधिक कटुता आ गई है कि आप किशोर को अपनी पिक्चर में रख ही नहीं सकते। यह बात नहीं कि किशोर में कोई अच्छी बात हो ही नहीं, या किशोर हीरो बनने के सर्वथा अयोग्य हो। किशोर से कहीं गिरे हुए आदमी फिल्मों में सफलतापूर्वक हीरो का काम कर रहे हैं। पर आप की जो मानसिक अवस्था है उसमें आप किशोर को नहीं वर्दाश्त कर सकते। मैं समझता हूं कि मैं गलत नहीं कह रहा।"

प्रेमकिशन ने सकपकाते हुए कहा, "नहीं, ऐसी बात नहीं है। मैं तो पिक्चर के हित में यह सब कह रहा था, आप लोग मुझे गलत न समझें। मेरी किशोर से कोई निजी दुश्मनी नहीं है। अगर आप लोग चाहते हैं कि मैं किशोर से ही काम चलाऊं तो मैं तैयार हूं, लेकिन इस बात की जिम्मेदारी आप लोगों पर है कि फिर आगे सेट पर किशोर ऐसी वदतमीजी न करे और जैसा मैं कहूं वैसा ही करे!"

शिवकुमार ने कहा, "धन्यवाद प्रेमकिशन जी! मैं आपसे इतना कह सकता हूं कि मेरी किशोर में कोई दिलचस्पी नहीं और न मैं आप पर इस वात का जोर ही डालता हूं कि आप किशोर से ही

हीरो का काम लें। लेकिन मैं इतना समझता हूं कि बीच पिक्चर में किसी ऐक्टर को, और खास तौर से हीरो को बदलने से कम्पनी की ही नहीं वरन् आपकी भी बदनामी होगी। बदलने का काम तभी होना चाहिए जब इंसान इसके लिए मजबूर हो जाय!"

इस समय तक सब लोग चाय खत्म कर चुके थे। राधा ने चमेली के कान में कहा, "चमेली! इस वक्त तुमने हम लोगों की बहुत बड़ी मदद की तुमसे कुछ खास जरूरी बातें करनी हैं।"

प्रेमकिशन ने उठते हुए कहा, "अच्छी बात है सेठ! लेकिन डिसिप्लिन के लिहाज से यह आवश्यक है कि किशोर मुझ से लिखित माफी मांगे और वह माफीनामा एक हफ्ते तक नोटिस बोर्ड पर लगा रहे।"

"हां, इस बात को मैं भी ठीक समझता हूं।" यह कह कर शिवकुमार ने घंटी बजाकर चपरासी को बुलाया। चपरासी से शिवकुमार ने कहा, "किशोर जी से कहना कि वह कल दस बजे सुबह मुझ से दफ्तर में मिलें।"

प्रेमकिशन के कमरे के बाहर जाते ही राधा के साथ चमेली भी उठ खड़ी हुई। शिवकुमार ने चमेली से कहा, "देखा तुमने! जरा-जरा सी बात पर ये लोग इस बुरी तरह लड़ जाते हैं। और इस सब में नुकसान कम्पनी का होता है।" और थोड़ी देर तक सोचने के बाद वह हँस पड़ा, "किशोर लड़का तो बुरा नहीं है, लेकिन अजहद जिद्दी है।"

चमेली ने शिवकुमार की बात का कोई उत्तर नहीं दिया, शायद उसके उत्तर की शिवकुमार को आवश्यकता भी नहीं थी। वह उठ खड़ी हुई, "अब चलूं सेठ—इन बातों से जी ऊब गया है।"

शिवकुमार ने चमेली को रोकते हुए कहा, "अरे यह तो रोज का

बातें हैं, अगर इन बातों में उलझने लगूं तो मैं धंधा कर चुका। तुम्हें कोई खास काम तो नहीं है, आज पिक्चर देखने का इरादा है।"

चमेली मुसकराई, "तो क्या मुझे भी तुम्हारे साथ चलना होगा?"

"अगर साथ किया है तो साथ निबाहना भी पड़ेगा।" शिवकुमार ने मुसकराते हुए उत्तर दिया।

बाईसवाँ परिच्छेद

सिनेमा देख कर जिस समय चमेली घर वापस लौटी उस समय उसके ड्राइंगरूम में काफी चहल-पहल थी ! राधा, किशोर, जगमोहन और रामेश्वर सब लोग बैठे हुए आपस में जोर-जोर से बातें कर रहे थे। चमेली को देखते ही राधा बोल उठी, लो यह भी आ गईं। अब सारी बात इन पर है, यही इस मामले को सुलझा सकती हैं।"

किस मामले की बात हो रही है, चमेली को यह समझते देर न लगी। उसने कहा, "इतनी जल्दी क्या है, अभी थकी हुई आई हूं फिर बातें कर लेना।"

इस पर किशोर ने उत्तर दिया, "चमेली देवी—यह मेरे अस्तित्व का, मेरे जीवन-मरण का सवाल है—और इसमें तुम ही मुझे बचा सकती हो।"

इसके पहले कि चमेली कोई उत्तर दे, रामेश्वर ने पूछा, "किशोर—मामला तुम्हारे और साहेब के बीच का है—उसमें यह चमेली किस तरह तुम्हारी मदद कर सकती है?"

राधा रामेश्वर के महत्व को समझ गई, उसने कहा, "बात यह है कि हम सब किशोर का पक्ष ले रहे हैं। अगर चमेली भी इनका पक्ष ले तो हम लोगों को बल मिल जाय।"

लेकिन किशोर में राधा की न बुद्धिमानी थी, न अनुभव था। उसने कहा, "रामेश्वर जी—सेठ चमेली को बेहद मानते हैं, चमेली देवी की बात वह किसी हालत में नहीं टाल सकते। अगर यह सेठ से जिद पकड़ लें तो डाइरेक्टर साहेब को कल ही अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़े। क्यों जगमोहन भइया—और जगमोहन पिक्चर डाइरेक्ट कर लेंगे।"

"अच्छा!" रामेश्वर के मत्थे पर बल पड़ गए, "तो चमेली का तुम लोगों के स्टूडियो पर इतना अधिकार है! तुम लोगों का भाग्य अब चमेली के हाथ में है?"—और यह कहते-कहते रामेश्वर जोर से हंस पड़ा।

चमेली वैसी की वैसी खड़ी रही। जितनी भी बातचीत उस समय वहां हुई वह एक अजीब तरह की कुरूपता से भरी हुई थी। और सबसे बड़ी चीज तो यह कि वह बातचीत सत्य थी। चमेली ने अब उत्तर दिया, "किशोर जी, मेरा अधिकार समझने में आप भूल करते हैं—उस स्टूडियो में मेरा उतना ही अधिकार है जितना आपका है। और जो सत्य है, न्याय है, उसका मैं विरोध क्यों करूं? आखिर डाइ-रेक्टर साहेब ने मेरा क्या बिगाड़ा है जो मैं उनके खिलाफ झूठ-मूठ शिकायत करूं? अब आप लोग जाइये, मैं थकी हुई आ रही हूं!"

किशोर ने एक प्रयत्न और किया, "मुझे आप से बहुत सहारा था चमेली देवी, विपत्ति-काल में आखिर अपने ही लोग तो काम आते हैं। मैं आप से बिनती करता हूं, आपके हाथ जोड़ता हूं, मेरी लाज आपके ही हाथों है।"

किशोर की अनर्गल बातों पर और बेवक्त तथा गलत ढंग से कही जाने वाली बातों पर चमेली को धीरे-धीरे क्रोध आ रहा था, इस समय उसका क्रोध एकाएक ही फूट पड़ा, "किशोर जी, आप मुझे अपनों में क्यों गिन रहे हैं? आखिर मैं आपके संबंध में क्या जानती हूं? मेरा आपका परिचय ही क्या? यही न कि आप राधा के साथ रहते हैं। तो आप राधा को अपनी मानें—कृपा करके मेरा शुमार आप अपनों में न करें!" और चमेली उस कमरे से चली गई।

चमेली के उस अनायास विस्फोट से किशोर को तो बुरा लगा ही, पर किशोर से अधिक बुरा लगा राधा को। म्लान-मुख वह उठ खड़ी हुई, "चलो किशोर—इनके दिमाग बहुत ऊंचे चढ़ गए हैं।

अब ये तो बिल्कुल मालकिन की सी बातें करने लगी हैं। चलो, अपने यहाँ बैठ कर सोचें कि क्या किया जाय।"

जगमोहन, किशोर और राधा तीनों ही उठ खड़े हुए। लेकिन उसी समय रामेश्वर ने, जो उस समय खिड़की के बाहर देख रहा था, लेकिन जिसके कान सावधानी से सब कुछ सुन रहे थे, घूम कर कड़े स्वर में कहा, "राधा, मैं तुम्हारी इस बात का मतलब नहीं समझा, जरा मुझे समझाती जाओ!"

जगमोहन ने स्थिति की गम्भीरता समझ ली। वह बोला, "अरे रामेश्वर भइया तुम भी औरतों की बातों पर ध्यान देने लगे—क्रोध में आकर ये सब न जाने क्या-क्या कह डालती हैं। अच्छा, अब चलें, खाने का वक्त हो रहा है!"

बात आगे नहीं बढ़ी—पर वह बात रामेश्वर के हृदय में जम कर बैठ गई।

रामेश्वर ने चमेली से उस संबंध में कोई बात नहीं की—यद्यपि उसके मन में यह बार-बार आ रहा था कि वह बात करे। आखिर बात ही क्या थी? एक गैर-जिम्मेदार स्त्री द्वारा चमेली पर एक प्रकार का अस्पष्ट और उड़ता हुआ सा आरोप! पर जो आरोप किया गया, वह आसानी से नहीं किया जाता; उस आरोप के पीछे कोई बल तो होना ही चाहिए!

और चमेली ने भी राधा की बात सुन ली थी, साथ ही उसने रामेश्वर के उस कठोर स्वर में किये गए प्रश्न को भी सुना था। तो फिर सत्य तह पर आ रहा है, हजार परदों के पीछे किया जाने वाला पाप भी प्रकट हो जाता है। लेकिन किशोर और राधा को यह सब कहने का क्या अधिकार था? चमेली एकाएक सिहर उठी। क्या बात और भी आगे बढ़ेगी? क्या रामेश्वर, जो कुछ हो रहा है, उससे

अधिक दिनों तक अनभिज्ञ रह सकता है? क्या चमेली अपना जीवन, फिर से नहीं बदल सकती?

दूसरे दिन जब चमेली स्टूडियो गई—तब उसके अन्दर बेहद तनाव था। एक झुंझलाहट, एक कटुता और एक प्रकार की बदला लेने की भावना उसके अन्दर थी। स्टूडियो पहुंच कर उसने चपरासी से पुछवाया कि क्या प्रेमकृष्ण आ गए हैं? उत्तर में स्वयं प्रेमकृष्ण उसके कमरे में आ गए। "आपने मुझे याद किया था?" प्रेमकृष्ण ने मुस्कराते हुए कहा।

"अरे, आपने इतनी तकलीफ क्यों की, मैं तो खुद आपके यहां आ रही थी। आदमी को सिर्फ इसलिए भेजा था कि वह देखे कि आप आ गए हैं या नहीं!" चमेली के मुख पर एक कटुता से भरी गम्भीरता थी—एक प्रकार का प्रतिशोध से भरा संकल्प था!

"हर्ज क्या है, मैं ही चला आया! लेकिन देख रहा हूं आप बड़ी गम्भीर हैं। क्या मुझसे नाराज हैं आप? किशोर का मामला तो सुलझ गया है।"

"अभी किशोर का मामला नहीं सुलझा है प्रेमकिशन जी!" चमेली ने रूखे स्वर में कहा, "उसके संबंध में ही आपसे बात करना चाहती थी।"

"लेकिन किशोर को माफी तो मांगनी ही पड़ेगी; देखिये, यह मेरे स्वाभिमान का प्रश्न है, इस मामले में आप मुझसे कोई आग्रह न करें, क्योंकि आप का आग्रह टालने की सामर्थ्य मुझमें नहीं है—और इसमें मैं अपने ही साथ अन्याय कर बैठूंगा!"

चमेली के मुख पर एक व्यंगात्मक मुसकराहट आई, "क्या आप समझते हैं कि माफी मांगने पर किशोर बदल जायगा?" प्रेमकृष्ण चमेली के इस प्रश्न का मतलब न समझ सका। "इसमें बदलने या न बदलने का सवाल नहीं उठता—"

"आप हद से ज्यादा बेवकूफ हैं!" चमेली ने तैश में आकर कहा, "यह किशोर आपकी जड़ उखाड़ फेंकेगा; दुश्मनी की गांठ जब पड़ जाती है तब आदमी सब कुछ कर सकता है प्रेमकिशन जी, अपने शत्रु को जो जीवित रहने देता है वह अपना विनाश ही आमन्त्रित करता है!"

चमेली की यह बात सुनकर प्रेमकिशन थोड़ी देर के लिए स्तब्ध रह गया। फिर उसने दबी जबान पूछा, "क्या आपका मतलब है"—और उसकी बात आगे न बढ़ सकी, क्योंकि चमेली ने उसी समय उसकी बात काटते हुए कहा, "मेरा मतलब है कि आप किशोर को निकाल दीजिये, चाहे वह एक नहीं हजार दफे आप से माफी मांगे, आपके पैरों पर गिरे। किशोर आपको निकालने की योजना बना रहा है, इस योजना में वह मुझे शामिल करना चाहता था। इसलिए मैंने आपको आगाह कर देना अपना कर्त्तव्य समझा! राधा और जगमोहन किशोर का साथ दे रहे हैं!"

"और आप मेरा साथ देंगी—आप यह वादा करती हैं?"

"मैं वादा नहीं करती—जो ठीक होता है मैं उसे करती हूं और हमेशा उचित के साथ हूं। बस मैं अपनी बात कह चुकी।"

प्रेमकिशन ने इस बात की कल्पना ही न की थी कि चमेली उसके मामले में इतनी दिलचस्पी लेगी। उसने मुसकराते हुए कहा, "बहुत-बहुत धन्यवाद चमेली देवी! किशोर को मैं आज की ही शूटिंग में अपमानित करके निकालूंगा।"

शूटिंग शुरू हुई और किशोर मेकअप किये हुए रिहर्सल के लिए खड़ा हुआ। प्रेमकिशन ने एक रिहर्सल लेने के बाद किशोर से कहा, "किशोर! तुमने अभी तक लिखी हुई माफी नहीं मांगी? जब तक तुम माफी नहीं मांगते तब तक शूटिंग नहीं हो सकती।"

किशोर सुबह के समय ही एक माफीनामा लिखकर शिवकुमार

को दे आया था। पर प्रेमकिशन का यह टोकना उसे अच्छा नहीं लगा, उसने कहा, "क्या इस संबंध में आप सेठ से बात कर चुके हैं?"

राधा वहीं पास बैठी थी; उसने कहा, "किशोर जी माफीनामा सेठ को दे चुके हैं।"

"लेकिन वह माफी तो मुझसे मांगनी थी।" प्रेमकिशन हंस पड़ा, "कोई बात नहीं—" और उसने असिस्टेन्ट डाइरेक्टर से कहा "देखो, वह माफीनामा नोटिस-बोर्ड पर टंग गया है कि नहीं, अगर अभी तक नहीं टंगा है तो सेठ से उसे लेकर उसकी नकल नोटिसबोर्ड पर लगवा दो।—अच्छा—" प्रेमकिशन ने अब चिल्लाकर कहा, "रेडी—केमरा—साउण्ड—इट इज टेक!"

टेक शुरू हुआ। चमेली ने अपना संवाद कहा, उसके बाद किशोर का संवाद था। किशोर ने अपना आधा ही संवाद कहा था कि प्रेम-किशन ने चिल्लाकर कहा, "कट।"—और फिर उसने किशोर से कहा, "किशोर—तुम गलत बोल गए!"

"मैं तो गलत नहीं बोला, यही संवाद मुझे कहना था—यह डाइ-लाग की कापी है—"किशोर ने अपनी जेब से संवाद का कागज निकालते हुए कहा, "आप खुद देख लीजिए।"

"तो यह संवाद गलत लिख गया है।" प्रेमकिशन ने किशोर के हाथ से कागज लेकर कहा, "और उसी समय उसने उस संवाद में नाम-मात्र का परिवर्त्तन कर दिया, "तुम्हें यह संवाद बोलना है।"

"लेकिन इस संवाद में और जो पहले लिखा था, कोई अन्तर नहीं है। मैं तो समझता हूं कि पहले वाला संवाद कहीं अच्छा था।" किशोर ने उत्तर दिया।

"क्या अच्छा है और क्या बुरा है—जब मैं तुम्हारी राय मांगू तब बतलाना, इस समय तो तुम्हें यह संवाद कहना है।" प्रेमकिशन ने जरा रुखाई के साथ कहा।

"लेकिन संवाद तो मुझे बोलना है—आप का यह दूसरा संवाद व्याकरण के हिसाब से भी गलत है।"

अच्छा, तो अब मुझे आपसे व्याकरण की शिक्षा लेनी पड़ेगी, कल डाइरेक्शन की शिक्षा लेनी पड़ी थी। किशोर जी आप यहां एक्टिंग करने नहीं आए हैं, आप मुझे शिक्षा देने आए हैं।" और यह कह कर उसने आवाज दी, "मैकअप।"

शूटिंग खत्म हो गई। लोगों को ताज्जुब हो रहा था कि आज लड़ाई किस बात पर हो गई। राधा ने आगे बढ़ कर कहा, "डाइरेक्टर साहेब—इसमें इतना नाराज होने की क्या बात है? किशोर, जो डाइरेक्टर साहेब कहें वही कहो न।"

किशोर ने उत्तर दिया, "मुझे वह कहने में क्या एतराज है, वह तो बात चली थी तो मैंने बतला दिया था कि व्याकरण के हिसाब से यह डाइलाग कमजोर है। लेकिन अगर यह चाहते हैं तो मैं यही बोले देता हूं।"

प्रेमकिशन हँस पड़ा, "चाहने का वक्त निकल गया किशोर जी—अब तो मामला यहां है कि चीजें होकर रहेंगी इस तरफ, या उस तरफ! और मैं कहता हूं कि किशोर इस पिक्चर में हीरो का काम नहीं कर सकते।" यह कह कर प्रेमकिशन तेजी के साथ स्टूडियो से चला गया।

राधा का चेहरा उतर गया। चमेली इस सब झगड़े में पीछे जाकर एक कुरसी पर बैठ गई थी। राधा चमेली की ओर मुड़ी, "तुमने देखा चमेली—सेठ के सामने तुम्हें यह सब कहना होगा। इतना ज्यादा दिमाग बढ़ गया है इस आदमी का।"

चमेली ने कहा, "मुझे इस सब में मत डालो।"

राधा ने तेज होकर कहा, "क्यों न डालूं—तुम्हारे सामने ही तो यह सब हुआ है—सरासर डाइरेक्टर साहेब की ज्यादती है!"

चमेली ने मुसकरा कर कहा, "हो सकता है, लेकिन मैं समझती हूं इसमें किशोर जी की भी गलती है। जो कुछ डाइरेक्टर कहें, वह न करके बहस-मुबाहिसा छेड़ देना, यह तो अच्छी बात नहीं है।"

राधा ने चमेली को सर से पैर तक देखा, "अच्छा रानी जी यहां तक बात पहुंच गई है।"

चमेली ने राधा की इस बात का कोई उत्तर न दिया, वह उठ खड़ी हुई। राधा अब सांपिन की तरह फुफकार उठी, "मुझे ऐसा लगता है कि आज की इस बातचीत में तुम्हारा भी...... कुछ हाथ है!"

चमेली ने राधा की बात की उपेक्षा कर दी, बिना राधा की बात का उत्तर दिये वह अपने कमरे में चली गई।

किशोर उसी दिन हीरो के काम से हटा दिया गया और रंजन से कांट्रेक्ट कर लिया गया। कांट्रेक्ट होने के बाद प्रेमकिशन रंजन को लेकर चमेली के कमरे में पहुंचा। चमेली उस समय चुपचाप आराम-कुर्सी पर लेटी थी। प्रेमकिशन ने हँसते हुए कहा, "चमेली देवी—ये हमारे नए हीरो 'रंजन जी हैं और ये हमारी हीरोइन चमेली देवी।"

रंजन ने हंसते हुए कहा, "आप की तो फिल्मी दुनिया में बड़ी शोहरत है—और यह मेरा सौभाग्य है कि आपके साथ आपकी पहली पिक्चर में मैं काम कर रहा हूं।"

"इसके लिए चमेली देवी को धन्यवाद दो रंजन! अगर यह मुझे सहारा न देतीं तो किशोर काम करता होता।"

एक कहावत है—दीवार के भी कान होते हैं। जिस समय प्रेमकिशन और रंजन चमेली के कमरे की ओर आ रहे थे, राधा ने उन्हें देख लिया था। दबे पांव इन दोनों के पीछे-पीछे राधा अपने कमरे में आ गई थी और कान लगाए इस बातचीत को सुन रही थी।

चमेली ने कहा, "प्रेमकिशन जी—मैंने तो सिर्फ आपको आगाह

किया था कि आप पर प्रहार होने वाला है—किशोर को इस तरह अलग करने की बात तो मैंने आपसे नहीं कही थी, यद्यपि यह मानती हूं कि आपने जो कुछ किया वह ठीक ही किया।"

"आज के विजय का उत्सव मनाने के लिए मैं शाम के समय ताज में डिनर के लिए आपको और रंजन जी को आमंत्रित करने आया हूं।" प्रेमकिशन ने हँसते हुए कहा।

"मैं न जा सकूंगी, मेरी तबीअत ठीक नहीं है।" चमेली ने उत्तर दिया।

"आप न चलेंगी तो मैं भी नहीं जाऊंगा।" अब की बार रंजन के बोलने की बारी थी।

"देखिये, आज वाली मेरी खुशी को यों न बरबाद कीजिए चमेली देवी, आप खाइयेगा नहीं, सिर्फ बैठी रहियेगा, लेकिन आप का चलना जरूरी है, और अब मैं इस संबंध में कोई बात न सुनूंगा।"

"सेठ जी को भी क्या आपने बुलाया है?—"चमेली ने अनायास ही पूछ लिया।

"अरे, मैं तो भूल ही गया था। उनको साथ ले चलूंगा—जोर देकर। बड़े भले आदमी हैं।" और प्रेमकिशन खिलखिला कर हँस पड़ा।

तेईसवां परिच्छेद

चमेली सब कुछ कर रही थी लेकिन उसका मन भारी था। उसे ऐसा लगता था मानो जो कुछ हो रहा है वह सब गलत है, अनुचित है, और अपनी इच्छा के प्रतिकूल उसे सब कुछ करना पड़ रहा है। साथ ही धीरे-धीरे एक आशंका, एक भय उसके हृदय में धीरे-धीरे रेंग रहे थे और उसे ऐसा लग रहा था, मानो एक बहुत बड़ा परिवर्त्तन उसके जीवन में होने वाला है। एक घोर अशांति उसके मन में भर गई थी। उस शाम ताजमहल होटल में वह खाना न खा सकी, वह ठीक तरह बातचीत भी न कर सकी।

जिस समय वह घर लौटी, उसने देखा कि उसके ड्राइंग रूम में भीड़ लगी है। राधा, किशोर, जगमोहन और रामेश्वर कमरे में बैठे हैं। चमेली के आते ही जो बातचीत वहां चल रही थी वह बन्द हो गई—एक तरह का सन्नाटा वहां छा गया। चमेली ने अपने चारों ओर देखा प्रत्येक चेहरा गम्भीर था। उस कमरे का समस्त वातावरण अजीब तरह की घुटन से भरा हुआ उसे लगा, ठीक उस तरह जैसे एक भयानक झंझावात के पहले सारी प्रकृति एक सहमी हुई शांति का वातावरण धारण कर लेती है।

चमेली ने मुसकराने का एक विफल प्रयत्न करते हुए कहा, "क्यों, मेरे आते ही आप लोग चुप क्यों हो गए?" और यह कह कर वह बैठ गई।

इस प्रश्न का उसे कोई उत्तर न मिला, केवल कुछ क्षणों के बाद उसे प्रश्न सुनाई पड़ा, और वह प्रश्न रामेश्वर का था, "कहां गई थीं?"

"ताज महल होटल में दावत थी।" चमेली ने शान्त भाव से कहा

"कौन-कौन लोग थे उस दावत में ?" रामेश्वर ने फिर पूछा।

पहले प्रश्न का उत्तर तो चमेली ने दे दिया था, पर दूसरे प्रश्न ने आग में घी का काम किया "क्या आज मुझे इन पराए लोगों के सामने अपने हरेक काम की कैफियत देनी पड़ेगी ?" चमेली ने पराए शब्द पर जोर देते हुए कहा।

" 'पराए' नहीं—दुश्मन कहो चमेली ! किशोर के निकाले जाने की खुशी में वह दावत हुई थी न ! रंजन, सेठ, प्रेमकिशन और तुम—डाइरेक्टर—डाइरेक्टर ने जिस आदमी को नौकर रखवाया है वह, जिस मालकिन की शै पाकर किशोर निकाला गया है और कम्पनी का मालिक ठीक कह रही हूं न !" राधा ने इस बार तड़प कर कहा।

राधा के इस उत्तर से चमेली कुछ क्षणों के लिए स्तब्ध रह गई, और धीरे धीरे उसके अन्दर वाला पशु अपनी तमाम उग्रता के साथ उभरा ! चमेली ने बढ़कर राधा का हाथ पकड़ लिया !" तू अपनी तरह दूसरों को भी समझती है—निकल मेरे यहां से। और अगर अब मेरे यहां पैर रक्खा तो पैर तोड़ दूंगी !" और यह कह कर चमेली ने राधा को घसीटना आरंभ कर दिया।

रामेश्वर ने बढ़कर चमेली से राधा को छुड़ाया, "अरी, अरी यह क्या कर रही है ! छोड़ उसे ; घर आए हुए के साथ कहीं यह व्यवहार किया जाता है !"

पर अब राधा फूट पड़ी, सिसकते हुए उसने कहा, "मेरी ही रखवाई हुई और मेरे साथ यह व्यवहार करने चली। देखती हूं कितने दिन सेठ तुझे रखते हैं—देखती हूं कब तक तेरी यह ठसक रहती है। जैसा उसने मुझे बना दिया, वैसा ही वह तुझे भी बना देगा"—और शायद राधा और भी इसी तरह की बातें कहती, यदि चमेली का भरपूर तमाचा उसके मुंह पर न पड़ा होता।

राधा, जगमोहन और किशोर के जाने के बाद चमेली थकी सी कुर्सी

पर बैठ गई। उस समय उसका दिमाग मानो फटा जा रहा था। राधा जो कुछ कह गई थी वह सत्य था—चमेली इस बात से इनकार न कर सकती थी, लेकिन राधा को यह सब कहने का क्या अधिकार था? उसे रह रह कर राधा पर क्रोध आ रहा था; और धीरे-धीरे राधा के ऊपर वाला उसका क्रोध अपने ऊपर वाले क्रोध में बदल रहा था।

उस कमरे में वह अकेली रह गई थी—रामेश्वर उठ कर दूसरे कमरे में चला गया था; शायद इस अप्रिय घटना से ऊब कर। और चमेली उस अकेले कमरे में घुट रही थी। एकाएक उसने अनुभव किया कि वह रो रही है जोर से रो रही है, बिलख बिलख कर रो रही है। रामेश्वर उसके रोने की आवाज सुन कर वहां आ गया, उसने चमेली के कंधों को हिलाते हुए कहा, "अरी, यह क्या हो रहा है—इस तरह रो क्यों रही है!"

चमेली फूट पड़ी, "मुझे यहां से और कहीं ले चलो, मैं यहां नहीं रहना चाहती—हाथ जोड़ती हूं! मैं यहां गिर गई हूं—बुरी तरह गिर गई हूं। भगवान जानता है, मैंने बड़ी कोशिश की कि न गिरूं, लेकिन नहीं बच सकी। राधा ने जो कुछ कहा वह सच कहा—मैं उससे किसी भी हालत में अच्छी नहीं हूं—मैं भी रुपयों पर बिक गई। लेकिन—लेकिन, मेरे गिरने में तुमने मुझे मजबूर किया—तुमने!"

चमेली की बात सुनकर रामेश्वर स्तब्ध रह गया, "अरी क्या बक रही है?"

"मैं बक नहीं रही, मैं ठीक कह रही हूं। अभी तक मैं तुम्हें धोखा देती रही। तुम्हें क्या—मैं अपने को धोखा देती रही। राधा ठीक कहती है कि मैं कम्पनी की मालकिन हूं—मैं मालकिन हूं—सेठ शिवकुमार की रखैल! उनकी नौकरी करती हूं—इतनी तनख्वाह पाती हूं और उनके

इशारों पर चलती हूं ! हे भगवान ! कितना बड़ा पाप किया है मैंने, लेकिन—लेकिन मैं यह पाप करने को मजबूर की गई हूं। मैं शिवकुमार की नौकरी नहीं करना चाहती थी; कितना लड़ी हूं अपने से—कितना रोई हूं अन्दर ही अन्दर ! मैं आखिर औरत हूं, कमजोर, दूसरों पर आश्रित ! और मुझे तुम्हारा सहारा मिलना दूर रहा, अपने गिरने में तुम्हारी मदद ही मिली।"

धीरे-धीरे रामेश्वर की समझ में स्थिति आती जा रही थी और जैसे-जैसे रामेश्वर की समझ में स्थिति आती जा रही थी वैसे-वैसे रामेश्वर के मुख पर एक प्रकार का धुंधलापन घिरता आ रहा था। चमेली उस समय रामेश्वर की ओर न देख रही थी, वह उस तूफान की गुरुता और महत्ता को न अनुभव कर रही थी जो उसके प्रत्येक शब्द के साथ रामेश्वर के प्राणों के चारों ओर घिरता आ रहा था; चमेली केवल अपने में डूबी हुई कहती चली जा रही थी, "मैंने तुम से अपना पाप छिपाया—क्यों छिपाया, यह मैं नहीं जानती। लेकिन मुझसे जो पाप हुआ वह तुम्हें बचाने के लिए हुआ ! क्या तुम मुझे इस पाप के लिए क्षमा कर सकते हो—मुझ पापिन को तुमने सहारा दिया, तुमने हमेशा मुझे बचाया—और मैं अभागिन लगातार गिरती गई। बोलो—इस तरह मेरी तरफ क्यों देख रहे हो—बोलो कि तुमने मुझे माफ किया या नहीं !" और चमेली सिसकती हुई रामेश्वर के पैरों पर गिर पड़ी।

रामेश्वर ने चमेली को उठा कर सोफा पर बिठा दिया, पर वह खुद नहीं बैठा। उसने कुछ दबे हुए-से धीमे शब्दों में कहा, "सुन—पाप तूने नहीं किया, पाप किया है मैंने; और मुझे इस पाप का प्रायश्चित्त करना होगा !"

रामेश्वर की वह मुद्रा किसी हद तक भयावनी थी, चमेली भय से सिहर उठी। वह एकाएक उठ खड़ी हुई, "यह क्या कह रहे हो—

मुझ पापिन को क्षमा करो—इतना नाराज न हो! मुझे तुम्हारा सहारा चाहिए!"

और रामेश्वर के अन्दर जो तूफान अभी तक घिर रहा था वह फूट पड़ा, "मैं तुझे अभी तक सहारा नहीं दे सका, सहारा दिया है तैंने मुझे! तूने मुझे जेल जाने से बचाया, मुझे बचाने के लिए तुझको अपना शरीर बेंचना पड़ा, तूने मुझे घर बिठला कर खिलाया, तुझे लगातार मेहनत करनी पड़ी। और मैं—एक पशु की भांति अभी तक रहा—औरत की कमाई पर जिन्दा! मुझमें और जगमोहन में कोई भेद नहीं रह गया था! लेकिन अब यह न होगा, रामेश्वर के हाथ में अभी इतना पौरुष है कि वह काम कर सके। आज मैंने देख लिया कि दुनिया में पैसा ही ताकत है—सबसे बड़ी ताकत है। पैसे के लिए इंसान को शरीर तक बेंचना पड़ता है—कम से कम मेरी चमेली को तो अपना शरीर बेंचना पड़ा है..." और यह कहते-कहते रामेश्वर जोर से हँस पड़ा, एक अजीब तरह की भयानक तथा कर्कश हँसी; "चमेली रानी, रामेश्वर भी रुपया पैदा कर सकता है—लाखों, करोड़ों। इस बम्बई नगर में सभी रुपया पैदा कर रहे हैं—शरीर बेंच कर, आत्मा बेंच कर। जो शरीर बेंच कर रुपया नहीं पैदा कर सकते, वह आत्मा बेंचकर रुपया पैदा कर रहे हैं—और आत्मा का मूल्य शरीर से कहीं ऊपर है! तैंने अभी अपनी आत्मा नहीं बेंची—यह कमी रह गई, नहीं तो तू यह सब मुझसे न कहती—और शरीर तो हरेक को बेंचना पड़ता है—किसी न किसी रूप में। सुन री, बिना आत्मा बेंचे कोई आदमी नहीं बन सकता—तू कभी भी अमीर नहीं बन सकती, क्योंकि तू अभी आत्मा बचाए हुए है। हा-हा-हा- जिन्दगी का कितना बड़ा सत्य इस रामेश्वर के हाथ लग गया!"

यह कह कर रामेश्वर दरवाजे की ओर बढ़ा। चमेली रामेश्वर की यह बात सुनकर, रामेश्वर का यह रूप देख कर उठ खड़ी हुई। उसने

रामेश्वर का हाथ पकड़ लिया, "कहां जा रहे हो—मेरी बात तो सुनो। मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं—मेरी बात पहले सुन लो! क्या हम लोग यहां से और कहीं नहीं चल सकते? जिन्दगी में सभी से गलती होती है—मुझसे भी हुई। उस गलती के पीछे अपने को खो देना—यह कहां की बुद्धिमानी है!"

पर मानो रामेश्वर पर वह सत्य हावी हो चुका था जिसको, अपनी समझ के अनुसार उसने पा लिया था। रामेश्वर कहीं गया नहीं, वह फिर कमरे के अन्दर आ गया। हँसते हुए उसने कहा, "अरी कहीं जा थोड़े ही रहा हूं; जिन्दगी की धारा को पलट सकना तो मनुष्य के बस की बात नहीं, उस धारा की गति बदली अवश्य जा सकती है। कहां जायगी यहां से तू? दुनिया में केवल एक परमेश्वर है—पैसा! उससे भाग कर हम लोग जा ही कहां सकते हैं? हर जगह पैसा स्वामी है, पैसा शक्ति है! तो चमेली, तू जिस तरह रह रही है उसी तरह रह, जिस तरह काम कर रही है, उसी तरह काम कर! भगवान जानता है, मैं तुझ पर जरा भी नाराज नहीं हूं। मुझे क्रोध है अपने ऊपर! मर्द होकर मैं अपाहिज की तरह अभी तक रहा। अब मैं काम करूंगा। अभी तक मैंने सेठों की नौकरी की, अब मैं खुद सेठ बनूंगा। चमेली रानी, बम्बई आया हूं तो फिर सेठ क्यों न बन लूं। जब अपने को बेंचना ही है तो धन के देवता के हाथ अपने को क्यों न बेंचू। इन धन के देवताओं के उपासकों के हाथ क्यों अपने को बेंचूं!"

चमेली रामेश्वर की बात समझ रही थी, नहीं भी समझ रही थी। उसके मुख पर विवशता और निरीहता से भरी हुई एक प्रकार की करुणा थी, कुछ भयमिश्रित आतंक एवं आश्चर्य के साथ वह एक टक रामेश्वर की ओर देख रही थी। अपनी ओर चमेली को इस प्रकार देखते देखकर रामेश्वर ने कहा, "मेरी ओर इस तरह क्यों देख रही है; जो कुछ अभी तक हुआ है वह बिल्कुल ठीक हुआ है, क्योंकि

मुझे अपना रास्ता मिल गया है। उठ, इतनी रात हो गई ; मुझे भूख लगी है। तू तो ताजमहल होटल से खाना खा आई है, लेकिन मैंने अभी तक खाना नहीं खाया !"

चमेली उठ खड़ी हुई, "राम-राम ! मुझसे कितना पाप हो गया ; चलो, मैं खाना परसे देती हूं !"

कितनी भयानक बात उठ खड़ी हुई थी, और कितनी आसानी से वह बात खत्म हो गई—चमेली को इस पर आश्चर्य हो रहा था। रामेश्वर के संबंध में चमेली जितना कुछ भी जानती थी उससे उसे यह जरा भी आशा नहीं थी कि रामेश्वर उसका पाप खुलने पर इस तरह पेश आयगा। एक तरह से इस सब के बाद उसका मन हल्का हो गया।

खाना खाने के समय रामेश्वर ने चमेली से उस संबंध में कोई बात नहीं की ; पर रामेश्वर का मन स्वस्थ न था। वह खाना खा रहा था, महज चमेली के हृदय में ढांढस बंधाने के लिए। उसकी भूख गायब हो चुकी थी, उसके अन्दर एक तूफान-सा उठ खड़ा हुआ था ; और मन ही मन उसने एक प्रकार का निश्चय कर लिया था जो उसे स्वयम् अच्छा न लग रहा था।

चौबीसवाँ परिच्छेद

सुबह रामेश्वर बहुत देर से सोकर उठा। चमेली उस समय स्टूडियो जाने की तैयारी कर रही थी। रामेश्वर ने एक बार उस कमरे को अच्छी तरह देखा जिसमें वह सो रहा था, एक दर्द से भरे कौतूहल के साथ, और फिर उसने ड्रेसिंग-टेबिल के सामने खड़ी हुई चमेली को देखा। और धीरे-धीरे उसे रात वाली बात याद हो आई। वह उठ खड़ा हुआ, चमेली के पास जाकर उसने कहा, "देख, आज मैं काम-काज की तलाश में जा रहा हूं—अगर रात में मैं न लौटूं तो चिन्ता न करना।"

चमेली रामेश्वर की ओर घूम पड़ी, "बिना काम किये क्या काम नहीं चलने का?"

रामेश्वर हँस पड़ा, अभी तक बिना काम किये ही तो काम चलाता रहा हूं, लेकिन रात जो कुछ सुना उससे ऐसा लगा कि मुझे काम करना ही पड़ेगा। अरी चिन्ता न कर, मैं भी शिवकुमार की तरह सेठ बनने जा रहा हूं!"

चमेली सहम उठी, "हाथ जोड़ती हूं—इस तरह की बात मत करो! न जाने क्यों मेरे दिल में एक तरह की शंका उठ खड़ी हुई है। भगवान पापियों को हरदम क्षमा करते हैं। तुम मेरे भगवान हो—क्या तुम मुझे क्षमा न करोगे?"

रामेश्वर ने मुंह बनाते हुए कहा, "अरी छोड़ भी भगवान की बात—असल में हम लोगों का भगवान पैसा है। आज दुनिया की सारी ताकत पैसे में है री, और मैं उसी पैसे को पाने के लिए तैयार हो गया हूं!"

चमेली ने बात अधिक नहीं बढ़ाई, वह जानती थी कि रामेश्वर ने

जो निश्चय कर लिया उससे उसे नहीं डिगाया जा सकता। उसने केवल इतना ही कहा, "करोगे वही जो तुम्हारी मर्जी होगी, भला मेरी बात क्यों मानोगे।"

रामेश्वर ने कपड़े पहने, चमेली उस समय स्टूडियो जाने की तैयारी कर रही थी। रामेश्वर बिना खाए-पिए ही घर से चल पड़ा। चमेली उस समय स्नान-गृह में थी। जब चमेली स्नानगृह से निकली उसे इसका पता चला, और उस चमेली से भी कुछ खाया-पिया न गया।

रामेश्वर रघुनाथ दादा के यहां पहुंचा। रघुनाथ का तबेला अब भी कायम था, लेकिन बहुत बुरी हालत में, रघुनाथ को अब तक कोई भरोसे का आदमी न मिला था। रामेश्वर को देखते ही वह बोल उठा, "अरे तू है भइया! तेरी बड़ी याद करता रहा—ला रे भइया के लिए एक प्याला चा ला!" रघुनाथ ने अपने आदमी से पुकार कर कहा!

"अकेली चा नहीं—एक प्लेट सेव और एक प्लेट भजिया साथ में।" रामेश्वर ने हँसते हुए कहा!

रघुनाथ दादा पढ़ा-लिखा भले ही न रहा हो, वह मनोविज्ञान का तो अच्छा पारखी था ही। उसने रामेश्वर की मुद्रा में, उसके व्यक्तित्व में एक परिवर्त्तन देखा। जब रामेश्वर चा पी चुका तो रघुनाथ ने पूछा, "मुझे ऐसा दिखता है भइया, तूने काम करना तै कर लिया है—है न सही बात!"

रामेश्वर ने दबी हुई जबान में कहा, "हां!"

रामेश्वर की पीठ पर हाथ मारते हुए रघुनाथ ने कहा, "अरे इस तरह सिकुड़ और सहम कर 'हाँ' क्यों कह रहा है? गरदन ऊंची करके और छाती फुला कर 'हाँ' कह! पाप इस अविश्वास और भय में है भइया, इसी अविश्वास और भय में पकड़ है, खतरा है। पक्का बन—बिल्कुल लोहे का सा पक्का! देख रहा है मुझे?"

रामेश्वर ने अपने अन्दर वाला समस्त साहस बटोर कर कहा,

"ठीक कहते हो दादा! मैंने तै कर लिया है कि तुम्हारे साथ काम करूंगा, और आज से ही काम करूंगा!"

रघुनाथ कुछ देर तक ध्यान से रामेश्वर को देखता रहा, मानो वह उसके अन्तरतम में छिपे हुए किसी पाप की तलाश कर रहा हो, और फिर वह बोला, "क्यों भइया तेरी घरवाली से क्या तेरी कुछ तकरार हो गई? वह काफी रुपया पैदा कर रही है। लेकिन वह सेठ शिवकुमार—उसे मैं अच्छी तरह जानता हूं। बड़ा चलता-पुरजा और बदमाश आदमी है वह! खैर छोड़ भी उसकी बात! तो तुझे यहीं रहना पड़ेगा भइया, यह तो तू जानता है!"

"हाँ—यहीं रहने आया हूँ। और दादा तब तक यहीं रहूँगा जब तक उस शिवकुमार के बराबर अमीर न हो जाऊंगा!"

रघुनाथ हँस पड़ा, "तो फिर अकेले इस तबेले और बेवड़े से काम न चलेगा, और भी कुछ रोजगार करना होगा!"

"हाँ! और भी रोजगार करूंगा! हमारे यहां एक कहावत है कि जब ओखली में सिर दिया तब चोटों का क्या डर! दादा तुम रामेश्वर को न किसी बात में अपने से कम पाओगे, न कमजोर पाओगे!"

रामेश्वर ने तबेला ले लिया। उसी दिन उसने दो भैंसें और दो गाएं और खरीद लीं। अन्धेरी से लेकर बोरीवली तक के भइयों को यह खबर हो गई कि गोरे गांव वाला तबेला किसी रामेश्वर भइया के पास आ गया है। उसी दिन रात के समय आस-पास के सब भइया रामेश्वर के यहां इकट्ठा हुए उससे परिचय प्राप्त करने के लिए!

रामेश्वर ने इस सामाजिक-सम्पर्क से लाभ उठाया, उसने भांग छनवाई, लोगों को डट कर जलपान करवाया और देर तक रामायण का पाठ होता रहा। उसी दिन रामेश्वर उन भइयों का अघोषित नेता बन गया।

उस रात वाले उत्सव में रघुनाथ दादा मौजूद था। उत्सव समाप्त

होने के बाद रघुनाथ ने रामेश्वर से कहा, "तू कामयाब होगा भइया, मैंने देख लिया। लेकिन यह हमेशा याद रखना कि तू रघुनाथ दादा का आदमी है और रघुनाथ दादा बड़ा जालिम है! कल सुबह मेरे साथ चलना पुलिस और चुंगी के आदमियों से तुझे मिलवा दूंगा, कल से अपना रोजगार शुरू कर देना है!"

जब सब लोग चले गए, रामेश्वर अपने दो नौकरों के साथ रह गया। ये दोनों आदमी रघुनाथ दादा के आदमी थे। रामेश्वर अपनी चारपाई पर लेट गया। उस रात उसके हृदय में एक उत्साह था, एक उमंग थी। उसने एक नए रास्ते पर अपना कदम रख दिया था, और उसे ऐसा लग रहा था कि वह उसमें सफल होगा। और उसे उसी समय चमेली की याद हो आई। उसके अन्दर यह प्रश्न उठा, "चमेली इस समय क्या कर रही होगी?" और इस प्रश्न के साथ ही उसका चमेली के साथ वाला विगत लौट आया। एक तरह की कमजोरी वह अपने में अनुभव करने लगा, और एकाएक किचकिचा कर वह कह उठा, "बेकार है—चमेली पर उस समय तक न सोचा जाय जब तक खुद अपने पैरों पर में न खड़ा हो लूं! और..." रामेश्वर ने करवट बदली। उस करवट के साथ उसकी विचार धारा भी बदली। आखिर चमेली थी कौन? चमेली से पहले, बहुत पहले, उसकी पत्नी जो मर गई थी, उसके बचपन के घर-गांव के संगी-साथी जो बिछुड़ गए थे—और इन सबों पर सोचते हुए रामेश्वर को नींद आ गई।

रामेश्वर मुश्किल से दो-तीन घंटे सोया होगा कि रघुनाथ दादा ने उसे जगा दिया। दूध दुहने का समय हो गया था। रामेश्वर ने उठकर दूध दुहा, जानवरों के दाना-पानी की व्यवस्था करके वह करीब चार बजे सुबह रघुनाथ दादा के साथ मोटर-ट्रक पर बैठकर शहर की ओर चल दिया।

रघुनाथ दादा ने चुंगी वालों से रामेश्वर का परिचय कराया,

"वह रामेश्वर भइया है न—इसने अब मेरा तबेला ले लिया है। मेरा साझीदार है, बड़े जीवट का आदमी है!"

शहर में जहां दूध जाता था वहां ट्रक रुका। एक नाटा-सा दुबला आदमी वहां बैठा था—रघुनाथ दादा को देखते ही वह उठ खड़ा हुआ। रामेश्वर ने उससे कहा, "देख रे गनेश—यह रामेश्वर भइया है। तबेला मैंने इसे दे दिया है, ले दूध सम्हाल ले!"

गनेश ने दूध उतार कर कहा, "बस?"

रघुनाथ हँस पड़ा, "नहीं रे—ये पेट्रोल के दो टीन भी हैं—इन्हें अन्दर से खाली कर के ले आ!"

"कुल दो टीन!" गनेश ने दोनों टिनों को एक साथ लेकर कहा।

"अरे आज पहला दिन था, कल से ज्यादा आया करेगी।"

गनेश के जाने के बाद रामेश्वर से रघुनाथ दादा ने कहा, "यह गनेश—शहर में बेवड़े का काम इसके हाथ में है। वैसे ऊपर से यह दूध का काम करता है, लेकिन इसका असली काम है बेवड़े का। और जरा इससे सावधान रहना—बड़ा छँटा हुआ होते हुए भी बड़ा खूंख्वार है। अभी तक दस-बारह कत्ल कर चुका है।"

गनेश इस समय तक लौट आया था। रामेश्वर ने इस समय गनेश को गौर से देखा। उसका चेहरा असुन्दर नहीं था, उस चेहरे में एक अजीब तरह का आकर्षण था। उसके बाल छोटे-छोटे और घुंघराले थे; अल्पभाषी और प्रायः मौन रहता था। लेकिन उसकी आंखों में एक भयानक क्रूरता से भरी चमक थी, उसके भारी जबड़ों में एक प्रकार का संकल्प था। रघुनाथ ने गनेश से कहा, "देख रे गनेश—यह रामेश्वर भइया है, यह भला आदमी है, हँसी-मजाक भी कर लेता है। लेकिन तुझ से कम न साबित होगा, सो इसकी बात का एकाएक बुरा न मान बैठना। अगर इसे कुछ हो गया तो समझ लेना तेरी खैर नहीं!"

मनेश ने रघुनाथ दादा की बात का कोई उत्तर नहीं दिया, केवल एक हल्की-सी मुस्कराहट उसके चेहरे पर आकर कह गई, "मैं तुम्हारी बात समझ गया, मुझ पर इत्मीनान रखना।"

अब सुबह हो गई थी। रघुनाथ ने कहा, "तो फिर चला जाय।" रामेश्वर बोल उठा, "तुम ट्रक पर चलो दादा, मैं जरा दो-एक घंटे बाहर में ठहरूंगा। दस बजे की गाड़ी से आ जाऊंगा ; एक दफे घर जाकर हाल-चाल ले लूं!"

"हां, हां! लेकिन वक्त पर आ जाना। पुलिस वालों से तुझे आज मिला दूं—इसके बाद फिर मेरा काम खत्म—तुझी को सब कुछ करना-धरना होगा।" यह कह कर रघुनाथ ट्रक पर बैठकर चला गया।

यह दूध और बेवड़े का व्यौहार तारदेव से होता था। जहां यह दूध और बेवड़ा दिया गया था उस स्थान से करीब सौ गज की दूरी पर बस-स्टैण्ड था। बस-स्टैण्ड से उसने चौपाटी का टिकट लिया। चौपाटी पर बस से उतर कर जब रामेश्वर अपने घर की ओर बढ़ रहा था तो मानो उसके पैर ही न उठ रहे थे। घर पहुंच कर उसने घंटी बजाई, नौकर ने आकर द्वार खोला। रामेश्वर अपने कमरे के बाहर पल भर ठिठका, फिर अन्दर चला गया।

उस समय चमेली सो रही थी। उसके नयनों के नीचे पानी की लकीरें बन गई थीं जिससे रामेश्वर को यह साफ पता लग गया कि सोने के पहले वह बहुत अधिक रोई है। रामेश्वर खड़ा खड़ा चमेली को एकटक देखता रहा, उसके अन्दर कुछ अजीब-सा हो रहा था। और उसी समय चमेली ने आंखें खोल दीं। रामेश्वर को देखते ही वह जल्दी से उठ बैठी, "अरे तुम आ गए! तुमने मुझे जगा क्यों नहीं लिया?"

"अभी अभी तो आया हूँ री—मालूम होता है तू रात बहुत देर तक जागी है, तेरी आंखें कितनी लाल हैं।"

चमेली ने आवाज दी, "महेश—जल्दी से चा बना के ला!" और फिर वह रामेश्वर से बोली, "हां बड़ी रात तक तुम्हारा इन्तजार करती रही।"

"और साथ-साथ शायद रोती भी रही!" रामेश्वर ने मुसकराते हुए पूछा!

चमेली मानो शरमा गई, "औरत के भाग में तो रोना ही है, रोने के सिवा वह कर क्या सकती है। खड़े क्यों हो"—चमेली ने रामेश्वर का हाथ पकड़कर बिस्तर पर बिठाते हुए कहा, "क्या अब मैं इतनी ज्यादा गैर या अछूत हो गई हूं।"

रामेश्वर बैठ गया। उसने चमेली के सर पर हाथ रखते हुए कहा, "अरी बेकार की बात मत कर! और देख इस रोने-धोने में कुछ नहीं रक्खा। मैंने तुझसे कह दिया न कि मैं मर्द हूं, मुझे अपना रास्ता खुद बनाना चाहिए। तो मैं कल रोजगार करने गया था, और मैंने रोजगार कर लिया है!"

चमेली ने आश्चर्य से रामेश्वर को देखा, "रोजगार कर भी लिया, कौन-सा रोजगार किया है?"

"एक गाय-भैंसों का तबेला ले लिया है। अभी तो चार भैंसें और चार गाएं हैं, धीरे-धीरे और गाएं-भैंसें ले लूंगा!"

चमेली ने कुछ सोचते हुए कहा, "इस तबेले से कितना फायदा हो जायगा?"

"शुरू-शुरू में करीब तीन-चार सौ रुपया महीना, लेकिन काम बढ़ने पर तीन-चार हजार रुपया महीने का फायदा हो सकता है। बम्बई में दूध वाले लखपती बन जाते हैं।

इस पर चमेली ने केवल "हूं!" कहा।

थोड़ी देर तक दोनों मौन रहे, इसके बाद रामेश्वर ने फिर कहा,

"लेकिन तबेले के काम में मेहनत बड़ी करनी पड़ती है। यह काम तो वहीं रह कर हो सकता है—शुरू-शुरू का मामला है। मैं दो-चार दिन में थोड़ी देर के लिए चला आया करूंगा, अभी तो वहीं रह कर अपना काम-काज जमाना है! समझी!"

चमेली ने करुण स्वर में कहा, "समझ गई! लेकिन एक बात बता दो, तुम्हारा यह तबेला है कहां?"

"अरी बहुत दूर—बिल्कुल जंगल में! अंधेरी के आगे जोगेश्वरी है न, उसके आगे गोरे गांव है—वहीं वह तबेला है। बिल्कुल सून-सान जगह।"

"उस तबेले के पास कोई मकान नहीं है?" चमेली ने पूछा।

"हैं क्यों नहीं, टूटे-फूटे, खपरैल से छाए हुए। वहां गरीब लोगों की बस्ती है!"

"तो इसमें हर्ज क्या है, मेरे लिए भी वहीं एक मकान ले दो!"

रामेश्वर हँस पड़ा, "अरी वहाँ तू जाएगी, तू! नहीं, तू रानी की तरह यहीं रह; कुल साल-छै महीने की बात है, तब तक मैं पास ही अंधेरी में एक अच्छा मकान बनवा लूंगा!"

चमेली उठ खड़ी हुई, "तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं, मुझे छमा करो! तुम मुझे बड़ा से बड़ा दण्ड दे लो, मैं स्वीकार कर लूंगी, लेकिन तुम मुझे छोड़ो मत!" और चमेली सिसक कर रोने लगी।

रामेश्वर ने चमेली का हाथ पकड़कर कोमल स्वर में कहा, "अरी पागलपन की बात मत कर। मैं सौगन्द खाकर कहता हूँ कि मैं तुझे छोड़ नहीं रहा बल्कि यह प्रयत्न कर रहा हूँ कि तू मेरी होकर, केवल मेरी होकर रहे। तू जो गिरी इसकी जिम्मेदारी तेरी नहीं है—मेरी है; रामेश्वर यह जानता है री, रामेश्वर को जेल जाने से बचाने के लिए तुझे अपना शरीर बेचना पड़ा—रामेश्वर को आराम से, सही सला-

मत रखने के लिए तुझ औरत को गुलामी करनी पड़ रही है। अभी तक रामेश्वर भ्रम में था, रामेश्वर को अपने कर्त्तव्य का ज्ञान नहीं था। अब रामेश्वर खुद काम करेगा।" और यह कह कर रामेश्वर ने चमेली को आलिंगन-पाश में कस लिया।

रामेश्वर के इस कथन से चमेली की आत्मा खिल गई। पल भर में ही चमेली के अन्दर वाला समस्त विषाद दूर हो गया। पर यह सब क्षणिक था। चा पीकर जब रामेश्वर चलने लगा, चमेली के अन्दर वाला विषाद लौट आया। उसके मन को संतोष न हुआ था, उसके अन्दर एक आशंका, एक भय जो भर गया था, वह रामेश्वर न निकाल सका था। उसने रामेश्वर से केवल इतना कहा, "जाने क्यों मेरा मन बड़ा उदास हो गया है। मुझे ऐसा लगता है मानो विपत्ति के बादल हमारे जीवन पर घिरते आ रहे हैं। मैं मूर्ख और अनजान औरत हूँ, चीजों को ठीक तरह से न मैं देख सकती हूँ, न समझ सकती हूँ; लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि मैंने अभी तक जो पाप किये हैं उनका फल भोगने का समय आ पहुंचा।" और यह कहते-कहते उसने रामेश्वर का हाथ पकड़ लिया, "मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ—पाप का रास्ता कहीं न अपना लेना—पाप कल्याणकारी नहीं होता है!"

चमेली की बात रामेश्वर के अन्दर तीर-सी गड़ गई। उसने उस बात को टालते हुए कहा, "अरी रोजगार में पाप-पुण्य नहीं देखा जाता है री इतना विश्वास रख!" और रामेश्वर तेजी के साथ चमेली के सामने से चल दिया, मानो वह सत्य और पवित्रता के आगे से भाग रहा हो। और कुछ दूर चलकर रामेश्वर स्वयं हँस पड़ा, उसने जैसे अपने से ही पूछा, "क्यों रामेश्वर, तुम एकाएक चमेली की बात से घबरा क्यों गए?" उसने पाप-पुण्य की जो बात उठाई थी, वह बात उठाने का उसे अधिकार कब था? वह पतित और भ्रष्ट स्त्री—उसकी बातों से डर गए? धिक्कार है!"

पच्चीसवाँ परिच्छेद

किशोर का संबंध उस स्टूडियो से टूट गया, और उसका संबंध जो इतनी जल्दी स्टूडियो से टूटा वह चमेली के कारण—यह सत्य किशोर की समझ में पूरी तरह आ गया था। पर किशोर के मन में न चमेली के प्रति कोई कटुता थी, न विषाद था। जहां तक कटुता और विषाद का सवाल था, वहां किशोर का स्थान राधा ने ग्रहण कर लिया था।

राधा के अन्दर कटुता और विषाद के अलावा एक और भी भाव आ गया था, वह भाव था प्रतिहिंसा का! वह अब चमेली की भयानक शत्रु बन गई थी।

स्टूडियो में काम-काज चल रहा था, शूटिंग अब जोरों के साथ चलने लगी थी और स्टूडियो के वातावरण में एक नया जीवन उत्पन्न हो गया था। पर स्टूडियो में उस नए जीवन का स्रोत था राधा में, चमेली में नहीं। रामेश्वर के चले जाने के बाद से चमेली मर्माहत और हत-प्रभ-सी हो गई थी। वह जो भी काम करती थी, बेमन, मशीन की भांति। स्टूडियो की चहल-पहल में, आमोद-प्रमोद में, हलचल में वह किसी प्रकार का भाग न लेती थी।

पहला सेट समाप्त हो रहा था। अभी तक जितना हुआ था उससे सभी संतुष्ट थे, सभी प्रसन्न थे। उस सेट का अन्तिम शाट होने के पहले डाइरेक्टर प्रेमकिशन ने सेठ शिवकुमार से पूछा, "सेठ दूसरा सेट कब तक बन जायगा?"

आर्ट डाइरेक्टर वहीं मोजूद था। शिवकुमार ने उसकी ओर देखा। आर्ट डाइरेक्टर ने उसी समय उत्तर दिया, "आज रात ही काम शुरू हो जायगा, परसों रात को शूटिंग आप कर सकते हैं!"

प्रेमकिशन कह उठा, "शाबाश! तो फिर परसों नाइट शूटिंग का प्रोग्राम बना लिया जाए!" और इस बार वह रंजन की ओर घूमा। "रंजन, सेठ परसों रात को ही मिल रहा है, पूना वाला प्रोग्राम कैंसिल करना होगा।"

"पूना के प्रोग्राम का मुझे मोह नहीं था, मुझे तो पिकनिक के प्रोग्राम में दिलचस्पी है, वह पूना में न होकर यहां बंबई में ही हो सकती है।" रंजन हँस पड़ा, "सेठ, कल अगर मैं एलीफन्टा में पिकनिक का प्रोग्राम रक्खूं तो कोई हर्ज है?"

शिवकुमार ने चमेली की ओर देखा, "हर्ज नहीं मुझे तो खुशी होगी। इधर सात-आठ दिन की लगातार शूटिंग से हम लोग बुरी तरह थक गए हैं—क्यों चमेली रानी! अच्छा तो पिकनिक में कौन-कौन लोग रहेंगे?"

रंजन ने उत्तर दिया, "मेरी पिकनिक में एक शर्त है—वही लोग उसमें शामिल हो सकेंगे जो विवाहित हैं। पुरुष अपनी पत्नियों के साथ आवें और स्त्रियां अपने पतियों के साथ!" और यह कह कर वह हँस पड़ा।

शिवकुमार ने मुसकराते हुए कहा, "तो फिर आप लोग मुझे क्षमा करेंगे—मेरी सेठानी ने न कभी किसी पिकनिक में भाग लिया है, और न कभी भाग लेगी!"

प्रेमकिशन ने मजाक किया,—"तो फिर आप किसी किराए की बीबी को ले चल सकते हैं—हमें इसमें कोई एतराज न होगा सेठ!" और प्रेमकिशन की इस बात पर सब लोग हँस पड़े।

रंजन ने उसी समय कहा, "मैं आपको छूट दे सकता हूं सेठ, जहां नियम होते हैं, वहां नियमों के प्रतिवाद भी होते हैं—क्यों चमेली देवी, क्या राय है आपकी?"

चमेली अभी तक यह सब बातचीत अन्यमनस्क भाव से सुन रही थी।

रंजन की बात सुनकर वह एकाएक चौंक उठी, उसने दबे हुए स्वर में कहा, "मैं कुछ नहीं जानती, अपने संबंध में मुझे यही कहना है कि मैं न जा सकूंगी, क्योंकि मेरी तबीयत ठीक नहीं है।"

इसी समय जगमोहन ने हँसते हुए कहा, "बात यह है डाइरेक्टर साहेब, कि चमेली देवी के पति भी साथ न जा सकेंगे—तो जो छूट आप लोगों ने सेठ को दी है, वही छूट चमेली देवी को भी देनी होगी!"

और अब अन्त में राधा ने अपना तीर छोड़ा, "चलो काम बन गया। सेठ को किराए की बीबी चाहिए, चमेली को किराए का पति चाहिए—यह जोड़ी पूरी हो गई।"

और फिर हँसी का एक टहाका लगा।

इस अपमानजनक व्यंग पर चमेली ने कोई ध्यान नहीं दिया; उसने उसी तरह उदास भाव से कहा, "मुझे क्षमा कीजिए रंजन जी, मैं आपसे झूठ नहीं बोलती। मैं न जा सकूंगी, क्योंकि मेरा मन अच्छा नहीं है।"

आखरी शाट की तैयारी हो चुकी थी, कैमरामैन ने प्रेमकिशन को सूचना दी। शिवकुमार ने कहा, "चमेली देवी को चलने के लिए मैं राजी कर लूंगा—अब आप लोग शाट ले लीजिए। कल सुबह पांच बजे चलने का इन्तजाम कर लेना चाहिए।"

शूटिंग के बाद जब चमेली अपना मेकअप उतार रही थी, चपरासी ने आकर उससे कहा, "सेठ ने आप को सलाम भजा है, उनसे मिल कर जाइयेगा, आफिस में बैठे वे आपका इन्तजार कर रहे हैं।"

मेकअप उतार कर चमेली आफिस में गई। शिवकुमार उस समय अपने कमरे में अकेला था। वह चुपचाप कुर्सी पर बैठा कुछ सोच रहा था। चमेली को देखते ही उसने कहा, "आओ चमेली रानी,

इधर कई दिनों से तुम मुझसे मिलीं ही नहीं। क्या किसी बात पर नाराज़ हो गई हो?"

चमेली ने अपने को सम्हालते हुए कहा, "नहीं सेठ, लगातार काम चलता है, दिन भर काम करने के बाद बेतरह थक जाती हूँ, इतनी फुर्सत कहां कि यहां आऊं।" और यह कहते कहते वह सोफे पर बैठ गई।

शिवकुमार ने चमेली को ध्यान से देखा और चमेली ने शिवकुमार को ध्यान से देखा; और दोनों के ही मुख पर चिन्ता तथा विषाद के भाव प्रतिविम्बित थे। पिछले कुछ दिन शिवकुमार के लिए घोर दुश्चिन्ता के दिन थे। गलती से उसने कुछ कपास का सट्टा कर लिया था और उस सट्टे में उसे करीब दस लाख का घाटा आया था। दस लाख की रकम शिवकुमार के लिए काफी बड़ी रकम थी और वह स्टूडियो का काम-काज बड़ी मुश्किल से चला पाता था। चमेली ने कहा, "सेठ, बड़े उदास दिखलाई दे रहे हो!"

एक रूखी मुसकराहट के साथ शिवकुमार ने कहा, "लेकिन तुम्हारा चेहरा भी तो कोई खास खिला हुआ नहीं है चमेली रानी! तुम भी तो बेतरह उदास हो। क्या बात है?"

चमेली के जी में आया कि इस मौके पर वह शिवकुमार पर सत्य प्रकट कर दे; लेकिन वह टाल गई। उसने कहा, "मैंने कहा न कि मेरी तबीयत इन दिनों ठीक नहीं है, फिर शूटिंग की मेहनत—दिनभर काम करके बेतरह थक जाती हूं!"

"और मैं बिना काम-काज किये ही थक जाता हूँ चमेली रानी!" शिवकुमार कहते-कहते कुछ रुक-सा गया। थोड़ी देर तक वह मन-ही-मन कुछ सोचता रहा, फिर उसने कहा, "चमेली रानी, इन दिनों बड़ी मुसीबत में रहा हूँ। तीन दिन हुए सट्टे में लम्बा घाटा आ गया, उसी की चिन्ता में डूब रहा हूँ; जितना रुपया था वह मैं घाटा

चुकाने में लगा चुका—अब तो स्टूडियो का खर्च चलाना मुश्किल हो रहा है। यही चिन्ता तुम मेरे मुख पर देख रही हो।"

शिवकुमार की बात चमेली की समझ में कुछ आई, कुछ नहीं आई। उसने केवल इतना कहा, "यह तो बुरा हुआ!"

शिवकुमार के स्वर में अब विनम्रता के साथ दीनता भी आ गई, "तुम अपनी हो चमेली रानी, इसलिए तुमसे कहके दिल हलका कर लिया, लेकिन यह बात किसी को मालूम नहीं होनी चाहिए! रुपयों का प्रबन्ध कर रहा हूँ—भगवान ने चाहा तो परसों-नरसों तक हो जायगा। हां, तो तुम्हें जो बुलाया था वह यह कहने के लिए कि कल पिकनिक में तुम जरूर चलो!"

"लेकिन सेठ, मेरी वहां जाने की तबीयत नहीं; न जाने क्यों मुझे यह सब अच्छा नहीं लगता।"

शिवकुमार ने कहा, "चमेली रानी हमें जिन्दगी में सफल बनने के लिए बहुत सी बातें ऐसी करनी पड़ती हैं, जो हमें अच्छी नहीं लगतीं। अच्छे और बुरे की परख बड़ी मुश्किल है। चमेली रानी, तुम्हारे वहां चलने में मेरा थोड़ा सा स्वार्थ है।"

"कैसा स्वार्थ?" चमेली ने पूछा।

शिवकुमार बोला, "तुमने आज जगमोहन और राधा की बात सुनी! मैं चाहता हूँ कि अब आगे चलकर ऐसी बातें न हों, और इसका एकमात्र उपाय यह है कि हम दोनों वीरतापूर्वक इस प्रहार का मुकाबिला करें, न कि इससे मुंह छिपावें!"

शिवकुमार की बात में कितना असत्य था, चमेली इसको नहीं समझ सकी, और इसका कारण यह था कि जो बात शिवकुमार ने कही थी उसका चमेली के जीवन से संबंध था! चमेली ने कहा, "सेठ, हम लोगों का संबंध टूटना चाहिए।"

शिवकुमार चौंक उठा, "क्या तुम्हारे पति को इस संबंध में कुछ पता चल गया?"

"हां!" चमेली ने शान्त भाव से उत्तर दिया, "और मैंने उनके सामने सब कुछ स्वीकार कर लिया है!"

शिवकुमार का चेहरा उतर गया, "यह तो बुरा हुआ; कितने दिन हुए इस बात को?"

"करीब दस दिन। लेकिन सेठ तुम्हें चिन्तित होने की कोई जरूरत नहीं। बस मैं सिर्फ इतना चाहती हूं कि आगे से हम लोगों का कोई संबंध न रहे।"

शिवकुमार हँस पड़ा, एक अजीब तरह की कुरूप और कर्कश हँसी! "चमेली रानी, संबंध न आसानी से बनते हैं, न आसानी से टूटते हैं। और चमेली ने अनुभव किया कि शिवकुमार की बात में एक बड़ा कुरूप सत्य है। शिवकुमार ने फिर कहा, "संबंध एक ही ओर से नहीं होता है चमेली रानी, वह दोनों ओर से होता है, वह बनता दोनों की मर्जी से है, टूटता भी दोनों की ही मर्जी से है। लेकिन मैं वह संबंध कायम रखने के लिए तुम पर जोर न दूंगा। लेकिन हम दोनों में तो बाधा न आनी चाहिए। कल तुम्हें हम लोगों के साथ चलना होगा, नहीं तो स्टूडियो वाले लोग ही गलत-सलत अनुमान लगा लेंगे।"

"अच्छी बात है, मैं कल चलूंगी!" चमेली ने उत्तर दिया।

शिवकुमार ने चमेली का हाथ अपने हाथ में ले लिया, और चमेली ने अपना हाथ हटाया नहीं। "मैं जानता था चमेली रानी, कि तुम इनकार न करोगी; अभी तक जो बात मैंने नहीं कही, वह अब मैं कह रहा हूं। मैं इस कम्पनी को लिमिटेड करने की सोच रहा हूं। और तुम्हारा भी इस कम्पनी में शेयर मैंने तै कर दिया है। तुम्हारे नाम से मुझे रुपया इकट्ठा करने में आसानी होगी। तो कल एक करोड़पती

सेठ का लड़का हम लोगों के साथ पिकनिक में चल रहा है। उसका तुमसे परिचय कराना है।"

चमेली ने करुण भाव से कहा, "सेठ तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ, इस सब में मुझे न डालो, मुझसे यह न हो सकेगा।"

शिवकुमार ने चमेली का हाथ दबाते हुए कहा, "यह करना पड़ेगा चमेली रानी, अपने लिए नहीं, मेरे लिए, इस स्टूडियो के लिए। एक स्टूडियो के बन्द हो जाने के अर्थ होंगे दो-ढाई सौ आदमियों का बेकार हो जाना—मेरी यह अन्तिम प्रार्थना है, इसके आगे फिर तुम्हें कोई कष्ट न दूंगा।"

शिवकुमार की बातों में कुछ ऐसी करुणा थी, कुछ ऐसी विवशता थी कि चमेली का हृदय पिघल गया। आखिर शिवकुमार ने उसके साथ बुराई ही क्या की थी? चमेली ने जो कुछ किया, स्वयं अपनी इच्छा से किया, शिवकुमार ने उसे किसी भी काम करने को मजबूर नहीं किया! इसके अलावा शिवकुमार ने उसे इतनी शक्ति दे रक्खी थी कि वह समस्त स्टूडियो पर शासन करे! चमेली ने शिवकुमार की आंखों में अपनी आंखें मिलाते हुए कहा, "अच्छी बात है सेठ, चलूंगी कल—जैसा कहते हो वैसा करूंगी।"

और चमेली की आंखों में, उसके स्वर में—उसकी समस्त मुद्रा में कुछ ऐसा निमंत्रण था कि शिवकुमार अपने को न रोक सका। उसने चमेली को आलिंगन-पाश में करते हुए कहा "तुम कितनी अच्छी हो चमेली रानी! तुम मुझे बचा सकोगी, निश्चय बचा सकोगी।"

उस समय चमेली अपने को पूरी तरह खो चुकी थी।

चमेली जिस समय घर जाने के लिए स्टूडियो की मोटर की ओर बढ़ी, राधा और जगमोहन उसमें बैठे हुए थे। चमेली ने कहा, "राधा, मैं इस समय घर न जाऊंगी, मुझे एक जरूरी काम से कल्यान जाना है; मैं तुम दोनों को स्टेशन उतार दूंगी!"

स्टेशन पर पहुंच कर चमेली खुद ही उतर पड़ी, "मैं समझती हूं कि अपने काम से स्टूडियो की कार ले जाना गैरकानूनी होगा, इस लिए तुम लोग चली जाओ, मैं ही ट्रेन से चली जाऊंगी।" और इसके पहले राधा तथा जगमोहन कुछ कहें, चमेली स्टेशन के अन्दर चली गई।

राधा ने जगमोहन से कहा, "कल्याण जा रही है—कल्याण में क्या काम होगा इसे?"

"छोड़ो भी, दूसरे के कामों में क्यों दखल दें हम लोग। बहुत मुमकिन हो रामेश्वर से मिलने जा रही हो।"

"रामेश्वर तो उस दिन से हम लोगों को दिखे ही नहीं।"

"शायद देश चला गया है, उसी को लेने यह कल्याण जा रही होगी।" जगमोहन ने कहा।

चमेली जो अंधेरी स्टेशन पर उतर पड़ी, उसका कारण यह था कि मोटर-ड्राइवर तक को यह पता न देना चाहती थी कि रामेश्वर कहां है। चमेली ने गोरेगांव स्टेशन का टिकट लिया, और वह बोरीवली जाने वाली गाड़ी पर बैठ गई।

गोरेगांव स्टेशन पर वह उतर कर बाहर निकली—उजाड़ और वीरान! उसकी समझ में न आ रहा था कि वह क्या करे और कहां जाय! दो-एक आदमियों से उसने रामेश्वर का पता पूछा, पर रामेश्वर को कोई न जानता था। आगे बढ़ने की उसमें हिम्मत न हुई और वह फिर स्टेशन के अन्दर जाने लगी; इतने में वह ठिठक गई! ध्यान से उसने पास आती हुई आवाज को सुना, वह आवाज रामेश्वर की ही थी। रामेश्वर के साथ तीन-चार आदमी थे और अब वे स्टेशन के अन्दर आ गए थे। चमेली मुंह फेर कर खड़ी हो गई। रामेश्वर के साथियों ने बंबई सेन्ट्रल के टिकट लिए और फिर उनमें से एक बोला, "अब तुम जाओ रामेश्वर भइया—हम लोग परसों

शाम को आवेंगे! और देखना, रात भर हम लोग यहीं रहेंगे, भोजन-पानी की व्यवस्था कर रखना!

वे तीनों आदमी प्लेटफार्म पर चले गए और रामेश्वर स्टेशन के बाहर निकला। चमेली ने रामेश्वर को पुकारा नहीं वह केवल रामेश्वर के पीछे हो ली। रामेश्वर इतमीनान के साथ मस्त चला जा रहा था, तभी उसको जैसे आहट मिली कि कोई उसके पीछे-पीछे आ रहा है। उसने घूम कर पीछे देखा और कह उठा, "अरी तू—यहां!"

रामेश्वर के पास आकर चमेली ने कहा, "हां, मैं यहां! तुमने तो घर आना ही छोड़ दिया, और तब मुझसे न रहा गया। स्टूडियो से घर न जाकर तुम्हारे यहां चली आई हूँ!"

चमेली का गोरेगांव आना रामेश्वर को अच्छा नहीं लगा, "तैंने यहां आने में अच्छा नहीं किया! भला तुझे तबेले में कैसे ले चलूं—बड़ी गन्दी जगह है। कोई खास काम से आई है?"

"खास काम तो क्या तुम्हारी खोज-खबर लेने आई हूँ। आखिर तबेले में रहते तो नहीं हो, जब यहां रह रहे हो तो कोई घर तो होगा, बड़ी थक गई हूं, कुछ बैठूंगी, सुस्ताऊंगी, नाश्ता करूंगी, तुम्हारी कुशलक्षेम पूछूंगी।"

अपनी इच्छा के विरुद्ध रामेश्वर को चमेली को अपने यहां ले चलना पड़ा। एक छोटे से मकान में वह रहता था, लेकिन न वह मकान टूटा-फूटा था, न वह गन्दा था। पक्का मकान, बंगलेनुमा ; उसमें बिजली थी और कमरों का फर्श अच्छा-खासा था। तीन कमरे नीचे थे, तीन कमरे ऊपर थे। ऊपर के कमरों में वह रहता था, नीचे के कमरों में उसके नौकर रहते थे। उस मकान के चारो तरफ एक छोटा-सा बगीचा भी था!

मकान को देखते ही चमेली बोल उठी, "वाह—इस मकान में क्या बुराई है जो यहां तुम मुझे नहीं लाना चाहते थे? यह मकान तो इतना

अच्छा है कि मैं यहां तुम्हारे साथ रह सकती हूँ। मेरे ही साथ यह छल-फरेब ! मैं कल ही अपना सामान लेकर यहां पहुंच जाऊंगी ।"

"अरी, ऐसा गजब न करना ! यहां अकसर मेरे कार-बार के साथी लोग आ कर ठहरते हैं, और उसमें से ज्यादातर नीच ढंग के आदमी होते हैं। आज अभी अभी तीन आदमी यहां से गए हैं, यहां दो दिन रहे ।

जिन लोगों को चमेली ने रामेश्वर के साथ देखा, वे लोग चमेली को अच्छे तो नहीं लगे थे। चमेली ने कहा, "यह भी तुम्हारा कैसा कार-बार कि लोग तुम्हारे यहां आकर इतने-इतने दिन ठहरा करें !

चमेली ने घूम-फिर कर कमरों को देखा, और उसे उन कमरों में एक अजीब सी दुर्गंध भरी हुई मालूम दी। उन कमरों में ज्यादा सामान नहीं था, ज्यादा सामान हो भी तो नहीं सकता था। सब से आगे एक बरामदा था, बरामदे से लगे तीन कमरे थे। बीचवाला कमरा काफी बड़ा था और उस कमरे में एक बड़ा-सा फर्श बिछा था। बगल वाले कमरे में एक पलंग पड़ा था, और एक लोहे की अलमारी उसमें थी। तीसरा जो हाल की दूसरी ओर था, बिल्कुल खाली था। चमेली घूम-फिर कर रामेश्वर के पलंग पर बैठ गई, "एक अजीब तरह की बदबू इस मकान में आ रही है—और चमेली कहते-कहते रुक गई, क्योंकि एक आदमी ने उसी समय कमरे में प्रवेश किया।

"क्या है सदाशिव ?" रामेश्वर ने पूछा।

"इंस्पेक्टर साहेब ने कहलाया है कि और सब तो ठीक है, लेकिन शोर-गुल ज्यादा न होना चाहिए। कल रात में इधर से जा रहे थे तो उन्होंने शोर सुना था—वही रुकवाया है !" उस आदमी ने कहा।

उस आदमी को देखते ही चमेली ने यह अनुमान कर लिया कि वह पुलिस का आदमी है। रामेश्वर ने कहा, "हां, हां, कल कुछ शोर-गुल ज्यादा हो गया था, आगे से ऐसा न होगा। और तो सब कुछ ठीक है न ?"

"जहां सदाशिव हो वहां कोई बिगाड़ कैसे हो सकता है भइया! इतमीनान रक्खो!" और सदाशिव हँसता हुआ चला गया।

सदाशिव के जाते ही रामेश्वर ने चमेली से कहा, "अब जल्दी से अपनी बात कह डाल और घर जा, तेरी गाड़ी जाने का वक्त हो रहा है। चल तुझे स्टेशन पहुंचा दूं, रास्ते में बातचीत होती चलेगी।"

रामेश्वर का आग्रह इतना प्रबल था कि चमेली को उठना ही पड़ा, "अपना तबेला न दिखलाओगे?"

"रास्ते में है—चलते हुए देख लेना!"

घर से निकलते हुए चमेली ने कहा, "तुम्हारी इजाजत लेने आई हूं कि कल एक पिकनिक है, उसमें जाऊं या न जाऊं।"

"इसमें मेरी इजाजत की क्या जरूरत?" रामेश्वर ने पूछा।

"जब से तुम यहां आए हो, मैं कहीं नहीं गई। मैंने कसम खा ली है कि बिना तुम्हें बतलाए और तुम से पूछे कोई काम न करूंगी। आज जब डाइरेक्टर और नये हीरो ने यह पिकनिक की तै की तब मैंने कह दिया कि मैं रात में जवाब दूंगी; और सीधे तुम्हारे यहां चली आई!"

रामेश्वर के मुख पर एक कोमलता, एक करुणा, एक ममता—यह सब एक छोटे से क्षण के लिए प्रतिबिम्बित हो उठे। उसने चमेली का हाथ दबाते हुए कहा, "यहां आने में तुझे तकलीफ हुई होगी, क्या बताऊं मुझे इतनी फुरसत नहीं मिलती कि दो चार दिन में एक दफे भी आ जाऊं।" और कुछ रुक कर उसने चमेली से कहा, "पिक-निक में तू जा—और जो कुछ तू उचित समझ वह कर; रामेश्वर की इजाजत तू उस दिन लेना जिस दिन रामेश्वर इजाजत देने के काबिल बन जाय!" इस समय तक रामेश्वर का तबेला आ गया था। रामेश्वर के तबेले में इस समय तक आठ भैंसें और आठ गाएं थीं। रामेश्वर ने चमेली को अपना तबेला दिखलाया। उसके बाद रामेश्वर ने चमेली को गाड़ी पर चढ़ा दिया।

छब्बीसवाँ परिच्छेद

रामेश्वर के संबंध में चमेली को जितना मालूम हुआ, वह चमेली को अच्छा नहीं लगा। उसका मन अब बहुत भारी हो गया। रामेश्वर की हरकतों में, उसके जीवन में कुछ ऐसा गोपनीय आ गया था, जो भयानक रूप से कुरूप हो सकता है। वैसे रामेश्वर की मानसिक स्थिति काफी अच्छी थी और उसका रहन-सहन भी बुरा न था। काफी नौकर-चाकर उसके पास थे, वह सम्पन्न बन रहा था। फिर भी चमेली को ऐसा लगा कि कहीं इस सब में कुछ पाप है। पुलिस वाले का आकर इस प्रकार बातचीत करना, और मकान में आकर लोगों का ठहरना, उस मकान में बसी हुई एक दुर्गंध!

जिस समय वह घर पहुंची, रात काफी हो गई थी। उसने रसोइयें से कह दिया कि वह खाना नहीं खाएगी, उसकी भूख-प्यास सब कुछ जाती रही। थकी हारी हुई, चुपचाप वह बिस्तर पर लेट गई। सुबह पिकनिक पर जाने के लिए उसे जल्दी उठना था न! बिस्तर पर लेट कर उसने सोने का प्रयत्न किया। पर उसकी भूख प्यास के साथ उसकी नींद भी गायब हो चुकी थी। एक अजीब तरह की दुश्चिन्ता उसके अन्दर भर गई थी, और उस दुश्चिन्ता की तह में एक अज्ञात भय भी था!

काफी देर बाद उसे नींद आई, और वह नींद भी टूटी हुई-सी, कुरूप सपनों से भरी हुई। दर्द से भरी हुई। बेहोशी में उसने वह रात काटी; उसकी नींद उस समय खुली जब उसकी नौकरानी ने उसे हिला-डुला कर इत्तिला दी कि सेठ शिवकुमार गाड़ी पर बैठे हुए उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

चमेली ने जल्दी-जल्दी सब तैयारी की, पन्द्रह मिनट के अन्दर ही वह आकर शिवकुमार की कार पर बैठ गई। लेकिन कार पर न शिवकुमार अकेले थे और न वह कार शिवकुमार की थी। शिवकुमार के साथ एक पच्चीस-छब्बीस वर्ष का नवयुवक था, लम्बा-सा, दुबला-सा और गोरा तथा सुन्दर आकृति वाला होते हुए भी किसी हद तक कुरूप-सा। चमेली एक किनारे थी। दूसरे किनारे वह नवयुवक था; शिवकुमार बीच में बैठा था।

शिवकुमार ने उस नवयुवक से चमेली का परिचय कराया, "यही हैं हमारी हीरोइन श्रीमती चमेली देवी; और यह हैं श्री शीतलप्रसाद महली —सेठ माताप्रसाद महली के सुपुत्र। ग्यारह-बारह मिलें हैं इनको, बम्बई के धनकुबेर हैं। मेरे कहने से यह फिल्म-व्यवसाय की सहायता करने पर भी तैयार हुए हैं।"

चमेली ने आदर से सेठ शीतलप्रसाद का अभिवादन किया। अभिवादन के उत्तर में वह नवयुवक हँस पड़ा, "पिताजी तो नहीं चाहते कि मैं इस फिल्म-व्यवसाय में हाथ डालूं, और इसलिए मैं सिवा रुपया लगाने के, और किसी भी तरह इस व्यवसाय की देख-भाल न कर सकूंगा। तो आप लोग जानें इस काम को!"

शीतलप्रसाद की बात का क्या मतलब है, चमेली नहीं समझ सकी, शिवकुमार नहीं समझ सका, शायद स्वयं शीतलप्रसाद भी न समझ सका हो। गाड़ी मेरीन ड्राइव पर तेजी से चली जा रही थी, और चमेली खिड़की के बाहर समुद्र की ओर देख रही थी। लेकिन चमेली को इस बात का पता था कि साथ वाला नवयुवक उसे बुरी तरह घूर रहा है। चमेली ने दो-एक बार उस नवयुवक की ओर घूम कर देखा, और उसे विश्वास हो गया कि उसका अनुमान गलत न था। शिवकुमार उस समय चुपचाप आंखें बन्द किये बैठा था, कुछ अपने ही में खोया-सा। कार चर्चगेट स्टेशन को पार कर अब गेट वे आफ इंडिया की ओर बढ़ी।

शिवकुमार ने आंखें खोल दीं, "शीतलप्रसादजी आपकी मोटर-बोट पर कितने आदमी आ सकते हैं ?"

"बीस आदमी तो आसानी से, साथ ही काफी अधिक सामान भी रक्खा जा सकता है । आप चिन्ता न कीजिए शिवकुमारजी, मैंने अपने आदमी से सब सामान ठीक करवा लिया है ; अपने रसोइयें से भी कह दिया है, खाना वहीं चल कर बनेगा !"

चमेली की समझ में न आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा है। पिकनिक की दावत तो रंजन ने दी थी, फिर शीतलप्रसाद यह सब इंतजाम क्यों कर रहे हैं ? कार इस समय तक गेटवे आफ इंडिया के सामने आ गई थी। वहां सब लोग शिवकुमार का इंतजार कर रहे थे।

स्त्रियों और पुरुषों का एक अच्छा खासा जमाव था वह, जैसा रंजन ने कहा था, सभी लोग अपनी-अपनी पत्नियों के साथ आए थे। मोटर-बोट का तथा अन्य प्रबंध शिवकुमार ने रंजन से कह कर अपने हाथों में ले लिया था, वह पिकनिक रंजन की न होकर शिवकुमार की, और शिवकुमार की आड़ में शीतलप्रसाद की हो गई थी। मोटर-बोट में बैठ कर सब लोग एलीफेन्टा की ओर रवाना हो गए।

शीतलप्रसाद ने वहां पर खाने-पीने का अच्छा प्रबन्ध करवा दिया था। प्रायः सब लोग हंसी-खुशी के रंग में थे, और चमेली भी अपने को उस रंग से न बचा सकी। शिवकुमार ने विशेष-रूप से यह प्रबंध किया था कि शीतलप्रसाद के साथ चमेली रहे। शीतलप्रसाद ने प्रस्ताव किया, "गुफाएं देख चुके, खाना तैयार होने में अभी करीब एक घंटे का वक्त है—तब तक इन पहाड़ियों पर क्यों न घूमा जाय ?"

सब लोगों ने एक स्वर में प्रस्ताव स्वीकार कर लिया—और दो-दो, चार-चार की टुकड़ियां बना कर निकल पड़े। शीतलप्रसाद ने हंसते हुए शिवकुमार से कहा, "मैं तो अपने हीरोइन के साथ चलूंगा—आपको कोई आपत्ति तो नहीं है शिवकुमार जी ?"

"बिल्कुल नहीं!" शिवकुमार ने उत्तर दिया।

चमेली ने यह प्रस्ताव सुनकर शीतलप्रसाद की ओर देखा और उसे ऐसा लगा मानो पशुता उसके मुख पर नाच रही है। शीतलप्रसाद अपने साथ ह्विस्की का एक अद्धा अपने कोट की जेब में छिपाकर लाया था, और वह लोगों की नजर छिपाकर काफी पी चुका था। उस समय उसकी आंखें लाल थीं। एक बार चमेली के मन में आया कि वह शीतलप्रसाद के साथ जाने से इनकार कर दे, लेकिन फिर कुछ सोच कर वह चुप रह गई। चुपचाप अनमनी-सी वह शीतलप्रसाद के साथ चल दी।

जब लोग इधर-उधर बिखर गए, और चमेली के साथ शीतलप्रसाद वृक्षों के एक झुरमुट में पहुंच गया, तब वह रुक गया। "चमेली रानी, आज की, पहली मुलाकात के उपलक्ष्य में हम लोग कुछ थोड़ी-सी यहां बैठ कर पी लें!" और यह कहकर उसने अपने कंधे वाली थरमास की बोतल उतार कर चमेली के हाथ में दे दी तथा उसने अपनी जेब से ह्विस्की का अद्धा निकाला।

चमेली ने शान्त भाव से कहा, "धन्यवाद, लेकिन मैं शराब नहीं पीती। आप पियें," और यह कह कर चमेली ने थरमास की बोतल के गिलासनुमा ढक्कन में पानी डाल कर शीतलप्रसाद की ओर बढ़ाया।

शीतलप्रसाद ने थोड़ी-सी शराब उसमें डाल कर चमेली की ओर बढ़ाते हुए कहा, "कोई बात नहीं, थोड़ी-सी चख लो।"

शीतलप्रसाद का हाथ मुलायमियत के साथ हटाते हुए चमेली ने कहा, "नहीं, आप ही पीजिए!"

चमेली के अन्दर जो क्रोध और ग्लानि थी, वह उसे बड़े प्रयत्न के साथ अपने अन्दर दबाए थी। शीतलप्रसाद को चमेली की भावनाओं का पता न था। उसने इस बार चमेली के गले में अपना

बांया हाथ डालते हुए अपनी ओर खींचा और दाहिने हाथ से ग्लास चमेली के होठों से लगाते हुए कहा, "ऐसे नहीं पियोगी मेरी रानी, लेकिन मेरी खातिर तुम्हें चखनी ही पड़ेगी!"

चमेली के जी में आया कि वह उस आदमी का मुंह नोच ले, लेकिन उसने इस बार भी अपने को रोका। शीतलप्रसाद के उस बन्धन से मुक्त होकर उसने कहा, "सेठ इस तरह अपने को नहीं खो दिया जाता। तुम पियो, और घूमने चलो, इसीलिए तो हम लोग आए हैं न!" और वह शीतलप्रसाद से कुछ दूरी पर हट कर खड़ी हो गई।

शीतलप्रसाद ने ग्लास खाली करके, एक खिसियानी हँसी हँसते हुए कहा, "तुम्हारे ही मन की होगी चमेली रानी! चलो!" दोनों चल दिये। अब वे एक पहाड़ी पर चढ़ रहे थे। शीतलप्रसाद ने कहा, "चमेली रानी—शिवकुमार मुझ से फिल्म में पांच लाख रुपया लगाने को कह रहे हैं। लेकिन मैं इसी शर्त पर रुपया लगाना चाहता हूं कि स्टूडियो लिमिटेड हो जाय।"

"हूं!" चमेली ने सिर्फ इतना ही कहा।

"मैनेजिंग एजेंसी में तीन आदमियों के रहने की बात है—तुम शिवकुमार और मैं।"

चमेली ने पूछा, "आप की और सेठ शिवकुमार की बात तो मेरी समझ में आती है; लेकिन मैं किस तरह रहूंगी? मेरे पास तो रुपया नहीं है, नौकरी करके काम चलाती हूं!"

"रुपए की बात नहीं है चमेली रानी! तुम्हारी तरफ से पच्चास हजार के शेयर मैं खरीद दूंगा—लेकिन एक हीरोइन कम्पनी की मैनेजिंग डाइरेक्टर हो तो कम्पनी की शान बढ़ जाएगी।"

"मुझे आप मैनेजिंग डाइरेक्टर बनाना चाहते हैं? मैं तो पढ़ी-लिखी भी नहीं हूं सेठ! सेठ शिवकुमार को क्यों नहीं मैनेजिंग डाइरेक्टर

बनाते ? यह कम्पनी का काम अच्छी तरह चलाते रहे हैं—उन्हीं की तो कम्पनी है !"

"बात यह है कि काम वही करेंगे—लेकिन नाम तुम्हारा रहेगा चमेली रानी !"

चमेली चलते-चलते रुक गई ! वह जोर से हँस पड़ी, "पचास हजार के शेयर आप मेरे नाम से खरीदेंगे—बड़ी मजेदार बात कही सेठ ! मेरी बहुत अधिक कीमत लगा दी है सेठ—पचास हजार रुपया !"

शीतलप्रसाद ने सकपकाते हुए कहा, "लेकिन चमेली रानी वह पचास हजार के शेयर मेरे पास गिरों रहेंगे—मैं कोई पचास हजार रुपया तुम्हें नहीं दे रहा हूं—मैं तुम्हें सिर्फ मैनेजिंग डाइरेक्टर की तौर से आगे बढ़ाना चाहता हूं ! समझीं !"

और यह बात पूरी-पूरी चमेली की समझ में आ गई। उसने हँसते हुए कहा, "अच्छी बात है—मैं राजी हूं सेठ !"

लौट कर जब सब लोग खाने पर बैठे तब शीतलप्रसाद ने शिवकुमार और चमेली को अकेले में बुलाकर शिवकुमार से कहा, "मैंने चमेली देवी को राजी कर लिया, कल लिखा-पढ़ी हो जाय ! पचास हजार के शेयर चमेली देवी के होंगे—साढ़े चार लाख के मेरे ; और मैनेजिंग डाइरेक्टर चमेली देवी रहेंगी।"

शिवकुमार ने कृतज्ञतापूर्वक चमेली को देखते हुए कहा, "बधाई है चमेली देवी ! कल ही यह सब होजाएगा !"

शीतलप्रसाद ने फिर कहा, "और उसकी खुशी में आज रात किसी पिक्चर में चला जाय, फिर मेरी तरफ से ताजमहल में दावत !"

"मुझे मंजूर!" शिवकुमार ने कहा, "और चमेली देवी को भी कोई आपत्ति न होनी चाहिए !" और यह कह कर उसने चमेली का हाथ दबा दिया।

चमेली ने कहा, "अच्छी बात है—आप लोग मुझे घर से ले लें।"

शिवकुमार ने फिर कहा, "अभी बारह बजे हैं। खाना खाकर हम लोग यहां से अब रवाना हो जायं। मैं वकील से सब मसविदा बनवाए लेता हूं। मेरा ख्याल है पांच हजार का खर्च होगा।"

"कोई बात नहीं, रात में मैं अपनी चेक बुक लेता आऊंगा, वहीं तुमको चेक दे दूंगा।"

घर आकर चमेली थकी-सी पलंग पर लेट रही। यह सब क्या हो रहा है? यह सब क्यों हो रहा है? और यह सब उसे कहां ले जायगा? बात की बात में इतने महान परिवर्तनों की कल्पना ही उसे असह्य हो रही थी। एक गांव की लड़की—और इतने थोड़े-से समय में वह इतने ऊंचे स्थान पर आ पहुंची। पर उसे कुछ ऐसा लग रहा था कि जो कुछ भी हो रहा है वह गलत हो रहा है, वह गलती कहां है, चमेली यह जानना चाहती थी, पर उसे उस गलती का पता न चल रहा था।

एक बार उसके मन में आया कि वह रामेश्वर से इस संबंध में परामर्श कर ले ; पर रामेश्वर.......क्या रामेश्वर इस संबंध में उसे उचित परामर्श दे सकेगा? और उसी समय उसके सामने रामेश्वर का वह रूप आ गया जो उसने पिछले दिन गोरेगांव में देखा था। उसने मन ही मन कहा, "आखिर इसमें उनके परामर्श की जरूरत ही क्या है? जो कुछ हो रहा है, उसमें अनुचित ही क्या है? और यह सोचते-सोचते उसे नींद आ गई।

जब उसकी नींद खुली उस समय पांच बज चुके थे। चमेली ने उठकर स्नान किया। स्नान करके उसने कपड़े बदले। आज न जाने क्यों उसने अपनी सबसे कीमती साड़ी निकाली। साथ ही उसने अपना पूरा सिंगार किया। वह अपना सिंगार करके उठी ही थी कि शिव-कुमार ने उसके दरवाजे की घण्टी बजाई। नौकर ने दरवाजा खोल

दिया, शिवकुमार और शीतलप्रसाद उसके ड्राइंग-रूम में आकर बैठ गए।

कपड़े बदल कर जब चमेली ड्राइंग-रूम में आई, शीतलप्रसाद उसे देखते ही स्तब्ध रह गया। शिवकुमार ने शीतलप्रसाद के मुख के भाव पढ़ लिए, वह हँस पड़ा, "शीतल बाबू—आप जानते ही हैं कि मैं बहुत बड़ा पारखी हूं—बड़ी मुश्किल से चमेली देवी को ढूंढ़ा है!"

सब लोग उठ खड़े हुए, पिक्चर का समय हो रहा था। ताजमहल होटल से खाना खाकर सब लोग निकले तब शिवकुमार ने शीतलप्रसाद से कहा, "शीतल बाबू—मेरा ऐसा खयाल है कि यहां से चल कर आफिस में आज इसी समय हम लोगों की आपसी लिखा-पढ़ी हो जाय। आपने खर्चे का चेक देने को कहा था न!"

शीतलप्रसाद इस समय तक बेतहाशा पिये हुए था, उसने कुछ लड़-खड़ाते स्वर में कहा, "जरूर! जरूर! अभी, इसी वक्त लिखा-पढ़ी हो जानी चाहिए, चेक बुक मैं साथ लेता आया हूं!"

उस समय आफिस में दरबान को छोड़ कर और कोई न था।

आफिस के ड्राइंग-रूम में पहुंचकर शीतलप्रसाद सोफे पर बैठ गया। शिवकुमार ने बिजली का पंखा खोल दिया, फिर वह बाहर वाले कमरे से एक एग्रीमेन्ट ले आया, जो उसने उसी दिन दोपहर को तैयार कर लिया था। उस एग्रीमेन्ट के अनुसार दस लाख की पूंजी से वह स्टूडियो प्राइवेट लिमिटेड कर दिया गया था। स्टूडियो की मौजूदा कीमत पांच लाख मानी गई थी। शिवकुमार ने स्टूडियो के मूल्य में दो लाख के शेयर अपने लिए रक्खे थे, बाकी तीन लाख रुपए उसने शीतलप्रसाद के पांच लाख रुपयों से नकद लेने की बात लिखी थी। पांच शेयर होल्डर थे, शीतलप्रसाद, शीतलप्रसाद की पत्नी, शिवकुमार, शिवकुमार की पत्नी और चमेली। चार लाख के शेयर शीतलप्रसाद के थे, पचास हजार के शेयर उसकी पत्नी के नाम, पचास हजार के शेयर चमेली के

नाम, एक लाख के शेयर शिवकुमार के नाम और एक लाख के शेयर शिवकुमार की पत्नी के नाम। यह भी लिखा था कि शिवकुमार शहर के दफ्तर में जनरल मैनेजर की हैसियत से रहेगा, मैनेजिंग डाइरेक्टर की तौर से चमेली स्टूडियो में रहेगी और चेक शीतलप्रसाद के हस्ताक्षर से दिये जायेंगे।

इस एग्रीमेन्ट पर सबों के हस्ताक्षर हो जाने के बाद शीतलप्रसाद ने पांच हजार का चेक शिवकुमार को दिया।

इसी समय टेलीफोन की घण्टी बजी। शिवकुमार ने रिसीवर उठाया। कुछ बात करके उसने कहा, "शीतल बाबू, मुझे जरा एक जरूरी काम से मैरीनड्राइव जाना है, आपकी कार ले जाऊं, आध घंटे में लौट आऊंगा!

चमेली बोल उठी, "सब काम तो खत्म हो गया है, अब हम सब लोग चलें न ?"

शीतलप्रसाद ने मुसकराते हुए कहा, "बैठो भी चमेली रानी, यह अपनी कार नहीं लाए हैं।" और उसने शिवकुमार से कहा, "अगर वहां देर लगे तो मेरी कार भेज देना!"

शिवकुमार हँस पड़ा, "शेरी की एक बोतल उस अलमारी में है शीतल बाबू—चमेली रानी मैं जल्दी से जल्दी आऊंगा। तुम तब तक इनके साथ बैठो!" और बिना चमेली से अपनी बात का उत्तर लिये शिवकुमार चला गया।

चमेली अब उस कमरे में शीतलप्रसाद के साथ अकेली रह गई। शीतलप्रसाद ने बैठते हुए कहा, "चमेली रानी, अलमारी से शेरी की बोतल निकाल के मुझे दो—मैं इस वक्त न उठ सकूंगा।"

चमेली ने बोतल निकाल कर एक गिलास में शेरी भर कर शीतल प्रसाद को दी। शीतलप्रसाद ने चमेली का हाथ पकड़ कर उसे अपने पास बिठलाते हुए कहा, "चमेली रानी, तुम मुझे पिलाओ!"

"आप होश में नहीं हैं सेठ!" चमेली ने मुसकराते हुए कहा।

शीतलप्रसाद बोल उठा, "हां चमेली रानी—ठीक कहा, मैं होश खो चुका हूँ। लेकिन यह जो होश खोया है वह इस मदिरा से नहीं, बल्कि तुम्हारे रूप की मदिरा से! चमेली रानी, मैं तुम्हारा हो चुका, सदा के लिए तुम्हारा हो चुका! जिस समय तुम्हें देखा, मुझे ऐसा लगा कि हम दोनों एक दूसरे के लिए बने हैं। तुम्हें देखने के बाद ही मैंने इस स्टूडियो में रुपया लगाया है—तुम्हारी खातिर! तुम्हारे नाम मैंने पचास हजार के शेयर ले लिये हैं।"

"लेकिन सेठ! वे शेयर तो तुम्हारे पास रेहन रहेंगे!" चमेली ने चंचलतापूर्वक कहा।

"तो फिर तुम शीतलप्रसाद को जानती नहीं मेरी रानी! वह शेयर तुम्हारे होंगे—तुम्हारे पास रहेंगे। और मैनेजिंग डाइरेक्टर की हैसियत से तुम्हें एक कार मिलेगी। इस सारी सम्पत्ति की मालकिन तुम होगी मेरी रानी, तुम!"

चमेली ने एक बार गौर से शीतलप्रसाद को देखा, उसकी भौहों में बल पड़ गए थे। उसने कहा, "वह पचास हजार के शेयर मेरे होंगे, मेरे पास रहेंगे—तुम ठीक कह रहे हो सेठ? इतनी बड़ी कीमत देकर तुम मुझे खरीदना चाहते हो?"

शीतलप्रसाद चमेली की उस कठोर दृष्टि के आगे सहम-सा गया। पर वह एक बारगी ही सम्हल गया, "मैं बिक रहा हूं तुम्हारे हाथों चमेली रानी—जो कुछ मेरा है वह सब तुम्हारा है, मैं तुम्हारा हूँ। तुम मुझ पर विश्वास करो, तुम्हारे बिना मैं न रह सकूंगा!"

शीतलप्रसाद अपनी बात कह रहा था और चमेली के मुख की कठोरता गलती जा रही थी। जिस समय तक शीतलप्रसाद ने अपनी बात समाप्त की चमेली के मुख की स्वाभाविक कोमलता उसके मुख पर लौट आई। चमेली ने केवल इतना कहा, "सेठ, समझ नहीं पा

रही हूं—शायद इस नियति के विधान को कभी भी कोई नहीं समझ सकेगा।"

और इसके बाद शीतलप्रसाद उस समस्त वातावरण तथा स्थिति का स्वामी बन गया।

शिवकुमार आधा घंटा कह कर गया था, लेकिन उसे एक घंटा लग गया। जिस समय वह वापस लौटा, उसने देखा कि शीतलप्रसाद सोफे पर सो रहा है और चमेली एक कुरसी पर कुछ गम्भीर और उदास बैठी है। शिवकुमार ने कहा, "यह तो सो गया चमेली, बहुत ज्यादा पी गया है, मालूम होता है!"

"हां! और अब देर भी बहुत हो गई है। हम लोगों को चलना चाहिए। बड़ी देर लगा दी आपने!"

सत्ताईसवाँ परिच्छेद

पन्द्रह दिन बाद जब सारी कानूनी कार्रवाई पूरी हो गई, और चमेली ने स्टूडियो का चार्ज लिया तो लोगों में एक तरह की खलबली मच गई। स्टूडियो में किसी को वास्तविक स्थिति का पता न था, और जब लोगों ने यह सुना कि शिवकुमार हफ्ते में दो दिन केवल एक घंटे के लिए स्टूडियो आया करेंगे, तो लोगों के आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा। चमेली के मैनेजिंग डाइरेक्टर बनने पर राधा को सबसे अधिक बुरा लगा। चार्ज लेकर जब चमेली शूटिंग पर चली तो राधा शिवकुमार के कमरे में पहुंची, "क्यों सेठ! क्या मामला है?"

शिवकुमार ने कहा, "मामला क्या? तुम्हें शायद पता हो कि मुझे लम्बा घाटा आया था, इसलिए मैंने इस कम्पनी को लिमिटेड कर दिया है। शेयरहोल्डरों ने अब यह तै किया कि चमेली देवी मैने-जिंग डाइरेक्टर बनें, तो भला मैं क्या कर सकता था?"

"जरा शेयरहोल्डरों के नाम तो सुनूं?" राधा ने पूछा।

"मैं तो हूं ही, चमेली देवी भी हैं—इसके अलावा जो लोग हैं, उन लोगों का नाम अभी गुप्त है।" शिवकुमार हँस पड़ा।

राधा शिवकुमार से और कुछ न जान सकी। मन-ही-मन वह बुरी तरह जल रही थी; साथ ही वह भयभीत भी थी। चमेली से उसने दुश्मनी मोल ले ली थी और अब चमेली के हाथ में पूरी ताकत आ गई थी। राधा ने शिवकुमार से कहा, "तो सेठ! क्या मुझे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा? चमेली तो मुझे फूटी आंखों नहीं देख सकती!"

आश्चर्य-चकित होकर शिवकुमार ने कहा, "चमेली के मन में तो

तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई ऐसी बात नहीं दिखलाई देती। अगर वह तुम्हें यहां से निकालना चाहती तो उसे अभी तक रोकने वाला कौन था? तुम जानती ही हो कि लगाकर डाइरेक्टर से मुझ तक—हरेक आदमी उसकी बात पर "ना" नहीं कह सकता। मेरी सलाह यह है कि चमेली देवी को तुम अभी तक नहीं पहचान पाई हो राधा, तुम्हारे अन्दर चमेली देवी की तरफ़ जो कुछ मैल हो उसे दूर कर दो, चमेली से मिलो-जुलो, उसे खुश रक्खो; दिल की वह बड़ी भोली और नेक है!"

चमेली के संबंध में शिवकुमार ने जो कुछ कहा वह सत्य था, अपनी बात कहते-कहते स्वयं शिवकुमार ने इस बात का अनुभव किया।

उसी दिन दोपहर को चमेली की नई कार आ गई। यही नहीं, यह भी तै हुआ था कि चमेली जल्दी से जल्दी अपना फ्लैट बदल देगी और मैरीन ड्राइव के किसी शानदार फ्लैट में चली जाएगी। शाम के समय, शूटिंग समाप्त हो जाने के बाद चमेली जब प्रथम बार अपनी निजी गाड़ी पर बैठी, उसके मन में उल्लास अठखेलियाँ कर रहा था। उसकी गाड़ी जैसे ही स्टूडियो के बाहर निकली, चमेली ने ड्राइवर से कहा, "गोरेगांव की तरफ़!"

कार रामेश्वर के मकान के सामने रुकवा कर चमेली कार से उतरी। नीचे बरामदे में एक आदमी चारपाई पर पड़ा ऊँघ-सा रहा था। अब वह सचेत होकर उठ खड़ा हुआ; चमेली के पास आकर उसने कहा, "आप किसे ढूंढ़ रही हैं?"

"रामेश्वर को!" चमेली ने उत्तर दिया। "यही उनका मकान है न?"

"रामेश्वर भइया का मकान तो यह है, लेकिन रामेश्वर भइया से अभी मिलना न हो सकेगा, वह कुछ बहुत जरूरी काम कर रहे हैं!"

"उनसे मेरा मिलना न होगा—क्या बक रहे हो?" यह कह कर चमेली ऊपर जाने वाले जीने की तरफ़ बढ़ी।

वह आदमी तेजी से बढ़कर जीने के सामने हो गया, "आप ऊपर नहीं जा सकतीं, रामेश्वर भइया का हुक्म है कि मैं इस वक्त किसी को ऊपर न जाने दूं! क्या बहुत जरूरी काम है? आप हैं कौन?"

"मैं उनकी घर वाली हूं—उनसे कह दो कि मैं बाहर खड़ी हूं!"

वह आदमी हँस पड़ा, "बेवकूफ बनाने के लिए मैं ही मिला हूं—आप रामेश्वर भइया की घर वाली? ऐसा मजेदार मजाक तो किसी ने मेरे साथ आज तक नहीं किया। वह कार आप की है न?"

चमेली उस आदमी के आश्चर्य पर मुसकरा दी, "हां वह मेरी ही कार है! तुम उनसे कह तो दो जाकर!"

"अच्छा, पहले तुम अपनी कार पर बैठ जाओ, तब ऊपर जाऊंगा!"

चमेली चुपचाप अपनी कार पर बैठ गई। वह आदमी ऊपर चला गया । पांच मिनट बाद उस आदमी के साथ रामेश्वर नीचे उतरा। कार की ओर बढ़ते हुए उसने कहा, "अरी तू! आज तो बड़ी शान दार मोटर में आई है!"

चमेली ने मोटर का दरवाजा खोलते हुए कहा, "बहुत जरूरी बात करने आई हूं!"

"लेकिन मेरे घर में तो इस वक्त तिल रखने की जगह नहीं है तुझे बैठा लूं कहां! अच्छा चल तेरे साथ मोटर पर चलता हूं, रास्ते में बात कर लेंगे। लेकिन मुझे फिर यहां वापस ले आना होगा!"

"मोटर पर तो ड्राइवर है, मैं अकेले में बात करना चाहती हूं!" चमेली ने धीमे स्वर में कहा।

"कोई बात नहीं, बरसोवा बीच पर चलें—वहीं घूम-फिर कर बात कर लेंगे—यहां से नजदीक है, फिर मुझे यहां उतार जाना।"

बरसोवा पहुंच कर चमेली ने रामेश्वर से कहा, "तुम्हें सुनकर ताज्जुब होगा मैं अपनी फिल्म कम्पनी की मैनेजिंग डाइरेक्टर बन गई हूँ!"

"तू मैनेजिंग डाइरेक्टर बन गई है? तू? क्यों हँसी कर रही है?"

"नहीं, मैं हँसी नहीं कर रही। सेठ शिवकुमार को इस दफे सट्ट में लम्बा घाटा आया, और इसलिए उन्होंने फिल्म कम्पनी को लिमिटेड करा लिया है। लिमिटेड बनने पर मैं मैनेजिंग डाइरेक्टर बना दी गई हूँ!"

"सेठ शिवकुमार खुद मैनेजिंग डाइरेक्टर क्यों नहीं बने?" रामेश्वर ने आश्चर्य से पूछा।

"बात यह है कि जिस आदमी से उन्होंने रुपया लगवाया है, वह सेठ शिवकुमार पर विश्वास नहीं करता और खुद प्रकट रूप से फिल्म में आना भी नहीं चाहता। तो फिर यही उपाय निकाला कि मैं मैनेजिंग डाइरेक्टर बन जाऊं और सेठ शिवकुमार जेनरल मैनेजर रहेंगे। काम-काज सेठ शिवकुमार ही सम्हालेंगे, लेकिन कम्पनी पर उनका अधिकार न माना जायगा!"

"हूँ!" रामेश्वर ने कुछ सोचकर कहा, "और वह आदमी कौन है जिसने रुपया लगाया है?"

"मैं उसे अच्छी तरह तो नहीं जानती, लेकिन उसका नाम है शीतलप्रसाद, सुनती हूँ बहुत अमीर है!"

"शीतलप्रसाद—शीतलप्रसाद महली तो नहीं, माताप्रसाद महली का लड़का?" रामेश्वर ने पूछा।

"हां, हां, वही! सुना है ग्यारह-बारह मिलें हैं उनकी, करोड़-पती आदमी हैं!"

रामेश्वर ने सिर हिलाते हुए कहा, "वह तो अभी लड़का ही है, वैसे भला और नेक है, फिल्म के चक्कर में कैसे फँस गया?" और फिर मानो वह अपने को ही किसी बात का उत्तर देने का प्रयत्न

कर रहा हो, "समझ गया। शीतलप्रसाद महली भला एक छोटी-मोटी फिल्म-कम्पनी की देख-भाल क्या करेगा? लेकिन मैनेजिंग डाइरेक्टर बनने के लिए तो शेयरहोल्डर बनना पड़ता है, तेरे पास रुपया कहां से था?"

अब चमेली को झूठ बोलना पड़ा, "मैनेजिंग डाइरेक्टर की जो तनख्वाह होती है डेढ़ हजार रुपया महीने, साल भर की तनख्वाह पेशगी, यानी अठारह हजार दे, और दो हजार मेरी हीरोइन की तनख्वाह थे—इस तरह बीस हजार के मेरे शेयर हो गए हैं!"

रामेश्वर ने अब अपनी आंखें चमेली पर गड़ा दीं, "चमेली रानी, हम दोनों बहुत तेजी के साथ अमीर बन रहे हैं। यह देख, "रामेश्वर ने अपनी बण्डी से दस हजार रुपए के नोटों को निकालकर चमेली को दिखाते हुए कहा, "यह दस हजार रुपए मैंने अभी तक पैदा किये हैं! तू मुझे अपनी सब बातें बतला देती है, तो मुझे भी अपनी बात न छिपानी चाहिए, "यह रुपया मैंने पैदा किया है अकेले दूध बेंचकर नहीं, नाजायज शराब बेंचकर, लोगों से जूआ खिलवा कर महीने भर के अन्दर ही रामेश्वर भइया महीम से लेकर मलाद तक के भइयों का सरदार बन गया है।" दस हजार के नोट रामेश्वर ने अपनी बण्डी में डाल लिए, "तो चमेली रानी, देखना यह है कि जल्दी तुम अमीर बनती हो या मैं।"

रामेश्वर की बात सुनकर चमेली सहम गई। तो रामेश्वर अकेले दूध का रोजगार नहीं करता, वह अपराधियों के एक गिरोह का सरदार बन गया है। चमेली ने करुण भाव से कहा, "मेरी एक प्रार्थना स्वीकार कर लो—तुम अपना यह काम-काज छोड़कर स्टूडियो सम्हालो चल कर, मैं अकेली हूं, औरत हूँ मुझे तुम्हारा सहारा चाहिए!"

रामेश्वर ने शांत भाव से कहा, "नहीं चमेली, तुम अब उस स्थिति से बहुत ऊपर उठ चुकी हो जहां सहारे की आवश्यकता होती है।

तुम अपना काम किये जाओ—मैं भी अपना काम कर रहा हूं। एक लाख रुपया जब इकट्ठा कर लूंगा तब मैं यहां से चलूंगा, तुझे अपने साथ लूंगा, और दोनों अपने देश में चल कर रहेंगे। तब तक इन्तजार कर, काम कर, पाप-पुण्य को उठाकर ताक में रख दे, अधिक से अधिक रुपया पैदा कर!" और रामेश्वर हँस पड़ा, "अच्छा अब मुझे देर हो रही है, चलना चाहिए!"

चलते-चलते चमेली ने फिर एक प्रयत्न किया, "देखो, क्या फिर से हम दोनों शान्त-भाव से गरीबी में एक दूसरे के बन कर नहीं रह सकते?"

रामेश्वर ने कहा, "नहीं री, कदम उठ कर पीछे नहीं पड़ा करता। जब हम अमीर बन सकते हैं तब क्यों न बना जाय? और यह याद रखना, मैं हमेशा-हमेशा तेरा रहूंगा। जब तुझ पर कोई मुसीबत पड़े मुझसे कहला भर देना। रामेश्वर भइया अब बड़ा ताकतवर आदमी बन गया है। पचास आदमी उसके पास हैं, और ये पचास आदमी ऐसे जो मरने-मारने के लिए तैयार हैं। तो यह याद रखना कि जब तुझ पर कोई मुसीबत आवे, मुझे खबर कर देना!"

चमेली ने देख लिया कि नियति के क्रम को बदला नहीं जा सकता। जो होना है वह होकर रहेगा, आदमी को बनाने-बिगाड़ने वाला कोई दूसरा ही है। एक उसांस लेकर उसने कहा, "जैसी मर्जी! हां, एक बात और! शायद मुझे अपना मकान भी बदलना पड़े। मैनेजिंग डाइरेक्टर होकर मैं उसी मकान में अब भला कैसे रह सकती हूं जिसमें राधा और जगमोहन रहते हों। कम्पनी की तरफ से मुझे यह गाड़ी मिली है। सोचती हूं मैरीन ड्राइव पर कोई मकान मिल जाय तो अच्छा हो! तुम्हें अगर फुरसत हो तो कोई मकान ढूंढ़ दो!"

रामेश्वर ने मुसकराते हुए कहा, "तू ही ढूंढ़ ले, रामेश्वर भइया को मैरीन ड्राइव पर कोई मकान नहीं मिलेगा। मकान ढूंढ़ कर

मुझसे कहला देना, सामान वगैरह उठवाने का काम मैं अपने जिम्मे लेता हूं!"

रामेश्वर को गोरेगांव उतार कर चमेली अपने घर लौटी। ड्राइवर ने पूछा, "अब तो कार नहीं चाहिए?"

चमेली ने कहा, "नहीं, लेकिन कार ले कहां जाओगे?"

"सेठ शीतलप्रसाद ने गैराज का इंतजाम अभी अपनी कोठी में करवा दिया है, जब तक यहाँ कहीं दूसरा गैराज न मिल जाय।"

चमेली ड्राइंग-रूम में जाकर बैठ गई; वह उस समय नितान्त अकेली थी। नौकर सामान लाने चला गया था, और बाजार उसके मकान से काफी दूर था। चमेली चुप बैठी थी, उदास, खिन्नमना। उसने मुंह-हाथ नहीं धोया, उसने कपड़े नहीं बदले; वह निश्चेष्ट बैठी सोच रही थी। आखिर यह सब क्या हो रहा है और क्यों हो रहा है? बेर-बेर वह यह प्रश्न कर रही थी। पर किससे वह यह प्रश्न कर रही थी, वह यह न जानती थी। उसकी विचार-धारा में शृंखला न थी, प्रश्न एक के बाद एक उठते थे, बेतरतीबवार—और उठने के साथ ही प्रत्येक प्रश्न एक दुःस्वप्न की तरह कुछ क्षणों तक के लिए उसकी समस्त चेतना पर छा जाया करता था। और वह दुःस्वप्न भयानक रूप से कष्टदायक तथा मर्मान्तक उस समय हो जाता था, जब वह रामेश्वर पर सोचने लगती थी।

रामेश्वर ने जो मार्ग अपनाया है वह भयानक रूप से खतरनाक है, चमेली इतना अनुभव कर रही थी। मनुष्य जो कुछ करता है, उसका परिणाम भी उसे भोगना पड़ता है—चमेली के संस्कार इतना तो स्पष्ट-रूप से कह सकते थे। पाप और अपराध की दुनिया के संबंध में उसने जो कुछ सुन रक्खा था, वह भयावना था। रामेश्वर उसी पाप और अपराध की दुनिया का एक साधारण नागरिक ही नहीं; बल्कि

एक प्रमुख नेता बन गया था—रामेश्वर, उसका रामेश्वर, सीधा-सादा, नेक और इमानदार एकाएक अपराधी कैसे बन गया !"

और जैसे किसी ने चमेली से कहा, "तेरे कारण, तेरे पतन ने उसे पतित बना दिया है।"

चमेली दांत कचकचा कर पूछ बैठी, "लेकिन मेरे पतन का कारण तो वही थे। सब कुछ जानते हुए, समझते हुए आखिर उन्होंने ही तो मुझे इस काम पर मेरी इच्छा के विरुद्ध भेजा था। माना कि जेल जाने से बचने के लिए उन्होंने यह सब किया ; पर जेल जाने की नौबत तो उन्हें आ गई थी ! उन्होंने अपराध किया था, वह अपराध तो मेरे कारण नहीं किया था !"

उसी समय नौकर ने कमरे में आकर कहा, "राधा देवी आपसे मिलना चाहती हैं !"

चमेली ने मन-ही-मन राधा को अपना अकेलापन तोड़ने के लिए धन्यवाद दिया। "उन्हें लिवा आओ !" चमेली ने कहा।

राधा कमरे में आई कुछ हत-प्रभ-सी, कुछ खिसियाई सी । आओ, बैठो !" चमेली ने राधा का स्वागत किया।

बैठते हुए राधा ने कहा, "मैं तुम्हें बधाई देने आई हूं चमेली !"

"बहुत-बहुत धन्यवाद ! जगमोहन कहां हैं ?"

"खाना बना रहे हैं—रसोइयां छोड़कर चला गया है न ! तो वह और किशोर दोनों मिल कर खाना बना रहे हैं। मैंने तो साफ कह दिया है कि मैं थकी मांदी हूं—मैं रसोई के बखेड़े में नहीं पड़ना चाहती ! जमाना बदल गया है, जब औरतें रुपया पैदा करेंगी तब घर का काम-काज मर्दों को करना पड़ेगा—" और राधा कहते-कहते हँस दी, जैसे उसने एक बहुत बड़ा मजाक कर डाला हो।

चमेली मुसकराई, "हैं भी ये लोग इसी काबिल !" और थोड़ा रुक

कर उसने कहा, "मेरे मैनेजिंग डायरेक्टर हो जाने पर स्टूडियो में तो हलचल मच गई होगी—बड़ा ताज्जुब हुआ होगा लोगों को!"

"हां ताज्जुब तो बहुत हुआ, लेकिन लोगों को बड़ी खुशी भी हुई। मैंने यह सोचा है कि तुम्हारे स्वागत में अगले रविवार को स्टूडियो में एक शानदार दावत दी जाय तथा एक मानपत्र भेंट किया जाय! जगमोहन ने तो चन्दे का काम भी शुरू कर दिया है।"

"अच्छा! लेकिन इसकी जरूरत क्या है?" चमेली ने अपनी प्रसन्नता को दबाते हुए कहा।

"वाह! तुम्हारे प्रति स्टूडियो वालों की कितनी ममता है, वे तुम्हारा कितना आदर करते हैं—चमेली तुम्हें इसका पता नहीं है। जगमोहन अभी आते होंगे, वह तुम्हें बधाई देने को बुरी तरह आतुर हो रहे थे, लेकिन मैंने उन्हें रोक दिया। आखिर खाना भी तो बनना है!"

इसी समय जगमोहन ने कमरे में प्रवेश किया, "बधाई चमेली रानी, बहुत-बहुत बधाई! कितनी प्रसन्नता हुई! अगर कहो तो मैं किशोर को बुला लूं। वह बेचारा तुम्हें बधाई देने को बुरी तरह आतुर है—दरवाजे पर खड़ा है; अन्दर आने की हिम्मत नहीं होती!"

किशोर की बात सुनते ही चमेली के प्रफुल्लित मुख पर ग्लानि और घृणा की एक छाया आ गई। उसके मन में आया कि वह किशोर के आने को मना कर दे, लेकिन जैसे उसके मन ने उससे कहा, "अनुदार मत बनो चमेली, किशोर तुमसे बहुत नीचा है, गिरा हुआ है! उससे बैर बांधना तुम्हें शोभा नहीं देता; और वैसे ही चमेली के मुख पर से वह घृणा और ग्लानि की छाया गायब हो गई। उसने जगमोहन से कहा, "हां, हां, बुला लो!"

किशोर ने आते ही कहा, "बधाई चमेली देवी जी!"

"धन्यवाद किशोर जी, बैठिए।"

किशोर न बैठते हुए कहा, "चमेली देवी, सबसे पहले मैंने जो कुछ भी आपसे कहा-सुना है उसके लिए माफी मांग लूं! आप यह समझ लीजिए कि मैं आपका छोटा भाई हूं, अनुभव-रहित, किसी हद तक बिगड़ा हुआ।"

चमेली हँस पड़ी, "किशोर जी, इतना सब कहने की कोई आवश्यकता नहीं ; रिश्ते न आसानी से बनते हैं और न आसानी से टूटते हैं। वैसे आपके प्रति मेरे मन में न कभी कोई मैल रहा है, न अब है! क्या कर रहे हैं आजकल?"

"बेकार हूं एक दम बेकार। दो-एक जगह बात तो चल रही है, लेकिन प्रेमकिशन जी ने इस फिल्मी दुनिया में बुरी तरह बदनाम कर दिया है! प्रेमकिशन जी का प्रभाव काफी अधिक है, मुझे काम मिलने में वह एक भयानक बाधा बन गए हैं। अगर मुझसे कुछ गलती हुई तो उसका दण्ड मुझे मिल चुका है। क्या उतना दण्ड काफी नहीं था ; मैंने इतना बड़ा पाप तो नहीं किया था कि वह मेरा अस्तित्व ही यहां असंभव बना दें! आज एक महीने से दौड़-धूप कर रहा हूं ; लेकिन ऐसा लगता है कि प्रेमकिशन जी द्वारा मेरे निकाले जाने की बात सब को मालूम है और लोग मुझे काम देने से इनकार कर देते हैं।"

यह तो बुरी बात है!" चमेली ने कहा। किशोर की बात सुनकर चमेली को उसके ऊपर दया आ गई, "मैं प्रेमकिशन जी से कह दूंगी, अब वे तुम्हारे खिलाफ कोई बात न कहेंगे!"

"बहुत-बहुत धन्यवाद चमेली देवी! आप एक डूबते हुए आदमी को बचाने के पुण्य की भागी होंगी। मुझे आपसे ऐसी ही आशा है। आप वास्तव में उदार हैं, महान् हैं!" किशोर ने कहा। फिर उसने दरवाजे की ओर देखते हुए कहा, "शायद कोई घंटी बजा रहा है?"

नौकर ने आकर कहा, "ड्राइवर आया है बीबी जी!"

"ड्राइवर—इस वक्त उसे कौन-सा काम पड़ गया?" चमेली कहते हुए उठ पड़ी। उस समय तक ड्राइवर कमरे के दरवाजे तक आ गया था, "देवी जी, सेठ शीतलप्रसाद ने देखने को भेजा है कि क्या आप अभी जाग रही हैं। साथ ही यह भी पुछवाया है कि अगर वे इस समय आवें तो आप को कोई अड़चन तो न होगी, कुछ जरूरी बातें करनी हैं उन्हें।"

चमेली ने कुछ सोचकर कहा, "इस वक्त मैं बुरी तरह थकी हूं, सेठ से कहना कि वह स्टूडियो में टेलीफोन करके कल वक्त तै कर लें—देख ही रहे हो, रात के दस बज चुके हैं।"

राधा के मन में अनायास ही प्रश्न उठा, "यह सेठ शीतलप्रसाद कौन है? नाम तो कुछ परिचित-सा मालूम होता है!" और एकाएक राधा को याद हो आई उस युवक की, जिसने अपने एलीफेन्टा वाली पिकनिक का पूरा प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया था, जिसकी मोटर बोट पर बैठकर सब लोग गए थे, जिसकी खुशामदें करने में सेठ शिवकुमार लगे थे!

"अब समझी!" राधा ने मन-ही-मन कहा, "सेठ शिवकुमार जिस आदमी का नाम छिपाते थे वह सेठ शीतलप्रसाद है!

ड्राइवर के जाने के बाद जगमोहन ने उठते हुए राधा से कहा, "अब चलो, बड़ी देर हो गई है। चमेली देवी थक गई हैं—इन्हें सोने दो!"

अट्ठाईसवाँ परिच्छेद

स्टूडियो का काम-काज अब जोरों के साथ चलने लगा था। वहां के कार्यकर्त्ताओं में एक नई उमंग थी, एक नया उत्साह था। स्टूडियो के काम-काज में चमेली के मुख्य सलाहकार थे प्रेमकिशन और रंजन। सेठ शिवकुमार हफ्ते में दो दिन स्टूडियो में आते थे, और दो-एक घंटे काम-काज देख कर चले जाते थे। चमेली के हाथ में ही स्टूडियो का सम्पूर्ण प्रवन्ध था। और वह प्रवन्ध सुचारु रूप से चल रहा था।

एक दिन शूटिंग समाप्त होने के बाद जब रंजन और प्रेमकिशन चमेली के कमरे में उसके साथ वैठे चा पी रहे थे और गपशप कर रहे थे, चमेली को अनायास ही किशोर की याद हो आई। उसने प्रेमकिशन से कहा, "प्रेमकिशनजी, कुछ दिनों पहले मुझसे किशोर मिला था। वह इन दिनों बड़ी मुसीबत में है—बिल्कुल बेकार!"

प्रेमकिशन हँस पड़ा, "मुझसे उलझ कर अगर मुसीबत में न पड़े तो ताज्जुब की बात ह। फिल्म लाइन में आकर प्रेमकिशन से बैर लेना, जल में रहकर मगर से बैर लेना होता है।"

मुसकराते हुए चमेली ने कहा, "लेकिन प्रेमकिशनजी, बैर-भाव तो बराबरी वालों में चला करता है। किशोर ने जो कुछ किया, उसका दण्ड उसे मिल गया, इसके बाद भी आप उससे बैर की भावना बनाए रक्खें, यह आपको तो शोभा नहीं देता।"

रंजन बोल उठा, "ठीक कहा आपने चमेली देवीजी; प्रेमकिशन, अब किशोर के खिलाफ अपना प्रचार बन्द कर दो!"

चमेली हँस पड़ी, "रंजनजी, जहां तक मैं समझती हूं, किशोर

का अधिक-से-अधिक अहित हो चुका है। अब प्रेमकिशनजी के प्रचार के बन्द करने से कोई फायदा नहीं, बात फिल्मी दुनिया में अच्छी तरह फैल गई है—क्यों प्रेमकिशनजी, मैं गलत तो नहीं कहती?"

किंचित हिचकिचाते हुए प्रेमकिशन ने कहा, "आप ठीक कहती हैं। मैंने इन दिनों किशोर की बाबत सोचना ही छोड़ दिया है, उसके खिलाफ प्रचार करना दूर रहा। और मैं मानता हूं कि उसके खिलाफ दूसरे लोगों से कहकर मैंने उसके साथ अच्छा नहीं किया।"

"मैं एक सलाह दूंगी—अगर आप उसे अनुचित न समझें तो आप उसे मान लीजिए।"

"हाँ-हाँ; आप की सलाह हम लोगों के सर आंखों।"

"हम लोगों को एक गीत लिखने वाले की आवश्यकता तो है ही। किशोर को हमी लोग क्यों न फिर से ले लें! जो कुछ उसने किया उसके लिए वह बहुत लज्जित है!"

प्रेमकिशन इस प्रस्ताव के लिए तैयार न था; उसने कहा, "चमेली देवी, अगर आप चाहती हैं तो आप उसे रख सकती हैं, पर मैं तो इस पक्ष में नहीं हूं! दिलों की गांठ आसानी से खुलती नहीं।"

चमेली ने उत्तर दिया, "प्रेमकिशनजी, गीत लेखक आदि लोगों की नियुक्ति आपका अधिकार है, मेरा नहीं। आप किशोर की नियुक्ति कर सकते हैं, आप उसकी नियुक्ति नहीं भी कर सकते हैं। मैंने तो उसका संदेश भर आप तक पहुंचा दिया, वह इसलिए कि उसकी दशा देखकर मुझे उसके ऊपर दया आ गई; और यह प्रस्ताव जो मैंने किया वह केवल इसलिए कि आप के प्रचार से जो उसकी जिन्दगी बरबाद हो गई है, वह केवल एक तरीके से सम्हल सकती है, कि आप स्वयं उसे क्षमा कर दें और उसे फिर से नियुक्त कर लें। वैसे निर्णय आपके हाथ में है; आप अब यह समझ लें कि मैंने यह बात आपसे उठाई ही नहीं।"

प्रेमकिशन ने रंजन की ओर देखा, और रंजन ने कहा, "मैं समझता हूँ प्रेमकिशनजी, किशोर को ले लेने में कोई हर्ज नहीं ; आप स्वयं बुलाकर बात कर लीजिए!"

"पंचों का निर्णय सर-आंखों!" प्रेमकिशन हँस पड़ा।

किशोर स्टूडियो में ले लिया गया। चमेली के प्रवन्ध अपने हाथ में लेने के वाद काम-काज की गति में काफी तेजी आ गई थी और निर्धारित समय से पन्द्रह दिन पहले ही पिक्चर समाप्त हो गई। पिक्चर के रिलीज होने का दिन निश्चित हुआ, और उस दिन नगर के प्रमुख व्यक्ति आमंत्रित किये गए।

शीतलप्रसाद के कारण उस दिन नगर के प्रमुख व्यक्ति यथेष्ट संख्या में आए थे। फूल-मालाओं से लदी चमेली संवाददाताओं से घिरी हुई थी। हरेक आदमी से उसका परिचय होता था, हरेक आदमी उसका आदर के साथ अभिवादन करता था।

आमंत्रित अतिथियों की भीड़ में रामेश्वर भी था, एक कोने में चुपचाप वैठा हुआ वह यह देख रहा था। चमेली ने रामेश्वर का परिचय शीतलप्रसाद से कराया, और वहुत देर तक वह रामेश्वर के साथ बैठी रही, पर रामेश्वर स्वयं उसका साथ छोड़कर एक तरफ हट कर वैठ गया था। चमेली का जितना आदर-मान हो रहा था, न जाने क्यों, रामेश्वर को उससे प्रसन्नता न हो रही थी। इन्टरवेल में चा आदि का प्रवन्ध था।

इस चित्र के प्रदर्शन ने यह साबित कर दिया कि चमेली फिल्म-लाइन की प्रथम कोटि की हीरोइनों में आ गई। चित्र की समस्त सफलता चमेली के कारण थी। इन्टरवेल में जनता चमेली को देखने के लिए उमड़ पड़ी । चमेली के ऊपर फूल-मालाएं बरस रही थीं, और चमेली मुसकराती हुई जनता के अभिनन्दन को स्वीकार कर रही थी। उस समय चमेली की वगल में शीतलप्रसाद और शिवकुमार खड़े थे।

रामेश्वर चुपचाप यह सब देख रहा था, और उसके अन्दर वाला विषाद लगातार बढ़ता जा रहा था।

शो समाप्त होने के बाद स्टूडियो कर्मचारियों की एक बड़ी दावत ताजमहल होटल में रक्खी गई थी। रामेश्वर उस दावत में आमंत्रित था। जब सब लोग उस दावत के लिए रवाना होने लगे, तब चमेली ने रामेश्वर को ढूंढ़ा । पर रामेश्वर बिना चमेली से कुछ कहे-सुने चला गया था।

चमेली का मन भारी हो गया । रामेश्वर को चले जाने की ऐसी क्या आवश्यकता आ पड़ी! उसे रामेश्वर पर क्रोध आ रहा था। उसके मन में हो रहा था कि वह उस दावत में न जाय ; पर ऐसा करना अनुचित होगा। वह यह अनुभव करती थी। वह दावत में गई-- पर उसके अन्दर वाला उल्लास समाप्त हो गया था। जो कुछ हो रहा था, उसमें चमेली को अब कोई दिलचस्पी न रह गई थी। वह अपने अन्दर ही बुरी तरह से उलझ गई थी। दावत समाप्त होते ही वह अपनी कार पर सवार होकर अपने घर चली गई। वह पलंग पर चुप-चाप गिर रही, अपने अन्दर एक भयानक सूनेपन को लिये हुए, नितान्त अकेली ! वह उस समय रो रही थी, बुरी तरह रो रही थी। एक अजीब तरह की आशंका उसके मन में भर गई थी ।

वह किस समय सोई, इसका उसको पता नहीं ; पर घंटी की तेज आवाज से वह एकाएक जग पड़ी। उसने उठकर घड़ी देखी, सुबह के छै बज रहे थे। नौकर को उसने पिछले दिन दो दिन की छुट्टी दे दी थी। इतनी सुबह कौन आया है—यह सोचते हुए चमेली ने स्वयं दरवाजा खोला । और उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उसने देखा कि दरवाजे पर रामेश्वर खड़ा है।

रामेश्वर कुछ बोला नहीं, चुपचाप खड़ा हुआ कुछ देर तक वह

चमेली को देखता रहा। रामेश्वर की उस दृष्टि से चमेली घबड़ा गई, उसने कहा, "यहां इस तरह क्यों खड़े हो, आओ न!"

और रामेश्वर एकाएक हँस पड़ा, "अरे—यहां कहां आ गया; यहां आने के लिए तो मैं नहीं चला था।" यह कह कर उसने घर के अन्दर प्रवेश किया; "लेकिन अगर आ गया हूं तो अच्छा ही हुआ। क्या रात बड़ी देर तक जागती रही है, तेरी आंखें इतनी लाल हैं; सुबह-सुबह तुझे जगा कर मैंने शायद अच्छा नहीं किया। नौकर बीमार पड़ गया, तो दूध लेकर आज शहर में ही आया; और शहर आकर यह तबीयत हुई कि कहीं चल कर चा पियूं। तो चल पड़ा; और अचानक यहां आ गया।"

चमेली ने कहा, "अच्छा किया, बैठो न, अभी चा बनाती हूँ। "लेकिन कल रात तुम चले कहां गए थे—मैं तुम्हे इतना ढूंढ़ती रही।"

"कहा न, कि नौकर बीमार पड़ गया है, तो काम-काज मुझे खुद सम्हालना था।"

"तो मुझसे कहके जाते! तुम जानते हो, तुम्हारे जाने से मेरा दावत में मन ही नहीं लगा।"

"यह गलती हुई, लेकिन तू तो बड़े आदमियों से घिरी बैठी थी, उस भीड़ में बेचारे रामेश्वर को कौन पूछता।"

चमेली ने चा तैयार की, और फिर दोनों ने मिलकर चा पी।

चा पीते हुए चमेली ने कहा, "सुना है उस तस्वीर में स्टूडियो को ढाई लाख का फायदा हुआ है, इसके माने ये हैं कि मुझे बीस हजार रुपए मिलेंगे। मेरी एक बात मानो तो कहूं!"

रामेश्वर ने कहा, "मानने की होगी तो जरूर मानूंगा, बोल।"

"मैं कहती हूँ, तुम मुझे मदद करो आकर! मैं औरत ठहरी मुझसे यह काम-काज नहीं सम्हलता है।"

रामेश्वर मुसकराया, " लेकिन यह काम-काज मुझसे भी तो न सम्हल सकेगा, न मैं इसकी बाबत कुछ समझता ही हूं।" और थोड़ा रुक कर तथा किंचित गम्भीर होकर उसने कहा, "और चमेली रानी, जो काम मैं कर रहा हूं उसमें मुझे काफी फायदा हो रहा है। इसके अलावा आज मेरे पास ताकत है, लोगों पर मेरा आतंक है, मेरी छाप है। नहीं, जब तक मैं एक लाख रुपया नहीं पैदा कर लेता, तब तक मैं उस काम को नहीं छोड़ूंगा। उसके बाद हम दोनों अपना काम ही नहीं, बल्कि बम्बई छोडकर बाहर चलेंगे।"

रामेश्वर के जाने के बाद चमेली का मन हलका हो गया। उसने उठकर स्नान किया, और फिर शृंगार किया। दोपहर को स्टूडियो में एक बड़ा उत्सव था और उत्सव के साथ-साथ दावत थी। रामेश्वर ने वादा कर लिया था कि वह स्टूडियो वाली दावत में अवश्य आवेगा।

चमेली ने पुराना मकान बदल दिया था। अब वह मैरीन ड्राइव के एक शानदार फ्लैट में रहने लगी थी; लेकिन उस समय वह अपने फ्लैट में अकेली थी' उसकी नौकरानी तीन दिन हुए छुट्टी लेकर एक हफ्ते के लिए अपने देश चली गई थी; नौकर पिछली रात छुट्टी पर गया था और अभी तक न आया था। चमेली ने स्नान किया, और फिर कपड़े पहने, नौ बज रहे थे। उसने दस बजे कार मंगवाई थी। वह एक उपन्यास लेकर सोफे पर बैठ गई; पर उपन्यास पढ़ने में उसका जी न लग रहा था। इसी समय घंटी बजी। चमेली ने खुद उठ कर दरवाजा खोला। किशोर सिमटा-सा दरवाजे पर खड़ा था। किशोर ने कहा, "नमस्ते चमेली देवी, आपको खुद ही दरवाजा खोलना पड़ा।"

"क्या करूं, दोनों नौकर छुट्टी पर हैं!" चमेली ने उत्तर दिया।

ड्राइंग-रूम में पहुंच कर किशोर ने कहा, "चमेली देवी, मैं आपको आपकी सफलता पर बधाई देने आया हूं। केवल आपके कारण पिक्चर इतनी सफल बनी! आप इस समय फिल्म-जगत् की सबसे श्रेष्ठ कला-

कार बन गई हैं। आज शहर भर में आप की चर्चा हो रही है।" किशोर ने अपने हाथ के दो पत्रों को चमेली के सामने रखते हुए कहा।

जिस फ़िल्म में चमेली ने काम किया था उसका नाम था "व्यथा!" उन दो पत्रों में "व्यथा" फिल्म की आलोचनाएं निकली थीं और उन दोनों आलोचनाओं में चमेली की तारीफ़ की गई थी, यद्यपि वे आलोचनाएं छोटी थीं।

अपनी तारीफ देखकर चमेली को आन्तरिक प्रसन्नता हुई। उसने किशोर से कहा, "मुझे खुद भरोसा न था कि मैं इतना अच्छा काम कर जाऊंगी किशोरजी! वैसे लोगों का क्या खयाल है?"

"यह तस्वीर प्रेमकिशनजी की पहली सफल तस्वीर बताई जाती है!" किशोर ने कहा, "लेकिन सब लोग यही कहते हैं कि इस तसवीर में केवल आप हैं।"

चमेली ने इसका कोई उत्तर न दिया, वह चुपचाप बैठी रही। कुछ मौन रह कर किशोर ने फिर कहा, "और देखिये, आपने मुझे अपने स्टूडियो में फिर से लेकर मेरे ऊपर जो दया की, उसके लिए मैं जीवन भर आपका कृतज्ञ रहूंगा। मैं हमेशा के लिए आपका हो गया हूं—जब चाहे आप मेरी परीक्षा करके देख लें।"

चमेली मुसकराई, "यह सब कहने की कोई आवश्यकता नहीं किशोर-जी, आप अपना काम कीजिए और मैं समझती हूँ कि अगर आप मन लगा कर काम करेंगे तो आप जीवन में सफल होंगे।"

किशोर ने इस उत्तर से यह अनुभव कर लिया कि उसके सामने जो चमेली बैठी है, वह साधारण हीरोइन नहीं है; वह स्वामिनी है—और स्वामिनी के अधिकार को वह जानती ही नहीं, उस अधिकार को वह बरत सकती है। उसने सम्हलते हुए कहा, "आप जैसा आदेश देंगी, मैं वैसा ही करूंगा, मैंने तो अपना जीवन आपके हाथ में समर्पित

कर दिया है। और ... .और.....मुझे आपसे एक प्रार्थना और करनी है, यदि आप बुरा न मानें!"

"कहिये!" चमेली ने कहा।

"अगली पिक्चर में आप मुझे कोई पार्ट देने की कृपा करें, मैं एक बार यह साबित करना चाहता हूं कि मैं अभिनय-कला में लोगों से पीछे नहीं हूँ!"

चमेली हँस पड़ी, "आप प्रेमकिशनजी से बात कीजिए, वे डाइरेक्टर हैं और यह सब उनका काम है किशोरजी! चमेली ने घड़ी देखते हुए कहा, "अरे दस बज रहे हैं; आप स्टूडियो नहीं जा रहे हैं आज?"

"अरे, इतनी देर हो गई!" किशोर ने उठते हुए कहा।

इसी समय ड्राइवर ने आकर कहा, "कार आ गई है।"

चमेली जिस समय कार में बैठने आई, किशोर उसके पीछे-पीछे आ रहा था। चमेली ने कहा, "ट्रेन से आने में तो आपको एक घंटा के करीब लग जायगा, आप मेरी कार में चले चलिए!" यह कह कर चमेली ने पीछे की सीट पर बैठते हुए कार का दरवाजा बन्द कर लिया। किशोर ड्राइवर की बगल में बैठ गया।

जिस समय चमेली स्टूडियो पहुंची, रामेश्वर स्टूडियो पहुंच चुका था और चमेली के कमरे में बैठा हुआ उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। रामेश्वर ने हँसते हुए कहा, "देख री, मैं अपने वादे के मुताबिक आ गया न!"

स्टूडियो में जितनी देर उत्सव होता रहा, रामेश्वर वहीं रहा। रामेश्वर शुरू से आखीर तक यह अनुमान करता रहा कि उसकी चमेली बहुत आगे बढ़ गई है; उसे कभी-कभी यह शक होने लगता था कि क्या चमेली वास्तव में उसकी है। उस उत्सव में शीतलप्रसाद और उसके कुछ मित्र भी आ गए थे। रामेश्वर का जब उन लोगों से परिचय कराया गया, तो उन्होंने कुछ कौतूहल, कुछ उपेक्षा के साथ रामेश्वर

को देखा। उन लोगों का यह रुख रामेश्वर को अच्छा तो नहीं लगा, पर वह उस समय चुप हो गया।

उत्सव समाप्त होने के बाद जब रामेश्वर स्टेशन पहुंच कर अपनी ट्रेन की प्रतीक्षा कर रहा था, किशोर ने बढ़कर उसे अभिवादन किया।" "अरे तुम!" रामेश्वर ने कहा, "क्या तुम फिर इस कम्पनी में हो गए हो?"

"किशोर बोला, "बिना मेरे इन लोगों का भला कोई काम चल सकता है? मेरे मुकाबिले का गीत लिखने वाला यह लोग पाएंगे कहां से? चलो, अभी गाड़ी आने में देर है तब तक चा पी लें।"

चा पीते हुए किशोर ने रामेश्वर से पूछा, "क्यों रामेश्वरजी, आप आज-कल दिखाई नहीं देते, क्या कहीं बाहर चले गए थे?"

"नहीं तो!" रामेश्वर ने उत्तर दिया, "मैंने यहीं गोरेगांव में अपना निजी काम-काज कर लिया है!"

"तो क्या रहना भी गोरेगांव में ही होता है?"

"हां, अपने काम-काज की देख-भाल तो करनी ही होती है।"

किशोर मुसकराया; उसकी मुसकराहट में जो शरारत थी, जो दुर्भावना थी, जो व्यंग था उसे रामेश्वर समझ तो नहीं सका, पर उसकी वह मुस्कराहट रामेश्वर को अच्छी नहीं लगी, "आप बेकार इतनी अधिक मेहनत करते हैं; चमेली देवी तो इस कम्पनी की मैनेजिंग डाइरेक्टर हो गई हैं, आप उनके साथ क्यों नहीं आ जाते? इतनी बड़ी जिम्मेदारी को एक औरत मुश्किल से सम्हाल पाएगी!"

रामेश्वर ने बात टालते हुए कहा, "अभी तक तो वह यह जिम्मेदारी बिना मेरी मदद के सम्हालती रही, अब भी सम्हालती जाएगी!"

पर किशोर ने तो टालने के लिए यह बातचीत नहीं शुरू की थी, "और शायद आपका स्टूडियो के काम-काज में हाथ डालना शीतल-

प्रसाद को नागवार भी लगे। लेकिन शीतलप्रसाद भी खूब आदमी हैं; सुना है यह कम्पनी उनकी हो गई है, यद्यपि वे इस स्टूडियो में आज दूसरी बार आए थे। चमेली देवी पर उन्हें पूरा भरोसा है, वह शीतलप्रसाद की प्रतिनिधि के रूप में हैं! रामेश्वरजी, सुना है शीतलप्रसाद जी करोड़पती आदमी हैं; शिवकुमार उनके पैरों की धूल नहीं हैं।"

रामेश्वर ने चा का प्याला मेज पर रखते हुए एक बार भरपूर नजर से किशोर को देखा, उसकी नजर की कठोरता से किशोर कुछ डर-सा गया, "नहीं, नहीं, मेरा और कोई मतलब नहीं है रामेश्वरजी! लेकिन कहने वालों की जबान तो नहीं रोकी जा सकती। एक पूरा-का-पूरा स्टूडियो जब कोई आदमी किसी औरत के हाथ में सौंप दे, तो उसके पीछे कुछ रहस्य तो होना ही चाहिए! फिर आप भी तो अब चमेली देवी के साथ नहीं रहते! घर में कौन आता है, क्या होता है—इस सब का पता आपको बिल्कुल नहीं है!"

किशोर क्यों यह सब कह रहा था, किशोर स्वयं इस बात को न जानता था। लेकिन वह कहता जा रहा था; और एकाएक उसे ऐसा लगा कि उसकी कलाई लोहे से जकड़ गई, "ऐं—यह क्या?" वह कह उठा।

रामेश्वर की आंखें लाल हो गई थीं, वह किशोर का हाथ कस कर पकड़े था, "देख बे लौंडे, तू जानता है कि तू किससे बात कर रहा है? अखबारों में तूने रामेश्वर भइया का नाम पढ़ा है कि नहीं? उसी रामेश्वर से तू बातें कर रहा है। और याद रखना, अगर तेरी बात गलत निकली, तो तेरे शरीर का भी किसी को पता न चलेगा!" यह कह कर रामेश्वर उठ खड़ा हुआ और किशोर का हाथ छोड़ दिया।

उन्तीसवाँ परिच्छेद

रामेश्वर का दल दिनों-दिन बढ़ता जाता था ; उसकी शक्ति भी वैसी ही बढ़ती जाती थी। उसने गोरेगांव के आस-पास काफी जमीन खरीद ली थी, उसका दूध का काम-काज भी काफी बढ़ गया था। पर उसकी आय का मूल स्रोत था जूआ और शराब।

रामेश्वर के दल में हर तरह के आदमी थे, डाकू, लुटेरे, चोर, हत्यारे। एक दिन रघुनाथ दादा ने हँसी-हँसी में रामेश्वर से कहा था, "क्यों रे भइया ! तू तो मेरे से भी बाजी मार ले गया! मैंने तुझे इतना गुनी न समझा था!" और उसी समय रामेश्वर ने रघुनाथ दादा के चरण छू कर उत्तर दिया था, "यह सब आपका प्रताप है ; आपने ही मुझे यहां पहुंचाया है!"

किशोर से बातचीत होने के बाद रामेश्वर के अन्दर एक अशांति-सी पैदा हो गई। आखिर चमेली पर स्टूडियो का सब काम-काज क्यों सौंप दिया गया? यह महत्त्वपूर्ण प्रश्न था, जिसकी उपेक्षा न की जा सकती थी। "और मान लो, जो कुछ किशोर ने कहा वह सच है, तो उसका निदान क्या है? उसका महत्त्व क्या है? और उस पर मेरा क्या कर्त्तव्य है?" यह प्रश्न भी रामेश्वर के सामने था। चमेली जो कुछ भी कर रही है, वह परिस्थितियों से विवश होकर। रामेश्वर को चमेली और शिवकुमार के संबंध का पता था ही, वह यह भी जानता था कि उसके पास आने के पहले वह रतनू सुनार के साथ भाग आई थी। आखिर चमेली पर उसका अधिकार ही क्या था? और चमेली को उसने ही तो बाद में इस मार्ग पर प्रेरित किया था।

एक ओर रामेश्वर के अन्दर ये तर्क थे, और दूसरी ओर उसकी

चमेली के प्रति ममता। उसकी ममता वाले भावनात्मक जगत् में चमेली उसकी थी, केवल उसकी। चमेली को उससे ले लेने का अधिकार किसी को न था। संभवतः इसी भावना-जगत् के तर्क से प्रेरित होकर उसने किशोर से वह बात कह दी थी, उस दिन से उसका मन भारी था, और वह चमेली की गति-विधि पर विशेष-रूप से ध्यान रखने लगा था। अकसर वह मैरीन ड्राइव वाले मकान पर चला जाया करता था; और उसने उस घर में चमेली को हमेशा अकेले ही पाया। नौकर और नौकरानी से भी उसने भेद लेने का प्रयत्न किया; लेकिन वहां से उसे संतोषजनक उत्तर ही मिले।

एक दिन रामेश्वर रात के ग्यारह बजे चमेली के घर पहुंचा, पर चमेली घर पर न थी। नौकर ने बताया कि वह छै बजे शाम को ही घर से चली गई हैं, और खाना बनाने को मना कर गई हैं।

रामेश्वर ने पूछा, "लौटने को तो कह गई हैं या नहीं?"

नौकर ने उत्तर दिया, "यह तो कुछ नहीं कहा। अगर रात की शूटिंग होगी तो क्या लौटेंगी, नहीं तो आती होंगी।"

रामेश्वर ड्राइंग-रूम में बैठ गया, उसके मन में एक खटक पैदा हो गई। वह जानता था कि स्टूडियो में नाइट शूटिंग नहीं है। फिर चमेली कहां गई होगी? सिनेमा जाती तो अब तक लौट आती! फिर खाना भी तो वह बाहर ही खा रही है! क्या वह घर वापस आवेगी?

बारह बजे, और अब एक बजने वाला था। रामेश्वर को नींद न आ रही थी, उसके अन्दर वाली जलन बढ़ती जा रही थी। उसी समय घंटी बजी। रामेश्वर ने उठ कर दरवाजा खोला, क्योंकि नौकर सो गए थे। चमेली रामेश्वर को सामने देख कर सकपका गई, "अरे तुम कब आए?"

रुखाई के साथ रामेश्वर ने कहा, "करीब चार घंटे हुए! सोचा था कि यहीं सो रहूं, सुबह चार बजे की गाड़ी से गोरेगांव जाऊं

है, लेकिन एक बज गया जागते-जागते और तुम्हारा इन्तजार करते। कहां चली गई, जो इतनी देर हो गई?"

चमेली को अब झूठ का सहारा लेना पड़ा, "क्या बतलाऊं, दिल्ली का एक वितरक आगया है। शाम से उसके साथ काम-काज की बात होती रही, खाना भी होटल में उसके साथ खाया, और फिर सब लोग सिनेमा गए!"

"वे सब लोग कौन थे?" रामेश्वर ने पूछा।

"वह वितरक, उसकी पत्नी, सेठ शिवकुमार और मैं।"

चमेली के इस उत्तर से रामेश्वर को संतोष नहीं हुआ। उसे ऐसा लगा कि चमेली सच नहीं कह रही है। उसने कहा, "तू सच कह रही है?"

"क्यों, मेरी बात पर अविश्वास कब से पैदा हो गया?" चमेली ने कहा।

रामेश्वर निरुत्तर हो गया। चमेली ने कहा, "बुरी तरह थक गई हूं, चलो अब सो रहें—देर से चले जाना; चार बजे जाना भी ऐसा क्या जरूरी है!" और रामेश्वर ने अनुभव किया कि चमेली वास्तव में बुरी तरह थकी हुई है।

चमेली लेटते ही सो गई, पर रामेश्वर ने रात जागते बिता दी।

रामेश्वर के मन में बैठ गया कि चमेली उससे अपना रहस्य छिपा रही है; और वह चमेली के रहस्य को जानने के लिए उत्सुक हो उठा। उसने तै कर लिया कि वह उस रहस्य का पता लगाएगा ही। नौ बजे के करीब नाश्ता करके रामेश्वर ने कहा, "अब मैं चलूंगा।"

चमेली ने कहा, "मुझे भी स्टूडियो जाना है—दस बजे कार मंगवाई है; कार तुम्हें गोरेगांव पहुंचा देगी।"

"नहीं री, मुझे अभी शहर में कुछ काम है, वह काम निपटा कर चला जाऊँगा।"

ट्रेन में रामेश्वर को किशोर मिल गया। रामेश्वर ने किशोर से कहा, "किशोर तुम्हें याद है मेरी तुमसे क्या बात हुई थी ? एक महीना हो चुका है उस बात को, इस बीच मैंने बहुत छान-बीन की, लेकिन तुम्हारी बात सच्ची नहीं उतरी है।"

किशोर कुछ देर तक चुप रहा, फिर उसने धीरे से कहा, "रामेश्वर-जी बुरा न मानिए तो आपसे कुछ कहूं !"

"हां, हां ! बुरा मानने वाली बातें तो तुम पहले ही कह चुके हो—कहो !"

"मुझे यह कहना है कि चमेली देवी जब स्टूडियो में न हों, अपने घर में न हों, तब आप जुहू में शीतलप्रसाद की जो काटेज है, उसमें उन्हें ढूंढिये जाकर, वह वहां आपको मिलेंगी।"

रामेश्वर ने भर्राए हुए गले से केवल इतना कहा, "अच्छा !"

इस घटना के बाद तीन-चार बार जब-जब रामेश्वर चमेली के यहां गया, चमेली उसे घर पर ही मिली। चमेली के प्रति उसके मन में जो शंका जागृत हुई थी वह धीरे-धीरे दूर होने लगी। एक दिन वह शाम को आठ बजे घर पहुंचा। उस समय तक चमेली घर न पहुंची थी। नौकर ने बतलाया कि वह अभी तक स्टूडियो से वापस नहीं आई हैं। रामेश्वर ने स्टूडियो में फोन किया—स्टूडियो में उस समय कोई न था।

एकाएक उसे किशोर की बात याद आई। "तो फिर आज किशोर की बात की ही परीक्षा क्यों न कर ली जाय ?" रामेश्वर ने मन-ही-मन कहा। नौकर ने उससे लाख ठहरने का अनुरोध किया, लेकिन वह न माना। वह सीधे सान्ताक्रुज के लिए रवाना हो गया। सान्ताक्रुज से जुहू के लिए उसने टैक्सी ली और वह शीतलप्रसाद की काटेज में पहुंचा। उसने देखा कि चमेली की कार वहां खड़ी है। टैक्सी

को विदा करके वह काटेज के अन्दर घुसा। दरबान ने उसे रोका, "सेठ इस वक्त खाली नहीं हैं—कहां जा रहे हो?"

रामेश्वर ने कड़े स्वर में कहा, "चुप रहो, जानते हो मेरा नाम रामेश्वर भइया है!"

रामेश्वर भइया का नाम सुनकर दरबान सहम-सा गया; रामेश्वर निर्विरोध काटेज के ड्राइंग-रूम में घुसा।

उस समय शीतलप्रसाद के लिए चमेली ग्लास में ह्विस्की ढाल रही थी। दोनों सोफे पर एक साथ बैठे थे—बगल में कुछ दूर पर हट कर शिवकुमार बैठा था। रामेश्वर पर सब से पहली नजर चमेली की पड़ी, और वैसे ही वह चीख पड़ी। उसके हाथ वाला गिलास छूट कर फर्श पर गिर पड़ा। शीतलप्रसाद और शिवकुमार दोनों ही सम्हल कर बैठ गए। शीतलप्रसाद ने खड़े होकर कहा, "तुम कौन हो और यहाँ कैसे घुस आए?"

रामेश्वर हँस पड़ा, एक अप्राकृतिक और कर्कश हँसी, "तुम मुझे नहीं पहचानते—ठीक ही है; इस चमेली से पूछो कि यह मुझे पहचानती है या नहीं!"

शिवकुमार ने इस बार कहा, "वह तो ठीक है रामेश्वर, लेकिन इस प्रकार यहां आने की तुम्हें क्या जरूरत थी; और बिना इत्तिला करवाए हुए यहां चला आना तो बदतमीजी है!"

रामेश्वर बोल उठा, "और दूसरे की जोरू को यहां लाकर मौज करना तमीज है—तुम यह कहना चाहते हो! लेकिन मैं तुम लोगों से बात करने या झगड़ा करने नहीं आया हूं, मैं तो चमेली से बात करने आया हूं!"

शिवकुमार रामेश्वर से परिचित था, पर शीतलप्रसाद नौजवान था, उसके खून में गरमी थी, उसके पास रुपए की ताकत थी। उसने कहा, "इनसे बात करना इनके मकान जाकर, सबसे पहले तो सवाल

यह है कि तुम मेरे मकान में बिना इजाजत घुस कैसे आए!" और यह कह उसने आवाज दी, "शोभाराम!"

"दरबान ने अन्दर आकर कहा, "कहिये सेठ!"

"इस आदमी को यहां से निकाल दो!"

रामेश्वर तन कर खड़ा हो गया। उसका हाथ उसकी जेब में गया और एक पिस्तौल सहित वापस निकला, "शीतलप्रसाद, तुम शायद जानते नहीं कि तुम किससे बात कर रहे हो! तुम्हारे ऐसे कमीनों और कायरों की क्या मजाल जो मुझ पर हाथ लगा सकें!"

चमेली उस समय तक आगे आ गई, "मैं हाथ जोड़ती हूं, यह सब मत करो! तुम मुझे जो चाहे दण्ड दे लो!"

"तुझे मैं घर चलकर दण्ड दूंगा—चल मेरे साथ!"

इस बार शीतलप्रसाद ने कहा, "नहीं, मैं इसे तुम्हारे साथ न जाने दूंगा।"

रामेश्वर ने पिस्तौल अपनी जेब में रख ली, "अगर चमेली मेरे साथ न जाना चाहे, तो मैं जोर नहीं दूंगा, वह यहीं रहे!" और इस बार वह चमेली से बोला, "चलती है कि नहीं?"

"मैं चलती हूं!" चमेली ने करुण और विवशभाव से कहा।

शीतलप्रसाद और शिवकुमार देखते ही रह गए, रामेश्वर चमेली को लेकर चमेली की मोटर पर बैठ गया।

रामेश्वर ने ड्राइवर से कहा, "घर चलो!"

रास्ते भर रामेश्वर मौन रहा। पर रास्ते भर रामेश्वर सोचता रहा। उसने यह सब क्या कर डाला और क्यों कर डाला—वह यही सोच रहा था। रामेश्वर के अन्दर वाले तर्क ने उससे पहले ही कह दिया था कि यह सब होता है, उसे इस पर बुरा न मानना चाहिए। आखिर चमेली पर उसका अधिकार ही क्या था? यही न कि एक रात अनायास ही चमेली को पुलिस के हाथ में जाने से बचाया था। लेकिन

चमेली उसका बदला चुका चुकी थी, उसे जेल जाने से बचा कर। और इसके आगे चमेली अपनी, अपने कर्मों की, अपने कर्त्तव्यों की उतनी ही बड़ी स्वामिनी थी, जितना रामेश्वर था! और अब रामेश्वर ने यह अनुभव किया कि उसने जो कुछ किया, वह गलत किया। इस अनुभव से रामेश्वर उदास हो गया—उसकी हिम्मत न हो रही थी कि वह चमेली की ओर देखे।

और चमेली अपराधिनी की भाँति चुप बैठी थी तथा मन-ही-मन रो रही थी। वह यह सोच रही थी कि रामेश्वर को इन सब बातों का पता कैसे लग गया। उसने अभी तक जो कुछ किया वह बड़ी सतर्कता के साथ। उसका ऐसा ख्याल था कि उसके मिलने-जुलने वालों में कोई भी उसके और शीतलप्रसाद के संबंध को नहीं जानता। रामेश्वर किस प्रकार शीतलप्रसाद के जुहू वाले मकान पर पहुंच गया?

चमेली बुरी तरह डर गई थी। वह रामेश्वर के उस रूप से सर्वथा अपरिचित थी, जिसे उसने शीतलप्रसाद के यहां देखा था। गठे वदन का लम्बा-सा आदमी, उसकी आंखों से चिनगारियां निकलती हुई, उसके हाथ में पिस्तौल! यही उसका रामेश्वर था—उसका रामेश्वर! चमेली ने कनखियों से रामेश्वर को देखा, रामेश्वर चिन्तित और उदास समुद्र तट की ओर देख रहा था। इस समय रामेश्वर शिथिल और टूटा-सा दिख रहा था। चमेली फिर अपने विचारों में मग्न हो गई। जो हो गया वह हो गया, वह चमेली के बस की बात नहीं थी। पर उसके अन्दर एक छिपा हुआ संतोष इस बात का अवश्य था कि रामेश्वर की उसके प्रति ममता है, रामेश्वर उसे अपनी समझता है।

कार चमेली के मकान पहुंच गई। रामेश्वर और चमेली चुपचाप उतर पड़े। रामेश्वर ने दरवाजा खुलवाया, दोनों ने घर के अन्दर प्रवेश किया।

ड्राइंग रूम में जाकर रामेश्वर ने अन्दर से ड्राइंग-रूम का दरवाजा बन्द कर लिया। चमेली ने इसका कोई विरोध नहीं किया, वह थकी सी एक कुर्सी पर बैठ गई। रामेश्वर कुछ देर तक मौन खड़ा रहा, फिर बोला, "तो आखिर मैंने तेरा पता लगा ही लिया!"

और एकाएक चमेली अनायास ही एक कटु व्यंग कर बैठी, "पता लगा कर ही तुमने कौन सा जग जीत लिया!"

चमेली के उस व्यंग का रामेश्वर ने बुरा नहीं माना, यद्यपि उसे उस स्वर पर आश्चर्य अवश्य हुआ। चमेली के इस व्यंग का उत्तर क्या हो सकता है, रामेश्वर की समझ में न आ रहा था। पर मानो चमेली रामेश्वर को चुनौती देने पर कटिबद्ध हो गई थी, उसने कहा, "तुम मुझे दण्ड देने लाए हो यहां, दो दण्ड मुझे, जरा देखूं तो तुम्हारी हिम्मत और ताकत! कौन-सा दण्ड देना चाहते हो? यह जो तुमने दरवाजा बन्द कर दिया है, यह क्यों, किस लिए? मेरी हत्या करोगे?—करो, मैं मरने को तैयार हूं। लेकिन यह याद रखना, तुम मुझसे ज्यादा बड़े पापी हो! चुप क्यों खड़े हो, मुझे मारो—दिखलाओ अपनी बहादुरी! अपराधियों के सरदार बनते हो, जवांमर्द बनते हो—देखूं—देखूं!"

चमेली अपनी बात न कह रही थी प्रलाप कर रही थी; पर चमेली जो कुछ चाहती थी वह न हुआ। रामेश्वर ने कहा, "तू ठीक कहती है—दोष मेरा है। मैंने जुहू जा कर गलती की, मैं जानता हूं। मैं सिर्फ यह पता लगाना चाहता था कि क्या तू मुझसे सच बोल रही है या मुझे धोखा दे रही है, और यह पता मुझे लग गया। मुझे वहां से चुपचाप चला आना चाहिए था, मुझे उस मकान के अन्दर जाकर यह सब काण्ड करने की कोई आवश्यकता नहीं थी! पर वहां पहुंच कर मैं अपने को न रोक सका, न जाने कौन-सा शैतान मुझ पर सवार हो गया था!"

रामेश्वर के इस स्वर से चमेली डर गई—उसने कहा, "नहीं, नहीं, तुमने जो कुछ किया वह ठीक ही किया ! ...."

रामेश्वर ने चमेली की बात काटकर कहा, "चुप रह, मुझे अपनी बात पूरी कह लेने दे ! हम सब पैसे के गुलाम हैं, धन हमारा ईश्वर है, हमारा अस्तित्व है ! इस पैसे की दुनियां में न पाप है, न पुण्य है; न प्रेम है न भावना है—जो कुछ है वह धन है। झूठ, अविश्वास, छल-कपट की दुनिया के हम लोग प्रधान नागरिक हैं, हम दोनों में किसी को किसी से कोई शिकायत न होनी चाहिए ! जिसके पास पैसा है वह सब कुछ खरीद सकता है, रूप, यौवन, शरीर, आत्मा। सब बेंच रहे हैं अपने को, धन के पिशाच के हाथों चमेली ; हम दोनों भी अपने को उस पिशाच के हाथों बेंच चुके हैं ! अब मुझमें और तुझमें कोई संबंध नहीं रह गया, रह भी नहीं सकता। अगर मैं तुझ पर कोई अधिकार समझता हूं तो अपने को धोखा देता हूं—और इस धोखे की दुनिया को मैं आज हमेशा के लिए नष्ट कर रहा हूं ! मुझे केवल इतना कहना है कि तू समर्थ है, तू स्वतंत्र है। नियति के हिलकोरों में बहते-बहते हम दोनों अनायास ही एक दिन साथ आ गए थे—आज वह साथ छूट रहा है। तू फल-फूल, तू जिन्दगी में सफल बन, तू भोग-विलास का जीवन व्यतीत कर। मैं भी यही करूंगा—यही कर रहा हूं।"

चमेली कराह उठी, "हाथ जोड़ती हूं यह सब न कहो, तुम मुझे मारते-मारते अधमरी कर दो, लेकिन यह सब न कहो !"

रामेश्वर इस बार जोर से हँस पड़ा, "जो सत्य है उसे कहना ही पड़ता है। पर एक बात याद रखना। तू औरत है, तू कमजोर है। और जिन्दगी की राह अजीब ऊबड़-खाबड़ है, कदम-कदम पर कांटे, झाड़-झंखाड़ ! बहुत मुमकिन है तुझे कभी किसी सहायता की आवश्यकता पड़े—तू मेरा घर जानती है, वहीं खबर करवा देना, जब तक

रामेश्वर के शरीर में ताकत है, तब तक तेरे ऊपर कोई आंच न आने पाएगी !" यह कह कर रामेश्वर ने ड्राइंग-रूम का दरवाजा खोल दिया।

चमेली तेजी के साथ उठ खड़ी हुई, उसने बढ़कर रामेश्वर का हाथ पकड़ लिया, "मैं कसम खाती हूं, अब मैं केवल तुम्हारी बनकर रहूंगी—मुझे मत छोड़ो इस तरह मत जाओ, हाथ जोड़ती हूँ !"

रामेश्वर ने कहा, "इस क्षणिक आवेश में कोई सत्य नहीं है चमेली, तू मेरी बन कर तभी रह सकती है, जब मैं तेरा बन कर रहूं, लेकिन यह सम्भव नहीं ! धन के पिशाच की गुलामी का पट्टा जो हम लोगों ने लिख दिया है। इस वक्त देर हो रही है—मुझे जाने दे। और हां, चलते-चलते एक बात और कहता जाऊं; किसी के साथ अनायास ही उपकार मतकर ! तू जिसके साथ उपकार करेगी, वह तेरा भयानक शत्रु बन जायगा। जानती है इस सब बात को किसने बढ़ाया ! किशोर ने, उस किशोर ने जिस पर उपकार करके तूने स्टूडियो में फिर से ले लिया है। उसी किशोर ने उस दिन स्टूडियो के उत्सव में मेरे अन्दर पाप को प्रथम बार जागृत किया था, उसी किशोर ने मुझे जुहू वाला पता बतलाया था।"

चमेली रामेश्वर की बात सुनकर मर्माहत हो गई—"क्या कहा, किशोर ने ?" "पर चमेली के प्रश्न का उत्तर दिये बिना ही रामेश्वर वहां से चला गया था।

तीसवां परिच्छेद

रामेश्वर के जाने के बाद चमेली संज्ञाहीन और हत-प्रभ सी आकर कमरे में बैठ गई। उसकी समझ में न आ रहा था कि यह सब क्या हो गया। उस समय वह अपने को अकेली, नितान्त अकेली अनुभव कर रही थी। नौकरानी ने आकर उससे कहा, "उठो बाई खाना तैयार है!"

और झुंझलाकर चमेली ने कहा, "मैं नहीं खाऊंगी, तुम लोग खाना खा लो जाकर!"

नौकरानी के जाने के बाद चमेली उठ खड़ी हुई, उसने मन-ही-मन निश्चय कर लिया कि वह रामेश्वर को जिस तरह भी होगा मना कर लाएगी। उसने नौकर से कहा, "ड्राइवर से बोलो वह कार लावे, मुझे जरूरी काम से जाना है। पर नौकर के जाने के पहिले ही दरवाजे की घंटी बजी। "देखो कौन है!" चमेली ने कहा। मन-ही-मन उसने अपने से पूछा, "क्या वह तो नहीं हैं—हे भगवान्, अगर वे लौट आए हों तो मैं तुम्हें प्रसाद चढ़ाऊंगी।"

पर रामेश्वर के स्थान पर उसने शीतलप्रसाद और शिवकुमार को कमरे में आते देखा। शिवकुमार ने कमरे में प्रवेश करते ही कहा, "अरे तुम तो अकेली हो और सही सलामत हो। हम लोग चिन्तित हो रहे थे कि तुम पर क्या बीती होगी! शिवकुमार अब कहीं जान में जान आई।"

चमेली ने शिवकुमार की बात का कोई उत्तर न दिया, किंकर्तव्यविमूढ़-सी वह उन दोनों को देख रही थी। शिवकुमार ने इस बार कहा, "क्यों, क्या वह चला गया? इतनी जल्दी!"

"जी हां, इतनी जल्दी, और हमेशा के लिए चले गए।" चमेली ने कुछ अवरुद्ध स्वर में कहा।

"हमेशा के लिए चला गया—मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा!" शीतल प्रसाद ने किंचित् शंकित हो कर कहा।

चमेली ने शीतल प्रसाद के स्वर में निहित शंका के भाव को समझ लिया। "डरने की कोई बात नहीं, न उन्होंने आत्महत्या की है, न मैंने उनकी हत्या की है। वह जीवित हैं—और भगवान से प्रार्थना है कि मेरे मरने तक वे जीवित रहें!"

"तुम तो पहेली बुझा रही हो चमेली रानी!" शिवकुमार ने कहा।

"मैं पहेली नहीं बुझा रही हूं सेठ शिवकुमार, मैं सच कह रही हूं। मुझे यहां पहुंचाकर चुपचाप वह मुझे सदा के लिए अकेली छोड़ कर चले गए। न उन्होंने मुझे गाली दी, न उन्होंने मुझे मारा। तुम लोगों की पशुता का शिकार बनने की मुझे पूरी स्वतंत्रता देकर उन्होंने मुझे हमेशा के लिए छोड़ दिया। अब मैं स्वतंत्र हूं कि तुम लोगों की काम-वासना को तुष्ट करूं, तुम लोगों के हाथ अपने को पूरी तौर से बेंच दूं!"

"यह क्या कहती हो चमेली देवी? तुम नहीं जानती मैं तुमसे कितना प्रेम करता हूं!" शीतल प्रसाद ने बढ़कर चमेली का हाथ पकड़ते हुए कहा। पर चमेली शीतल प्रसाद का हाथ झटक कर दो कदम पीछे हट गई, "तुम प्रेम की बात मत करो—वासना के कीड़े! तुम क्या जानो कि प्रेम क्या होता है; तुम जो शरीर को अपने रुपयों से खरीदते हो! तुम खरीद सकते हो, क्योंकि तुम्हारे पास रुपया है; पर यह रुपया पाने के लिए तुम अपनी आत्मा तक धन के पिशाच के हाथ बेंच चुके हो। तुम घृणित हो, तुम नीच हो, तुम शैतान हो!" चमेली चीख उठी।

शीतल प्रसाद पासवाली कुर्सी पर बैठ गया। शिवकुमार ने खड़े-खड़े ही कहा, "चमेली देवी, तुम आपे में नहीं हो और इसलिए तुम यह नहीं समझ पाती कि किस आदमी से क्या बात कहनी चाहिए!

चलिये शीतल प्रसाद जी, इस समय यह आपे में नहीं हैं, फिर कभी आयेंगे।"

लेकिन शीतल प्रसाद चमेली की गालियाँ सुनकर तिलमिला गया था, उसने बैठे ही बैठे कहा, "ऐसी जल्दी क्या है? रात अपनी है, और चमेली अकेली हैं! इन्होंने ठीक कहा कि मैंने इनको खरीदा है, और अच्छी खासी रकम दे कर खरीदा है। यह आलीशान फ्लैट जिसमें बैठी हुई ये मुझे गालियां दे रही हैं, वह कार जिसपर यह मेरी उपेक्षा करके जुहू से चली आई हैं—यह सब मेरे रुपयों के बल पर ही तो हो रहा है!"

पर मानो चमेली पर शैतान सवार हो गया था, "मुझे तुम्हारा रुपया-पैसा नहीं चाहिए, यह बेईमानी और शैतानियत की कमाई तुम्हीं को मुबारक हो। और यह याद रखना कि यह मकान, यह मोटर जो कुछ मेरे पास है वह मेरी मेहनत की कमाई है!"

शीतल प्रसाद इस बार हँस पड़ा, "बेशक—तुम्हारी मेहनत की कमाई है! बड़ी मेहनत करनी पड़ती है बेचारी को शिवकुमार! दिन भर स्टूडियो और रात को मेरे यहां, भला इस मेहनत के बाद जो कुछ............ ......।"

शीतल प्रसाद अपनी बात पूरी भी न कर सका कि चमेली ने तड़प कर कहा, "तुम लोग जले पर नमक छिड़कने आए हो! जाओ यहां से, इसी वक्त जाओ!"

"इतनी हिम्मत हो गई कि मुझे निकालो यहां से!" शीतल प्रसाद ने कहा।

चमेली बढ़कर टेलीफोन के पास पहुंच गई, "निकलते हो यहां से या फिर पुलिस को बुलाऊं।" और यह कह कर उसने रिसीवर की तरफ हाथ बढ़ाया!

शीतल प्रसाद उठ खड़ा हुआ, "नहीं, नहीं, यह सब करने की जरूरत

नहीं ; हम लोग जा रहे हैं ! तुम इस वक्त आपे में नहीं हो, जब होश आयेगा, तब तुम समझोगी कि तुम कितनी अनुचित बातें मुझ से कह गई हो !" और शिवकुमार के साथ शीतल प्रसाद चला गया।

इन दोनों के जाने के बाद चमेली पलंग पर लेट गई। इस बात-चीत के बाद वह बुरी तरह थक गई थी। एक अजीब तरह की शिथिलता वह अपने अन्दर अनुभव कर रही थी। उसने उस समय अपने वस्त्र भी नहीं बदले ; उसके अन्दर यह इच्छा हो रही थी कि वह चिर-निद्रा में अपने को सदा के लिए खो दे! और पलंग पर लेटने के पांच मिनट के अन्दर ही वह सो गई।

सुबह जब चमेली सोकर उठी, वह काफी स्वस्थ हो गई थी। उसकी स्मृति में रात की घटना एक दुःस्वप्न मात्र थी। धीरे-धीरे, अलसाए भाव से उसने दिनचर्या आरम्भ की। दस बजे वह कार पर बैठ कर स्टूडियो चल दी।

स्टूडियो में नई पिक्चर की तैयारी हो रही थी। पिछली पिक्चर की सफलता से प्रेमकिशन का उत्साह काफी बढ़ गया था, इस बार वह चमेली पर कहानी लिख रहा था। उस दिन प्रेमकिशन ने चमेली को सूचना दी, "चमेली देवी, कहानी पूरी हो गई है, अगर आप चाहें तो सुन लें !"

चमेली उस समय अन्यमनस्क-सी थी, उसने कहा, "ठीक है, तो कल में सेठ शिवकुमार को बुलाए लेती हूं। सब लोगों को आप वह कहानी सुनाकर उस पर काम शुरू कर दीजिए। म्यूजिक डाइरेक्टर, कैमरामैन, साउंड इंजीनियर—इन लोगों से आने को कह दीजिएगा, कल ग्यारह बजे सुबह !"

"और किशोर को भी। सोच रहा हूँ उसके गानों के साथ इसके सम्वाद भी इस बार किशोर से लिखवा लूं !" प्रेमकिशन ने कहा।

किशोर का नाम सुनते ही मानो चमेली की चेतना पर एक

प्रहार-सा हुआ। उसकी भृकुटि तन गई, "किशोर! हां, किशोर की बाबत मैं भूल ही गई थी, आपने अच्छी याद दिला दी। मैं समझती हूं किशोर से हमारा काम न चलेगा, आप किसी अच्छे संवाद-लेखक तथा गीतकार की तलाश कीजिये!"

"तो फिर किशोर क्या करेंगे?—उनको जो नियुक्त कर लिया गया है!"

"किशोर को अलग करना पड़ेगा!" चमेली ने शुष्क भाव से कहा, "मैं उसे अभी नोटिस दिये देती हूं!"

किशोर के संबंध में चमेली का निर्णय सुनकर प्रेमकिशन को आश्चर्य हुआ; उसने केवल इतना कहा, "जैसी आपकी मर्जी! आपने उसे फिर से रक्खा था, आप उसे अलग भी कर सकती हैं, मैं कल बनमाली को बुला लूंगा—गीत और सम्वाद अच्छे लिखते हैं!"

प्रेमकिशन के जाने के बाद चमेली ने सिटी आफिस में शिवकुमार को फोन किया, "हलो, सेठ शिवकुमारजी! देखिये प्रेमकिशनजी ने अपनी कहानी पूरी कर ली है, कल आप ग्यारह बजे स्टूडियो आ जाइये, कहानी सुननी है!"

"जरूर-जरूर!" शिवकुमार ने फोन पर कहा, "और आप बेजा न समझें तो मैं शीतल प्रसाद जी को भी साथ लेता आऊं!"

"शीतल प्रसाद जी को?.......अगर आप उचित समझते हैं तो उन्हें भी साथ लेते आइयेगा!" चमेली ने हारे हुए स्वर में उत्तर दिया।

उसे इस नये चित्र के गीत व सम्वाद लिखने को नहीं दिये जा रहे हैं, किशोर को यह खबर राजीव से मिली। बनमाली राजीव के घर के पास रहता था, प्रेमकिशन ने राजीव से कहा था, "राजीवजी, आज आप बनमाली से मिल के कह दीजिए कि कल दस बजे वह स्टूडियो में मुझसे जरूर-जरूर मिल लें; और देखिये, कल मैं अपनी कहानी सुना रहा हूं, ग्यारह बजे—आप उस समय वहां रहियेगा।"

राजीव ने किशोर से पूछा, "क्या फिर तुम्हारा प्रेमकिसनजी से कोई झगड़ा हुआ है ?"

"नहीं तो !" किशोर ने उत्तर दिया ! "क्यों क्या बात है ?"

"प्रेमकिशनजी ने कल बनमाली को बुलाया है, उनकी नई कहानी पूरी हो गई, वे कल उसे सुना रहे हैं। संभवत: उस कहानी के सम्वाद और गीत वह बनमाली से लिखवायें !"

किशोर मानो आसमान से गिरा। "यह कैसे हो सकता है ? अभी चार दिन पहले उन्होंने इस कहानी के गीत और सम्वाद लिखने को मुझसे कहा था और यह वादा भी किया था कि साइड हीरो का रोल मुझे देंगे !"

राजीव कुछ देर तक मौन सोचता रहा, उसने फिर कहा, "अच्छा एक बात बताओ। कल ग्यारह बजे वे अपनी कहानी सुना रहे हैं—उसमें बुलाया है उन्होंने तुम्हें ?"

"नहीं, कल की बाबत तो उन्होंने मुझसे कुछ भी नहीं कहा, यद्यपि अभी पांच मिनट हुए मैं उनसे मिला था !" किशोर ने उत्तर दिया, "हूं, बड़ा दिल का काला आदमी है यह प्रेमकिशन ! मैं अभी चमेली देवी से बात करता हूं जाकर !"

किशोर सीधे चमेली के दफ्तर में पहुँचा, उसने चपरासी से इत्तिला करवाई । चमेली ने कहला दिया, "अभी फुरसत नहीं, उनसे कह दो कि कल शाम को चार बजे वे मुझसे मिल सकते हैं !"

किशोर ने चपरासी से कहा, "उनसे कह दीजिए बड़ा जरूरी काम है—थोड़ा-सा समय मुझे किसी तरह दे दें।"

पर चमेली ने फिर कहला दिया कि उसे जरा भी फुरसत नहीं, दूसरे दिन शाम के समय ही उससे मुलाकात हो सकती है।

किशोर मर्माहत-सा वहां से चल दिया। वह अब प्रेमकिशन के

पास पहुँचा। प्रेमकिशन अपनी कहानी को फिर से एक बार पढ़ रहे थे, दूसरे दिन उसे सुनाने की तैयारी में। किशोर ने प्रेमकिशन के सामने पहुंचकर कहा, "प्रेमकिशनजी !"

प्रेमकिशन ने सर उठाकर किशोर को देखा, "देख रहे हैं आप कि इस समय बहुत बुरी तरह बिजी हूं !" उसने रूखे स्वर में कहा।

"जी हां, और इस समय बाधा पहुंचाने के लिए बड़ा दुःख है। लेकिन क्या करूं; यह मेरे अस्तित्व का प्रश्न है, इसलिए इस समय आना पड़ा !"

"अच्छा—दस मिनट का समय मैं आपको देता हूं, अपनी बात कह जाइये !" प्रेमकिशन ने अपनी कहानी की फाइल को बन्द करते हुए कहा।

"कहना मुझे बाद में होगा, पहले मैं आपसे एक सवाल पूछने आया हूं—क्या आपने बनमाली जी को कल बुलाया है ?"

प्रेमकिशन की भृकुटि तन गई, "तो खबर आप तक पहुंच गई; लेकिन शायद अच्छा ही हुआ। जी हां, मैंने बनमाली को कल बुलाया है।"

किशोर प्रेमकिशन की उस मुद्रा को जानता था। उसने उसी समय अपना रुख बदल दिया, "मैं आपसे सिर्फ इतना पूछूंगा कि मैंने इन दिनों आपका कौन-सा अपराध किया है ? कब मैंने आपको शिकायत का मौका दिया ? क्या मैंने अपने को और अपने अस्तित्व को आपके हाथों पूरी तरह नहीं सौंप दिया ? मुझे आश्रय देकर फिर आप मुझसे अपना आश्रय का हाथ क्यों हटा रहे हैं ?"

किशोर की इस बात का असर प्रेमकिशन पर पड़ा, "मुझे दुःख है किशोर—मैं जो कुछ कर रहा हूँ, वह अपनी मर्जी से नहीं कर रहा हूँ। इसके आगे आप मुझसे कुछ न पूछिये !"

किशोर की चेतना को एक धक्का-सा लगा, "कुछ देर तक वह मौन खड़ा शून्य-भाव से सामने देखता रहा। प्रेमकिशन ने उसे इस

प्रकार खड़ा देखकर कहा, "अगर आप मेरी सलाह मानें किशोर जी तो आप यहां से इस्तीफा दे दें, जहां तक मैं समझता हूं इस स्टूडियो में आपका अब रहना बेकार है!" और यह कहकर प्रेमकिशन ने अपनी कहानी की फाइल खोली और कहानी पढ़ने में व्यस्त हो गया।

थोड़ी देर तक किशोर चुपचाप वहां और खड़ा रहा, फिर एकाएक वह वहां से तेजी के साथ चल पड़ा। एकाएक उसे रामेश्वर के साथ जो बातचीत उसने की थी उसकी याद हो आई! "क्या रामेश्वर ने वह बात चमेली से कह दी?" उसके मन में यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ।

किशोर स्टूडियो से सीधे स्टेशन आया, स्टेशन आकर उसने गोरेगांव की गाड़ी पकड़ी। गोरेगांव में रामेश्वर भइया के मकान का पता लगाने में उसे देर न लगी। रामेश्वर उस समय भोजन करके उठा था। किशोर को देखते ही वह मुसकरा दिया, "तुम खूब आए! आओ खाना तैयार है—तुमने अभी तक शायद खाना नहीं खाया, मुंह उतरा हुआ है! क्या बात है?"

किशोर ने कहा, "बात यह है कि मुझे शायद स्टूडियो से निकाला जा रहा है!"

"अच्छा! बात यहां तक पहुंच गई!" और रामेश्वर जोर से हँस पड़ा, "किशोर अपने कर्मों का परिणाम तो भुगतना ही पड़ता है; अकारण किसी की दुनिया बिगाड़ कर तुम सुखी रह सकोगे?"

"मैंने तो आपसे सत्य कहा था रामेश्वर जी, आपकी भलाई के लिए!"

"लेकिन तुम मेरे इतने बड़े शुभचिन्तक कब से बन गए किशोर? जहां तक मेरा खयाल है, तुमसे मेरी कभी भी मित्रता नहीं रही है। फिर तुम मुझसे चमेली की बाबत वह सब बात कहने क्यों

आए? इसीलिए न कि तुम चमेली का बहुत बड़ा अहित करना चाहते थे? आखिर चमेली ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था—उसने तुम्हारा उपकार ही किया तुम्हें फिर से स्टूडियो में नियुक्त करके, और उसके साथ तुमने दगा की।" रामेश्वर का स्वर अब कठोर हो गया था, "जो कुछ भी हो—चमेली नेक है, भली है; उसके पास हृदय है, उसके अन्दर ममता है; लेकिन तुम, तुम नम्बरी पाजी हो—लोगों को तुम्हारी छाया तक से दूर रहना चाहिए! मैंने चलते-चलते चमेली को आगाह कर दिया था!"

किशोर के सामने अब स्थिति स्पष्ट हो गई; उस पर वार हुआ था रामेश्वर की तरफ से—और वह रामेश्वर उसके सामने खड़ा था। उसने उठते हुए कहा, "समझ गया तो सारे फिसाद की जड़ तुम हो रामेश्वर—इसका बदला किसी दिन मैं चुकाऊंगा!"

रामेश्वर ने बैठे ही बैठे कहा, "यह याद रखना किशोर तुम किससे बात कर रहे हो—तुम्हारे दोस्तों और घरवालों को तुम्हारी लाश तक का पता न चलेगा।"

दूसरे दिन किशोर जब स्टूडियो पहुंचा, उसे चपरासी ने एक लिफाफा दिया। वह किशोर के लिए एक महीने की नोटिस का लिफाफा था। उसी समय किशोर को एक महीने की तनख्वाह देकर बिदा कर दिया गया। किशोर जब अपनी तनख्वाह लेकर चलने लगा, शीतल प्रसाद की कार स्टूडियो आफिस के बरामदे के सामने रुकी। उस कार से शीतल प्रसाद और शिवकुमार उतरे। किशोर ने बढ़कर शिवकुमार को नमस्कार किया, "सेठ—मुझे आपसे एक बात कहनी है—"

"फिर कह लेना, अभी मीटिंग में जाना है—" शिवकुमार ने घड़ी देखते हुए कहा।

"फिर कहने का मौका न मिलेगा; क्योंकि मुझे अभी-अभी नोटिस मिल गया और मेरा हिसाब-किताब साफ कर दिया गया है!"

"नोटिस मिल गया और हिसाब-किताब साफ हो गया—यह क्यों ?" शिवकुमार ने पूछा !

"यह इसलिए कि चमेली देवी के पति रामेश्वर मुझसे नाराज हो गए ! समझ में नहीं आता कि कितने आदमियों की गुलामी करूं ! सेठ। अगर इसी तरह रामेश्वर ऐसे गुण्डों और बदमाशों के इशारे पर यह स्टूडियो चलेगा, तो हो चुका !"

शिवकुमार सुलझा हुआ अनुभवी आदमी था, वह किशोर ऐसे आदमियों को खूब पहचानता था; उसने कहा, "किशोरजी यह तो आगे चलकर देखने की बात है ! अभी तो चमेली देवी मैनेजिंग डाइरेक्टर हैं, उन्हीं की बात चलेगी। मुझे इस बात का दुःख है !"

लेकिन शीतल प्रसाद रामेश्वर का नाम सुनते ही चौंक उठा था। रामेश्वर ने उसे अपमानित किया, रामेश्वर के कारण चमेली ने उसे अपमानित किया ; उसने किशोर से कहा, "तुम दो दिन के अन्दर मेरे आफिस में मुझसे मिलना ; देखूंगा तुम्हारे वास्ते कुछ हो सकता है या नहीं !"

आफिस में सब लोग एकत्रित हो चुके थे, शिवकुमार और शीतल प्रसाद के आने के साथ ही प्रेमकिशन ने अपनी कहानी आरम्भ कर दी करीब दो घंटे में उसने कहानी सुना दी। वह एक साधारण-सी कहानी थी जो प्रधानतः हीरोइन पर लिखी गई थी। पर कहानी पढ़ी गई थी बड़े प्रभावात्मक ढंग से और कहानी सुनकर सभी लोग अत्यधिक संतुष्ट तथा प्रसन्न हुए। शिवकुमार ने प्रेमकिशन को बधाई दी। कहानी पढ़ने के बाद प्रेमकिशन से कह दिया गया कि वे पात्रों का चुनाव कर लें। इसके बाद स्टूडियो के सब कार्यकर्त्ता चले गए ; चमेली, शीतल प्रसाद और शिवकुमार अकेले कमरे में रह गए।

थोड़ी देर तक तीनों मौन बैठे रहे, फिर शीतल प्रसाद ने उस मौन को तोड़ा, "अब तो तुम स्वस्थ हो चमेली रानी !"

चमेली ने बात टालते हुए कहा, "अस्वस्थ रहा भी कब तक जा सकता है सेठ, नियति के विधान के खिलाफ कौन लड़ सकता है, कौन लड़ सका है ?"

शिवकुमार हँस पड़ा, "क्या बात कही है चमेली रानी, नियति के विधान के खिलाफ कौन लड़ सका है—कौन लड़ सकता है ?"

शीतल प्रसाद ने कहा, "जो हुआ वह अच्छा ही हुआ चमेली रानी, हम दोनों के बीच में जो बाधा थी, वह स्वयं ही हट गई !" यह कहकर उसने चमेली का हाथ पकड़ लिया।

और उसी समय चमेली ने उसका हाथ झटक दिया, "सेठ, इस हाथ को पकड़ने के अधिकारी ने इस हाथ को छोड़ कर अपने अधिकार को स्थापित कर लिया है, अब इस हाथ को पकड़ने की हिम्मत न करना !"

शीतल प्रसाद तिलमिला उठा, वह एकाएक उठ खड़ा हुआ। उसने कहा, "चमेली रानी, तुम मेरी हो चुकीं, मेरे हाथ से तुम नहीं निकल सकतीं, किसी तरह नहीं निकल सकतीं—इतना याद रखना !" और उसने शिवकुमार से कहा, "चलो शिवकुमार !"

चमेली ने शीतल प्रसाद का जो अपमान किया था, वह शिवकुमार को भी बुरा लगा, इसलिए कि शिवकुमार शीतल प्रसाद से कुछ और रुपया पाने की आशा लगाए था। उसने कहा, "बैठिये भी शीतल प्रसाद जी, आप तो हर बात में जल्दबाजी कर जाते हैं; आखिर चमेली देवी की भावना का भी तो ध्यान रखना पड़ेगा।" और हाथ पकड़ कर उसने शीतल प्रसाद को बिठला दिया। इसके बाद उसने बात बदलते हुए चमेली से कहा, "चमेली देवी, इस नई पिक्चर का मुहूर्त बड़े ठाट-बाट के साथ होना चाहिए, अरे हां, मुहूर्त का दिन तो हम लोगों ने अभी तक तै किया ही नहीं !"

चमेली ने कहा, "मैंने पंडित से पूछ लिया है—वह इस ६ जुलाई को ठीक समझता है।"

"६ जुलाई ! अभी नौ दिन हैं! काफी समय है ; मुहूर्त के दिन से शूटिंग शुरू हो जाय तो दिवाली में हम पिक्चर को रिलीज भी कर सकते हैं। सम्वाद और गाने लिखने का काम तो शुरू हो गया होगा ? "

"आज से शुरू हो जायगा !" चमेली ने कहा, "हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक और कवि श्री बनमाली को मैंने इसके सम्वाद और गीत लिखने का काम सौंप दिया है !"

"श्री बनमाली ! मैं तो समझता था कि किशोर जी सम्वाद और गीत लिखेंगे !"

"किशोर जी को मैंने आज जवाब दे दिया है !" चमेली ने शांत भाव से कहा।

"अच्छा, इतनी जल्दी जवाब दे दिया। रक्खा भी, जवाब भी दे दिया। अच्छा किया; मुझे तो वह आदमी कभी भी पसन्द नहीं रहा। जब आपने उसकी फिर से नियुक्ति की थी, तब मुझे आश्चर्य अवश्य हुआ था, लेकिन आपके निर्णय में हस्तक्षेप करना मैं उचित नहीं समझा ! आदमी बड़ा पाजी है ! फिर भी कुछ वजह तो रही होगी उसे निकालने की ?"

चमेली ने गौर से शिवकुमार को देखा, "क्या आप मुझसे कैफियत तलब कर रहे हैं ?"

"राम-राम ! आप भी कितना गलत समझ रही हैं मुझे। यह आप का क्षेत्र है, आप जो चाहे करें। मैंने अपना सवाल वापस ले लिया, बस अब तो आप खुश !"

लेकिन शिवकुमार की इन मीठी बातों के अन्दर जो एक अजीब-सी कुरूपता झलक रही थी उसके असर से चमेली न बच सकी, उसने कहा, "इसका कारण मैं आप लोगों को बता देना उचित समझती हूँ; क्योंकि इस कंपनी पर मेरा जितना अधिकार

हूँ, आप लोगों का अधिकार उससे अधिक है; आप लोगों की इच्छा से ही मैं इस पद पर हूँ, आप लोग अगर कहें तो मैं इसी समय यह पद छोड़ने को तैयार हूँ। तो शिवकुमार जी, यह कारण विशुद्ध व्यक्तिगत है, मैं इस किशोर से घृणा करने लग गई हूँ!"

"उसी तरह जैसे मुझसे घृणा करने लग गई हो?" शीतल प्रसाद ने मुसकराते हुए पूछा।

चमेली ने शीतल प्रसाद की आँखों से अपनी आँखें मिलाते हुए कहा, "सेठ, अगर मैं तुमसे घृणा करती होती, तो मैं इस कम्पनी में बैठी हुई तुमसे बातचीत न करती होती। मैं तुमसे डरती हूं, बुरी तरह डरती हूं, क्योंकि तुम मुझसे कहीं अधिक शक्तिशाली हो और समय-समय पर तुममें जो नेकी और उदारता दिख जाती है, वह मुझे चक्कर में डाल देती है। लेकिन यह किशोर—यह बड़ा पतित और नीच आदमी है।"

अपने सम्बन्ध में चमेली की यह धारणा शीतल प्रसाद को अच्छी लगी, उसने कहा, "ठीक है—मैं किशोर को नहीं जानता और इसलिए मैं समझता हूँ कि तुम्हारा उसके सम्बन्ध में जो निर्णय हो वह हम लोगों को मान्य होना चाहिये, क्यों शिवकुमार जी?"

शिवकुमार को किशोर के प्रति किसी प्रकार की कोई दिलचस्पी न थी, उसने हँसते हुए कहा, "भाई, मैं तो इन फ़िल्मवालों से आजिज आ गया हूँ, इसीलिए मैंने फिल्म का काम चमेली देवी के हाथ सौंप दिया है। मेरा तो यह रुख है कि अपने को काम से काम, स्टूडियो के झमेलों से यह निपटें।"

इकतीसवाँ परिच्छेद

शीतल प्रसाद उस दिन चमेली की बातचीत से पूरी तौर से संतुष्ट न हो पाया था। वैसे ऊपर से वह शांत और निश्चित दिखता था, लेकिन उसके अन्दर एक तरह का दबा हुआ क्रोध सुलग रहा था।

रामेश्वर उसके घर में ही उसका अपमान कर गया था—वह रामेश्वर जो महज एक साधारण-सा बेढ़ा आदमी था। शीतल प्रसाद जवान था, सुन्दर था, उसके पास करोड़ों की संपत्ति थी, समाज में वह पूजा जाता था। और उसकी तुलना में रामेश्वर एक बूढ़ा-सा आदमी मैले कपड़े पहने हुए, अशिक्षित और निम्न स्तर का, जो चमेली से नौकरी करवाता था।

शीतल प्रसाद यह अनुभव करता था कि रामेश्वर के लिए चमेली उसका तिरस्कार कर रही है। जो तिरस्कार कर रहा था, शीतल प्रसाद को उसपर क्रोध न था, उसे क्रोध उसके ऊपर था जिसके कारण उसका तिरस्कार किया जा रहा था। जो उसका तिरस्कार कर रहा था, वह शीतल प्रसाद के लिए सप्राण, सकर्म स्त्री न थी, वह थी एक वस्तु, उसके भोग-विलास की सामग्री भर! मानव, सबल और उसे चुनौती देने वाला था रामेश्वर जो उसे पराजित कर चुका था, जो उसे पग-पग पर पराजित कर रहा था।

किशोर जब तीसरे दिन शीतल प्रसाद के घर पहुंचा, शीतल प्रसाद ने पहले तो नौकर से कहलाया, "उससे कह दो कि अभी मुझे फुरसत नहीं है", लेकिन नौकर जैसे ही चलने लगा, उसने कहा, "ठहरो—उसे बैठने वाले कमरे में बिठलाओ, मैं अभी आया।"

शीतल प्रसाद ड्राइंग-रूम में पहुंचा, किशोर ने उठकर तथा हाथ

जोड़कर उसका अभिवादन किया। "बैठिये किशोर जी! हां, तो क्या बात है—आप मुझे सविस्तार बतला डालिये!"

किशोर कवि होते हुए भी व्यावहारिक बुद्धि में कम न था। उसने गला साफ़ करके कहा, "क्या बतलाऊं सेठ जी, मुझसे एक बहुत बड़ी गलती हो गई जो मैं चमेली देवी के पति रामेश्वर से अनायास ही उलझ पड़ा। वह एक दिन स्टूडियो में पीकर आया—जी हां बेतहाशा पीकर, और लगा डींगें हांकने। आपके और सेठ शिव-कुमार के खिलाफ़ उसने कितनी बातें कहीं, एक तरह से वह खुले आम आप लोगों का अपमान कर रहा था। उसपर मुझे बुरा लगा और मैं कुछ कह बैठा। वह तो कहिये वहीं मारपीट हो जाती, अगर वहां बैठे हुए लोगों ने बीच-बराव न करा दिया होता। और उसके बाद तो आप जानते ही हैं, मुझे नोटिस मिल गया।"

शीतल प्रसाद जानता था कि किशोर झूठ बोल रहा है, पर उसने किशोर की बात को काटा नहीं। उसने केवल इतना कहा, "तो यह बात है; अच्छा क्या रामेश्वर से तुम्हारा अच्छा-खासा परिचय है?"

"परिचय तो क्या, यहीं चमेली देवी के घर पर उससे मिला हूं। पर दो-एक बार उसके साथ उसके अड्डे पर भी गया हूं।"

शीतल प्रसाद की आंखें चमक उठीं, "उसका अड्डा? कहां है वह और उस अड्डे में क्या-क्या होता है?"

किशोर ने देखा कि तीर ठिकाने पर बैठा, "क्या आपको नहीं मालूम सेठ जी? उसका अड्डा गोरेगांव में है। वहां शराब का कार-बार होता है, वहां वह जूआ खिलवाता है, वहां उसके इर्द-गिर्द एक-से-एक बड़े बदमाश एकत्र रहते हैं।"

शीतल प्रसाद मन ही मन गुनगनाया—"गोरेगांव, शराब, जूआ, चोरी, डकैती, बदमाशी!" और उसने किशोर से कहा, "अच्छी बात है किशोर जी। अभी मैं स्टूडियो के मामलों में कोई

दस्तन्दाज़ी नहीं करना चाहता, लेकिन मैं समझता हूं कि वह रामेश्वर काफ़ी खतरनाक आदमी है।"

"जी हां, इसमें क्या शक है। मुझे धमकी दे चुका है कि वह मेरी हत्या करवा देगा। लेकिन सेठ जी, वह अभी मुझे ठीक तरह से पहचान नहीं पाया। वैसे मैं शरीफ आदमी हूं, लेकिन मौका पड़ने पर....खैर जाने दीजिये।"

"तो फिर मौका आ गया है किशोर जी, यह आप मुझसे सौ रुपए लीजिए, और ज़रा उसके सम्बन्ध में पूरा पता लगवाइये। मैं समझता हूं कि मलाड की पुलिस उससे मिली होगी? नहीं तो यह सब काम वह कैसे कर सकता?"

"यह तो मुझे नहीं मालूम, लेकिन मैं पूरा-पूरा पता लगाकर आपको एक हफ्ते में बतला दूंगा।" और किशोर सौ रुपए लेकर वहां से निकला।

किशोर के जाने के बाद शीतल प्रसाद मन-ही-मन हँस पड़ा, "आ गया मेरी पकड़ में यह रामेश्वर—जाता कहां है। चमेली मेरी है और सदा के लिऐ मेरी बनकर रहेगी।" शीतल प्रसाद के अन्दर वाले पशु ने गर्व के साथ कहा। और उस समय शीतल प्रसाद ने अपने अन्दर से आने वाली एक कमजोर आवाज़ नहीं सुनी, "क्या कर रहे हो? इस सब का परिणाम अच्छा न होगा। दूसरों का विनाश करने के पहले यह सोच लो कि वह तुम्हें भी नष्ट कर सकता है!"

शीतल प्रसाद का एक हफ्ता बेचैनी के साथ बीता। वह प्रायः नित्य ही किशोर की प्रतीक्षा करता था। चमेली के यहां जाने की उसे हिम्मत न होती थी; वह अच्छी तरह जानता था कि चमेली के यहाँ जाकर उसका अपमान होगा। और किशोर एक सौ रुपए पाकर एक हफ्ते मौज करता रहा। एक हफ्ते के बाद उसका रुपया खर्च हो गया। इस बीच उसने कई बार गोरेगांव जा कर पता लगाने

को सोचा, लेकिन उसकी हिम्मत न पड़ती थी। वह नौकरी पाने के फेर में था, रामेश्वर से वह उलझने को तैयार न था।

एक हफ्ते में उसका रुपया समाप्त हो गया। अब उसे फिर चिंता हुई। दूसरे दिन जो कड़ा करके वह शीतल प्रसाद के यहां पहुंचा। शीतल प्रसाद ने हँसते हुए उसका स्वागत किया, "कहिये किशोर जी, कुछ पता-वता चला?"

किशोर ने उतर दिया, "पता तो मैंने काफी लगा लिया, लेकिन रुपया कम था मेरे पास! गोरेगांव वाला उसका अड्डा—उसपर उसके आदमियों की काफी निगरानी रहती है। पुलिस उससे मिली है, आसानी से वह पकड़ में नहीं आ सकता।"

"उसकी चिंता मत करो, मैंने यहां की स्पेशल सी० आई० डी० से बात कर ली है। करना इतना है कि जिस जगह शराब बनती है या जाती है—या फिर जहां पर जूआ होता है, उसका पता लगाना है। साथ ही किस समय यह सब होता है—इसका भी पता लगाना है।" शीतल प्रसाद ने कहा।

"यह पता लगा दूंगा सेठ जी! लेकिन इसका पता लगाने में काफी खर्च होगा—करीब तीन-चार सौ!"

"हां-हां—यह तीन सौ रुपए लो, और जल्दी से जल्दी इसका पता लगाकर मुझे दो। अगर कल-परसों तक हो सके, तो ज्यादा अच्छा है—मैंने यहां के उच्च पुलिस अधिकारियों से सब कुछ तै कर लिया है।"

किशोर ने रुपए ले लिए, वह रुपए लेने तो आया ही था। रुपए लेने के बाद उसने उस कमरे को अच्छी तरह देखा जिसमें वह बैठा था। एक करोड़पती के घर में वह बैठा था। उसने सोचा कि अगर शीतल प्रसाद उसपर प्रसन्न हो जाय, तो उसकी ज़िन्दगी बन सकती है। आखिर शीतल प्रसाद ने ही तो चमेली को कंपनी का मैनेजिंग डाइ-

रेक्टर बनवा दिया था। और जब किशोर शीतल प्रसाद के यहां से चला था, उसके हृदय में नई उमंग थी, नया उत्साह था।

उस वक्त शाम हो गई थी, किशोर की जेब में तीन सौ रुपए थे, उसके सामने जगमगाता हुआ बम्बई नगर था, और एक सुनहरे भविष्य की वह कल्पना कर रहा था। आज वह घूमना चाहता था, मौज करना चाहता था। वहां से वह घर पहुंचा; उस समय तक राधा घर पर आ गई थी और चिन्तित-सी घर पर बैठी थी। चमेली का शक्ति प्राप्त कर लेना राधा को अच्छा नहीं लगा, यद्यपि चमेली से असंतुष्ट होने का राधा के पास सिवा किशोर के कोई कारण न था। जिस समय किशोर ने कमरे में प्रवेश किया, वह प्रसन्न था, हँस रहा था। उसने आते ही राधा से कहा, "अरे शाम के वक्त इस तरह उदास बैठा जाता है ? चलो, आज घूम-घाम आवें। खाना ताजमहल में, उसके बाद सिनेमा!"

किशोर के प्रस्ताव से राधा चौंक उठी, "ताजमहल में खाना—सिनेमा, दिमाग खराब हो गया है ?"

किशोर हंस पड़ा, "दिमाग खराब हुआ है तुम्हारा, मेरा नहीं!" यह कहते हुए तीन सौ के नोट निकाल कर मेज़ पर रख दिये; "देखती हो—अभी-अभी यह रुपया मिला है!"

राधा को जैसे विश्वास नहीं हुआ, "यह रुपया कहां मिला है; कहीं कोई अच्छा काम मिल गया है क्या ?"

"काम अभी तो नहीं मिला, लेकिन मिला ही समझो!" और उसने राधा के पास आकर गंभीरतापूर्वक कहा, "आज सेठ शीतल प्रसाद से मिल कर आ रहा हूँ। जिस चमेली ने मुझे इतना ज़लील किया, उसको अगर मिटा न दिया तो मेरा नाम किशोर नहीं! शीतल प्रसाद सेठ को मैंने अपने साथ कर लिया है—दो-एक दिन की बात है!"

राधा खड़ी हो गई, "सच—क्या-क्या बातें हुईं—कुछ बताओ तो!"

"पहला कदम होगा रामेश्वर को रास्ते से हटाना, और सेठ ने इंतजाम कर दिया है कि वह गिरफ्तार हो जाय! शराब, जूआ—रामेश्वर को गिरफ्तार करवाना कोई आसान काम नहीं है!"

किशोर अपने उल्लास में इस क़दर डूबा हुआ था और राधा इस बात को सुनने में इतनी तन्मय थी कि इन दोनों ने कमरे के दरवाज़े पर खड़े जगमोहन को नहीं देखा। जगमोहन उसी समय स्टूडियो से आया था और राधा तथा किशोर की बात सुनकर ठिठक गया था। किशोर कहता ही गया, "कल मैं पता लगा लूंगा कि रामेश्वर के यहां किस समय जूआ होता है—और उसी समय मैं सेठ शीतल प्रसाद को इत्तिला कर दूंगा। वह पुलिस को तैयार रक्खेगा—समझीं! बच नहीं सकता यह रामेश्वर—उसने मुझे कितना ज़लील किया है!"

जगमोहन को किशोर की बात अच्छी नहीं लगी, चुपचाप वह दूसरे कमरे में चला गया। कमरे से उसने नौकर को आवाज़ दी। जगमोहन की आवाज़ सुनकर राधा ने कहा, "यह भी आ गए! घर पर वह रहेंगे—इनसे कह दो कि एक नया कांट्रेक्ट हुआ है। मैं अभी कपड़े पहन कर आती हूं।"

बत्तीसवाँ परिच्छेद

उस दिन चमेली जब सोकर उठी, वह बहुत उदास थी! वैसे उसकी उदासी का कोई कारण न था, लेकिन उसने अपने प्राणों में एक तरह की आशंका का अनुभव किया। उस आशंका के साथ एक तरह की थकान थी। अर्ध-चेतना के हिलकोरों में उसने अपने को बहते हुए अनुभव किया, और वह चेतनाप्राप्ति के अपने हरेक प्रयत्न में शिथिलता अनुभव कर रही थी।

उसे कई दिनों से रामेश्वर की कोई खबर नहीं मिली थी, स्टूडियो के काम में व्यस्त रहने के कारण वह स्वयं खबर न ले सकी थी। उस समय वह अनुभव कर रही थी कि नियति की धारा के विपरीत वह चल रही है—नियति का विधान है मिटना! हरेक बनना मिटने के लिए ही होता है, और उसे यह अनुभव हुआ कि मिटने का उसे भय नहीं, मिटना अनिवार्य है और वह अनिवार्य अब उसके सामने आ चुका है।

उसने उस दिन के पहले तक यह पूर्ण रूप से नहीं जाना था कि उसका समस्त अस्तित्व रामेश्वर है—केवल रामेश्वर! उस रामेश्वर को खो देना अपने को खो देना है। उस रामेश्वर को एक बार फिर से पाना होगा। अगर वह रामेश्वर को नहीं पा सकी, तो उसके अस्तित्व को मिट जाना ही है, उस मिटने को कोई भी नहीं रोक सकता है, स्वयं वह तक नहीं!

और बल लगाकर चमेली उठ बैठी—उसके अन्दर से एक हलकी सी आवाज़ निकली 'रामेश्वर को पाना ही होगा', उसके होठों ने उसी आवाज़ को उसी हलके स्वर में दुहराया, 'चाहे मुझे मिटना ही क्यों न पड़ जाय!'

चमेली ने चाय नहीं पी, उसने मोटर मंगवाई। वैसी ही अस्त-व्यस्त वह मोटर में बैठ गई, "गोरेगांव!"

ड्राइवर ने एक बार आश्चर्य से चमेली को देखा, और फिर उसने कार स्टार्ट कर दी। ड्राइवर जानता था कि चमेली कहां जा रही है। वह यह भी जानता था कि रामेश्वर उसका पति है। रामेश्वर और चमेली का इस तरह रहना उसे अस्वाभाविक नहीं लगता था, उस प्रकार जीवन देखने का वह अभ्यस्त था! पर वह मनोवैज्ञानिक नहीं था; एक ही जीवन के दो पहलू हो सकते हैं, एक दूसरे से विपरीत दो भावनाएं कभी-कभी एक-रूप दीख सकती हैं! ड्राइवर तेजी के साथ मोटर चला रहा था; इतने सबेरे बुलाया जाना उसे अच्छा नहीं लगा था। और उसे आश्चर्य हो रहा था कि इतने सबेरे चमेली गोरेगांव क्यों जा रही है।

आश्चर्य स्वयं उसे नहीं हो रहा था, आश्चर्य उससे अधिक रामेश्वर को हुआ जब उसने उस समय चमेली को अपने यहां देखा! रामेश्वर उस समय अपने बिस्तर पर ही था, सुबह तक उसके यहाँ जूआ होता रहा था। पिछली रात भी जूआ खेलने से उसे जूए से पांच सौ रुपए की आमदनी हुई थी। इधर कुछ दिनों से उसका जूआ का व्यवसाय जोर पकड़ गया था और इस समय तक वह करीब दस हजार का आदमी बन गया था।

चमेली के मुर्झाए हुए चेहरे को देखकर रामेश्वर ने पूछा, "क्यों री—क्या विपत्ति आ पड़ी जो तू इतने सुबह आई है?"

चमेली ने रामेश्वर के इस प्रश्न का कोई उतर नहीं दिया। वह रामेश्वर की चारपाई पर रामेश्वर के पैर पकड़ कर बैठ गई—मौन और गंभीर।

कुछ देर तक रामेश्वर आश्चर्य से चमेली को देखता रहा, फिर उसने कहा, "बतलाती क्यों नहीं, इतना गुम-शुम क्यों है?"

चमेली अब अपने को न रोक सकी, वह फूट पड़ी, "मैं तुम्हें लेने आई हूं, पैर पकड़ कर तुम्हें मनाने आई हूं।"

रामेश्वर एकाएक हँस पड़ा, "बस इतनी सी बात—मैं तो तेरी शक्ल देखकर घबरा गया था।"

थोड़ी देर तक दोनों मौन बैठे रहे, फिर रामेश्वर ने कहा, "लेकिन यह सबेरे-सबेरे क्या बात हो गई?"

"बात कुछ भी नहीं है, लेकिन मैं अपने को न रोक सकी। तुम्हें यह सब छोड़कर मेरे साथ चलना होगा—मैं कहती हूँ मेरे साथ चलना होगा!" चमेली पागल की भांति कह रही थी, "मैं इस ज़िन्दगी से ऊब गई हूं, मुझे रुपया नहीं चाहिये, मुझे चैन-आराम नहीं चाहिये—मैं तुम्हें चाहती हूँ, केवल तुम्हें!"

रामेश्वर ने चमेली के सर पर हाथ रखते हुए कहा, "तो मैं तो तेरा हूँ ही।"

"नहीं, तुम मुझसे अलग हट गए हो। तुम कैसे समझोगे, मुझे ऐसा लगता है कि जैसे मैं तुम्हें सदा के लिए खो चुकी हूं। एक गहरी खाई हम दोनों के बीच आ गई है, उस खाई को पार करना है—मैं उस खाई को पार करने पर तुल गई हूँ—बोलो, चुप क्यों हो—इस तरह मुझे देख क्यों रहे हो?"

रामेश्वर अब गंभीर हो गया था, उसकी भृकुटियों पर बल पड़ गए थे। थोड़ी देर तक चुप वह शून्य की ओर देखता रहा—मानो उस शून्य की गहराई से अपनी बात निकालने का वह प्रयत्न कर रहा हो, फिर उसने कहा, "उस खाई को हम लोग तब तक पार न कर सकेंगे, जब तक उस खाई को रुपयों से न पूर दें! यह दुनिया पैसे की दुनिया है, हमारा देवता पैसा है! उसी पैसे के लिये मैंने जूआ खेला। इसी पैसे के लिए तू स्टूडियो में मैनेजिंग डाइरेक्टर बनी, पैसा शक्ति है, पैसा परमेश्वर है।"

"मुझे पैसा नहीं चाहिये—मैं कहती हूँ, मुझे पैसा नहीं चाहिये।" चमेली ने करुण स्वर में कहा।

"पागलपन की बात मत कर; किसको दुनिया में पैसा नहीं चाहिये? कौन दुनिया में बिना पैसा जीवित रह सकता है? पैसा जीवन है, पैसा अस्तित्व है—यह समझ ले, अच्छी तरह समझ ले! मेरे पास दस हजार रुपए हो गए हैं, अभी मुझे चालीस हजार और पैदा करने हैं—बाकी पचास हज़ार रुपए तुझे पैदा करने हैं, तू तो फ़िल्म कम्पनी की मालकिन हो गई है, और जिस तरह हो यह पैसा पैदा करना है, शरीर बेंचकर, आत्मा बेंचकर! मैं तुझसे सच कहता हूं चमेली, मेरे मन में तेरे प्रति ज़रा भी मैल नहीं, कभी छन दो छन के लिए मैं झूठी भावना में बह गया होऊं—पर अब मैंने भावना पर विजय पा ली है।"

चमेली ने रामेश्वर की बात का कोई उतर नहीं दिया, पर उसने रामेश्वर के पैर कसकर पकड़ लिये। थोड़ी देर तक वह चुप रह सर झुकाए बैठी रही, फिर उसने कहा, "मैं एक संकल्प करके आई हूँ—या तो तुम मेरे साथ चलोगे या फिर मैं ही इसी समय से यहां तुम्हारे साथ रहूँगी! बस मैं इतनी-सी बात जानती हूं! तुम मुझे लात मारकर निकालो तब भी नहीं निकलूंगी—मैं यहां तुम्हारी चौखट पर सर पटक कर प्राण दे दूंगी—यह समझ लेना!"

"बेकार हठ मत कर!" रामेश्वर ने कहा!

"तुम इसे हठ समझो या जो तुम्हारे जी में आवे वह समझो—मैं अपनी बात कह चुकी। तुम पैसे के पीछे चाहे जितने दीवाने हो, मुझे यह पाप का पैसा नहीं चाहिये, यह पैसा हमारे जीवन में अभिशाप है। मुझे इस बम्बई में नहीं रहना है—मैं कहती हूं यहां से बाहर चलें हम दोनों जने। तुम्हारे पास दस हजार है—मेरे पास भी करीब-करीब इतना ही है, कहीं किसी गांव में थोड़ी-सी जमीन लेकर तुम खेती

करो, किसी छोटे-से कस्बे में कोई छोटा-मोटा कार-बार करो, लेकिन यहां से, इस बम्बई से बाहर चलो! मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ—मेरे अपराध क्षमा करो; अगर तुमने मुझे कभी भी अपना कुछ समझा है, तो मेरी यह बिनती मान लो—'और चमेली यह कहते-कहते रो पड़ी।

चमेली के उन आंसुओं से रामेश्वर के अन्दर वाली कठोरता बह गई, उसने प्रेमपूर्वक चमेली का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा, "अच्छी बात है; कल सुबह मैं तेरे यहां आ जाऊंगा—आज कुछ लोग आ गए हैं, उनसे वादा कर लिया है, फिर मुझे यहां का काम-काज भी खत्म करना होगा। अब तू जा—तू भी चलने का प्रबन्ध कर जाकर, तीन-चार दिन के अन्दर ही हम दोनों यहां से चल देंगे।"

चमेली खिल उठी, "तुम सच कह रहे हो—तुम मुझे बचन दे रहे हो कि कल सुबह तुम आ जाओगे।"

रामेश्वर ने मुसकराते हुए कहा, "रामेश्वर में और जो भी अवगुण हों, लेकिन अपनी बात का धनी वह अब भी है!"

चमेली रामेश्वर के यहां से अपने घर नहीं लौटी। उसके मन में नया उत्साह था, नयी उमंग थी। रामेश्वर उसकी बात मान गया; बम्बई के घृणित वातावरण से उसे छुटकारा मिलेगा, इसमें उसे संदेह नहीं था। पर चमेली अदृश्य के विधान को नहीं देख पा रही थी; एक ताना-बाना उसके चारों ओर बुना जा रहा था, और उस ताने-बाने को वह नहीं देख पा रही थी। जिस समय वह स्टूडियो में बैठी हुई डाइरेक्टर प्रेमकिशन से यह बात कह रही थी कि वह छः महीने की छुट्टी पर जाने वाली है, उसी समय किशोर शीतल प्रसाद से कह रहा था, "सेठ आज शाम को चार बजे से जूआ शुरू होगा; अगर पांच या छै बजे शाम को पुलिस धावा करे, तो सब लोग आसानी से गिरफ्तार हो सकते हैं।"

"अच्छी बात है!" शीतल प्रसाद ने कहा, "तुम पांच बजे यहां आ जाना—मैं पुलिस को यहीं बुला रक्खूंगा—यहां से तुम पुलिस दस्ते के साथ चले जाना!"

"मुझे मत भेजिये सेठ वहां पर—आपका इतना काम कर दिया—रामेश्वर के सामने जाने में मुझे डर लगता है!" किशोर ने गिड़-गिड़ाते हुए कहा!"

शीतल प्रसाद हँस पड़ा, "तुम बड़े कायर हो—इस कायरता को लेकर तुम दुनिया में कभी भी न बढ़ सकोगे। अच्छी बात है, तुम सिर्फ पुलिस को रामेश्वर का स्थान दूर से दिखला देना, बाकी इंतजाम मैं कर रक्खूंगा।"

चार बजे शाम तक चमेली स्टूडियो में ही रही, और उसने स्टूडियो का पूरा काम प्रेमकिशन को समझा दिया। चार बजे शाम को वह उठी, हलके मन के साथ! उसने दृढ़ संकल्प कर लिया था कि कल वह स्टूडियो नहीं आवेगी—वह दूसरे दिन ही बम्बई से चल देना चाहती थी। वह कहां जाना चाहती थी—इसका उसे पता न था; कहीं भी, लेकिन इस बम्बई से दूर, बहुत दूर जहां इस नगर की छाया भी उसके ऊपर न पड़ सके।

चमेली ने ड्राइवर से कहा, "सेठ शीतल प्रसाद के यहां!"

किशोर पांच बजने के स्थान पर चार बजे ही शीतल प्रसाद के यहां पहुंच गया था! उस समय वह बहुत अधिक उद्विग्न था। शीतल प्रसाद ने कहा, "बहुत अधिक घबराए हुए हो—बैठो!" और उसने अपने नौकर से ह्विस्की मंगवाई। "थोड़ी-सी पी लो, घबराहट दूर हो जावेगी, तब तक मैं कपड़े पहन लूं—"और यह कहकर वह अन्दर चला गया। किशोर ने कांपते हाथों से गिलास होठों से लगाया और उसी समय चमेली ने कमरे में प्रवेश किया!

चमेली को देखते ही गिलास उसके हाथ से छूट पड़ा, उसने कहा, "अरे—आप यहां !"

"ज़रा मुझे शीतल प्रसाद जी से कुछ बातें करनी थीं !....यह क्या, तुम्हारा मुंह इतना पीला पड़ गया और तुम कांप रहे हो—" चमेली ने आश्चर्य से कहा—"क्या बात है ?"

"बात—बात कुछ भी नहीं है। शीतल प्रसाद जी अभी आते ही में होंगे, बैठिये !"

चमेली बैठ गई। किशोर ने अपना गिलास फिर भरा और इस बार वह उसे एक घूँट में ही खाली कर गया। उसके शरीर में अब थोड़ी-सी गर्मी आ गई थी, उसने चमेली से पूछा, "कहिये, कोई जरूरी काम है, तो नौकर से उन्हें बुलवा दूं।"

"इतना जरूरी नहीं है कि नौकर से उन्हें इसी वक्त बुलवाया जाय, उनसे सिर्फ इतना कहना था कि कल से वह स्टूडियो का कोई दूसरा प्रबन्ध कर लें, मैं कल बम्बई छोड़कर बाहर जा रही हूं।"

बात चमेली ने किशोर से कही थी, उत्तर उसका शीतल प्रसाद ने दिया, "तुम बम्बई छोड़कर नहीं जा सकतीं चमेली रानी, बम्बई में जो आया वह बम्बई का होकर रह गया।" और शीतल प्रसाद हँस पड़ा।

"तुम मुझे न रोक सकोगे सेठ ! तुम क्या, कोई भी मुझे नहीं रोक सकेगा !"

शीतल प्रसाद ने चमेली को सर से पैर तक देखा, "क्या रामेश्वर भी नहीं ?"

चमेली शीतल प्रसाद की उस दृष्टि को पहचानती थी, उसने कहा, "रामेश्वर के साथ ही जा रही हूँ सेठ !"

"और वह रामेश्वर यहां से नहीं जायगा चमेली रानी, आज रात वह जेल में होगा, समझीं !"

"जेल में ?" चमेली ने आश्चर्य से पूछा—"जेल में ?"

"हां जेल में चमेली रानी ! शीतल प्रसाद का अपमान करने वाला न आज तक बच सका है, न आगे बच सकेगा। अभी आध घंटे के अन्दर पुलिस का दस्ता आता होगा—आज रामेश्वर के यहां बहुत बड़ा जूआ हो रहा है, उसे वहीं गिरफ्तार किया जायगा। चमेली रानी, सब इंतजाम हो गया है। तुम भी हमारे साथ चलना—इस नाटक को देखना !" और शीतल प्रसाद ने अपने गिलास में शराब ढाली।

चमेली सहम उठी। इतना बनकर सब कुछ इस तरह बिगड़ जायगा—उसे इसका अनुमान तक न था। थोड़ी देर तक वह निश्चेष्ट-सी बैठी रही, फिर एकाएक वह उठ खड़ी हुई। उसने उठते हुए कहा, "सेठ ! तुम रामेश्वर को नहीं गिरफ्तार कर सकोगे—" और इतना कह कर वह दरवाजे की ओर बढ़ी।

शीतल प्रसाद भी उठ खड़ा हुआ, "नहीं चमेली रानी, मेरे शिकार को तुम मेरे मुंह से न छीन सकोगी, इस कमरे के बाहर तुम कदम नहीं रख सकोगी—" और यह कहकर उसने चमेली को पकड़ लिया।

शराब शीतल प्रसाद पर असर कर रही थी, उसने चमेली को आलिंगन-पाश में कस लिया, "चमेली रानी, रामेश्वर रहेगा जेल में और तुम रहोगी मेरी रानी बनकर मेरे घर में ! तुम नहीं जानतीं, यह सब जो कुछ मैं कर रहा हूं, तुम्हारे लिए कर रहा हूँ, सिर्फ तुम्हारे लिए—"

शीतल प्रसाद के आलिंगन-पाश में चमेली का दम घुट रहा था। उसकी समझ में न आ रहा था कि वह क्या करे—और उसे शीतल प्रसाद की जेब में कुछ कड़ी चीज़ का अनुभव हुआ।

इस समय तक चमेली हत-चेतन हो गई थी—जिन्दगी और मौत का संघर्ष उसके सामने आ गया था, जितनी तेजी के साथ सारी परिस्थिति उसके सामने आई थी, उससे उसकी बुद्धि, चेतना और

इन दोनों से सम्बद्ध कायरता, भय, यह सब उसके जीवन से निकल चुके थे; इस समय वह केवल भावनामय प्राणी रह गई थी, जिसे मृत्यु के खिलाफ लड़ना था। उसने शीतल प्रसाद की जेब से उसका पिस्तौल निकाल लिया और शीतल प्रसाद के आलिंगन-पाश से एक झटका देकर उसने अपने को छुड़ा लिया। पिस्तौल शीतल प्रसाद के सामने तानकर उसने कहा, "सेठ! अब मुझे रोकने को मत आगे बढ़ना।"

शीतल प्रसाद ने आश्चर्य से चमेली को देखा, फिर उसने किशोर की ओर देखा, लेकिन किशोर वहां न था। किस समय किशोर वहां से चला गया था—इसका पता न शीतल प्रसाद को लगा, न चमेली को! शीतल प्रसाद तेज़ी के साथ बाहर जाने वाले दरवाज़े पर पहुंच कर खड़ा हो गया, "नहीं चमेली रानी, मैं तुम्हें न जाने दूंगा!"

चमेली ने पिस्तौल तान कर कहा, "हटो, नहीं तो यह पिस्तौल की गोली तुम्हारे मत्थे को पार कर जायगी!"

और उस समय शीतल प्रसाद को न जाने क्या सूझा कि वह अनायास ही चमेली पर झपट पड़ा। शीतल प्रसाद के इस अचानक आक्रमण से चमेली की पिस्तौल के घोड़े पर लगी उंगली दबी, और वैसे ही शीतल प्रसाद ज़मीन पर गिर पड़ा।

चमेली ने शीतल प्रसाद को एक बार देखा—और फिर उसने जैसे आप ही आप यह अनुभव कर लिया हो कि उसके पास समय नहीं है। वह तेज़ी के साथ बाहर निकली—नौकर लोग घबराए हुए से उधर आ रहे थे। चमेली ने अपने ड्राइवर से कहा, "किशोर को देखा है—ज़रा तुम लोग देखो—ज़रा तुम लोग देखो—किशोर कहां है—उसके पास पिस्तौल है—और अभी यह पिस्तौल की आवाज़ हुई है।"

नौकर किशोर को तलाश करने के लिए इधर-उधर बिखर गए, चमेली उस बीच अपनी मोटर पर बैठ गई। चमेली अपनी मोटर न

चलाती थी, लेकिन वह मोटर चलाना जानती जरूर थी। उसने कार स्टार्ट की और उसकी कार तेजी के साथ फाटक के बाहर निकली। आपरा हाउस आकर उसने कार सड़क के किनारे खड़ी कर दी, कार से आ कर वह एक टैक्सी पर बैठ गई। ड्राइवर से उसने कहा, "गोरेगांव!"

रामेश्वर के मकान के पास पहुंच कर उसने टैक्सी विदा कर दी। तेजी के साथ वह रामेश्वर के मकान पर पहुंची। बाहर तीन चार आदमी बैठे थे, उनमें से एक ने पूछा, "किससे मिलना है?"

तैंतीसवां परिच्छेद

रामेश्वर का गोरेगांव में आखरी दिन था, शायद बम्बई में हुव उसका आखरी दिन था।

गोरेगांव में रामेश्वर का जो कुछ था, वह उसने बेंच दिया था, उसके पास उस समय दस हजार रुपए थे। और आखिरी शाम को उसके यहां जूआ जमा था। उस जूए में दम नहीं था, मंगल—और चार छै आदमी, इतने लोग थे। मंगल ने उसी दिन भैंसें बेचकर दो हज़ार रुपए पैदा किये थे और उस दिन उसका भाग्य अच्छा था। एक घंटे के अन्दर ही मंगल की रकम दुगुनी हो गई, जो लोग उस दिन जूआ खेलने आए थे, सबके सब हार गए।

मंगल ने उस दिन पी भी थी—और रामेश्वर के साथ बैठकर पी थी। मंगल दांव फेंक रहा था—और दांव पर सिर्फ पांच रुपए थे। मंगल ने रामेश्वर की ओर देखा, "बस! इसी जूए का मैंने इतना नाम सुना था?"

मंगल का यह ताना रामेश्वर को बुरा लगा। रामेश्वर जूआ खिलाता था, उसने गोरेगांव में जूआ न खेला था। उसने कहा, "मैंने बुलवाया तो था, लेकिन और लोग आए नहीं।"

मुंह बनाते हुए मंगल ने उत्तर दिया, "तो फिर खत्म करो—पांच रुपए पर दांव फेंकूं—" और एकाएक मंगल को न जाने क्या सूझी जो वह रामेश्वर से बोला, "लेकिन रामेश्वर तुम कभी नहीं खेलते—आज तुम्हीं खेलो न!"

मंगल ने रामेश्वर को चुनौती दी है, रामेश्वर ने अनुभव किया, उसने कहा, "अच्छी बात है मंगल सेठ, आज पहली और आखरी दफ़ा

में खेलूंगा—यह सौ रुपए का दांव!" और रामेश्वर ने अपना बल छोड़ा।

मंगल ने कौड़ी फेंकी—रामेश्वर दांव हार गया। मंगल हंस पड़ा "आज मेरा हाथ चढ़ा है रामेश्वर—सौ, दो सौ, हजार, दो हजार, लाख, दो लाख—खेल लो, जीतूंगा मैं ही!"

रामेश्वर ने अबकी बार दांव पर दो सौ लगाते हुए कहा, "कौड़ी किसी की नहीं होती, गर्व न करो!"

मंगल ने बिना उत्तर दिये हुए दांव फेंका—फिर उसे दांव मिला।

रामेश्वर के मत्थे पर बल पड़ गए, "हूं—तो तुमने कौड़ी बांध रक्खी है मंगल, मालूम होता है। लेकिन मैं फिर कहता हूं कि कौड़ी किसी की नहीं होती," और यह कह कर उसने इस बार पांच सौ रुपये का दांव लगाया।

मंगल ने दांव फेंका, वह फिर जीता। इस बार मंगल हंस पड़ा, "रामेश्वर—कौड़ी भागवान की होती है, और कौड़ी इस समय मेरी है—मेरी!"

रामेश्वर के आठ सौ रुपए निकल गए थे—तीन दांव में। रामेश्वर ने झल्ला कर एक हजार रुपए का दांव लगाया। और मंगल ने कौड़ी फेंक दी। वह हजार रुपए भी मंगल के पास चले गए। मंगल ने रुपए उठाते हुए कहा, "बस करो रामेश्वर! खेल चुके!"

और रामेश्वर पर जैसे पागलपन सवार हो गया, "अभी तो खेल शुरू हुआ है मंगल! मुझे यह देखना है कि कौड़ी कब तक तुम्हारी होकर रहती है—और इतना कहकर रामेश्वर ने इस बार दो हजार रुपए दांव पर धर दिये!

"कौड़ी मेरी है रामेश्वर—मेरी!" मंगल ने दांव फेंक कर बिना कौड़ी गिने दांव उठा लिया। और रामेश्वर ने देखा कि दांव मंगल का ही है। उस समय उसका हृदय धक से रह गया। दस मिनट में

वह करीब चार हजार रुपए हार गया था। मन ही मन कुछ सोचकर उसने दो हजार रुपए फिर निकाले—दांव पर रखकर उसने कहा, "तो फिर इस बार कौड़ी मेरी रहेगी मंगल!"

और इसी समय पागल की भांति तेजी से आती हुई चमेली उसके सामने खड़ी हो गई, "सुनो—मुझे एक बहुत जरूरी बात कहनी है।"

"चल मेरे कमरे में—मैं अभी आया!—फेंको दांव मंगल—"

"दांव बाद में खेल लेना, मेरी बात तो सुनो!" चमेली ने बड़े दीन स्वर में कहा।

"कहा न अभी आया, रोक मत मुझे!" झुंझला कर रामेश्वर ने कहा।

चमेली निराश रामेश्वर के कमरे में चली गई। और चमेली के अन्दर वाली निराशा ने उस समय तक निष्क्रियता का रूप धारण न किया था। उसमें बचने का मोह था, भाग निकलने की चाह थी! लेकिन—

और इसी समय रामेश्वर की तेज आवाज उसे सुनाई पड़ी "देखा मंगल—इस दफे कौड़ी मेरी रही, देखा! अब रक्खो दांव पर जो कुछ रखना चाहते हो—निकालो हैंस।"

चमेली फिर रामेश्वर के सामने आई, "मैं कहती हूं, पहले मेरी बात सुन लो—"

"फिर टोका मुझे, कहा न अभी आया!" रामेश्वर ने कठोरता के साथ कहा।

चमेली का दिल मानो बैठा जा रहा था। वह बरामदे में टहलने लगी—और उसने दूर पर आती हुई पुलिस की गाड़ी को देखा। वह तेजी के साथ रामेश्वर के सामने आई—"पुलिस आ रही है!"

रामेश्वर तीन हजार का दांव हार चुका था, अब उसके पास कुल पांच हजार रुपए थे। उसने कहा, "क्यों टोक रही है मुझे, यहां पुलिस पर नहीं मार सकती, कहता हूं न कि आया!"

चमेली ने फिर सड़क की ओर देखा, पुलिस की गाड़ी तेजी के साथ आ रही थी—वह अब मकान से सौ गज की दूरी पर रह गई थी। और एकाएक चमेली को अनुभव हुआ कि अब उसका बच निकलना असंभव है। वह रामेश्वर के सामने फिर आई, "अच्छी बात है, तुम्हें मुझ पर यकीन नहीं होता,तो खुद देखो आकर ! यह पुलिस पहुंची"—और चमेली एकाएक हँस पड़ी।

पर रामेश्वर नहीं उठा, "फेंको मंगल—यह मेरा आखरी दांव है—फेंको !"

नीचे कुछ कोलाहल सुनाई पड़ा—चमेली तेजी के साथ रामेश्वर वाले कमरे में चली गई और उसने भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया। पुलिस ऊपर चढ़ रही थी।

रामेश्वर चौंक उठा, "अरे यह तो पुलिस ही मालूम होती है, यह कैसे ?" और उसने अपने आदमियों से कहा,"मैं पिस्तौल लेकर यहां खड़ा होता हूं—तुम लोग पीछे वाले दरवाज़े से निकल जाना !"

रामेश्वर यह कह ही रहा था कि पुलिस उसके कमरे के सामने आ गई। रामेश्वर ने पिस्तौल तानकर कहा, "खबरदार जो यहां आए—"

पुलिस सार्जेण्ट ने हँसकर उत्तर दिया, "मकान घिर गया है—भागने की कोशिश मत करना ! हम लोग जानते हैं कि किन लोगों को गिरफ्तार करना है। चमेली कहां है ?"

"चमेली"—रामेश्वर ने आश्चर्य से पूछा।

"हां चमेली, उसने सेठ शीतल प्रसाद की हत्या की है—बोलो वह कहां है ?"

इसी समय एक गोली की आवाज सब लोगों को सुनाई दी। सार्जेण्ट ने कहा, "यह आवाज़ कैसी—देखो उस कमरे में— !"

पुलिस के आदमी ने लौट कर कहा, "एक औरत ने खुदकुशी कर ली है!"

रामेश्वर चिल्ला उठा, "चमेली"—और वह तेजी के साथ उस कमरे की ओर दौड़ा।

चमेली खून से लतफत पड़ी थी—रामेश्वर के आने पर उसने आंखें खोलीं—"नहीं बचा सकी, न तुम्हें और न अपने को!" और शायद रामेश्वर से यही कहने के लिए उसके शरीर में प्राण थे, उसने बड़े प्रयत्न से अपने हाथ बढ़ा कर रामेश्वर के पैर पकड़ लिए—और उसका हाथ रामेश्वर के पैरों पर ही रह गया।

रामेश्वर के हाथ से पिस्तौल छूट पड़ी, "ले चलिये सार्जेण्ट साहब—आज मैं जिन्दगी का आखरी दांव हार चुका हूँ, ले चलिये!"